भक्तमाल सटीककी-

अनुक्रमणिका ।

इति श्रीभक्तमालसटीककीअनुक्रमणिका समाप्ता।

श्रीगणेशायनमः ।

अथ भक्तमाल सटीक।

टीकाकर्त्ताका मङ्गलाचरण प्रारम्भः ।

श्रीमन्निम्बाचार्य्याय नमः ॥ तहां अर्थ भक्तमाल में लिख्यो है भक्त भक्ति भगवन्त गुरु चार रूप लिखे हैं तहां हरिको स्वरूप नहीं लिख्यो-जाय तापै राजा को चित्रकारको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ लिखन वैठि जाकी छवी, गहि गहि गर्वगरूर ॥ भये न केते जगत के, चतुर चितेरे क्रूर ॥ १ ॥ चित्र चितेरो जो लिखै, रचिपचि मूरतिवाल॥ वह चितवनि वह मुरि चलनि कैसे लिखै जमाल ॥ २ ॥ दृग पुतरीलौं श्याम वह, लिख्यो कौन पै जाय ॥ जग उजियारी श्यामता, देखो जीय लगाय॥ ३॥ कोटि भानु जो ऊगवै, तऊ उजास न होय ॥ तनक श्यामकी श्यामता, जो दृगलगी न होय ॥ ४ ॥ मोहन जग व्यवहार तजि, वणिज करो यहिहाट। पीव पदारथ पाइये, जिय कौड़ी के साट॥ ५॥ छवि निरखत अति थकित ह्वै, दृग पुतरी व्रज वाम ॥ फिरन उठी वैठी चुहट, कियो गौरतनु श्याम ॥ ६ ॥ पद ॥ मैया दाऊजी मोहिं वहुत खिझायो । मोसों कहत मोल को लीयो तू यशुदा नहिं जायो ॥ नन्दहु गोरो यशुदहु गोरी तू कित श्याम शरीर । तारी दै दै ग्वाल नचावैं सिखवत हैं वलवीर ॥ सिखवन दै वलबीर चवाई मिथ्यावादी धूत । सूरदास मोहिं गोधनकी सौं मैं जननी तू पूत॥ ७ ॥ संमोहनीतंत्रे ॥ फुल्लेन्दीवरकांतिमिन्दुवदनंवर्हावतंसप्रियं श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्।गोपीनांनयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं गोविन्दंकलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषंभजे ॥ ८ ॥ दोहा ॥ प्रेम चितेरे की सुमति, कापैवरणीजाय ॥ मोहन मूरति श्यामकी, हियपट लिखी वनाय ॥९॥ तीक्षण चहनी वाण सों वेध्यो हियो दुसार॥ जालरंध्र कीन्हों मनों, प्रेमीघट अँधियार॥ १०॥ लिखि स्वरूप चित को दियो, लियो हिये सों लाइ ॥ चित्रकार पर वारितन

रह्यो पाइलपटाइ ॥ ११ ॥ कवित्त ॥ श्यामता उज्यारी मुख मुरली अधरधारी रूपमतवारी आंखैं रूपताकि रही है । केश खैंचि बांध्यो जूड़ा वेसमनमांझ चूड़ा प्रेमछवि पूरा द्युति चन्द्रिका सुवही है ॥ अलकैं कपोलनिपै छुटिआई पुटमानों घटलेत हिये कछु वैसियेवहीहै । श्रीगोविन्दचन्द जूको चित्र लिखि चित्र दियो बड़ेई विचित्रनिकी मति अति गही है ॥ १ ॥ पद ॥ नमो नमो श्रीभक्ति सुमाल । जाके सुनत महा तम नाशत उर झलकत राधा नँदलाल । गद्गद सुर पुलकत अँग अंगन लोचन बरषत अँशुवनजाल । उतरिजात अभिमान व्यालविष लेत जिवाइ सुरसातिहि काल॥ २॥होत प्रीति हरिभक्त जननसों लेत शीतहठि चरण प्रछाल। तजत कुसंग लेत सतसंगति भाग जगत कोउ अद्भुतभाल। निशि वासर सोवत अरु जागत रोम रोमह्वै करत निहाल। श्री अग्रनरायण दासप्रिया प्रिय प्रगटी जीवनि रसिक रसाल ॥ ३ ॥ हरिको स्वरूप प्रेम रूपी चित्रकार सों लिख्योजाय और सों नहीं महाप्रभु विशेष काहेते जीव हरिसों विमुख सम्मुख आवै जाय प्राप्तहोइ ॥ १ ॥ गीतायाम् दैवीह्येषागुणमयीममामायादुरत्यया ॥ मामेवयेप्रपद्यंते मायामेतांतरंतिते ॥ २ ॥ चैतन्यभागवते ॥ एतेचांशकलाःपुंसःकृष्णस्तुभगवान्स्वयम् ॥ इन्द्रारिव्याकुलंलोकं मृड़यंति युगेयुगे ॥ ४ ॥ मनहरन अक्षर सो कामधेनुहै॥ राधाचरणदीपिकायां ॥ दृष्टःक्वापिचकेशवोब्रजवधूमादायकांचिद्गतः सर्वाएवविमोचिताःसखिवयं सोन्वेषणीयोयदि ॥ द्वौद्वौगच्छतमित्युदीर्यसहसाराधांगृहीत्वाकरे गोपीवेषधरोनिकुंजभवनंप्राप्तोहरिःपातुवः ॥ ३ ॥ सखीकोउदाहरण ॥ कवित्त ॥ आजु मनमोहनसों मोसों ऐसी होड़ परी और इन आलिनसों कहाधौं विशेषिये । दर्पण निहारि कान्ह कही मेरे बडेनैन हांकही इनहुँ तब बोलीहोंहूं तेषिये ॥ दीरघ ढरारे दृग मेरी राधा कुँवरिके हैं कैसा करि जानोंचलौ ढिगलाइ पेखिये । आये हैं हरावो इन्हैं अहो येहो बलिगई एकवार आंखिन सों आँखै माहिं देखिये॥ ४ ॥जैसीनित

रहतिहै तैसी अँखियांहैं मेरी इनकी अनैसी अरुनई भये तेपिये । चित्तजे चढी हैं प्यारी दीसत न उजियारी ताहीके वल अहोमाहि अवरेपिये ॥ होंहू जानति हौं दोऊ सम कैसे ह्वैहैं द्वैते चारि किये प्रेमसों विशेषिये । जित घट ह्वैहै तित जोर है सुजान कान्ह कैसे ऐसी आंखिनसों आंखैं माहिं देखिये ॥ ५ ॥ मीनसम थरथरात उघर दुरकच्छपात वामन मनहरिवेतैं निश्चयकेहेरैहैं। नेकुन निहारे हिय फारे वाराहसम अरिवेतैं परशुराम फिरत न फेरे हैं ॥ तीक्ष्ण नृसिंह नख बोधक अबोलिवेतैं तारिवेतैं राघव गुलाव चित्तनेरे हैं । मोहिवेते मोहन अकलंकविन निहकलंक दशौ अवतार किधौं प्यारी नैने तरे हैं ॥ १ ॥ वृन्दावन मनहरणपै ॥ श्लोक ॥ कृष्णोन्या यदिसंभूतो यस्तुगोपेन्द्रनंदनम् । वृंदावनंपारित्यज्य पादमेकंनगच्छति ॥ २ ॥ बर्हापीडंनटवरवपुः कर्णयोःकर्णिकारं बिभ्रद्वासःकनककपिशंवैजयंतींचमालाम् ॥ रंध्रान्वेणोरधरसुधयापूरयन्गोपवृंदैर्वृन्दारण्यं स्वपदरमणंप्राविशद्गीतकीर्तिः ॥ ३ ॥ व्रजवासी मनहरणपै ॥ भागवते ॥ अहोभाग्यमहोभाग्यं नन्द गोपव्रजौकसाम् ॥ यन्मित्रंपरमानंदं पूर्णब्रह्मसनातनम् ॥ ४ ॥ साधमनहरण पै ॥ भागवते ॥ निरपेक्षं मुनिं शांतं निर्वैरंसमदर्शनम् ॥ अनुव्रजन्तिये नित्यं तेपूयंत्यंघ्रिरेणुभिः ॥ ५ ॥

अज्ञानरूपनकवित्त ॥ महाप्रभुकृष्णचैतन्यमनहरणजूके चरण को ध्यान मेरे नाम मुखगाइये । ताही समय नाभा जीने आज्ञादई लईधारि टीका विस्तारि भक्तमालकी सुनाइये ॥ कीजिये कवित्त वंद छंद अतिप्यारो लगै जगै जगमाहिं कहि वाणी विरमाइये । जानों निजमति येपै सुनो भागवतशुकद्रुमनप्रवेशकियोऐसेईकहाइये ॥ १ ॥

टीका को नाम स्वरूप वर्णन ॥

भगवान्कह्यो मैं भक्तनको ऋणियांहौं याते इनकी चरण रेणु मैं शिरपरधारोंहों क्योंकि मेरो अपराध मिटै ॥ ६ ॥ गीतायाम् ॥ येयथामांप्रपद्यन्ते तांस्तथैवभजाम्यहम् ॥ यदारागारपुत्रानान् ॥ ७ ॥ सो कह्यो पै

बनीनहीं क्योंकि इन्होंने घर बार पति पुत्रादि कुल धर्म सब छोडे अरु मो
कछू न छूट्यो याते हौं इनको ऋणियांहौं याते विचारो इनहीं की चरण रे
शिरपरधारों तब मेरो अपराध मिटैगो सो याते धारोहौं ॥ ८ ॥ ध्या
मेरे नाममुख गाइये ॥ ९ ॥ तहां दोऊ कैसे बनैं ॥ श्लोक ॥ इंद्रियाण
लयोध्यानम् ॥ तापैदृष्टांतसिद्धके द्वैरूप इन्द्रि नको ॥ १० ॥ ताही समय
॥ दोहा ॥ पायलपायँलगीरहैं, लगेअमोलक लाल ॥ भोडरहूकी आ
है, बेंदीभामिनिभाल ॥ १ ॥ सुनाइये ॥ सनत्कुमारवाक्ये ॥ सर्वा
राधकृदपि मुच्यतेहरिसंश्रयः ॥ हरेरप्यपराधान्यः कुर्याद्द्विपदपांसलः॥ २
आगमे ॥ यानैर्वापादुकाभिर्वागमनंभगवद्गृहे ॥ देवोत्सवाद्यसेवाच अन
नामतदग्रतः ॥ ३ ॥ उच्छिष्टेवाप्यशौचेवा भगवद्वन्दनादिकम् ॥ एक
हस्तप्रणामश्च तत्पुरश्चाप्रदक्षिणम् ॥ ४ ॥ पादप्रसारणंचाग्रे तथापर्यंकब
धनम् ॥ शयनंभक्षणंचापिमिथ्याभाषणमेवच ॥ ५ ॥ उच्चैर्भाषामिथोजल्प
रोदनानिचविग्रहः ॥ निग्रहानुग्रहौचैव नृषुचक्रूरभाषणम् ॥ ६ ॥ कंब
लावरणंचैव परनिंदापरस्तुतिः ॥ अश्लीलभाषणंचैवअधोवायोर्विमोक्षणम
॥ ७ ॥ शक्तौ गौणोपचारश्च अनिवेदितभक्षणम् ॥ तत्तत्कालोद्भवानांचप
लादीनामतर्प्पणम् ॥ ८ ॥ विनियुक्तावशिष्टस्य प्रदानंव्यजनादिकम् ।
पृष्ठीकृत्वासनंचैव परेषामभिवादनम् ॥ ९ ॥ गुरौमौनंनिजस्तोत्रं देवत
निंदनं तथा ॥ अपराधास्तथाविष्णोर्द्वात्रिंशत्परिकीर्तिताः ॥ १० ॥ नाम
श्रयः कदाचित्स्यात्तरत्येवसनामतः ॥ नाम्नोपिसर्वसुहृदोह्यपराधात्पत
त्यधः ॥ ११ ॥ नाभाछप्पय ॥ गुरूअवज्ञाकरै साधु निंदाविस्तारै । शि
वकी निंदाकरै ब्रह्ममें भेद विचारै ॥ नाम बल करि अपराध नाम परता
प न जानै । वेदनिशास्त्रउलंघि आप मनको मतठानै ॥ बिनश्रद्धा उपदेश
और ठगिआयो पोषै । निजइंद्रिनके हेत चेत परि पिण्डह सोषै ॥ ये दश
अपराध तजिदेहते साधु संगति सेरलि मिलै । तत्त्ववेत्तातिहुँ लोकमें राम
नाम तोको फलै ॥ १२ ॥ गीतायाम् ॥ मूकंकरोतिवाचालं पंगुंलंघयते

गिरिम् ॥ यत्कृपातमहंवंदे परमानंदमाधवम् ॥ १ ॥ कहाइयेपै ॥ दोहा ॥ संत कृपा रवि उदयते, मिटै तिमिर अज्ञान ॥ हृदय सरोवर विमलह्वै फूलेहित बुधज्ञान॥ २ ॥श्रीभागवतकी सुबुधि, कही कीरकलगान ॥ भक्त-माल अभिप्राय जो, जानैं संत सुजान ॥ ३ ॥

रचिकविताईसुखदाईलगैनिपटसुहाई औसचाईपुनरुक्तिलैमिटाई है। अक्षरमधुरताईअनुप्रासजमकाईअतिछविछाईमोदझरीसीलगाई है। काव्यकीवड़ाईनिजमुखनभलाईहोतिनाभाजूकहाई यातेप्रौढ़कै सुनाईहै। हृदयसरसाई जोपैसुनियेसदाईयह भक्तिरसवोधिनीसोनाम टीकागाईहै ॥

रचिकविताईपै ॥ श्लोक ॥ तद्ब्रह्ममातृवधपातकमन्मथारिक्षत्रांतकारि करसंगमपापभीत्या । ऐशंधनुर्निजपुरश्चरणायनूनंदेहंमुमोचरघुनंदनपाणितीर्थे ॥ ४ ॥ दोहा ॥ पियलखि सियकी माधुरी,तृणतोरनके चाइ ॥ भोरैंधनु-प उठाइकै, तोरचो सहज सुभाइ ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ कमठपृष्ठकठोरमिदंधनुर्मधुरमूर्तिरसौरघुनंदनः ॥ कथमधिज्यमनेनविधीयतामहहतातपणस्तवदारुणः ॥ ६ ॥ रचिवोनामरंगकोहै कविताकोकहारंगिवोचीज काढ़िलैवो यही कविताको रँगिवोहै ॥ ७ ॥ सुखदाई सुहाई पुनरुक्ति भई नाहीं सो कविता तीनि प्रकारकी शब्दचित्र अर्थचित्र शब्दार्थचित्र ॥सवैया॥ हटके नरहैं भटके पलओट भटू मेरे नैननि मों बसिके।अटके उतही सटके मनलै-नटके सेवटा टटकेरसके ॥ लटकेलट छोरनि सों लटके पटके नकटाक्षनके कसके। मटके न घटा छविके झलकैं न लगे इन चाहनके चसके ॥८॥ पीसों भुकी रसना विन काज लखे गुणनाम समान तिहारे । नयनचले अति रूखेरहे तुम ताहीतेंनैन ये नाम धरारे ॥ संत विरुद्ध चढ़्यो अतिही जिय ते दुख नेकु टरै नहिं टारे । पाइ सुलक्षण राग अरे करकाहे को नंदलल्ला झिझकारे ॥ १ ॥ दगहो तुम दाई अदाई चड़े अरु घूंघट माँहि रहे फँसिके । रसना रस जानति तू न कछू सुखैवन कहेनहिं ने हँसिके ॥

भुजहौ तुम भूलकरी इतनी प्रिय प्यारेसों क्योंन मिले गँसिके। मन तू न मिल्यो मनमोहन सों सबहीके सयान गये नँसिकै ॥ २ ॥ दोहा ॥ चष उपमा कमलासन, आसन निज तन कीन ॥ विमलज हृदय कमल को, धूरि कमल मुखदीन ॥ ३ ॥ वारों बलि तो दृगनि पर, अलि खंजन मृग मीन ॥ आधी दृष्टि चितौन जिमि, किये लाल आधीन ॥ ४ ॥ कवित्त ॥ कारे झपकारे रतनारे अनियारे सोहैं सहज ढरारे मनमथ मतवारेहैं। लाज भरि भारे जो चपल अनियारे तारे सांचेकेसे ढारे प्यारेरूपके उज्यारे हैं ॥ आधी चितवनिही में आधीन कियेते हरि टोनेसे बसीकरके लोने पनियारे हैं। कमल कुरंग मीन खंजन भँवर वृषभानुकी कुँवरि तेरे दृगनिपैवारे हैं ॥ ५ ॥ सचाई श्लोक ॥ हरोहिमालयेशेते हरिश्शेतेच वारिधौ ॥ आकाशेभ्रमतेसूर्यो जानेमत्कुणशंकया ॥ वायसाः किन्नभक्षंतिकवयोनवदंतिकिम् ॥ मद्यपाःकिन्नजल्पंति किन्नकुर्वंतियोषितः ॥ ६॥ मृषागिरस्ताह्यसतीरसत्कथानकथ्यते यद्भगवानधोक्षजः ॥ तदेवसत्यंतदुहैव मंगलं तदेवपुण्यंभगवद्गुणोदयम् ॥ ७ ॥ पुनरुक्ति दोहा ॥ दोषनहीं पुनरुक्तिकी, एक कहत कविराज ॥ अर्थगहे पुनि अर्थको, ये कविगणके साज ॥ बारणको तारण अहो, बार न लागी तोहिं ॥ बार न कीजैहे प्रभो, वा रण भटकन मोहिं ॥ ८ ॥ मनकी सचाई पाइकै उठिआये प्रभु पास ॥ मनवांछितफलपाइकै, हियमें अधिकहुलास॥९॥ शुद्धघटमें तौहरि सदा, वासकरैहैं ताको चिंता कौन शत्रुकी है मधुरताईपै॥ कवित्त ॥ करत कवित्त तुक दौरै मन दौरै जहां औरे औरे औरे जहां रसुठसांकरैं॥ सोनेकीसी सांकरै ये मिश्रीकीसी कांकरे ये आकरसआकरैं सुहाकरैं निसाकरैं ॥ सोंठिकीसी गांठैं तुकगांठैं तेऊगाठिकीन सांठेसों लैआनी काहू आकानिकेराकरैं । दोऊते समान ऐसी जहानको जमानोदेख्यो भोरभये जीत्यो षटपद पदमाकरैं ॥ १ ॥ अंग अंग औघटन घाटहै मनावोको लालको तृषाहै याअधर रसपानकी। भौंहेकी मरोरनिमें भीरसे परतजात त्योंरी की तरं-

गनि में निठुरता निदानकी ॥ जगन गहर मौन उत्तर न थाहहैकिहूं ऐसीगरबीली हठीली वृषभानकी। रिसके प्रवाह रसकूलन बिदारैंजात नदीसी उमड़ि चली मानिनीके मानकी ॥ २ ॥ अनुप्रास ॥ मदनतुकासी किधौंराजैंकुंदकासी मानों कंजकलिकासीकुच जोरिहू विकासीहै। गांसीभरी हांसी मुखभासी मोहफांसीमद यौवन उजासी नेहदियेकी शिखासी है ॥ जाकी रतिदासी रसरासी है रमासी को कहै तिलोत्तमासो रूपसरनप्रकासी है। काम की कलासी चपलासी कविनाथ किधौं चंपलतिकासी चारुचंद्र चंद्रिकासी है ॥ ३ ॥ सोई मेरो वीर जो लैआवै वलवीर ताहि देहौं दोऊ चीर मेरो विरहवँटाइले। भंजन छपाके पीर छपै न छपायेपीर छपाकरि छपैतो छपाकर छपाइले ॥ मदनलग्योहैधाइधाइसो कहौरी धाइ येरी मेरी धाइ नेक मोहूतन धाइले। देहरी थरथराइदेहरी चढ्यो न जाइ देहरीतनकहाथ देहरी लखाइले ॥ ४ ॥ काव्यकी बड़ाई ॥ कवित्त ॥ यहै कविताई जामें भरी सरसाई मृदु पदसुखदाई अंकरचना सुहाई है। जाके ढूंढिवे को वडेरसिकप्रवीन मन लीन भये रसमांझ जबैजाइपाई है ॥ जैसेतीरगरडर निपट एकाग्रकरि आधिआंखि मूंदि लखै तीरकुटिलाई है। ऐसे वह वकाई निज प्रगट दिखाई देति ताकी न बड़ाई वा बकाई की बड़ाईहै ॥ १ ॥

भक्तिस्वरूप ॥ श्रद्धाईफुलेलऔउबटनोंश्रवणकथामैलअभिमानअंगअंगनिछुटाइये । मननसुनीरअन्हवायअँगुछायदयानवनव सनपनसोंधोलैलगाइये ॥ आभरणनामहरिसाधुसेवाकरणफूल मानसीसुनथसंगअंजनबनाइये । भक्तिमहारानीकोशृंगारचारुवीरीचाहरहै जोनिहारिलैहैलालप्यारीगाइये ॥

श्रद्धाई फुलेल ॥ भक्ति महारानी को शृंगार आगमे ॥ हरिभक्तिर्महादिव्या सर्वामुक्त्यादिसिद्धयः । भुक्तयश्चाद्भुतास्तस्या चेटिकाहदनुव्रताः॥ ॥ २ ॥ भागवते ॥ तत्सर्वंभक्तियोगेन मद्भक्तोलभतेऽञ्जसा ॥ स्वर्गाप

वर्गौमद्धाम कथंविघतिवांछति ॥ ३ ॥ तापैदृष्टांतरांकाबांकाको ॥ ॥ आगमे ॥ आदौश्रद्धाततः साधुसंगोथ भजनक्रिया ॥ ततोनर्थनिवृत्तिश्च ततोनिष्ठारुचिस्ततः ॥ ३ ॥ अथासक्तिस्तथाभावस्ततः प्रेमाभ्युदंचति ॥ साधकानामिदं प्रेम प्रादुर्भावोभवेत्कमात् ॥ ४ ॥ मैलअभिमान ॥ जातिर्विद्यामहत्वं च रूपयौवनमेवच ॥ यत्नेनपरितस्त्याज्याः पंचैतेभक्तिकंटकाः ॥ ५ ॥ पांचकांटे सोई पांचौमैल ॥ भागवते ॥ नालंद्विजत्वंदेवत्वमृषित्वंवासुरात्मजाः ॥ प्रीणनायमुकुंदस्य नव्रतंनबहुज्ञता॥६॥नदानंनतपोनेज्या नशौचंनव्रतानिच । प्रीयतेमलयाभक्त्याहरिरन्यद्विडंबनम् ॥ ७ ॥ मननसुनीर न्हायबेमें आनंदजैसेही मननमें अंगौछा दयामें तीनगुण तेलछुटावै उबटनो अरु मैल श्रद्धाकथामनन ॥ नारदपंचरात्रे ॥ वैष्णवानांत्रयंकर्मदयाजीवेषुनारद ॥ श्रीगोविंदेपराभक्तिस्तदीयानांसमर्चनम् ॥ कर्णफूल पांचजातिके जडाऊसोनेके रूपेके रांगके काठके पै सुहाग पांचोहीमें रहैं याते करैतौ दोऊकरै साधसेवा न बनिआवे तो प्रभुकीभी उठाइ धरै ॥ पाद्मे ॥ अर्चयित्वातुगोविन्दं तदीयान्नार्चयंतिये ॥ नतेविष्णुप्रसादस्य भाजनंदांभिकाजनाः ॥ १ ॥ २ ॥ सतसंगपैभागवते ॥ नरोधयतिमांयोगो न सांख्यंधर्मएवज ॥ नस्वाध्यायस्तपस्त्यागा नेष्टापूर्त्तंनदक्षिणा॥ ३ ॥व्रतानियज्ञच्छंदांसितीर्थानिनियमायमाः । यथावरुंधतेभक्तिःसत्संगोपार्जिताहिमाम्॥ ४ ॥ अथवा भक्तिके अंग भक्तिमालहीमें हैं श्रद्धा सेवामें गदाधरभट कथामेंपरीक्षित मननसुचोर चतुर्भुजदासकी कथा सुनी ॥ ५ ॥ दया केवल रामसाटोपीटिमें उपड्यो ॥ ॥ ६ ॥ नवनगोपालदास जोवनेरी पनराजा आशकरन नाम आभरण अन्तरूनिष्ट ॥ ७ ॥ हरिसेवारत्नावतीरानी ॥ ८ ॥ साधुसेवा सदावृती मानसी रघुनाथगुसांई सत्संगग्वालभक्त ॥९॥ चाहवारी मधुगोसांई १०॥

भक्तिपंचरस ॥ शांतदास्यसख्यवात्सल्यऔशृँगारुचारुपांचौ रससार विस्तारनके गाये हैं । टीकाको चमत्कार जानौंगे विचा-

रिमन इनके स्वरूप में अनूपलै दिखाये हैं ॥ जिनकेनअश्रुपात-पुलकितगातकहूंतिनहूं को भावसिद्धबौरेसोछकायेहैं । जौलौंरहैदूरिरहै विमुखतापूरिहियोहोयचूरिचूरिनेकुश्रवणलगायेहैं ॥ ४ ॥ पंचरससोईपंचरंगफूलथाकिनीके पीकेपहराइबेकोरचिकैबनाईहै । वैजयंतीदामभाववतीअलिनाभानामलाई अभिरामश्यामसतिलल-चाईहै ॥ धारीउरप्यारीकिहूंकरतमन्यारीअहौदेखौगतिन्यारीढरियानिनिकौआईहै । भक्तिछबिभारतातेनमितशृंगारहोतहोतबश लखैजोईयातेजानिपाईहै ॥ ५ ॥

भक्तिपंचरसपै ॥ सोभक्तिको स्वरूप क्रियात्मकहै सो क्रिया हीते जानीजाइ है ॥ भागवते ॥ देवानांगुणलिंगानामानुश्रविककर्मणाम् ॥ सत्त्वएवैकमनसोवृत्तिःस्वाभाविकीतुया ॥ १ ॥ अनिमित्ताभागवतीभक्तिः सिद्धेर्गरीयसी ॥ जरयत्याशुयाकोशं निगीर्णमनलोयथा ॥ २ ॥ जैसे रसनमें इंद्री स्वाभाविकीही चलैहै ऐसेही समस्त इंद्रिय भक्तिमें स्वाभाविकी लगें या क्रियाते भक्ति जानीजाइ है सो भक्ति पंचप्रकार की जैसे ईपको रस खांड़ बुरा मिश्री कंद ओरा स्वाद न्यारे न्यारे तत्त्व एक ॥ ॥ ३ ॥ शांतरस ॥ दोहा ॥ यमकरि मुहतरहाठिपरचो, यह धरि हरि चितलाइ ॥ विषयतृषा परिहरि अजौं, नरहरिके गुणगाइ ॥ ४ ॥ दास्य रस ॥ दासनदास तिहारो ऋणी प्रभु मोते नहीं कछुवै बनिआई । तेदुख-ठावनि मोदबढ़ावनि मोहित भोगकी नींमदिवाई ॥ आपुही में बिसरचो तिनमें पागिताते तहां तुम्हरीको चलाई । पैआपअपनो जानिगहो नाहिं जातिअहो तुम्हरी ये बड़ाई ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ गुणनगहेहौं मन व्योरमें बहेहौं तेरी ढीलनदेहेहौं पंचरंगको पतंगमें । जितहीकन्यावतहौ तितही में आवतहौं ऐसेंझुकिधावतहौं पवनके संगमें ॥ गयोआरिवाय हरि ऊपर नरह्यो आइ ताते थिनथांभर्थेग्यो थिरकानिके रंगमें । हरे हरे ऐंचिनाथ कीजियेजू अपनी घानातरु अनाथ जात अनंगकी तरंगमें ॥ ६ ॥ सख्य

रस करुणाभर नाटके॥ एककहै अस यत्नहिं कीजै। कृष्ण द्वारका जान नदीजै॥ एककहैं हों लेहोंदांव। कहा भयो ह्वै आयोराव॥ ७ ॥ एककहैं आवनतौ देहु। तब तुम दांव आपनो लेहु॥ वात्सल्य पद॥ जोपैरा खतहौ पहिंचानि। तौ वै बालक मोहन मूरति मोहिं मिलावो आनि। भली करी कंसादिक मारे सुर मुनि काजकियो। अब इन गाइन कौन चरावे भरि भरि लेत हियो॥तुम रानी बसुदेव गेहनी हम अहीर ब्रजबासी। पठैदेहु मेरे लाल लड़ैते जारौं ऐसी हांसी॥ खान पान परधान विविधसुख जो कोउ लालल़ड़ावै। तदपि सूर मेरो कुँवर कन्हैया गोरसही सुखपावै॥ ॥१॥ शृंगार रसकवित्त॥ सीखेरसरीति सखि प्रीतिके प्रकार सब सीखे केशवराइ मन मनको मिलाइबो। सीखे सोहै खान नटिजान मुसकान सीखे सीखे सैनवैननि में हँसिबो हँसाइबो॥ सीखेचाह चाहसों जु चाह उपजाइबेकी जैसी कोऊ चाहै चाह तैसी चाह चाहिबो। जहां जहां सीखे ऐसी बातैं घातैं तातैं तब तहां क्यों न सखि नेकु नेहको निबाहिबो॥ ॥२॥ ऊधोकहा कहिये जियकी तिय कौनसी जो न सँभारति हैं। परता- सभलौ नहीं या जगमें हमतौ अपने दिन टारति हैं॥ मुखमीठो महाहिरदै कपटी बतियां छतियां नित जारति हैं। हौं दासनिदास तिहारो ऋणी येई बोल गुपालके शालति हैं॥ ३ ॥ गहिबो आकाश पुनि लहिबो अथाह थाह अति बिकराल काल व्यालहि खिलाइबो। शेल शमशेर धार सहिबो प्रहारवान गज मृगराज लै हथेरिनि लराइबो॥ गिरिते गिरनपंथ अगिनिमें जरनि काशीमें करवटतन बरफलौंगराइबो। पीबो विष विषम कबुल कवि नागरजू कठिन कराल एकनेह को निबा हिवो॥ ४ ॥ दोहा॥ नैन मूंदि मुख मूंदिको, धरौत्रिकुटि मधिध्यान॥ तब आपहिमें देखि हौ, पूरणआतमराम॥ ५ ॥ कवित्त॥ ओढिबेको कंथा और माइबेको भस्म अंग काननिमें मुद्रा शिरटोपियां धरावैंगी। करमें कमंडलुकर खप्पर भराइबेको आदेश आदेशकरि शृंगीहू बजावैंगी॥

कुविजाको ऋद्धिदई गोपिनको सिद्धिदई फिरैंगी मशाननि में गोरखै जगावैंगी। एकवार ऊधवजू फेरि समझाइ कहौ एती ब्रजवाला मृगछाला कहां पावैंगी ॥ १ ॥ योगी जग तजैं हम योग जग दोऊ तजैं योगीजपैं पौन हम पौनहूंते हट हैं। योगी करसींगीहम सींगी भई श्याम बिन योगी लावैं धूरि हम धूरिहू तेलरि हैं ॥ योगीछेदैं कान हमछेदैं हियोवेधैं प्राण योगी ढूंढेदंड हमहरिंदडठटि हैं। आवनकी आश सुधि वीतिगई ऊधोजोतौ योगी कीजुगतिते वियोगी कहा घटिहैं ॥ २ ॥ सुखाइ शरीर अधीन करे- दृगनीरकी बूंदसौं माल फिरावै। नेहकी सेली वियोग जटालिये आहकी सींगी सपूर वजावै ॥ प्रेमकी आंवमें ठाढीजरै सुधि आरालै आपनी देह चिरावै। सुजानकहैं कलाकोटिकरैपै वियोगीके भेदको योगी न पावै॥ ३॥ श्याम तन श्याम मन श्यामही हमारो धन आठोयाम ऊधो यहां श्यामही सों कामहै। श्यामहिय श्यामाजिय श्यामविन नाहिंतिय आंवरेकी लाकरी अधार नामश्याम है ॥ श्यामगति श्यामहीं प्रतापपति श्याम सुखदायी सोतु लाये घरधाम हैं।तुमभये वौरे यहां पाती आये दौरे योग कहां राखैं हमरोम रोम श्यामहैं ॥ ४ ॥ रूसिरहौ हमसों तौ हमें नितही पारि पाइँ नपाँइमनावो। वोलो नवोलो हमैं नित वोलिवो चाहकरौ नकरो हमैं चाहिवो ॥ देखे न देखे दयाकरिप्यारे हमैं नितनैननि तैं दरशाइवो। मानो न मानो हमें यह नेम नयो- नित नेहको नातो निवाहिवो॥५॥ विचारा सन ॥ तापैं दृष्टान्त चित्र- की पुतरीको अरु खानखानाको ॥ १॥ होइ चूरचूर॥ कवित्त॥ वेले ते विछुरिपान पर पादिल ह्वै कै कसन कसाइ अंग हाथनि नचतु है। वेशुमार दागिल ह्वै परम कतरनीमें पाइकै मरोरी वहुविकानि विकतुहै ॥ सरस मसाले अनुमानके लै दियेवीच धरिकै चितौनि रस सजिकै पजतु है। एते पर सखी सुखरासिक हाथ आये कहा चूरचूर भये विनारंग क्यों रचतु है ॥ १ ॥

सतसंगप्रभाव। भक्तितरुयोधाताहिविघ्नडरछेरीहूकोवारदैवि- चारवारसींचोसतसंगसों। लाग्योईवढ़नगोदाचहुँ दिशिकढनसों

चढ़नअकाशयशफैल्योबहुरंगसों ॥ संतउरआलबालशोभितविशा-
लछाया जियेजीवजालतापगयेयोंप्रसंगसों । देखौवढ़वारिजाहिअज-
हूकीशंकाहुतीताहीपेंडबांधेझूलैहाथीजीतेजंगसों ॥ ६ ॥

सतसंग ॥ भागवते ॥ सतांप्रसंगान्ममवीर्यसंविदो भवंतिहृत्कर्णरसा-
यनाः कथाः । तज्जोषणादाश्वपवर्गवर्त्मनि श्रद्धारतिर्भक्तिरनुक्रमिष्यति
॥ १ ॥ दोहा ॥ इष्टमिलै अरु मनमिलै, मिलै भजन रसमीति ॥ मिलियै तहां
निशंक ह्वै, कीजै तिनसों प्रीति ॥ १ ॥ एककहै जागे लोचन घूम घुमारे
दूसरौ कहै एक निरंजन है अविनाशी ॥ दोहा ॥ बहता पानी निर्मला
बँधा गँधीला होइ ॥ साधू जन रमता भला, दाग न लागै कोइ ॥ २ ॥
वृन्दावनशतके॥ मिलंतुचिन्तामणिकोटिकोटयः स्वयंबहिर्दृष्टिमुपैतुमेनहिं ॥
॥ कबित्त ॥ वचन विलास में मिठास आइ बासकरै हरै हृदय रोगभोग
मानैं जे जियारीके । नयेई जे जातजाति बातन सुहात नेकु पुलकत
गात दृग धाराजल न्यारीके ॥ रूपगुण मातेदेह नाते जितेहोतें
होत सोतज्यों सलिल मन मिलत जियारीके । और सब संग
हम संगकेसमान किये सोईसतसंग रंग बोरै लाल प्यारीके ॥३॥ ४ ॥
सवहीतेबड़ी क्षिति क्षितिहूते बड़े सिंधु सिंधुहूते बड़े मुनि वारिधि अचैरहे
तिनहूते बड़े नभ तामें मुनिसे अनेक तारा अरु दारा येन सवयन छ्वैरहे
तिनहूंते बड़े पग वावन बढ़ाये जव ताहीकी उँचाई देखि तीनोंलोक नैरहे।
तिनहूंमें बडे संत साहिब अगममेंगम ऐसे हरि बड़े ताके हृदय घर कैरहे५॥

नाभाजूकोवर्णनम् ॥ जाकोजोस्वरूपसोअनूपलैदिखाइदियोकि
योयोंकवित्तपटमिहीमध्यलालहै । गुणपैअपारसाधुकहैंआंकचारि
हीमेंअर्थविस्तारिकबिराजटकसारहै ॥ सुनिसंतसभाझूमिरहीअलि
श्रेणीमानों घूमिरहीकहैं यहकहाधौंरसालहै सुनहेअगरअबजानैमैं
अगरसही चोवाभयेनाभासोसुगंधभक्तिमालहै ॥ ७ ॥

चारहीमें ॥ छप्पय ॥ कहा न सज्जन नवत कहा मुनि गोपी मोहित ।
कहा दासको नाम कवित में कहियत कोहित ॥ को प्यारो जगमाहिं

कहा क्षिति लगेआवे। को वासरही करे कहा संसारहि भावै ॥ कहि काहि देखि कायर कँपत आदि अंतको है शरन ॥ यह उत्तर केशवदास दिय सबै जगत शोभाधरन ॥ १ ॥ कवित्त ॥ चतुर विहारीजू पै मिलि आईं वालासात मांगति हैं आजु कछु हमको दिवाइयै। गोदलै होफूलदै हौ नाकहिपहिराइ मोती पाननकी पातरि हुताशनहूं लाइये ॥ ऊंचेसे अवासके झरोखा वैठाइ येजू मेरीसेज श्यामआजु रतिपति ध्याइये ग्वालसमुझाइवेको उत्तर सब दीन्हचोंएक उक्त विशेषभांति वारी नहीं आइ ये ॥ २ ॥ श्लोक ॥ कोदुराग्रहमोहाय काप्रियामुरविद्विषः ॥ पदंप्रश्न वितर्केकिं कोदंतश्छदभूषणम् ॥ जसवंतसिंहको रानीनेसिंगरफको सालिख्यौ ॥ तामें लालसावांच्यो जैसे व्रजसुंदरीने पातीलिखी ॥ दोहा ॥ तर झुरसी ऊपर गरी, कज्जलजल छिरकाइ। पिय पाती विनही लिखी वांची विरह वलाइ ॥ ३ ॥ दृष्टांत गुलावको औ गुलालाको ॥ ४ ॥

भक्तमालस्वरूप ॥ वड़ेभक्तमाननिशिदिन गुणगानकरैं हरैंजग पापजाप हियो परिपूरहै। जानिसुखमानिहरिसंतसनमानसचें वचे ऊजगतरीतिप्रीतिजानीमूरहै ॥ तऊदुराराध्यकोऊकरोकैअराध्य सकैसमझो नजातमनकंपभयोचूरहै। शोभिततिलकभालमालउ रराजैऐपैविनाभक्तिमालभक्तिरूपअतिदूरहै ॥

मूलमंगलाचरण ॥दोहा॥ भक्तभक्तिभगवंतगुरु चतुरनामवपुएक॥ इनकेपदवंदनकरै, नाशैविघ्न अनेक ॥ १ ॥

भक्तिरूप अतिदूरहै ॥ भागवते ॥ तत्कथ्यतांमहाभाग यदिकृष्णकथा श्रयः ॥ अथवास्यपदांभोजमकरंदलिहांसताम् ॥ १ ॥ भक्तभक्तिमंगलाच रण तीनि प्रकार वस्तु निर्देशात्मक गीतगोविन्दे ॥ मेघैर्मेदुरमम्बरंवनभु वः श्यामास्तमालद्रुमैर्नक्तंभीरुरयंत्वमेवतदिमं राधेगृहं प्रापय ॥ इत्थंनन्द निदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंजद्रुमं राधामाधवयोर्जयंतियमुनाकूलेरहः

केलयः ॥ नमस्कारात्मकं ॥ किरातहूणांध्रपुलिंहपुष्कसा आभीरकंकायवनाःखसादयः । येन्येचपापायदुपाश्रयाश्रयाच्छुद्ध्यंतितस्मैप्रभविष्णवेनमः॥ ॥ २ ॥ आशीर्वादात्मकं ॥ नृसिंहपुराणे ॥ यःस्तंभाद्गर्जमानो गगडगडगडड्भालचंद्रार्द्धदंष्ट्रोव्योमोद्भ्रूर्व्याप्यमानो जजडजड्जडत्साध्यमानःसटाभिः॥ दंष्ट्राभिःखादमानः ककटकटकटत्तर्जमानोसुरेंद्रं निष्क्रांतोहास्ययुक्तो गगहगहगहत्पातुवः श्रीनृसिंहः ॥ ३ ॥ वपुएक श्लोक ॥ वैष्णवोममदेहस्तु तस्मात्पूज्योमहामुने ॥ अन्ययत्नंपरित्यज्य वैष्णवान्भजसुव्रत ॥ ४ ॥ भक्ति कैसे तैसे फूलमें सुगंध ॥

टीकाविशेषलक्षण ॥ हरिगुरुदासनिसोंसांचोसोई भक्तसहीगही एकटेकफेरिउरतेनटरीहै । भक्तिरसरूपकोस्वरूपयहैछविसारचारुहरिनामलेतअँशुवनझरीहै ॥ वहीभगवंतसंतप्रीतिकोबिचारकरै धरै दूरिईशताहू पांडवनसोंकरीहै । गुरुगुरुताईकीसचाईलैदिखाईजहां गाईश्रीपैहारीजूकीरीतिरंगभरीहै ॥ २ ॥

मूल ॥ मंगलआदिविचारिरह्योवस्तुनऔरअनूप । हरिजनको यशगावतहैं, हरिजनमंगलरूप ॥ २ ॥ सबसंतनिर्णयकियोमाथि, श्रुतिपुराणइतिहास । भाजिबेकोदोऊसुघर,कैहरिकैहरिदास ॥ श्रीगुरुअग्रदेवआज्ञादई, भक्तनिकोयशगाइ ॥ भवसागरकेतरनको, नाहिनऔरुउपाइ ॥ ४ ॥

हरिगुरु दासनिसों सांचो । पटनाकी बाईसे रगटको आमिल लाहौर को सुदर्शन खत्री को दृष्टांत ॥ कवित्त ॥ शोचरूप सागरमें सने रघुराई कहैं लंक यह देन को न लगै कछुघात है ॥ कौन या विभीषणको राखै शोंकि रावण सों जीवजाल माछरी लौं परयो पछितात है ॥ लक्ष्मणपाछैं मैंहूंमरन परन लीनों जसराम बुरेक्यौंत बूड़ी बुधिजात है । जीवको न लालच वचनको विशेष उर जीव गये वचन बचैतो बड़ी बात है ॥ १ ॥ भक्त रसरूप को एकादशे॥ वाग्गद्गदा द्रवते यस्य चित्तं हसत्यभीक्ष्णं रुदति क्वचिच्च॥ विलज्य उद्गायाति नृत्यतेच मद्भक्ति युक्तो भुवनं पुनाति ॥ २ ॥

निमज्ज्योन्मज्जतांघोरे भवाब्धौ परमायणम् ॥ संतोब्रह्मविदः शांता नौर्दृढाविनिमज्जताम् ॥ ६ ॥

टीकाआज्ञासमयकी ॥ मानसीस्वरूपमेंलगेहैंअग्रदासजवैकरतवयारनाभामधुरसँभारसों । चढ़्योहोजहाजपैजुशिष्यएकआपदामें करेउध्यानखिच्यौमनछुट्योरूपसारसों ॥ कहतसमरथगयोवोहितवहुतदूरि आवो छविपूरि फिरिढेरेताहीढारसों ॥ लोचनउघारिकै निहारिकह्यो बोल्यौकोनवही जौनपाल्योसीतदैदैसुकुवारसों ॥ १७ ॥

मानसी स्वरूप मैं ॥ तापै भूतको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ यह मन भूत समान है, दौरै दांत पसारि ॥ बांशगांठि उतरै चढ़ै, सब बलजावै हारि ॥ १ ॥ चल दल पत्र पताक पट, दामिनि कच्छप माथ ॥ भूत दीप दीपक शिखा यों मन वृत्य अनाथ ॥ २ ॥ सवैया ॥ चंचल जो मनकी गतिहै अलिरूप सुवन वनमें फिरियै । कुण्डल लोल कपोलन में अलकनि झलकनि चितमें धरियै ॥ बरवेंदी भाल रसाल दिये अधरनि में मोती थरहरियै । अलबेली लाल विहारिनिको दिन रैन निहारनिही करियै ॥ ३ ॥ मन है तो भली थिरकै रहितू हरिके पद पंजक में गिरितू । कवि सुन्दर जौन सुभाव तजै फिरिवोई करै तो इहां फिरितू ॥ मुरलीपर मोरपखा परह्वै लकुटी परह्वै भ्रुकुटी भ्रमितू । इन कुण्डल लोल कपोलनि में घनसे तनमें घिरिके रहितू ॥ ३ ॥ करत वयारि नाभा जूने विचारी यह सुख कैसे मिलै ॥ टहलते मिलै दृष्टांत मरजिया को ॥ ४ ॥ सभार सौ क्योंकि मानसी ऐसी कोमल है सो वयारि की चोट लगै ॥ ५ ॥ सारसौ ॥ कवित्त ॥ कंचन जटित भूमि सुरतरु रह्यो भूमि तापर सिंहासन सुखासन विछायो है । अष्टदल कमल अमल रघुनाथ तहां अंग अंग मानो कोऊ रंग झरलायो है ॥ कुण्डल करणकर कंकण मुकुट कटि किंकिणी कि धुनि सुनि मन भरमायो है । चंपेके चमेलीके अरु कुंद मंदार के सुहारनि में हारिके विचारि विसरायो है ॥ ६ ॥

अचरजदयोनयोयहांलौंप्रवेशभयो मनसुखछयोजान्योसंतनप्र-

भावको। आज्ञातबदईयहभईतौपैसाधकृपाउनहींकोरूपगुणकहोहि-येभावको ॥बोल्योकरजोरियाकोपावतनओरछोरगाऊंरामकृपानहीं पाऊंभक्तिदावको। कहीसमुझाइबोईह्रदयआइकहैंसब जिन लैदि-खाइदईसागरमेंनावको॥११॥श्रीनाभाजीकीआदिअवस्था॥ हनूमानवंशहीमेंजनमप्रसिद्धिजाको भयो दृगहीनदीनसोनवीनवातधारिये। उमरिवरषपांचमानिकैअकालआंचमाता वनछोडिगईविपतिविचारिये ॥ कील्हाऔअगरताहीडगरदरशदियो लियोयोंअनाथजानि पूंछीसोउचारिये ॥ बड़ेसिद्धजललैकमण्डलसों सींचेनैनचैनभयो खुलेचषजोरीकोनिहारिये ॥ १२ ॥

रूप गुण ॥ श्लोक ॥ येकंठलग्नतुलसीनलिनाक्षमाला येबाहुदंडपरि-चिह्नितशंखचक्राः॥ तृतीयो॥ तितिक्षवःकारुणिकाःसुहृदःसर्वदेहिनाम्।अजा-तशत्रवःशांताःसाधवःसाधुभूषणाः ॥ १ ॥ माता ॥ सवैया ॥ बारिध तातहुते विधिसे सुत आदित सोम सहोदर दोऊ । रंभा रमा तिनकी भगिनी मघवा मधुसूदन से बहनेऊ॥ तुच्छ तुसार इतौ परिवार भयो शङ्खनको सहाय न कोऊ । सूखिसरोज रह्यो जल में सुखसंपतिमें सबको सबको रहि है ॥ २ ॥ पिता कोऊ कहै अरु कोऊ कहै सुत कोऊ कहै नाना कोऊ तन तीनि तापतयोहै । प्रभु कोऊ कहै जन कोऊ कहै मोल लयो बाबा अब कहौ ये जू काहि काहि दयोहै ॥ ब्रह्मभने जित तित चालि चालि रही सुख नहीं कहूं बहु हाथ गेंदभयो है । कियो हू तिहारो अरु पाल्योहू तिहारो ही हौं इन बीच लोगन ने बांटो बांटलियो है ॥ सींचे नैन ॥ एकादशे ॥ संतोदिशंतिचक्षूंषि बहिरर्कःसमुस्त्थितः । देवताबांधवाःसंतः संतआत्माहमेवच ॥ १ ॥

पाइँपरिआंशूआयेकृपाकरिसंगलाये कील्हआज्ञापाइमंत्रअगर सुनायोहै। गलतेप्रगटसाधुसेवासोंविराजमान जानिउनमानताही टहललगायोहै ॥ चरणप्रछालिसंतशीतसोंअनंतप्रीतिजानीरसरीति

तातेहृदय रंगछायोहै॥ भईबढ़वार ताकोपावैकौनपारावार जैसोभक्तिरूप सोअनूपगिरागायोहै ॥ १३ ॥

मंत्र अगर आगमे ॥ तापःपौंड्रंयथानाम मंत्रोयागश्चपंचमः ॥ एते च पंचसंस्काराःपुण्यस्यैकांतहेतवः ॥ २ ॥ जन्मनाजायतेशूद्रः संस्काराद्द्विजउच्यते । वेदाभ्याद्भवेद्विप्रः ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः ॥ ३ ॥ संतशीत नारद वाक्यम् ॥ उच्छिष्टलेपाननुमोदितोद्विजैः ॥ ४ ॥ छायो है ॥ कवित्त ॥ कोऊ यह कहै संस्कारहीसों भक्तहोत विना संस्कार भक्ति कैसे करि पाइये । जान्यो हम सार सब ग्रंथ अनुसार पुनि एपैहै विचार गूढ कहिकै सुनाइये ॥ महिमा अगाध साधु रसिक प्रवीननि की नेकु चितवत काम वन्धु उलटाइये । अंग अंग रंग सतसंग को प्रभाव अहो जैसे दत्तात्रेय वारमुखीहित छाइये ॥ ५ ॥ भई बढ़वारि ॥ दोहा ॥ मृतक चीर जूंठनि वचन, काग विष्ठजन मित्र॥शिव निरमायल आदिदै, येसव वस्तु पवित्र ॥ ६ ॥ शुकवाक्यम् ॥ किरातहूणान्ध्रपुलिंदपुल्कसाआभीरकंकायवनाः खशादयः ॥ येन्येचपापाःयदुपाश्रयाश्रयाच्छुशुध्यंतितस्मै प्रभविष्णवेनमः ॥ ७ ॥

मूल—जयजयमीनवराहकमठनरहरिवलवावन। परशुरामरघुवीर कृष्णकीरतिजगपावन । वुद्धकलंकीव्यासपृथूहरिहंसमन्वंतर । यज्ञऋषभहयग्रीवध्रुववरदैनधन्वंतर । वद्रीपतिदत्तकपिलदेवसनकादिककरुणाकरो। चौवीसरूपलीलारुचिर श्रीअग्रदासपदउरधरो॥ ८॥ टीका ॥ जितेअवतारसुखसागरनपारावार करैविस्तारलीलाजीवनउधारको। जाहीरूपमांझमनलागैजाकोपागैतहीं जागैहियेभाववहीपावैकौनपारको ॥ सवहींहैनित्यध्यानकरतप्रकाशैचित्त जैसेरंकपावैवित्त जोपैजानैसारको । केशनकुटिलता ईऐसेमीनसुखदाई अगरसुरीतिभाई वसौउरहारको॥ १४ ॥ मूल ॥ चरणाचिह्नरघुवीरके संतनसदासहाइका ॥ अंकुश अंवर कुलिश कमल यवधुजा धेनुपद। शंखचक्रस्वस्तिकजंबूफल

कलशसुधाह्रद ॥ अर्द्धचंद्रषटकोनमीनबिंदुऊर्ध्वरेखा । अष्टकोनत्रैकोन इंद्रधनुपुरुषविशेषा ॥ सीतापतिपदनितबसत एतेमंगलदायका । चरणचिह्न रघुवीरके० ॥ ६ ॥

जैजै मीन बराह ॥ मीन वराह क्यों गाये रामकृष्ण छोंडिके सब जातिके साधु गाये जाहिंगे कोऊ नीक चढावे याते पहिले हरिहीकी जातिकहों हौं क्योंकिकोऊ नाकचढावै सो अवहीं चढावो कृष्ण कीरतिको विषयहि सुनै ॥ १ ॥ तिते अवतार कोऊ कहै गुरुनने आज्ञादई संतनिकी इन्होंने प्रथम अवतार क्यों धरे । बटुआ पहिले आवे साधुपाछे आवै ॥ २ ॥ जाहीरूप जापै फकीर को औ लरिकाको दृष्टांत कोऊ कहै मीन बाराह कैसे सुखदाई सुंदर के संग ते सुंदर होइ केशन के संगते कुटिलता ॥ ३ ॥

टीका॥संतनिसहाइकाजधारेनृपराजरामचरणसरोजनिमें चिह्नसुखदाइये । मनहींमतंगमतवारोहाथआवैनाहीं ताकेलियेअंकुशलेधारेउहियेधाइये ॥ ऐसेहीकुलिशपापपर्वतकेफोरिबेको भक्तिनिधिजोरिबेकोकंजमनलाइये । जोपैबुधवंतरसवंतरूपसंपतिमें करिलेबिचारसवनिशिदिनगाइये ॥ १८ ॥

मनमतंगचतुर्थे।अयंत्वत्कथामृष्टपीयूषनद्यांमनोवारणः क्लेशदावाग्निदग्धः॥ तृषार्तोवगाढंनसस्मारदावंननिष्क्रामति ब्रह्मसंपन्नवन्नः ॥ १ ॥ सदा रहत नवरंगमें मन मतंग बिचर्‍योबुरो छप्पय ॥ धरना धर्म उखारि सरम साकरगहि तोरत । तरुणि करावल लखत शील सालहि गहि मोरत । विनय बाण नहिं वदत ज्ञानअंकुश नहिं मानत । गुरू महावत ताहि चाहि डारन उर आनत । लखिलेइबो व वारुण विषय कुन्दन मद यौवनजुर्‍यो । सदा रहत नवरंग में मनमतंग बिचर्‍यो बुरो ॥ २ ॥ कवित्त ॥ जनम जनम तोहिं जहाँ तहाँ घेरे फिर्‍यो मन मुट मरद गनीम तेरी पागीहै । कलह प्रसंगी पंचरंगी जंगी जोरावर अलख अनंगी सुउपाधि अनुरागीहै ॥ कैदकरि पायो मनी राम नरकाया बीच अबकै जो चूकैगो तो बडो तू अभागी है । सुमिरि

कोऊ सारपांच भूतनिको सरदार मारिऐसी मारतेरी भलीघात लगीहै ॥ ३ ॥ जवको हेतसुनो सदा दाता सब विद्या की सुमतिको संपतिको सुखकोनिवासहै। क्षणमें सभीतहोतकलिकी कुचालिदेखि ध्वजासों विशेष जानो अभयकोविश्वासहै ॥ गोपदसुह्वै है भवसागर सुनागर जन जोपै नेकु हियेको लगावै मिटै त्रास है। कपट कुचालि मायाजाल सब जीतिवेको अंबर को दरश कियो जोपै अनायासहै ॥ १ ॥ कामहू निशाचरके मारिवेको चक्रधऱ्यो मंगलकल्याण हेत स्वस्तिकहूमानिये। मंगलीक जंबू फल फलचारुहूकोफल मनकामनाअनेक पूरणहोध्यानिये ॥ कलशऔसु धाकोसरस हरिभक्तिभऱ्यो नैनपुट पानकीजै जीजै मनआनिये। भक्तिकोव-ढावैऔघटावैतीनितापनिको अर्द्धचंद्रधारणयेकारणहूं जानिये ॥ २॥ विषय-भुवंगवल्मीकतनमाहिं वसै दासको नडसैतातेयत्नअनुसऱ्योहै। मीनविंदु-रामचंद्रकीनोंवशीकरण प्राय ताहीते निकाय जनमनजातहऱ्यो है ॥ अष्ट-कोन त्रैकोन यंत्र किये जीतिवेको जियेजोईजानै जाके ध्यानउरभऱ्यो है। संसार सागरकोपारावारपावैनाहिंऊर्ध्वरेखादासनिकोसेतबंधकऱ्योहै ॥ ३॥ धनुपपदमाहिंधऱ्योहऱ्योशोकध्याननिको माननिकोमाऱ्यो मान रावणादिशा पिये।पुरुष जो विशेषपद कमलवसायोराम हेत अभिरामसुनोंश्याम अभिला पिये ॥सूधेमनसूधेवैनसूधीकरतूतिसब ऐसो जनहोइ मेरोयाहीतेजुराखिये। जोपैबुधवंतरसवंतरूपसंपातिमें करि लै विचार सब निशि दिन भाषिये॥४॥ दोहा॥दुखमेंतो सब कोउ भजे, सुखमें भजै नकोइ॥ जो सुखमें हरिको भजे, तो दुखकाहेकोहोइ ॥ ५ ॥ कवहुं न सुखमें हरिभजे, दुखमें कीने यादि॥ कहिकवीरवाजीवकी, कैसे लगै फिरादि ॥ ६ ॥ जो साहिवसों तू मिले साहिव मिले तो तोहिं ॥ विनाभजन मिलतोनहीं, सुखकाहूकेहोहिं ॥ ७ ॥ वसति हृदय जाके दया, रामहिं जानत जोइ। दयाराम पावततवे, दया राम की होइ ॥ ८ ॥

मूल ॥ विधिनारदशंकरसनकादिककपिलदेवमुनिभूप। नर हरिदासजनकभीषमवलिशुकमुनिधर्मस्वरूप ॥ अंतरंगअनुचरह

रिजूके जोइनकोयशगावै । आदिअंतलौंमंगलतिनकोश्रोतावक्तापावै ॥ अजामीलप्रसंगयहनिर्णयपरमधर्मकेजान । इनकीकृपाऔर पुनिसमझै द्वादशभक्तप्रधान ॥ टीका ॥ द्वादशप्रसिद्धभक्तराज कथाभागवत अतिसुखदाई नानाविधिकरिगायेहैं । शिवजूकोबात एकबहुधानजानैकोऊमुनिरससानैंहियोभावउरझायेहैं। सीताकेवियोगरामबिकलविपिनदेखि शंकरनिपुणसतीवचनसुनायेहैं । कैसेये प्रवीणईशकौतिकनवीनदेखो मनैहूंकरतअंगवैसेहूबनाये हैं॥ १६॥ सीताहीसोरूपवेषलेशहूनफेरफाररामजूनिहारिनेकमनमेंनआईहै ॥ तबंफिरिआइकैसुनाइदईशंकरको अतिदुखपाइबहुविधिसमुझाईहै। इष्टकोस्वरूपधारचोतातेतनुपरिहरचो परचोबड़ोशोचमतिअति भरमाईहै। ऐसेप्रभुभावपगेपोथिनमेंजगमगे लगेमोकोप्यारे यहबातरीझिगाई है ॥ १७ ॥

अनतरंग ॥ बाणासुरके युद्धमें महादेव कृष्णसोंलरे ॥ भागवते ॥ स्वयंभूर्नारदःशंभुःकुमारःकपिलोमनुः । प्रह्लादो जनकोभीष्मोबलिर्वैयासाकिर्वयम् ॥ २॥ निपुणपरमेश्वरका प्रेमकोस्वादनहीं जैसे पादशाहको फकीरीको नहीं ॥ नाटके ॥ यूयंकेवदनाथनाथकिमिदंदासोस्मिते लक्ष्मणः कोहंवत्सनुआर्यएवभगवान् आर्यश्चकोराघवः।किंकुर्मोविजनेवने तत इतोदेवी भृशं वीक्ष्यते कादेवीजनकाधिराजतनयाहाहाप्रिये जानकि ॥४॥ मनेहूं करत ॥ दोहा—ज्यों जगके राजानिको, भेद न जानै कोइ ॥ तासुअन्त क्यों पाइये, सबको दातासोइ ॥ ५ ॥

चलेजातमगउभैषेरेशिषदीठिपरेकरै परनामहिंपभक्तिलागीप्यारिये । पारवतीपूंछैकियेकौनकोजूकहौमोसों दीसतनजनकोऊतब सोउचारिये । बरषहजारदशबीतेतहां भक्तभयो नयोऔरहैहैदूजीठौरबीतेधारिये । सुनिकैप्रभावहरिदासनिसोंभावबढ़्यो रढ़्यो कैसेजातचढ़्योरंग अतिभारिये ॥ १८ ॥

टीका अजामीलकी ॥ धरचोपितुमातनामअजामीलसांचभये

अजामलरह्योछुटी तियाशुभजातकी । कियोमदपानसोसमानगहि दूरडारच्यो गारच्योतनवाही सोंजोकीन्होलैकैपातकी ॥ करिपरि हासकाहूदुपनैपठायेसाधु आयेवरदेखिबुद्धिआइगईसातुकी । सेवा करिसावधानसंतनिरिझाइलियोनारायणनामधरच्योगर्भवालवातकी

वरप हजार वावा नानक अरु मरदाने चेलाको दृष्टांत भागवते ॥ मुक्तानामपिसिद्धानांनारायणपरायणः । सुदुर्लभःप्रशांतात्मा कोटिष्वपि महा मुने ॥ १ ॥ नीतौ ॥ गिरौगिरौनमाणिक्यंमौक्तिकंनगजेगजे । साधवोन हिसर्वत्र चंदनंनवनेवने ॥ २ ॥ रंगचढ्यो भागवते ॥ वरमेकंवृणेथापि पूर्णात्कामाभिवर्पणात् । भगवत्युत्तमांभक्तिंतत्परेषुतथात्वयि ॥ ३ ॥ दोहा ॥ सयान ॥तनक नरहै विरक्तिता, लगै दगनिकी थाप। कहूंपूजा माला कहूं, कहुं वटुवा कहुं आप ॥ ४ ॥ करि परिहास तापै शिवजीको दृष्टांत ॥ ५ ॥ सातुकीभागवते । नह्यम्मयानितीर्थानिनदेवामृच्छिलामयाः॥ तेपुनंत्युरुकालेनदर्शनादेवसाधवः ॥ ६ ॥ सावधाननीते ॥ आत्मनो मुखदोषेण वध्यंते शुकसारिकाः । वकास्तत्र नवध्यते मौनं सर्वार्थसाधकम् ॥ ७ ॥ मोहजाल ॥ श्लोक ॥ अंगंगलितंपलितं मुंडंदशनविहीनं जातं तुंडम् ॥ वृद्धो याति गृहीत्वा दंडं तदपि न मुंचत्याशापिंडम् ॥ १ ॥

आइगयोकालमोहजालमेंलपटिरह्यो महाविकरालयमदूतदीदि वाइये ।वहीसुतनारायणनामजोकृपाकैदियो लियोसोपुकारिसुरआरतसुनाइये ॥ सुनतहीपारपदआयेताहीठौरदौरितोरिडारेपाशकह्यो धर्मसमुझाइये । हारेलैविडारेजोइपातिपैपुकारेकहीसुनोंव्रजमारे मति जावोहरिगाइये ॥ २० ॥ मूल ॥ मोचितवृत्तनित्ततहांरहौ जहांनारायणपदपारपद ॥ विष्वक्सेनजयविजयप्रवलवलमंगलकारी । नंदसुनंदसुभद्रभद्रजगआमेहारी ॥ चंडप्रचंडविनीतप्रणीतकुमुदकुमुदाक्षकरुणालय । शीलसुशीलसुसेनभावभक्तनप्रतिपालय ॥ लक्ष्मीपतिप्रीननप्रवीनभजनानंदभक्तानिहद । मोचितवृत्तनिततहांरहौ जहांनारायणपदपारपद ॥ ८ ॥

आरतभागवते ॥ सांकेत्यं पारिहास्यं वा स्तोभं हेलनमेव च ॥ वैकुंठनाम-ग्रहणमशेषाघहरं विदुः ॥ १ ॥ धर्मसमुझाइयै । एतेनैवेह्यघोनोस्यकृतंस्या-दघनिष्कृतिः ॥ यदानारायणायेतिजगादचतुरक्षरम् ॥ २ ॥ स्तेनःसुरापो मित्रध्रुब्रह्महागुरुतल्पगः॥स्त्रीराजपितृगोहंतायेचपातकिनोपरे ॥ ३ ॥ सर्वे-षामप्यघवतामिदमेवसुनिष्कृतम् ॥ नामव्याहरणंविष्णोर्यतस्तद्विषयामतिः। ॥ ४ ॥ अहोबतश्वपचोतोगरीयान्यज्जिह्वाग्रेवर्ततेनामतुल्यम् । तेपुस्तप-स्तेजुहुवुःसस्नुरार्याब्रह्मन्नूचुर्नामतुभ्यंहियेते ॥५॥ छप्पय ॥ कहा ब्रत नेम गजेंद्र कियो कहा वेद पुराणपढी गणिका । अजामील ने कौन अचार कियो निशि वासर पान पुरापपिका ॥ कहा जप जाप बधिक्क कियो सोहुतो घनजीवनकोहनिका । तुलसी अघ पर्वत कोटिजरे हरिनाम हुताशनको कनिका ॥ ६ ॥ हरिगाइयै दूतनि प्रति । नामोच्चारणमाहात्म्यं हरेः पश्यत पुत्रकाः । अजामिलोपि येनैव मृत्युपाशादमुच्यत ॥ ७ ॥

टीका ॥ पार्षदमुख्यकहसोरहसुभावासिद्धिसेवाहीकीऋद्धिहियेराखीबहुजोरिकै । श्रीपतिनरायणकेप्रीननप्रवीणमहाध्यानकरैजन-पालैभावहगकोरिकै ॥ सनकादिकादियोशापप्रेरिकैदिवायोआपप्र-गटह्वैकह्यो पियोसुधाजिमिघोरिकै । गहीप्रतिकूलताईजोपैयहैमन-भाई यातरीतिहदगाईधरीरंगबोरिकै ॥ २१ ॥ मूल ॥ हरिबल्लभस बप्राथौंजिनचरणरेणुआशाधरी ॥ कमलागरुड़सुनंदआदि षोड़श-प्रभुपदराति । हनूमंतजाम्बवंतसुग्रीवाविभीषणशवरीखगपति ॥ ध्रुव उद्धवअंबरीषबिदुर अक्रूरसुदामा । चंद्रहासचित्रकेतुग्राहगजपांडव-नामा ॥ कौषारवकुंतीबधूपटऐंचतलज्जाहरी । हरिबल्लभसबप्राथौं जिनचरणरेणुआशाधरी ॥ ९ ॥

प्रेरिकै दिवायो ॥ नीते ॥ लक्ष्मीवन्तो न जानंति प्रायेण परवेदनाम् । शेषे धराभराक्रांते शेते लक्ष्मीपतिस्स्वयम् ॥ १ ॥ पियोसुधाजिमि दोहा ॥ तुम मति भूल्यो, भूलनो सुनि मनमोहन मित्त ॥ भूलेपर भूलों नहीं, तोहीं-सुमिरों नित्त ॥ २ ॥ प्रतिकूल ताई ॥ कवित्त ॥ नरक जो देहि तौन

निदरि विमुख हूजै स्वर्ग जो देहि तौन हर्ष सराहिये । रद्दकरिडारैतौन कीजिये कलेश जिय करै जो कबूल तौन फूलिकै उमाहिये ॥ जिहीअंग रंगहोइ तिही अंग रंग हूजै येदिल सनेही नेही नीकेकै निबाहिये । चित्त क्योंन चाहमरो आप चाह चूल्हे परो प्रीतम जो चाहै चाह सोई चाह चाहिये ॥ ३ ॥ दोहा ॥ दियो सुशीश चढाइलै, अच्छी भांति अपेर ॥ जासों सुख चाहत लयो, ताके दुखहि न फेर ॥ ४ ॥ चरणरेणु ॥ श्लोक ॥ रहूगणोतत्तपसा नयाति नचेज्यययानिर्वपणाद्गृहाद्वा ॥ नच्छंदसानैवजलाग्निसूर्याद्विनामहत्पादरजोभिषेकम् ॥५॥ लज्जाहारि ॥ दोहा ॥पटऐंचत मटकी नहीं, भुजवल भई अनाथ ॥ तुलसी कीन्हों ग्यारहों, बसन रूप रघुनाथ ॥ ६ ॥

॥ टीका ॥ हरिकेजेवल्लभहैंदुर्ल्लभभवनमांझ तिनहींकी पदरेणुआशाजियकरीहै । योगीयतीतपीतासोंमेरोकछुकाजनाहिं प्रीतिपरतीतिरीतिमेरीमतिहरीहै । कमला गरुड़जाम्बवानसुग्रीवआदि सबैस्वादरूपकथापोथिनमें धरी है । प्रभुसोसचाईजगकीरतिचलाईअतिमेरेमनभाई सुखदाईरसभरीहै ॥ २२ ॥ टीकाहनूमानजूकी ॥ रतनअपारक्षीरसागरउधारकिये लिये हितचायकैबनाइमालाकरीहै । सबसुखसाजरघुनाथमहाराजजूके भक्तसोंविभीषणजूआनिभेंटधरीहै । सभाहीकीचाहअवगाहहनूमानगरे डारिदईसुधिभईमतिअरबरीहै । रामबिनकामकौनफोरिमणिदीनोडारिखोलितुचानामहौंदिखायोबुद्धिहरीहै ॥ २३ ॥

डारिदई ॥ रामायणे ॥ कंकणे नैव जानामि नैवजानामि कुण्डले ॥ नूपुरावेव जानामि सदा पादाभिवंदनात् ॥ १ ॥ छप्पय ॥ राम चरणतजि आन रति गजताजि मनु गद है चढ़ो ॥ वहै नीच वहै पोच वहै आतम बड़ पापी । वहै अविद्या मूल वहै गुरुद्रोहि सुरापी । वहै दीन मतिहीन वहै नरकनि में नामी । वहै कृतघ्नी कुटिल वहै बड़ लोन हरामी । अगर कहैं ताहिगति नहीं तीनि तापसो हियदढ़ो । रामचरण तजि ॥ २ ॥ फोरि मणि दीनी । कि कंठभूषणं ३ खोलित्वचा ॥ कवित्त ॥ न्यारी न्यारी

दीसै जैसे कागजकी चीरीपर मसी की डँडीरी ऐसी मजूनकी पांसुरी । गरि गयो गात येरी पात सो पुरानो हैकै पान पान रही परयो लेतहै उसासुरी । तेरी ये तलब तेरे तालवदिवानोको है देखत हवाल वाको आवत है आंसुरी । लेरी अब लैलै उरलाइ लेरी अपनी सों फेरिप छिते है जब माटी मिलै मांसुरी ॥ ४ ॥

टीकाविभीषणजूकी ॥ भक्तिसोंविभीषणकीकहैऐसो कौन जनऐपैकछुकहीजातिसुनो चितलाइकै । चलतजहाजपरअटकिवि- चारिकियोकोऊअंगहीननरदियो लैबहाइकै । जाइलग्योटापूताहि राक्षसिनिगोदलियो मोदभरिराजापासगयेकिलकाइकै । देखतसिंहा- सनतेंकूदिपरेनैनभरे याहीकेअकाररामदेखैभागपाइकै ॥ २४ ॥ रचिसोंसिंहासनबैठाये ताहीक्षणराक्षसनरीझिदेतमानी शुभघरीहै॥ चाहतमुखारविंदअतिहीअनंदभरि ढरकतनैन नीरटेकिठाढ़ो छरीहै । तऊनप्रसन्नहोतक्षणक्षणज्योतिन्हजियेकृपालमतिमेरी अतिहरीहै ॥ करोसिंधुपारमेरेयहीसुखसारदियेरतनअपारलाये वाहीठौरफरीहै ॥२५॥ रामनामलखिशीशमध्यधरिदियोयाकोयही जलपारकरैभावसांचोपायोहै । ताहीठौरबढ़्योमानोनयोऔररूपभ- योगयोजोंजहाजसोईफेरिकरिआयोहै ।लियोपहिंचानिपूंछेउसबसोब- खानकियोहियोहुलशायोसुनिविनयकैचढ़ायो है ॥पऱ्योनीरकूदिने- कुमायानेप्रवेशकियो हऱ्योमनदेखिरघुनाथनामभायो है ॥ २६ ॥

दियो लैबहाइ । नीते । वनानि दहतोवह्नेः सखा भवति मारुतः ॥ स ए- व दीपनाशाय कृशे कस्यास्ति सौहृदम् ॥ १ ॥ अश्वं नैव गजं नैव सिंहं नैव च नै- व च । अजापुत्रं बलिं दद्याद्देवोदुर्बलघातकः ॥ २ ॥ जाइ लग्यो ॥ दोहा ॥ कबिरातेरेनामपद, कियो सुराई लौन ॥ जिन्हैंचलायो पंथतुम, तिन्हैं भुलावै कौन ॥ ३ ॥ राम नाम श्लोक ॥ राम त्वत्तोधिकं नाम इति मे नि- श्चिता मतिः ॥ त्वया तु तारिताऽयोद्ध्या नाम्ना च भुवनत्रयम् । ४ ॥ रामनामके-

लिखे तरेपाषाणरे । दुष्टअजामिलतर्‌यो नामते जानरे । सबतजिभजिहरि नाम सुनो सब जंतरे । नामविना है नरक सुनो भाई संतरे ॥ ५ ॥

शबरीजीकीटीका ॥ वनमेंरहतिनामशबरीकहतसबबाहतटहल साधुतनन्यूनताईहैं । रजनीकेशेषरूपिआश्रमप्रवेशकियेलकरीन बोझधरिआवे मनभाईहै । न्हाइवेकोमगझारिकांकरनिवीनिडारि वेगिउठिजाइकोऊजातनलखाईहै । उठतसवारेंकहैकौनधोंबहारिगयो भयोहियेशोचकोऊबडोसुखदाईहै ॥ २७ ॥ बडेईअसंगवे मातंगरस रंगभरेधरेदेखिबोझकह्योकौनचोरआयोहै । करैनितचोरीअहोगहो वाहिएकदिनविनायापैंप्रीतिवाकीमनभरमायोहै। वैठेनिशिचौकीदेत शिष्यसबसावधान आइगईगहिलईकांपे तननायोहै । देखतहीऋ पिजलधारावहीनैननिते वैननिसोंकह्योजातकहाकछुपायोहै ॥२८॥

बनमें रहत दोहा॥ लाल पनन सों जेभरे, उघरे डांक लगाइ॥ कर्णफूल झूलतरहैं काननहीं में आइ॥१॥ सवैया ॥ जाइये न जहां तहां संगतिकु संगतिहै कायरके संगशूरभागिहैपै भागिहै । फूलनिके बास वश फूलनि की वासहोति कामिनीके संग काम जागिहै पै जागिहै । घरवसेघरवसेघरमें वैरागकहा मायामोहममतामें पागिहै पैपागिहै । काजर की कोठरीमें कैसोहू सयानो वैठे काजर की एकरेख लागिहै पै लागिहै ॥ २ ॥ निशि बासर वस्तु विचारि करै सुख सांचहिये करुणाधनहै । अघनिग्रहसे ग्रह धर्म कथा सुपरिग्रहसाधनको गन है । कहि केशव भीतरयोगजगै अति ऊपर भोगनि में तनहै । मन हाथसदा जिनके तिनको वनही घरुहै घरुही बनहै ॥ ३ ॥ रसरंगभरे ॥ रसो वै स रसं ह्येवायं लब्ध्वानंदी भवति इति श्रुतेः । कोइकहै विरक्तहैके रसरंगमें कैसेभरे जसे शुकदेवजी चीरहरणकी लीलादुलराइ के गाई ॥ ४ ॥

डोविहूनसोंहींहोतिमानितनगोतछोतपरी जायशोचसोतकैसेके निकारिये । भक्तिकोप्रतापरूपिजानतानिपटनीकेकेऊकोटिविप्रता ईयापैवारिडारिये । दियोवासआश्रममेंश्रवणमैनामादियो कियोसु-

निरोषसवैकीनीपांतिन्यारिये । शवरीसोंकह्योतुमरामदरशनकरौ मैंतौपरलोकजातआज्ञाप्रभुपारिये ॥ २९ ॥ गुरुकोवियोगहियेदा रुणलैशोकदियोजियोनहींजाततऊरामआशलागीहै । न्हाइवेको घाटनिशिजातिहीवुहारिसब भईयों अवारऋषिदेखिव्यथापागीहै । छुयोगयोनेककहूंखीजतअनेकभांतिकरिकै विवेकगयोन्हानयहभा- गीहै । जलसोंरुधिरभयोनामाक्रमभरिगयोनयोपायोशोचतौहूजानै नअभागीहै ॥ ३० ॥ लावेवनबेरलागीरामकीऔसेरभल चाखैधरि- राखैफिरमीठेउनयोगहैं। मारगमेंरहैजाइलोचनबिछाइकभूंआवैंरघुरा- इदृगपावैंनिजभोगहैं ॥ ऐसेहीबहुतदिनबीतेमगजोवतही आइगयेऔ चकसुमिटेसबशोगहैं । ऐयैतन नूनताईआई सुधिछिपीजाइ पूछै आप शवरीकहांठाढेसबलोगहैं ॥ ३१ ॥

भक्तिकोप्रतापइतिहास ॥ शिवलिंगसहस्राणि शालग्रामशतानि च ॥ द्वादश कोटयो विप्राः श्वपचंत्वेकवैष्णवम् ॥ १ ॥ हरिभक्तिलतिकायाम् ॥ व्याधस्याचरणं ध्रुवस्य च वयो विद्या गजेंद्रस्य का। कुब्जायाःकिमु नाम रूप- मधिकं किं तत्सुदाम्नो धनं ॥ वंशः को विदुरस्य यादवपतेरुग्रस्य किं पौरुषं भक्त्या तुष्यति केवलं न तु गुणैर्भक्तिप्रियो माधवः ॥ २ ॥ नामदियो॥ पंच- रात्रे । यावद्गुरुर्न क्रियते सिद्धिस्तावन्न लभ्यते ॥ तस्माद्गुरुर्हि कर्त्तव्यो नैव सिद्धिर्गुरुं विना ॥ ३ ॥ अभागी है ॥ छप्पय ॥ मत्सर क्रोध मिलि रह्यो गर्व गिरिपरचो जुगाजे ॥ क्रोध गोद हिय मध्य वृन्द मद मदन विराजै॥ लोभ भँवर हृदकमलकोश भीतर तिहि आसन । कपट झूंठ झिलि मिलै शिष न मानत विश्वासन ॥ मन मोह कोह कंदर परचो अपरस ह्वै भीटन डरै । भनि लाल बाल हरिवंशहित बिन प्रसाद तमको हरै ॥

पूंछिपूंछिआयेतहांशवरीस्थानजहांकहां वहभागवतीदेखौंदृग प्यासेहैं । आइगईआश्रममेंजानिकैपधारेआपदूरहीतेसाष्टांगकरी चषभासेहैं । रवकिउठाइलईव्यथातनदूरगईनई जैननरिझरीपरे प्रेमपासेहैं । वैठेसुखपाइफलखाइकैसराहेवेइकह्योकहाकहौंमेरेमगदु

खनाशे हैं ॥ ३२ ॥ करतेहैंशोचसबबैठेऋषिआश्रममें जलकोबिगा रसोसुधारिकैसेकीजिये । आवतसुनेहैंवनपथरघुनाथकहूंआवैंजबक हैंयाकोभेदकहिदीजिये । इतनेहींमांझसुनीशवरीकेविराजेआनिगयो अभिमानचलोपगगहिलीजिये । आयेखुनसाइकहीनीरकोउपाइक हो गह्योपगभीलिनीकेछुवौस्वच्छभीजिये ॥ ३३ ॥

इतनेही ॥ नीते ॥ राज्यहीना नराः सर्वे बुद्धिहीना भवंति हि ॥ बुद्धिहीना नराः सर्वे राज्यहीना भवंति हि ॥ १ ॥ खाइकै ॥ पद ॥ मीठेमीठेचाखि चाखि बेरलाई भीलनी । कौनसी अचारवती नहीं रूप रंग रती जातिहू में कुलही न बड़ी है कुचीलनी ॥ जूठे फल खाये राम सकुचे न भावजानि तुमतो प्रभु ऐसी कीनी रसकी शीलनी । कौनसी तपस्या कीनी बैकुंठ पदवी दीनी विमानमें चढ़ीजात ऐसी है सुशीलनी ॥ सांची प्रीति करे कोई अमरदास तरैसोई प्रीतिहीसो तरिगई गोकुल अहीरनी ॥ २ ॥ कही नीर नीर॥ नीते। शठं प्रति शठं कुर्यादादरं प्रति चादरम् ॥ त्वया च लुचिते पक्षे मया ते मुण्डितं शिरः ॥ ३॥ तापै तोताको अरु वेश्याको दृष्टांत ॥ ४ ॥ स्वच्छ भीजिये ॥ दोहा ॥ अधिक बढ़ावत आपतें, जन महिमा रघुवीर ॥ शवरी पद रज परशते, शुध भयो सरिता नीर ॥ ५ ॥ हरि भगतनिको मिलत हैं, भगवतकें यशहाथ ॥ हृदय वीचको फलत है, समुझो आपहि आप ॥ ६ ॥ अभिमानी ऋपिछोंडि शवरीके गये ॥

जटायुकीटीका ॥ जानकीहरणकियोरावणमरणकाजगुनिसीता वाणीखगराजदौरिउआयोहै । बड़ीपैलड़ाईलीनीदेहवारिफेरिदीनी राखेप्राणरामसुखदेखिबोसुहायोहै ॥ आयेआपगोदशीशधारिदृग धारसीच्यो दईसुधिलईगतितनहूंजरायोहै । दशरथवतनानकियो जलदानयहअतिसनमानानिजरूपधामपायोहै ॥ ३४ ॥ अंबरीपजूकीटीका ॥ अंबरीपभक्तकीजुरीसकोउकरैऔर वड़ोमतिबौरीकहूं जातनाहिमापिये । दुर्वासाऋपिशिपसुनीनहींकहूंसाधुमानिअपरा धशिरजटाखेंचिनाखिये ॥ लईउपजाइकालकृत्याविकरालरूपभूप

महाधीररह्योठाढ़ोअभिलाषिये । चक्रदुखमानिलैकृशानु तेजराख करीपरीभीरब्रह्मणकोभागवतसाखिये ॥ ३५ ॥

गोद शीश ॥ सवैया ॥ श्री रघुनाथजू लै खग हाथ निहारैं औ नैननि ते जलडारैं। टूकह्वै जात हैं सीता विथाके सोयाकी सनेह कथाके विचारैं ॥ तजि मोहिं चले लगि नीको तुम्हैं हमैं सौंह तिहारी है संग तिहारैं। योंकहि राम गरो भरिफेरि जटायुकी धूरि जटान सों झारैं॥ १ ॥ लईगति दोहा ॥ मुये मरत मरिहैं सकल, घरी पहरके बीच॥लही न काहू आजुलौं, गीधराजकी मीच ॥ २ ॥ दई सुधि ॥ रघुबर विकल विहंग लखि सो बिलोकि दोउवीर ॥ सियसुधि कहि सिय राम कहि, देह तजी मतिधीर ॥ ३ ॥ घरीजनावत हीरहैं, घरीभजे नहिंराम। घरीभई सब पुण्यकी, खरी सुमति बेकाम ॥ ४ ॥ रीखकोऊ ॥ नवमे ॥ स वै मनः कृष्णपदारविंदयोर्वचांसि वैकुंठगुणानुवर्णने । करौ हरेर्मंदिरमार्जनादिषु श्रुतिं चकाराच्युत सत्कथोदये ॥ ५॥ मुकुंदलिंगालयदर्शने दृशौ तद्भृत्यगात्रस्पर्शेंगसंगमम् ॥ घ्राणंचतत्पादसरोजसौरभेश्रीमत्तुलस्यारसनातदर्प्यते ॥ ६ ॥ पादौहरेःक्षेत्रपदानुसर्प्पणेशिरोहृषीकेशपदाभिवंदने॥कामंचदास्येनतुकामकाम्ययायथोत्तमश्लोकगुणाश्रयारतिः ॥ ७ ॥

भाज्योदिशादिशासबलोकलोकपालपासगयो नयोतेजचक्रचून कियेडारेहैं। ब्रह्माशिवकहीयहगहीतुमटेवबुरीदासनिकोभेदनहींजान्योवेदधारेहैं। पहुँचेवैकुंठजाइकह्योदुखअकुलाइ हायहायराखौप्रभु खरौतनजारे हैं । मैंतो हौंअधीनतीनिगुणकोनमानमेरे भक्तवात्सल्यगुणसबहीकोढारे हैं॥ ३६ ॥ मोकोअतिप्यारेसाधुउनकीअगाधमतिकरौअपराधतुमसह्योकैसेजातहै । धामधनवामसुतप्राणतनत्याग करेढरे मेरीओरनिशिभोरमोसोंबातहै। मेरेउनसंतबिनुऔरु कछुसांचीकहौंजाओवाहीठौर यातेमिटैउतपातहै । बड़ेईदयालसदादीनप्रतिपालकरैं न्यूनतानधरैंकहूंभक्तिगातगातहै ॥ ३७ ॥

ब्रह्मावाक्य ॥ लक्ष्मीःप्राणाधिकाशश्वन्नास्तिकापिततोधिका ॥ भक्ता-

प्रद्वेष्टिस्वयंसाचेत् तूर्णंत्यजतितांविभुः ॥ १ ॥ शिववाक्य ॥ महतिप्र-
लयेब्रह्मन्ब्रह्मांडेपिजलप्लुते ॥ नतत्रनाशोभक्तानांसर्वेषांचविशिष्यते ॥
॥ २ ॥ हाय हाय ॥ पद ॥ हरि भक्तनिसों गर्व न करिबो । यह अप-
राध परम पदहूते उतरि नरक में परिबो ॥ गजसिंहासन अश्वऊंट चढि
भवसागर नहिंतरिबो । हमकुलवंत धनीये भिक्षुक नीचनमनमें धरिबो ॥
यहमत भली नहीं आपुन वड नर कूकर अनुसरिबो । हरिसेवीजसगाइक
कोलघु मानत नेकुनडरिबो । अपनेदोष निपटआधेपर दोपकुतर्कनि जरि-
बो ॥ वृथा चातुरीवाद जनम ते भले गर्भमें गरिबो । खानपान ऐडान
भले जो वदन पसारि न मरिबो ॥ श्री कृष्णदास हित धरि विवेक चित
साधन संग उवरिबो ॥ ३ ॥ आधीन नवमें ॥ अहं भक्तपराधीनोह्यस्वतंत्र
इवद्विजः ॥ साधुभिर्ग्रस्तहृदयो भक्तैर्भक्तजनप्रियः ॥ ४ ॥ धामधन भाग-
वते॥ येदारागारपुत्राप्तान्प्राणान्वित्तमिदंपरम् ॥ हित्वामांशरणं याताःकथं
तांस्त्यक्तुमुत्सहे ॥ ५॥ नाहमात्मानमाशासे मद्भक्तैःसाधुभिर्विना॥श्रियंचा-
त्यंतिकींब्रह्मन् येषांगतिरहंपरा ॥ ६ ॥ तीननामशरणागतपालक आरत-
नाशन ब्रह्मण्यदेव ॥ भलोगर्भमें गरिबो ॥ ७ ॥

ह्वैकरिनिराशऋषिआयोनृपपासचल्योगर्वसोंउदासपग गहैदीन
भाष्योहै । राजालाजमानिमृदुकहिसनमानकरचोढरचोचक्रऔर
करजोरिअभिलाष्योहै । भक्तिनिशिकामकहूंकामनानचाहत है
चाहत है विप्रदूरिकरो दुखचाख्योहै । देखिकैविकलताईसदासंत-
सुखदाईआई मनमांझसबैतेजढांपिराख्योहै ॥ ३८ ॥ एकनृपसुता-
सुनिअंवरीपभक्तिभावभरचोहियभावऐसोवरकरिलीजिये। पितासों
निशंकह्वैकेकहीपतिकियेमैंहीं विनय मानिमेरी वेगिचिट्ठीलिखिदी-
जिये । पातीलैकैचल्योविप्रछिप्रवहिपुरी गयोनयोचावजान्योऐपैके
सेंतियाधीजिये । कहो तुमजाइरानीवैठीसत आइमोको वोल्योनस-
हाइप्रभुसेवामांझभीजिये ॥ ३९ ॥

गर्भसोंउदास॥ पद ॥ हमभक्तनिसोंभूलिबिगारी । जान्योंनहीं

इतोबलै इनको ये हरिके अधिकारी । कमल पराग भँवरभल जानै वहे बासना विहारी । निपट नालके निकट मेडुका भयो कीचकोचारी । काम क्रोध मद अतिशय जड़मति तप बल बढ़यो विकारी । अंगीकारकिये हरि इनको यह कछु हम न विचारी । दुर्वासा अम्बरीष आगे करी दीनताभारी । अग्रदास अभिमानपोटरी ऋषिशिरते तबडारी ॥ १ ॥ निशंक ह्वैकै ॥ सवैया ॥ चन्दन पंक गुलावको नीर सरोजकी सेज उठाइधरौरी । तूलभयो तनजात जरेउ यह वैरी दुकूल उतारि धरौरी । शंभुजू झूंठेसवै उपचारयो माह तुषारके भारपरौरी । लाजकेऊपर गाज परै ब्रजराज मिलैं स्वइलाजकरौरी ॥ २ ॥ जरिजाहु जोलाज सो काजबिगारे ॥ ३ ॥ तियाधीजियेतियाधीजियेके सरानी की लौंडी पण्डितको दृष्टान्त चोरसाहूकारको दृष्टान्त ॥ दो व्याहाकान्याय ॥ नखीनांचनदीनांचशृंगिणांशस्त्रपाणिनाम् । विश्वासोनैवकर्त्तव्यः स्त्रीषुराजकुलेषुच ४ दृष्टांतनानकशाहको ॥ ४ ॥

कहीनृपसुतासोंजोकीजियेयतनकौनपौनाजिमिगयो आयोकामनाहींवियाको । फेरिकैपठायोसुखपायोमैंतौजान्यो वहबड़ोधमंज्ञवाकेलोभनहींतियाको। बोलीअकुलाइमनभक्तिहीरिझाइलियो कियोपतिमुखनहींदेखो औरापियाको । जाइकैनिशंकयहबात तुममेरी क़होचेरीजोनकरौतौपैलेवोपायजियाको ॥४० ॥ कहीविप्रजाइसुनिचाइभहराइगयोदयौलैखड्गयासोंफेरिफेरिलीजिये। भयोजूबिवाहउतसाहकहूंमातनाहींआईपुरअंबरीष देखिछबिभीजिये । कह्योनवमंदिरमेंझारिकैबसेरादेवोदेहुरावभोग बिभवनानासुखकीजिये । पूरवजनमकोऊमेरेभक्तिगंधहुतियातेसनबंधपायो यहैमानधीजिये ॥ ॥४१॥रजनीकशेषपातिभवनमेंप्रवेश कियो लियोप्रेमसाथढिगमांदिरकेआइये।वाहरीटहलपात्रचौकाकरिरीझिरहीगही कौन जाइजामे होतनलखाइये । आवतहीराजादेखिलगैनानिमेषकहूंकौनचोरआयो

मेरीसेवालेचुराइये। देखीदिनतीनिफिरिचीह्निकै प्रवीनकही ऐसो मनजोपैप्रभुमाथेपधराइये ॥ ४३ ॥

वाली अकुलाई ॥ ऋषभदेववाक्यम् ॥ गुरुर्न सःस्यात् स्वजनो नस-स्यात् पितान स स्यात् जननी न सा स्यात् ॥ देवो न स स्यात् न पतिश्चस स्यान्न मोचयेद्यः समुपेतमृत्युम् ॥ १ ॥ पतिभवनमें ॥ लक्ष्मीवाक्य ॥ सवैपतिःस्यादकुतोभयः स्वयं समंततः पाति यातुरंजनम् । सएकएवेतरथ मिथोभयं नैवात्मलाभादधि मन्वतेपरम् ॥ २ ॥ विनाटहल तौ भक्ति प्राप्ति नहीं होइहै अनेक उपायकरौ विनाहरिकी कृपाकहौ कहांते आवै जैसे रसयनीकी रसायनि विना टहल नहीं पावै जव टहल करिकै प्र-सन्न करै तव मिलै ॥ ३ ॥

लईबातमानिमानोमंत्रलैसुनायोकान होतहीविहानसेवानीकीप-धराईहै। करतिशृंगारफिरिआपहीनिहारिरहै लहैनहींपारहगझरी सीलगाईहै। भईवढ़वारिरागभोगसों अपारभावभक्तिविस्ताररी-तिपुरीसवछाईहै। नृपहूसुनतअवलागीचोपदेखिवेकी आयोतत-कालमतिअतिअकुलाईहै ॥ हरैहरैपावधरैंपौरियानमनेकरैखरैंअरव-रैंकवदेखोंभागभारीको।मयेचलिमंदिरलौंसुंदरनसुधिअंगरंगभीजर-हीहगलाइरहेझारीको ॥ वीणलैवजावैगावैलालनरिझावै त्यौंत्यों-अतिसनीभावैकहैधन्ययहवरीको । द्वारपैनरह्योजाइगयेललचा-इढिग भईउठिठाढ़ीदेखिराजागुरुहरीको ॥ ४४ ॥ वैसहीव-जाओवीनतानानिनर्वानलैकैझीनसुरकानपरैजातमतिखोइये। जैसे रंगभीजिरहीकहीसोनजातिमोपैऐयेमननैनचैनकैसेकरिगोइये ॥ क-रिकेअलापचारोफेरिकैसँभारितानआइगयो ध्यानरूपताहीमांझ-भोइये। प्रीतिरसरूपभई रातिसववीतिगईनईकछूरीतिअहोजा-मेनहींसोइये ॥ ४५ ॥

लईबातमानि ॥ गीतायाम् ॥ जन्मांतरसहस्रेषुतपोध्यानसमाधिभिः ॥ नाराणांक्षीणपापानां कृष्णे भक्तिः प्रजायते ॥ रीझिये ॥ पंचरात्रे ॥ नाहं-

हूसामिवैकुण्ठे योगिनांहृदयेनच ॥ मद्भक्तायत्रगायन्ति तत्रतिष्ठामिनारद ॥ २ ॥ भईउठिठाढी न्याये ॥ नराणांचनराधिपः ॥ ३ ॥ एकउपदेश कर्तागुरु ॥ एक पति परमेश्वर सो तीन नाते जानिकै उठी नहीं सोइये रोगी भोगी योगिया वपु जेही पर काज ॥ शमन इनके दृगन में नींदै आवै लाज ॥ नासकेत ॥ एकाक्षरप्रदातारं यो गुरुंनैव मन्यते । श्वानजन्मशतंगत्वाचांडालेष्वभिजायते ॥ ४ ॥

बातसुनोरानीऔरराजागयेनइठौर भईशिरमौरअवकौनवाकीसरिहै । हमहूलैसेवाकरैंपतिमतिवशकरैंधरैंनितध्यानाविषयबुद्धिराखीधरिहै ॥ सुनिकैप्रसन्नभये अतिअंबरीषईशलागीचौफूफैलगईभक्तिघरघरहै । बढैदिनदिनचावऐसोईप्रभावकोईपलटैसुभावहोतआनंदकोभरहै ॥ ४६ ॥ टीकाविदुरजीकी ॥ न्हातिहीविदुरनारिअंगनिपखारिकरिआइगयेद्वारकृष्णबोलिकै सुनायोहै । सुनतहीसुरसुधिडारीलैनिदरिमानों राख्योमदभरिदौरिआनिकै चितायोहै । डारिदियोपीतपटकटिलपटाइलियोहियोसकुचायो वेसवेगिही वनायोहै । बैठीढिगआय केराछीलिछीलकाखवायआयोपतिखिज्योदुखकोटिगुनोंपायोहै ॥ ४७ ॥

पलटै ॥ तापै दृष्टांत राजाकी बेटीको अरु फकीरको ॥ १ ॥ बीस इहु रशिकहैजैहैं ॥ पालपरैं ज्यों आव मिटै हैं ॥ १ ॥ आइगये ॥ श्लोक ॥ इंद्रप्रस्थं वृकप्रस्थं जयंतं वारणावतम् ॥ देहिनश्चतुरोग्रामान् पंचमं कंचिदेवतु ॥ २ ॥ विनायुद्धेनदातव्यंसूच्यग्रं नैवकेशव ॥ ३ ॥ यद्वाह्ययंमंत्रकृद्वोभगवानखिलेश्वरः ॥ पौरवेंद्रगृहंहित्वाप्रविवेशात्मसात्कृतम् ॥ ४ ॥ ॥ कवित्त ॥ नाहीं नाहीं करैं थोरो मांगै सब देनकहैं मंगनको देखि पटदेत बारबार हैं । जिनके मिलेते भली प्रापतिकी घरीहोति ऐसे करतार किये ऐसे निरधारहैं ॥ भोगी ह्वैरहत बिलसत अवनीके मध्य कनकन जोरैंदान पाढ परिवारहैं । सेनापति समझि विचारिदेखौ चारदाता अरु सूम दोनों कियेंएकसारहैं ॥ ५ ॥ दुर्योधनघर त्यागतभये ॥ अपनोमानि बिदुरकेगये ॥ ६ ॥

वोलिके ॥ ॥ दोहा ॥ सुधि सुरताल अरु तानकी, रह्यो न सुर ठहराइ॥ येरी राग विगारिगयो, वैरी बोल सुनाइ ॥ ७ ॥ रही दहेंड़ी ढिग धरी, भरी मथनियां वारि। फेरतकर उलटी रई, नई विलोवनहारि ॥ ८॥ कवित्त ॥ सोवतसमाधितेजगाइ दिये मुनिगण पशुहू चकितचित्त करै नाचरनको। गाइनते बछरा छुटायेजे पिवतक्षीर अद्भुत कथा तेरी कहां लौं वरनको ॥ आन हथकरी गोपी सबै हैं डरनि डरी तेऊ तहां परीते गई धरा धरनको। वांसुरी मैंतोहिं पूछौं वारवार तूहै लागी लालकेअधर में अधर में करनको ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ फूली सांझके शृंगार सूही सारी जुहीहार सोने सों लपेटी गोरी गौने कीसी आईहै। आलम न फेरफंद जानेकछू चंद्रमुखी दीपक वरावनकोनंदभवन लाईहै। ज्योतिके जुरतही में जुरेनैनादुरेजाइ चातुरी अचेतभई चितयो कन्हाई है। बाती रही हाती छवि छाती रस माती पूर पागुरी भई है मति आंगुरीलगाई है ॥ १ ॥ गीतायाम् ॥ पत्रं पुष्पं फलं तोयं योमेभक्त्या प्रयच्छति। तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः॥ २॥ सवैया ॥ सूहीसीसारीसुहाईहैसांझमेंनैननमांझनि जाजगईहै। कोहै कहांकीहै कौनकीहैघर कौनकेआई नवेली नई है। ठौरठगे उमँगेसे ममारप रीझिरहे आलीभेंटभई है। कोवलि या गलियामें गई सुदिया लेगई सो जिया लेगईहै ॥ ३ ॥ प्रेमको विचार ॥ तत्सुख स्यसुख ॥ दोहा ॥ पूजि भवानी भाइसों, मांगत यह वरदेहु ॥ व्रजमें सुंदर साँवरो, हमसोंकरैसनेहु ॥ ४ ॥ सवैया ॥ हमकूं तुमएक अनेक तुम्हें उनहींके विवेक वनाइ वहौ। इतचाह तिहारी तिहारी उतै वर वाहर प्रेम सदा निवहौ। मनभावै ममारप सोई करौ अनुराग लता जिन वोयदहौ। घनश्यामसुखीरहौ आनँदमें रहौ नीकेरहौ उनहींकेरहौ ॥ ५ ॥ नाकचढे सीबीकरै, जितैछबीलो छैल॥ फिरि फिरि भूल वहै गहै, पियककरीली गैल ॥ ६ ॥ ततवेत्तातिहुँलोकमें, भोजन किये अपार ॥ केसवरी, कै विदुरघर, रुचिमानींहि चार ॥ १ ॥

प्रेमकोविचारिआपलागेफलसारदेनचैनपायोहियेनारिवड़ी दुख दाईहै। चोटेरीझिश्यामतुमकीनोचडोकामएपै स्वादअभिराम

वैसीवस्तुमेंनपाईहै । तियासकुचाइकरकाटिडारोंहाइप्राण प्यारे कोखवायछीलिछीलकानभाईहै ॥ हितहीकीबातदोऊकोऊपारपावै नाहिं नीकेलैलड़ावैसोइजानैंयहगाईहै ॥ ४८ ॥ टीका ॥ सुदामा जूकी ॥ बडोनिशिकामसेरचूनहूंनधामढिगआई निजवामप्रीतिह रिसोंजनाईहै । सुनिशोचपरेउहियोखरोअरबरेउमन गाढ़ोलैकेकरेउ बोल्योहांजुसरसाईहै ।जावोएकबारवहबदननिहारिआवो जोपैकछु पावोलावोमोकोसुखदाई है । कहीभलीबात सबलोकमेंकलंकह्वैहै जानीपति याहीलियेकीनो मित्रताईहै ॥ ४९ ॥

मित्रताई (कवित्त) बोल्योमुसिकाइ नारि बावरी कहांधौं आई मोतनिपैमांगे सो कपूतनिको रावहै । गिरिहूंतेभारे ऐसे दारिद हमारे भाग दई फिटकारे तिन्हैं कहौ कहांठामहै । खैबेको नरोटी ऐसी आपदाहै मोटी सात थेगरीकछोटी सो सुदामा मेरो नामहै । जौलौंगावैंश्यामघन मांगेपावैं भीखकन तौलौं मानिलीजे शिरछत्रनकी छामहै ॥ २ ॥ आवतिहै लाज भारीजातब्रजराजजूपै बसनसमाजदेखिखरोमरिजाइये । एकहीपिछौरीसोतो ठौरठौरफाटिरही ओढ़ियेनिशाको जासों प्रातउठि न्हाइये । भेंटऐसी नाहीं जोलैजाइये भगवंतजूपै अंतकभईहैनारि कौलौंसमुझाइये । देहपरमांस जौलोंनासिकामेंश्वास तौलौं बडोउपहासमांगि मीत ना सताइये ॥ ३ ॥

तियासुनिकहैकृष्णरूपक्योंनचहैजाहिदहैदुखआपहीसोंवचनसु- नायेहैं । आईसुधिप्यारेकीविचारैमतिटारैतबधारेपगमगझूमिद्वा रावतीआयेहैं । देखिकैविभूतिसुखउपज्योअभूतकोऊ चल्योमुख माधुरीकेलोचनतिसायेहैं । डरपति हियो ड्योढ़ी लांघिमनगाढ़ो कियोलियो करचाहतबतहांपहुँचायेहैं ॥५० ॥ देख्यो श्याम आयो मित्र चित्र तरहेनेकु हितकोचरित्र दौरि रोयगरेलागे हैं । मानोएकत नभयो लयोऐसे लाइ छाती नयोयहप्रेम छुटै नाहिंअंगपागेहैं।आईदु बराईसुधिमिलनिछुटाई ताते आनै जलरानीपगधोये भागजागेहैं।सेज पधराइगुरुचरचाचलाइसुखसागरबड़ाइआइअतिअनुरागेहैं ॥ ५१ ॥

आईसुधि ॥ सवैया ॥ हेकरतारहौं तोसोंकहों कबहूं जनिदीजिये काहूकेटोटो । और लिखो जिनि काहूके भागमें मालके काजे मही पनि मोटो । तूहू तोजानतहै अपनेजिय मांगिवेते कछु और न खोटो । जोगयोमांगन तूवलि द्वारतो याहीते ह्वै गयो वावनछोटो ॥ १ ॥ मति मांगि यतिमांगि जाको नाम मांगना २ मनगाढोकियो ॥ दोहा ॥ मोमरने को नेमहै, मरौंतो हरिकेद्वार ॥ कबहूंतो हरिबूझिहैं, कौन मऱ्यो दरबार ॥ ३ ॥ सवैया ॥ कैसे विहाल विवाइन सों पगकंटक जाल गडे पुनिजोये । हाय महादुख पायो सखा तुम आयेइतै न कितैदिनखोये । देखि सुदामाकी दीनदशा करुणा करिकै करुणानिधि रोये । पानीपरातकोहाथ छुयो नहीं नयननके जलसों पगधोये ॥ ३ ॥

चिरवाछिपायेकांखपूछैंकहालायेमोको अतिसकुचायेभूमितकैं हगभीजेहैं । खैंचिलईगांठिमुठीएकमुखमांझदई दूसरीहूलेतस्वाद-पायोआपरीझेहैं । गह्योकररानीसुखसानीप्यारीवस्तुयहै खावोबां-टिमानौंश्रीसुदामाप्रेमधीजेहैं । श्यामजूविचारिदीनीसंपतिअपार विदाभयेपैनजानीसारविछुरनछीजेहैं ॥ ८२ ॥

दियोमुखमांझ ॥ कवित्त ॥ हूलहियरामें काम कामिन परीहैशोर भेंटतसुदामें श्यामें बनैना अघातही । शिरोमणि ऋद्धिन में सिद्धिनमें शोर परेउ काहियों वकसि ठाढ़ी कांपै कमलातही । नरलोक नाग लोक नगलोक नागलोक थोकथोक कांपैहरि देखिमुसकातही । हालो परेउ हालन में लालो लोकपालन में चालो परेउ चक्रनिमें चिरवा चबा-तही १ रमाकर पकरेउ हो याहीते सुदामा कहै कहां तुच्छतंदुल कहैं जगत गुसाई हैं । यहू न जानै दीन क्षण तीनि पैसा दैकै भुवतीनिलोक विभव मिलिकि करिपाई है । हरि सकुचाइकछु द्विजको मैं दियो नाहिं तातें यासों कहै मेरी बड़ी हीनताई है । दीनोहौं गुदानताको ब्राह्मणी विना न जानै जाके धन यौवन पुलोमजा लजाई है २ विदाभये कवित्त ॥ विदाकरि दीनो द्विज प्रकट न कीनो कछु भेंटि गुन चल्यो

मनमें विषाद आयोहै । याहीते उदास प्रभु पास न रहनपायो याहीते सुखीहौं मोहिं कछु न दिवायोहै । एक दुखभारी मेरी ब्राह्मणी है खुटसारी ताहूको तौ उत्तरु मैं सरस बनायो है । मैं जुनिधिपाईही सोराह में छिनाई काहू मोबिना हमारो सब कुटुँब बुलायो है ॥ ४ ॥

आयनिजग्रामवहैअतिअभिरामभयो नयोपुरद्वारकासोदेखिमतिगईहै । तियारंगभीनीसंगतरुनसहेलीलीनी कीनीमनहारियों प्रतीतिउरभईहै । करैहरिध्यानरूपमाधुरीको पानवहै राखे निज प्राणजाके प्रीतिनितनई है । भोगकीनचाहऐसे तननिरवाहकरैढरै सोईचालसुखजालरसमईहै ॥ ८३ ॥

मतिगई है ॥ कवित्त ॥ याही ते जनम भरिगयो नहीं श्यामजूपै मेरोकह्यो वचन पँडाइनि नहिंमानै हो । जाहुजाहु लै रहौ न मानति अनाजखाइ ऐंड़ी मैंड़ी बातैं तौ गोविंद की न जानैं हो । द्रौपदी को चीर दये गोपिनके छीनिलये ग्राहते बचायो गजरंगभूमि आनैहो । ब्राह्मणी समेत कहूं खेतते उखार्‌यो घर यातहूं बचायो वाको कह्यो मैं न मान्यो है ॥ १ ॥ चौतरा उजारि काहू चामीकर धामकीन्हों छानितौ छवाय डारी छाई चित्रसारीजू । जोहूं होतो घर तोपै काहेको बननदेतो होन हार ऐसी खोटी दशाही हमारीजू । हौंतो होतो काहल हलाहल दिखाय करि जाहल उठाइ देतो दइ मुखगारीजू । लोभकी सवारी दुखभूखकी दलनहारी भैयाबनवारी काहू सोऊ मारि डारीजू ॥ २ ॥ तियारंगभीनी । आलिनके यूथ ज्यों ज्यों आदरसों बोलैं आइ त्यों त्यों डरपाइ पग आगेको नदेतहै । पंडित न ज्योतिषी न वेदवा न कौतुकी हौं रानी जू बुलावति है कहौ कौन हेतहै । द्वारकाके राजाते मिलेते घर छीनो गयो रानी कहा छीनैगी फल्यो न मेरो खेतहै । मोसों कहा नातो तुम जाइ कहौ वाते मोहिं भूलि ना सुहातो कोऊ ऐसे पर लेतहै ॥ ३ ॥ नईहै ॥ **दोहा ॥** जे गरीव सों हितकरैं, धनि रहीम वे लोग । कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मित्रता योग ॥ ४ ॥ भोगकी न चाह ॥ **गीतायां ॥** युक्ताहारविहारस्य

युक्तचेष्टस्य कर्मसु ॥ युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥ ५ ॥

टीका चन्द्रहासकी ॥ हुतोनृपएकताकोसुत चन्द्रहासभयोपरी योंविपतिधाइलाईऔरपुरहै। राजाकोदिवानताके रहीवरआनि- बाल आपनोसमानसंगखेलेरसटरहै। भयोब्रह्मभोजकोई ऐसोईसं योगवन्यो आयेवैकुमारजहां विप्रनिकोसुरहै। बोलिउठेसबै तेरी सुताकोजुपतिहै यहुबोलचाहैजानीसुनिगयोलाजवुरहै ॥ ५४ ॥ पन्योशोचभारीकहाकरोयोंविचारीअहोसुतजोहमारीताकोपतिऐसो चाहिये। डारोंयाहिमारियाकोयहैहैविचारतबबोलेनीचजनकह्यो मारोहियेदाहिये। लैकैगयेदूरिदेखिबालछविपूरहमजौनपरोधूरि दुखऐसोअवगाहिये। बोलेअकुलाइतोहिंमारेंगेसहाइकौनमांगोएक बातजबकहौंतबचाहिये ॥ ५५ ॥

कवित्तआदिपुराणे ॥यस्य तुष्टो ह्यहं पार्थवित्तं तस्य हराम्यहम्। करोमि बंधुविच्छेदं सर्वकष्टेन जीवितम् ॥ १ ॥ तस्यापि संतुष्टो येन ददामि अव्ययं पदम् ॥ २ ॥ दोहा ॥ तुलसी जो होतव्यता, प्रगटै तैसी तौन। करशायलके सींगको, कहो उमेठै कौन ॥ ३ ॥ वाहिपै आदिपुराणे ॥ यदिवातादिदोषेण मद्भक्तोमांचविस्मरेत् ॥ तर्हिस्मराम्यहंभक्तंसयातिपरमांगतिं ॥ ४ ॥ गीतायां ॥ ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ॥ यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥ ५ ॥ अंतकाले च मामेव स्मरन् मुक्त्वा कलेवरम् ॥ यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः ॥ ६ ॥ यंयं चापि स्मरन् भावं त्यजत्यंते कलेवरम् ॥ तंतमेवेति कौंतेय सदा तद्भावभावितः ॥ ७ ॥ सहाय ॥ छप्पय ॥ जिन राखो ऋपि यज्ञ जनक नृपको पनराखो। जिनराखो पितबोल काक कपटि जिनराखो। जिनराखे ऋपि सकल विकल दंडक वन वासी। जिनराखो सुग्रीव बसत गिरि बसत उदासी। अनुज विभीपण पगपरत लंकदई सगमानिके ॥ सुमेम सखापति राखिहैं दीनबंधु जन जानिके ॥

मानिलीन्हींबोलिसोकपोलमध्यगोलएकगंडकीकोसुतकाटिसेवा नीकीकीनीहै। भयोतदाकारयोनिहारिसुखभारभारैंननानिकोरही

सोंआज्ञावधदीनीहै। गिरेमुरझाइदयाआइकछूभाइभरेढरेप्रभुओरमति आनँदसों भीनीहै।हुतीछठीआँगुरीसुकाटिलईदुखनहो भूषणहीभयोजाइकहीसांचचीन्हीहै ॥ ५६ ॥ वहैदेशभूमिमेंरहतलघुभूप औरऔरसुखसबैएकसुतचाहभारीहै । निकस्योबिपिनआनिदेखि पाहिमोदमानिकीनीखगछांहविरी मृगीपांतिसारीहै । दौरिकैनिशंकलियोपाइनिधिरंकजियो कियोमनभायोसोबधायोश्रीवारीहै।कोऊदिनवीतेभयेनृपचितचीतेदियोराजकोतिलकभावभक्तिविस्तारीहै॥ ॥ ५७ ॥ रहेजाकेदेशसोनरेशकछुपावैनाहिं बांहबलजोरिदियोसचिवपठाइकै । आयोवरजानिकियो अतिसनमानसोंपिछानि लियो वहेबालमान्योछलछाइकै । दईलिखिचिट्ठीजाहुमेरेसुतहाथदीजे कीजेवहीबातजाकोआयोलैलिखाइकै । गयेपुरपासबागसेवामति पगकरी भरीहगनींदनेकुसोयोसुखपाइकै ॥ ५८ ॥

आज्ञावध ॥ दोहा ॥ तुलसीतेरहसैवरष, यद्यपिलगीसमाधि ॥ तदपिभांडकी नागई, दुष्टबासनाव्याधि ॥ १ ॥ बाहुबल ॥ नीते ॥ उत्खातान् प्रतिरोपयन्कुसुमितांश्चिन्वन् लघून्वर्द्धयन् उत्तुंगान्नमयन्नतान् समुदयन् विश्लेषयन् संहतान् ।क्षुद्रान् कंटकिनो बहिर्निरसयन् म्लानान् समुत्सेचयन्मालाकार इव प्रयोगनिपुणो राजा चिरं नंदति ॥ २ ॥ कबित्त ॥ छोटेछोटेगुलनि को शूरनिकी वारिकरो पातरेसे योधातिन्हैं पानीदेदैपालिबो ॥ नीचेगिरिगये तिन्हैं दैदैटेक ऊँचेकरो ऊंचेबढिजाइँ ते जरूरकाटिडारिबो। फूलेफूलफूल सबबीनिइकठौरेकरो घनेघनेरूख एक ठौरते उखारिबो। राजनिको मालनीको नितप्रतिदेवीदास चारिवरीरातिरहे इतनों बिचारिबो ॥ ३ ॥ तापै राजाको अरु गांडेको दृष्टांत ॥ ४ ॥ माथोकाटिवेते अंगुली कटी ॥ ५ ॥ चिट्ठी ॥ श्लोक ॥ विषमस्मै प्रदातव्यं त्वया मदनशत्रवे ॥ कार्याकार्यं न कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं किल मेत्प्रियम् ॥ १ ॥

खेलतिसहेलिनिमेंआइवाहीबागमांझ कीरअनुरागभईन्यारीदेखि रीझिये । पागमतिपातीछबिमातीझुकिखैंचलईबांचीखोलिलिख्यो

विपदैनपिताखीझिये। विषयासुनामअभिरामदृगअंजनसो विषया-वनाइमनभाइरसभीजिये। आइमिलीआलिनमें लालनकोध्यानहिये खियेमदमानोगृहआइतवधीजिये ॥ ५९ ॥

नामअभिराम ॥ मैंजानोंमेरोनाम सबतेबुरोहै क्योंकि काहूको कनकमंजरी काहूको रूपलतापरिसैं अवजाती विषयाही अभिराम हैं याते यह बात बनीधरी एक ॥ कुण्डलिया ॥ हरिसन्मुखसुख पाइये विमुख भये दुख होय। विमुख भये दुख होइ देखि दशग्रीव विभीषण। देखीसुरुचि-सुनीति देखिप्रह्लादपितातन । देखिदक्षको यज्ञ देखि पृथु वेणु विनीता। कंसजनकसुतअंध देखि पांडव जगजीता। अगर मुकर प्रतिबिम्बमें अपनो आननजाइ। हरि सन्मुख सुख पाइये ॥ १॥ श्लोक ॥ यस्यास्ति भक्ति-र्भगवत्यकिंचना सर्वै गुणास्तत्र समासते सुराः॥ हरावभक्तस्य कुतो महद्गुणा मनोरथेनाप्यतिधावतोबहिः ॥ २ ॥ तापैदृष्टांत हपसीके दर्पणको ॥ ३ ॥

उठ्योचंद्रहासजिहिपासलिख्योलायोजायो देखिमनभायोगाढ़ेग-रेसोंलगायोहै। दईकरपातीवातलिखीमोसुहातीवोलिविप्र वरीएक-मांझव्याहउवरायोहै ॥ करीऐसीरीतिडारेवड़ेनृपजीति श्रीदेतगई-वीतिचावपारपैनपायोहै। आयोपितानीचसुनिवूमिआईमीचमानों-बानोलखिदूलहकोशूलसरसायोहै ॥ ६० ॥ वैठ्योलैइकांतसुतकरी-कहाभ्रांतयहकरेउसो नितांतकरपातीलैदिखाईहै ॥ बांचिआंचला-गीमेंतोवड़ोईअभागी ऐपेमारौमतिपागीवेटीरांड़हूसुहाईहै। बोलिनी-चजातिवातकहीतुमजावोमठआवैतहांकोउमारिडारौमोहिभाईहै । चंद्रहासजूसोंभाष्योदेवीपूजिआवोआजु मेरीकुलपूजिसदारीतिचलि-आईहै ॥ ६१ ॥ चलेईंकरनपूजादेशपतिराजाकहमेरेसुतनाहिंरा-जवाहीकोलैदीजिये। सचिवसुवनसोंजुकह्योतुमलावोजावोपावोनहीं फेरिसमयअवकामकीजिये ॥ दौरेउसुखपाइचाइमगहीमोंलियोजाइ-दियोसोपटाइनृप रंगमाहिंभीजिये । देवीअपमानतेनडरोसनमान-करोजातमारिडारेउयासोंभाष्योभूपलीजिये ॥ ६२ ॥

शूलसरसायो ॥ कवित्त ॥ भावनि बनाये जे बधाये ते सुनाये सुनि अतिही रिसाये दुख सागर बुडायोहै । नगर नगारे नगहुते गूंजैं भारेसुनि याके शिर मानों काहू आरासो फिरायो है ॥ आंगनमें जातिहि सुअंगनि में आगि लागी अंगना के करसों सुकंकना खुलायोहै । पाती लेत हाथही सुमारीशिर माथही सुबिषयाके बांचे विषयाके लपटायो है ॥ १ ॥

काहूआनिकही सुतमारेउतेरोनीचनिने सींचनशरीरजलदृगझरीलागीहै । चल्योततकालदेखिगिरयो ह्वैविहालशीशपाथरसोंफोरिमरयोऐसोहीअभागीहै । सुनिचंद्रहासचलिबेगिमठपासआयो ध्यायेपगदेवताकेकाटेअंगरागीहै । कह्योतेरोदोषीयाहिक्रोधकरिमारेउमैंहींउठैंदोऊदीजैदानजियैबड़भागीहै ॥ ६३ ॥ करयोऐसोराजसबदेशभक्तराजकरेउ ढिगकोसमाजताकीबातकहाभाषिये । हरिहरिनामअभिरामधामधामसुनै औरकामनाहिंसेवाअतिअभिलाषिये ॥ कामक्रोधलोभमदआदिदैकेदूरिकरैजियैनृपपाइऐसोनैननिमें राखिये । कहीजितीबातआदिअंतलौंसुहातिहिये पढ़ैउठिप्रातफलजैसुनिमेंसाखिये ॥ ६४ ॥ टीकासमुदाइकी ॥ कौषारवनामसोवखानकियोनाभाजूनेमैत्रेअभिरामऋषिजानिलीजैबातमें । आज्ञाप्रभुदईजाहुविदुरहैभक्तमेरोकरौउपदेशरूपगुणज्ञातगातमें ॥ चित्रकेतुप्रेमकेतुभागवतख्यातजातेपलट्योजनमप्रतिकूलफलघातमें । अक्रूरआदिध्रुवभयेसबभक्तभूपउद्धवसेप्यारेनकीख्यातपातपातमें ॥ ६५ ॥

बेटीरांडहू सुहाइ ॥ दोहा ॥ अगर दुष्टताजीवकी, शिर तजि अपयश लेइ ॥ सनतन खाल कढ़ाइकै, परतन बंधन देइ ॥ २ ॥ बडभागी है दोहा ॥ दुष्ट न छांडै दुष्टता सज्जन तजै न हेत ॥ कज्जल तजै न श्यामता, मोती तजै न श्वेत ॥ १ ॥ सज्जन ऐसो कीजिये, जैसो आको दूध ॥ अवगुण ऊपर गुण करै, तौ जानै कुल शुद्ध ॥ २ ॥ भक्तराज ॥ राजनीते अश्वायांजायते वत्सः मिथ्यावदतिभूपतिः ॥ वस्त्रंजलाग्निनादग्धंयथाराजा तथाप्रजा ॥ ३ ॥ पलट्योजन्म ॥ दोहा ॥ जामरने सों जग डरै, सोमेरे

आनंद ॥ कब मरिहौं कब भेंटिहौं, पूरवपरमानंद ॥ ४ ॥ वृत्रासुरवधो-पेतंयदि भागवतमिप्याति ॥ ५ ॥

कुन्तीकरतूतिऐसीकरैकौनभूतप्राणी मांगतविपतिजासोंभाजैंसब जनहैं ॥ देख्योमुखचाहौंलालदेखेविनहियेशाल हूजियेकृपालनहीं दीजैवासवनहैं। देखिविकलाइप्रभुआंखिभरिआई फेरिघरहीकोलाई कृष्णप्राणतनधनहैं । श्रवणवियोगसुनितनकनरह्योगयो भयो-वपुन्यारो अहोयहीसांचोपनहैं ॥ ६६ ॥

मांगतविपति ॥ भागवते। विपदः सन्तु नः शश्वत्तत्रतत्र जगद्गुरो। भवतो दर्शनं यत्स्यादपुनर्भवदर्शनम् ॥ १ ॥ जन्मैश्वर्यश्रुतश्रीभिरेधमानमदःपुमान् ॥ नैवार्हत्यभिधातुं वै त्वामकिंचनगोचरम् ॥ २ ॥ दोहा ॥ प्रीतमनहीं बजारमें, सोइय जारउजार ॥ प्रीतम मिलै उजारि में, सोई उजारिबजार ॥ ३ ॥ कहाकरौंवैकुंठले, कल्पवृक्षकी छांह ॥ अहमदढांकसुहावने जो प्रीतमगलबाँह ॥ ४ ॥ घरहीकोलाइये ॥ गमनसमयअंचलगह्यो छांडनकह्यो सुजान ॥ प्राणपियारे प्रथमहीं अंचलतजौं किप्रान ॥ ५ ॥ वपुन्यारा ॥ जासों मिलिसुखझिलिरहे दीनों दुख बिसराइ। फिरि जो जाके बिछुरते फट्यो न उर कहि हाइ ॥ ६ ॥ मन बँदूक तन जामगी हियरंजक जियसाज ॥ प्रेमपलीतादागिगई, निकसी आहि अवाज ॥

द्रौपदीसतीकीबातकहैऐसोकौनपटुखैंचतहीपटपटकोटिगुनेभयेहैं। द्वारकाकेनाथजबबोलीतबसाथहुतेद्वारकासोंफेरिआयेभक्तवाणीनयेहैं। गयेदुर्वासाऋषिवनमेंपठायेनीचधर्मपुत्रबोलेविनयआवैपनलयेहैं॥भोजननिवारितियाआइकहीशोचपऱ्यो चाहैतनुत्यागयोकह्योकृष्णकहूंगयेहैं ॥ ६७ ॥ सुन्योभागवतीकोवचनभक्तिभावभऱ्योकऱ्योमनआयेश्यामप्रजेहियेकामहैं। आवतहीकहीमोहिंभूखलागीदेवोकछूमहासकुचायेमांगैंप्यारोनहींधामहै। विश्वकेभरणहार धरेहैंअहारअन हमसोंदुरावोकहीवाणीअभिरामहैं। लग्योशाकपत्र पत्र जलसंगपाइगयेपूरणत्रिलोकीविप्रगनेकौननामहैं ॥ ६८ ॥

पटकोटिगुणें ॥ वसंतऋतुयाचकभई, रीझिदियेद्रुमपात ॥ यातेनवपल्लवभये, दियोदूरिनहिंजात ॥ ८ ॥ कवित्त ॥ दुश्शासनदुमनदुकूलगह्यो दीनबन्धु दीनह्वैके द्रुपददुलारीयोंपुकारी है । छांडे पुरुषारथकोठाढ़ेपिय पारथसे भीममहाभीमग्रीवानीचेकोनिहारीहै । अंबरजो अम्बर अमरकिये वंशीधर भीषमकरणद्रोणशोभा यों निहारीहै । सारीमध्यनारीहै किनारी मध्यसारीहै किसारी है किनारीहै किसारिहीकीनारीहै ॥ ९ ॥ नये हैं ॥ भारते ॥ यदि गोविंदेति चुक्रोश कृष्णा मां दूरवासिनम् ॥ ऋणमेतत्प्रवृद्धं मे हृदयान्नापसर्प्पति ॥ १ ॥ आयेश्याम ॥ पद ॥ तौहूंपावनविरदलजाऊं ॥ जो जनके संकट में राजा सुमिरणसमयनआऊं॥ सुनौअजातशत्रुकरुणामय करुणासिंधुकहाऊं ।अनघअनाथनि दीनजानिकै गरुडासनबिसराऊं।शीघ्र सुकाजभक्तअपनेके जहांतहां उठिधाऊं । लघुभगवानप्रतिज्ञामेरे यशत्रैलोकबढ़ाऊं ॥ १ ॥ कौननामहै ॥ षष्ठे ॥ यथा हि स्कंधशाखानां तरोर्मूलनिषेचनम् ॥ एवमाराधनं विष्णोः सर्वेषामात्मनश्च हि ॥ यथातरोर्मूलनिषेचनेन तृप्यंति तत्स्कन्धभुजोपशाखाः ॥ प्राणोपहाराच्चयथेंद्रियाणां तथैव सर्वार्हणमच्युतेज्या ॥ ४ ॥ कोऊअगस्तको मंत्रउचारै । कोउचूरणको हाथपसारै ॥ कोऊअमलवेतको यांचै । कोऊपेटपीटिकैनांचै ॥ ५ ॥ एक भगवतनाम औषधविना रोग नहीं कटै कोटियतन करौ ॥ ६ ॥

मूल ॥ पदपङ्कजवंदौंसदा जिनकेहरिनितउरवसैं । योगेश्वरश्रुतिदेवअंगमुचुकुंदप्रियव्रतजेता । पृथुपरीक्षितशेषसूतशौनकपरचेता । शतरूपात्रयसुतासुनीतिसतीसबहीमंदालश । यज्ञपत्नी व्रजनारिकियेकेशवअपनेवश । ऐसेनरनारीजितेतिनहींकेगाऊंयसैं । पदपङ्कजवंदौंसदाजिनकेहरिनित उरवसैं ॥ ११ ॥ टीकासमुदायकी । जिनहींके हरिउरनितवसैं जिनहींकेपदरेणुचैनदैनआभरणकीजिये । योगेश्वरआदिरसस्वादमेंप्रवीणमहावीणश्रुतिदेव ताकीबातकहिदीजिये । आयेहरिवरदेखिगयोप्रेमभारिहियोऊंचोकरकारिपटफेरिमतभीजिये । जितेसाधुसंगतिन्हैंविनयनप्रसंगकियो कियो-

उपदेशमोसोंबाढ़िपांवलीजिये ॥ ७० ॥ मूल ॥ अंघ्रीअंबुजपांशु-
कोजनमजनमहौंयाचिहौं । प्राचीनबर्हिसत्यव्रतरघुगणसगरभागी-
रथ। वालमीकिमिथिलेशगयेजेजेगोविंदपथ । रुकमांगदहरिचंद-
भरतदधीचिउद्धारा । सुरथसुधन्वाशिवसुमतिअतिवालिकीदारा।
नीलमोरध्वजताम्रध्वजअलरककीरतिराचिहौं। अंघ्रीअंबुजपांशुको-
जन्मजन्महौंयांचिहौं ॥ १२ ॥

प्रेमभारे दशमे ॥ धन्यो हं कृतकृत्योहं पुण्योहं पुरुषोत्तम ॥ अद्य मे-
सफलं जन्म जीवितं सफलं च मे ॥ १ ॥ ऋषि संगऋषी श्लोक ॥ दाराः
पुत्रो नराणां स्वजनपरिकरो बन्धुवर्गः प्रियो वा माता भ्राता पिता वा श्वशुर-
बुधजनो ज्ञातिरैश्वर्य्यवित्तम् । विद्या नीतिर्विपुलसुहृदो यौवनं मानगर्वं
मिथ्याभूतं मरणसमये धर्ममेकः सहायः ॥ १ ॥ कुंडलिया ॥ कोऊकाहूको
नहीं देखो ठोंकि बजाइ । देख्यो ठोंकि बजाइ नारिपट भूषण चाहै ।
सुतसोपे नित प्राण सुता प्रत्यक्ष अवगाहै ॥ तात मातकरे बैरुबधूनित
चित्तविगारी। स्वारथताके सजन दास दासी देगारी ॥ अगरकामहरि-
नामसों संकट होतसहाइ । कोऊ काहूको नहीं देखो ठोंकि बजाइ ॥ २॥

टीका—उभयवाल्मीकिकी ॥ जनमपुनिजनमको नसेरेकछुशो-
चअहोसंतपदकंजरेणुशीशपरधारिये । प्राचीनबर्हिआदिकथाप्रसि-
द्धिजगउभै वालमीकिऋषिवातजियतेनटारिये । भयेभील संगभी-
लऋषिसंगऋषिभयेभयेरामदरशनलीलाविस्तारिये । जिन्हैंजगगा-
इकहूंसकेनअघाइचाइभाइभरिहियोभरिनैनभरिढारिये ॥ ७१ ॥
टीका ॥ सुपचवाल्मीकिकी ॥ हुतोवालमीकिएकसुपचसुनामता
कोश्यामलैप्रगटकियोभारतमेंगाइये। पांडवनिमध्यमुख्यधर्मपुत्ररा-
जाआपकीनोयज्ञभारीऋषिआयेभूमिछाइये । ताकोअनुभावशुभ-
शङ्खसोप्रभावकहैजोपैनहींवाजैतो अपूरणताआइये । सोईवातभईव-
हुवाज्योनाहिंशोचपर्योपूछें प्रभुपासयाकीन्यूनता बताइये॥ ७२ ॥
तिन्हेंजगगाइ ॥ छप्पय ॥ मुक्तिसुवनिताश्रवणआभरणअक्षयजैकाहि॥

मुनिमनपक्षीपक्षिदासजै रामतासगहि । जगतसमुद्र अपारतीरभुवनैन वेद-अल। कलिपातकतमप्रवलहरणको रबि शशि मंडल । विपरीति नाम उच्चार किय बालमीक ऋषि भये तदा। जिहि तिहि प्रकार सव काम तजि रामनाम सुमिरौं सदा ॥ १ ॥ रामायणे ॥ चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् । एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥ २॥ बालमीक बुधवंतसदासीतापतिगावैं । रामायणशतकोटि राम राघव मन भावैं । तेंतीसकोटि तेंतीसलाख तेंतीस हजारा । तीनशत बहुरि और श्लोक तेंतीस बिचारा । दश दश अक्षर और भक्ति भजिबेको कीना ॥ रामनाम दोउ अंक मांगि शंकर तब लीना । ततवेता तिहुंलोकमें रामचरित विस्तरि रह्यो ॥ एकनाम सुमिरतसदा महापाप परलै गयो ॥ ३ ॥ दोहा ॥ तुलसी रघुबर नामको, रीझि भजो कै खीज । उलटा सुलटा जामिहै, परे खेतमें बीज ॥

बोलेकृष्णदेवयाकोसुनौसवभेव ऐपै नीकेमानिलेवोबातदुरीसमझाइये । भागवतसंतरसवंतकोऊजैयौनाहिंऋषिनसमूहभूमिचहूंदिशिछाइये ॥ जोपैकहौंभक्तिनाहींनाहींकैसेकहौंगहों गासएकऔरकुलजातिसोबहाइये । दासनिकोदासअभिमानकीनबासकहूं पूरणकीआशातोपैऐसोलैजिमाइये ॥ ७३ ॥ ऐसोहरिदासपुरआसपासदीखे नाहिं दासबिनकोऊलोकलोकानिमेंपाइये । तेरेईनगरमांझनिशिदिन भोरसांझ आवैजाइऐपैकाहूबातनलखाइये ॥ सुनिसबशोचपरेभावअचरजभरे हरेमननैनअजूबेगिहीजताइये । कहानामकहाठामजहांहमजाइदेखैंलेखैंकरिभागधाइपाइलपटाइये ॥ ७४ ॥ जितेमेरेसाधुकभूचहैंनप्रकाशभयो करौंजोप्रकाशमानैमहादुखदाइये । मोकोपरयोशोचयज्ञपूरणकीलोचाहिये लियेवाकोनामजिनिगामतजिजाइये ॥ ऐसेतुमकहौजामेंरहौन्यारेप्यारेसदाहमहींलिवाइलावैंनीकेकैजिमाइये । जावोबालमीकिघरवड़ोअवलीकसाधुकियोअपराधहमादियोजोबताइये ॥ ७५ ॥

वासविन ॥ सवैया ॥ नखविन कटादेखे योगी कनफटा देखे शीश भारी जटा देखे छारलाये तनमें । मौनी अनवोल देखे जैनी शिरछोल देखे करत कलोल देखे बनखंडी वनमें । गुणी अरु कूरदेखे कायर औ शूरदेखे मायाके अपूर देखे पूरिरहे धनमें । आदि अंत सुखी देखे जनमके दुखीदेखे ऐसे नहींदेखे जिन्हें लोभ नाहिं मनमें ॥ ३ ॥ जावो बाल्मीकि घर ॥ भागवते ॥ न मे प्रियश्चतुर्वेदी मद्भक्त श्वपच प्रियः । तस्मै देयं ततो ग्राह्यं स च पूज्यो यथा ह्यहम् ॥ १२ ॥ अवलीक ॥ दोहा ॥ पेट कपट जिह्वा कपट, नैना कपट निराट । तुलसी हरि कैसे मिलैं, घटमें औघट घाट ॥ ॥ ४ ॥ अहमद या मन सदन में, हरि आवैं किहि वाट । विकट जुरैं जौलौं निपट, खुटै न कपट कपाट ॥ ५ ॥ भक्त्याऽहमेकया ग्राह्यः श्रद्धयात्मा प्रियः सताम् । भक्तिः पुनाति मन्निष्ठा श्वपाकानपिसंभवान् ॥ ६ ॥

अर्जुनऔभीमसेनचलेईनिमंत्रणको अंतरडधारिकहीभक्तिभावदूरिहै । पहुँचेभवनजाइचहुँदिशिफिरिआइपरेभूमिझूमिघरदेख्योछविपूरिहै ॥ आयेनृपराजनिकोदेखितजेकाजनिकोलाजनिसोंकांपिकांपिभयोमनचूरिहै । पावनकोधारियेजूजूंठनिकोडारियेजू पापग्रहटारियेजू कीजैभागभूरिहै ॥ ७६ ॥ जूंठनिलैडारौंसदाद्वारकोबुहारौंनहींऔरकोनिहारौंअजूयहीसांचोपनहै । कहौकहाजैवोकछूपाछेलैजिमाओहमजानिगयेरीतिभक्तिभावतुमतनहै ॥ तवतोलजानोंहियकृष्णपैरिसानोनृप चाहौसोईठानौमेरेसंगकोऊजनहै । भोरहीपधारौअवयहीउरधारौऔरभूलिनविचारौकहीभलोजोपैमनहै ॥ ७७ ॥ कहीसवरीतिसुनिधर्मपुत्रप्रीतिभईकरीलैरसोईकृष्णद्रौपदीसिखाईहै । जेतिकप्रकाररसव्यंजनसुधारिकरो आजुतेरेहाथनिकीहोतिसुफलाई है ॥ लायेजालिवाइकैहैवाहिरजिमाइ देवोकहीप्रभुआपलावोअंकभरिभाईहै । आनिकैवैठायोपाकशालामेंरसालग्रासलेतवाज्योशंखहरिदंडकीलगाईहै ॥ ७८ ॥

पापग्रहटारिये ॥ प्रथमे ॥ येषांसंस्मरणात्पुंसांसद्यःशुद्ध्यंतिवैगृहा ।

किंपुनर्दर्शनस्पर्शपादशौचासनादिभिः ॥ १ ॥ साधुजगमें तीरथ है जा घरमें आवै सब तीर्थहीआवैं ॥ २ ॥ सफलाईहै ॥ एकादशेमद्भक्तपूज्याभ्यदिका ॥ ३ ॥ कृष्णद्रौपदीसिखाई ॥ नैवेद्यं पुरतो न्यस्तं चक्षुषा गृह्यते मया । रसं च दासजिह्वायामश्नामि कमलोद्भव ॥ ४॥ नष्टप्रायेष्वभद्रेषु नित्यं भागवतसेवया । भगवत्युत्तमश्लोके भक्तिर्भवति नैष्ठिकी ॥५ ॥ अंकभरिभक्तिकोनातो दुनिया को मिलाप छोटोतुच्छजानिये व्याधि उत्पत्ति करै याते परिहरिये ॥ ६ ॥

सीतसीतप्रतिक्योंनबाज्योकछुलाज्यो कहा भक्तिकोप्रभावनहिंजानतयोंजानिये । बोल्योअकुलाइजाइपूंछोअजूद्रौपदीको मेरोदोष नाहींयहआपमनआनिये ॥ मानिसांचिबातजातिबुद्धिआईदेखियाहिसबहीमिलाइमेरीचातुरीबिहानिये । पूंछेतेकहीहैबालमीकिमेंमिला योयातेआदिप्रभुपायोपाऊंस्वादऊनमानिये ॥ ७९ ॥

सीतासतितप्रति ॥ श्लोक ॥ प्रासेग्रासेकृतेनादे कृष्णताड़निप्रष्टके । लोपितोभक्तिःप्रतापसिक्थे सिक्थे न नादितः ॥ १ ॥ जातिबुद्धि आई ॥ पाद्मे ॥ अर्चावतारोपादानवैष्णवोत्पत्त्यर्चिंतनः ॥ मात्रयोनिपरीक्षाय तुल्यमाहुर्मनीषिणः ॥ २ ॥ ऊनमानिये ॥ ऊंचनीचमानेनहिंकोई ॥ हरिकोभजैसोहरिकोहोई ॥ ३ ॥ आशंका इकउपजी मनमें । अर्जुन कहेउ कृष्णसों क्षणमें ॥ कोटिनयज्ञब्राह्मणजेये । पूरेउनहीं सुकौनेहेत ॥ ४ ॥ कहेश्रीकृष्ण सुनौहोपाण्डव कोउनसंतआयो तिहारेवार ताजे येजग पूरोहोतो वाजैदेवद्वार प्रभुहमऊंचऊंचकुलपूजे हम जान्यो यह निर्मल भाइ इनहूंसों कोऊ निर्मलहैहै तौ हमभूले देहु बताइ । बालमी कहै जातिसरगरौ जाके राजा आयेधाइ । बाजै येजग पूरोह्वैहैमनसापूरण कार्य सँवारि । अर्जुन भीम नकुल सहदेवा राजासहितसुपहुंचेजाइ । करिदंडवत चरणगहि लीन्हे बालमीक के लागेपाइ । तुमतो ऊंचकुल जनमे हमतौ नीच महाकुल माहिं । ऊंचनीचकी शंकाआवै ताते तिहरे आवैं नाहिं ॥ ७ ॥ तुमतौ या जग सकल शिरोमणि तुम समतूल और नहिं

कोई ॥ कृपाकरौ अरु भवन पधारौ तुम्हैं चले यज्ञ पूरण होई ॥ ८ ॥
जब वाल्मीक राजाके आयो प्रेमप्रीति सों लियो अहार । जितनेग्रास
जे वतेलीने शंखजु बाज्योतितनीवार ॥ ९ ॥ भूधर कहैं हाथसोंभाजों
खंडखंड करिहौं चकचूर । हमरोसाधु जेंवतेग्रासजुकणिकणिकाहनवा-
ज्योकूर ॥ १० ॥ देवदेव मोहिं दोष न दीजै दोपजुकोई द्रौपदी माहिं-
ऊंच नीचकी शंका आई याते कणिकणि बाज्यो नाहिं ॥ ११ ॥
परख्यासाधु पारखा आई जगमें न्योति जिमायो सोइ। जाजैयें जग
पूरण हूवो नाम देव कहैं शिरोमणि सोइ ॥ १२ ॥

टीकारुक्मांगदराजाकी ॥ रुक्मांगदवागशुभगंधफूलपागिरह्यो-
करिअनुरागदेववधूलेनआवहीं। रहिगईएककांटाचुभ्योपगबैंगनको
सुनिनृपमालीपासआयोसुखपावहीं ॥ कहोकोउपाइस्वर्गलोककोप-
ठाइवीजैकरैएकादशीजलधारैकरजावहीं। व्रतकोतौनामयहग्रामको
ऊजानेनाहिंकीनोहींअजानकालिहलावोशुनगावहीं ॥ ८० ॥ फेरी-
नृपडौंड़ीसुनिवनिककीलौंड़ीभूखीरहीहीकनौड़ी निशिजागीउनमा-
रिय। राजाढिगआइकरिदियोव्रतदानभईतियायोंउड़ानिनिजलोक-
कोपधारिये ॥ महिमाअपारदेखिभूपनेविचारियाकोकोऊअन्नखाइ-
ताकोवांधिमारिडारिये । याहीकेप्रभावभावभक्तिविस्तारभयोनयो
चोजासुनौसवपुरीलैउधारिये ॥ ८१ ॥ एकादशीव्रतकीसचाईलैदि-
खाईराजासुताकीनिकाईसुनौनीकेचितलाइकै।पितावरआयोपतिभू-
पनैंसतायोअति मांगैतियापासनहींदियोयहभाइकै॥ आजुहरिवास-
रसोतासरणपूजैकोऊ डरकहांमीचकोयेंमानीसुखपाइकै। तजेउन-
प्राणपायेवेगिभगवानवधूहियेसरसानभईकह्योपनगाइकै ॥ ८२ ॥

याहीके प्रभाव ॥ ब्रह्मवैवर्ते॥ सर्वपापप्रशमनं पुण्यं मात्यंतिकंयया।
गोविंदस्मरणंनृणांयदेकादस्यपारणम् ॥ १ ॥ सबही को कर्त्तव्यहै ॥
नीते ॥ कष्टाधिकष्टंसततंप्रवासी ततोधिकष्टं परगेहवासी ॥ ततोधिकष्टं
कृपणस्यसेवा ततोधिकष्टंधनहीनसेवा ॥ २ ॥ अपनको सेवा ते भूखी

रही एकादशी के माहात्म्यसे इतिहासकी कथा है एकराजाकी स्त्री देखिकै मगनभये पूछी महाराज आपकैसे मगन भये तबकही एकादशी के प्रताप सों राज्यपायो याते मगनभये ॥ २ ॥ नृगराजा शिकार को गये देवलऋषिसों पूछी भद्रश्रयाखंड अगस्त्यजी गये हैं ॥ ३ ॥

टीकासमुदायको ॥ सुनौहरिचंद्रकथाव्यथाबिनद्रव्यादियो तथानहींराखीबेंचिसुततियातनहै । सुरथसुधन्वाजूसोंदोषकेकरत मरेशंखऔलिखिताबिप्रभयोमेलोमनहै ॥ इंद्रऔअगिनिगये शिवीपै परीक्षालेन काटिदियोमांसरीझिसांचोजान्योपनहै। भरतदधीचिआ दिभागवतबीचगायेसबनिसुहाये जिनादियोतनधनहै ॥ ८३ ॥ टीका विंध्यावलीकी ॥ विंध्यावलीतियासी न देखीकहूंतियानैन बांध्योप्रभुपियादेखिकियोमनचौगुनो । करिअभिमानदान दैन बैठ्योतुमहीको कियोअपमानमैंतोमान्योसुखसौगुनो ॥ त्रिभुवनछी निलियेदियेवैरीदेवतानि प्राणमात्ररहेहरिआन्योनहिंऔगुनो । ऐसी भक्तिहोइजोपैजागोरहौसोइ अहो रहैभवमांझएपैलागेनहींभौगुनो ॥ ८४ ॥ टीकामोरध्वजराजाजूकी ॥ अर्जुनकेगर्बभयो कृष्णप्रभु जा-निलयोदियोरसभारीयाहिरोगयोंमिटाइये ।मेरोएकभक्तआइतोकोलै दिखाऊंताहि भयेबिप्रवृद्धसंगबालचालिजाइये ॥ पहुँचतभाष्योजा-इमोरध्वजराजाकहां वेगिसुधिदेवोकाहूबातयोजनाइये । सेवाप्रभु करौनेकरहौपाँवधरौजाइकहो तुमबैठौकहीआगिसीलगाइये ॥८५॥

दियोतनधन है ॥ भागवते ॥ जहौ युवैव मलवदुत्तमश्लोकलालसः ॥ १ ॥ करि अभिमान ॥ दोहा ॥ नारी काहू रंक की, अपनी कहै न कोइ ॥ हरिनारी अपनी कहैं, क्यों न फजीहत होइ ॥ २ ॥ नहीं भौगुनो ॥ साधूजन जगमें रहैं, ज्यों कमला जलमाहिं । सदा सर्वदा सँग रहै, जलको परसत नाहिं ॥ गर्वभयो ॥ भागवते ॥ तपो विद्या च विप्रा-णां निश्श्रेयसकरेउभे । तएवदुर्विनीतस्यकल्पतेकर्तुमन्यथा ॥ ४ ॥ सेनयो-रुभयोर्मध्येरथंस्थापयमेच्युत ॥ ५ ॥ दोहा ॥ तिमिरगयो रवि देखिकै,

कुमतिगई गुरुज्ञान । सुमतिगई परलोभते, भक्तिगई अभिमान ॥ ६ ॥

चलेअनखाइपाइँगहिअटकाइजाइ नृपकोसुनाइततकालवैरेआये-हैं।बड़ी कृपाकरी आजुफरीवेलिचाहमेरीनिपटनवेलिफलपायोयाते पायेहैं ॥ दीजैआज्ञामोहिंसोइकीजैसुखलीजैवहीपीजै वाणीरसमेरे नैनलै सिरायेहैं।सुनिक्रोधगयोमोदभयो सोपरिक्षाहियेलिये चितचाव ऐसेवचनसुनायेहैं ॥८६॥ देवकीप्रतिज्ञाकरोंकरीजूप्रतिज्ञाहमजाही भांतिसुखतुम्हैंसोईमोकोभाईहै । मिल्योमगसिंहयहबालककोखाये जातकहीखावोमोहिं नहींयहीसुखदाईहै॥काहूभांतिछांडौनृप आधो जोशरीरआवै तौहीयाहितजौंकहिवातमोजनाईहै । बोलीउठितिया अरधंगीमोहिंजायदेवोपुत्रकहैमोकोलेवोऔरसुधिआईहै ॥८७॥ सुनौ एकवात सुततियालैकरौतगात चीरें धीरें भीरेनाहिं पीछेउनभाषिये। कीनोंवाहीभांति अहोनासालगिआयोजव ढरेउदृगनीरभीरवाकरन चाषिये । चलेअनखाइगहिपाइँसोसुनायेवैन नैनजलआयो अंगकामाकि हिनाखिये।सुनिभरिआयो हियो निजतनश्यामाकियो दियोसुख रूप व्यथागईअभिलाषिये ॥ ८९ ॥

कीन्हों वाही भांति ॥ दोहा ॥ कांचकथीर अधीर नर, कसेन उपजै प्रेम ॥ परमा कसनी साधु सहैं, कै हीरा कै हेम ॥ १ ॥ कवित्त ॥ अगिनि कनक जारै चन्दन खंडित आरै शिलावसे शीतल तो वासना घटातिहै । क्षीरमथे माखन वटुरि आवै येदिलहै मुकुर मलिन मार्जे मूरति दिखात है ॥ तोरेहूं सरस अरु मोरेहू सरस रस छीलैं छाटैं काटैं ओटैं अधिक मिठातिहै । रचिवेकी कहा कहौ विरचैं सहस गुनो सज्जन सनेह कहूं वातनि सिठातु है ॥ १ ॥ सुनायेवैन ॥ नाटके ॥ गृह्णात्येप रिपोः शिरः प्रतिपदं गृह्णात्यसौ वाजिनं नीत्वा चर्म धनुश्च याति पुरतः संग्रामभूमावपि ॥ द्यूतं चौर्य्यपरस्त्रियश्च शपथं जानाति नायंकरो दानानुपमतां निरीक्ष्य विधिना शौचाधिकारी कृतः ॥ १ ॥

मोंपैतौनदियोजाइनिपटरिझाइलियो तऊरीझिदियेविना मेरे

हियेशालहै । मांगोवरकोटिचोट वदलोनदूकतहै सूकतहैमुखसुधि आयेवहांहालहै ॥ बोल्योभक्तराजतुमबड़ेमहाराजकोऊथोरोईकरत काजमानोकृतजालहै । एकमोको दीजै दाव दीयोजूवखानोंवेगि साधुपैपरिक्षाजिनिकरौकलिकालहै ॥ ९० ॥

कलिकालहै ॥ दोहा ॥ चारिसवेरीं चारि अवेरी, इतनी देगोपाला । इतनी मेते एकघटै तौ, यहले अपनी माला ॥ २ ॥ जव अर्जुन को गर्वगयो तववोले ॥ पद ॥ कहौं कहांलौं कृपा तिहारी । कुलकलंक सवमेटि हमारे किये जगत यशपावनकारी । द्विजकानीन हमारो आजा गोलक पिता बंशकोगारी । हमतौ कुंड सबै जग जानैं ताहूमें औरैग तिन्यारी । महाकष्टकरि ब्याहजुकीनों ह्वै गइ तियापंचभर्तारी । बड़े ब्यसन दूषण युत राजा हमतें अधिकजु अग्रजुवारी । याकुकर्मकी अवधि कहांलौं जोतिय राजसभामें हारी । हते पितामह बंधु विप्र गुरु लोभी नीच स्वारथीभारी । समझत नहीं कौन विधिरीझे हम तौ ऐसे अधम बिकारी । अति आतुरह्वै रक्षाकीनी अशन बसनकी सबै सँ- भारी । यह तौ साधनको फलनाहीं वार वार हम यहै विचारी । वीरभद्र केवल कृपाते विगरतिगई सो सबै सुधारी ॥ ३ ॥

टीका अलरककी ॥ अलरककीकीरतिमेंराच्योनितसांचोहिये कियेउपदेशहूनछूटैविषयवासना । माता मंदालसाकीवड़ीयेप्रति- ज्ञासुनो आवैजोउदरमांझ फेरिगर्भआसना । पतिकोनिहोरोताते रह्योछोटैकोरोताकोलै गयेनिकासिमिलि काशीनृपशासना मुद्रिकाउघारिऔनिहारिदत्तात्रेयजूको भयेभवभावकरीप्रभुकीउपा सना ॥ ९१ ॥ मूल ॥ तिनचरणधूरिमोभूरि शिर जेजेहरीमाया तरे ॥ रिभुइक्ष्वाकुअरुऐलगाधि रघुरैगैशुचिशतधन्वा । अमूरति अरुरंतिदेवउतंकभूरिदेवलैवस्वतमन्वा । नहुषययातिदिलीपपूरि यदुगुहस्मानधाता । पिप्पलनिमिभरद्वाज दक्षसभार्गवसंवाता ॥

संजयसमीकउत्तानपादयाज्ञवल्क्ययशजगभर ॥तन चरणधूरिमाभू-
रिशिरजेजेहरिमायातरे ॥ ९२ ॥ टीकारंतिदेवकी ॥ अहोरंतिदेव-
नृपसंतद्रुसकेतवंशअतिहीप्रशंससोअकाशवृत्तलईहै । भूखेकोनदे-
खिसकैआमैसोउठाइदेत नेतनहींकरैभूखदेहक्षीणभईहै । चालीस-
औआठदिनपाछेजलअन्नआयो दियोविप्रशूद्रनीचश्वानयहनईहै ।
हरिहीनिहारैउनमांझतबआयेप्रभुभायेजगदुखजितेभोगोंभक्तिछईहै

मुद्रकानि ॥ मदालसावाक्यं ॥ संगः सर्वात्मना त्याज्यः यदि त्यक्तुं न
शक्यते । सद्भिरेव प्रकर्त्तव्यःसत्संगो भवभंजनः ॥ १ ॥ हरिही निहारे ॥
गीतायाम् ॥ विद्याविनयसंपन्नेब्राह्मणेगविहस्तिनि । शुनिचैवश्वपाकेच पं-
डिताःसमदर्शिनः ॥ सवैया ॥ अहौक्षौरहजारमें लाखकरोरमेंएकवटैटिकै
नौहीसही । इहांऐसेहीदृश्यप्रपंचकेमाहिं गहैअविवेकरहैसुवही । पुनिनोनमें
एकमिलाइलिखै होइऔरकीऔरसुजाइचही । यहीब्रह्मसबैसुअबोधाहिपाइ
भयो भवशोधकबोधयही ॥ ३ ॥ दुर्ल्लभावैष्णवीनारीदुर्ल्लभोविप्रवैष्णवः ।
दुर्ल्लभोवैष्णवोराजाअतिदुर्ल्लभदुर्ल्लभः ॥ ४ ॥

राजागुहकीटीका ॥ भिल्लनिकोराजागुहरामअभिरामप्रीति भ-
योवनवासमिल्योमारगमेंआइकै । करौयहराजजूविराजिसुखदीजै-
मोको बोलेचैनसाजितज्योआज्ञापितुपाइकै । दारुणवियोगअकुला-
इहगअश्रुपात पाछेलोहूजाततवसकैकौनगाइकै । रहैनैनमूंदिरघुना-
थविनदेखैकहाअहा प्रेमरीतिमेरेहियेरहीछाइकै ॥ ९३ ॥

भयो वनवास ॥ रामचन्द्रिका ॥ पढ़ौविरंचि वेद मौन जीवसोर छं-
डिरे । कुबेर बेरके कही न यक्षभीर मंडिरे । दिनेश दूरिजाइ बैठु नार-
दादि संगही । न बोल चंद मंदबुद्धि इंद्रकी सभानहीं ॥ १ ॥ दोहा ॥
नाममंथरा मंदमति, चेरि कैकयीकेरि । अयशपिटारी ताहिकरि, गईगिरा
मतिफेरि ॥ ३ ॥ इन्द्रके युद्धके ईश्वर ॥ कुंडलिया ॥ पुत्र प्राण सबते
बडे, चारों युग परमान । ते राजा दोऊ तजे, वचन न दीनेजान । वचन
न दीनेजान बड़ेनकी यहै बड़ाई । वचन रहे सो कार्य और सर्वसविनजाई ।

कहि गिरिधर कविराय भये दशरथ नृप ऐसे। प्राण पुत्र परिहरे वचन परिहरे न तैसे ॥ ३ ॥ रही न रानी कैकयी, अमर भई यहबात । काहू पूरब योगते, बन पठये जगतात ॥ बन पठये जगतात पिता परलोक सिधारे । जिहिहित सुतके कार्य फेरि नाहिं वदन निहारे । कहि गिरिधर कविराय लोकमें चली कहानी। अपकीरतिरहिगई कैकयी रही न रानी ॥ ३ ॥ सवैया ॥ अहोपूत कहां चलिहौ अबहीं तुम सांची कहौ किन मोसों लला । सुनि नयननमें जलसोंभारिकै जैसे बोझपरे नइजात पला ॥ सियके सुखकीछबि यों नघटै मनोद्विजसोंलै द्विजराजकला । सुधिराखनहेत सियाबरकी पलट्यौ कनकी अँगुरीको छला ॥ ४ ॥ जानकी तिहारे संग जानत न एकौ दुख याके लाइ बेटा तुम बनहू में सहियो । पायँनको चलिबो है जौलौं पांय चलो जाइ आगे जनिचलौ याहि संगलै निवहियो ॥ लक्ष्मणको मनरूखो भूखो जनिदेखि सको आवै कोऊ उतते संदेशोताहि कहियो । उतरत जाहु काहू ग्रामन के बीचपूत मेरे बनवासी मेरी सुधिलेत रहियो ॥ ५ ॥ हनुमान नाटके ॥ सद्यः पुनः परिसरेपि शिरीषमृद्वी सीताजवात्त्रिचतुराणिपादानि गत्वा गंतव्यमस्ति कियदित्यसकृद्ब्रुवाणा रामाश्रुणः कृतवती प्रथमावतारम् ॥ १ ॥ पुरते निकसी रघुबीरबधू करिसाहस धीर दई डगद्वै । भरिभाल कनी निकसीश्रमकी पटसूकिगये अधरामृतद्वै । पुिन पूछत यों चलनों व कितो कहै पर्णकुटी करिहो कितवै । तुलसी सियकी लखि आतुरता पियके युगनयनचले जलच्वै॥ २॥भोरहीके भूखे ह्वैहैं प्यास मुख सूखे ह्वैहैं चलैंपग दूखे ह्वैहैं फिरैं मग रातको । रविकी किरणिलागे लालकुम्हिलाने ह्वैहैं झार लपटाने झँगाफाटेह्वैहैं गात के। अबतो भई है सांझ वेहैं बनमांझ हम रही क्यों न बांझ हियेफटे क्यों न मात के। मेरेरी वेछौना गये तजिकै घरौना होंगे तरुके तरौना सो बिछौना किये पातके ॥ ३ ॥ मगमें परतपग सुंदर भरत डग कोमल बिमलभूमि छोड़तहैं धनको। जिहि ठौर कांटेकाठ कांकर परत आइ तिहि ठौर धरत हैं आपने चरणको । जिते छांह

सीरी तितै कीजत हैं प्यारी नीरी जितै घाम तितै कीजै नीरद से तन को। गहे रघुनाथ निजहाथन सों हाथ ऐसे जानकी को लियेसाथ चले- जात वनको।। ४ ॥ मुख सूखि गये रसनाधर मंजुल कंजसे लोचन चारुचितै। करुणानिधि कंत तुरंत कहेउ कि दुरंत महावन भूरिअवै। सरसीरुह लोचन नीर चितै रघुनाथकही सियसोंजुतलै ॥ अबहीं वन- भामिनी पूंछतिहौ तजि कौशलराज पुरी दिनद्वै ॥ ५ ॥ जासुके नाम अजामिलसे खल कोटि नदी भव छंडतकाढ़े। जो सुमिरैं गिरि मेरु शिला कन होत अजाखुर वारिध बाढ़े। तुलसी जिहिके पद पंकजसों प्रगटी तटनी जुहरैअघगाढ़े। ते प्रभुहैं सरिता तरिबेकहँ मांगत नाव करारेरिपैठा- ढ़े ॥ २ ॥ इहि घाटते थोरिकदूरि अहो कटिलों जलथाह बताइहोंजू। परशैंपगधूरि तरै तरणी वरणी घर क्यों समुझाइहों जू। वरुमारिये मोहिं बिनापगधोये हौंनाथ न नाव चढ़ाइहोंजू। तुलसी अवलम्ब न और कछू लरिका किहिभांति जिवाइहोंजू ॥ ४ ॥ रावरेदोषनि पाँयनि को पगधूरि को भूरि प्रभावमहाहै। पाहनतेबलवान न काठकी कोमल है जलखाइरहा- है। तुलसी सुनि केवटके वरबैन हँसे प्रभु जानकी ओर हहाहै। पावन पांव पखारिके नाव चढ़ाइहौं आयसु होत कहाहै ॥ ५ ॥ प्रभु रुखपाइके बुलाइबाल घरणि कूं वंदिकै चरण चहुँदिशिबैठे घेरिघेरि। छोटोसो कठौताभरि आन्यो पानी गंगाजूको धोइपाइँ पीवतपुनीतवारि फेरिफेरि। तुलसी सराहैं ताको भागसानुराग सुर वरपैं सुमनजयजय कहैं टेरिटेरि। बिबुधसनेहसानी बानी सुसयानी सुनि हँसे रामजानकी लषण तनहेरिहेरि ॥ ६ ॥ लक्ष्मणसों हमसों इकसाथ सिया पुनि साथहि छांडि न दैहैं। बानर ऋक्ष जितेकहि केशव ते सब कंदरखोह समै हैं। छोड़िकै आनि मिल्यो हमसों तिनको यह संग कहा करि ऐहैं। औरसबै घरके वन के कहु कौनके भौन बिभीषण जैहैं ॥ ७ ॥

चौदहबरषपाछेआये रघुनाथनाथ साथकेजेभीलकहैंआयेप्रभु देखिये। बोल्योअबपाऊंकहांहोतनप्रतीतक्योंहूं प्रीतिकरिमिलेराम

कहींमोकोपेखिये । परसपिछानेलपटानेसुखसागर समानेप्राणपाये-मानो भालभागलेखिये । प्रेमकीजुबातक्योंहूंबानीमेंसमातनाहिं अतिअकु लातकहोंकैसेकैविशेषिये ॥ ९४ ॥ मूल ॥ निमिअरुनवयोगेश्वरा पादत्राणकीहौंशरण॥ कविहरिकरिभाजनभक्तरत्नाकरभारी । अंतरिक्षअरुचमस अनन्यतापधतउधारी ॥ प्रबुधप्रेमकीराशि भूरिदाआविरहोता । पिप्पलद्रुमलप्रसिद्धभवाब्धिपारकेपोता ॥ जयंतीनंदनजगतिके त्रिविधतापआमयहरण।निमिअरुनवयोगेश्वरा पादत्राणकीहौंशरण ॥ १३ ॥ पदपरागकरुणकरौ जेनियंतानवधा भक्तिके ॥ श्रवणपरीक्षितसुमति व्याससावककारितन । सुठिसुमिरणप्रह्लादपृथुपूजाकमलाचरन । नाभनवंदकसुफलकसुवन दासदीपाति कपीश्वर । सख्यत्वेपार्थसमर्पनआत्माबलिधर ॥ उपजीवी इननामकेरातेत्राताअगतिके, पदपरागकरुणाकरौ जेनियंतानवधा-भक्तिके ॥ १४ ॥

दोहा ॥ यान पुष्पमय एकलिय, चढ़े लषण सिय श्याम ॥ करतस्तुति सबदेवमनि, चलेअवधपुरराम ॥ १ ॥ रघुबर आगम सुनि अवध, घरघरबुरतनिशान ॥ मिले भरतपरिजनप्रजा, प्रथमहिं गुरुसनमान ॥ १ ॥ पादत्राणकीहौं शरण ॥ वेदाचार्य्यवाक्यं ॥ कर्मावलंबकाः केचित् केचित् ज्ञानावलम्बकाः । वयं तु हरिदासानां पादत्राणावलम्बकाः ॥ २ ॥ भक्तिके भागवते ॥ श्रीविष्णोः श्रवणे परीक्षिदभवद्वैयासकिः कीर्तने। प्रह्लादःस्मरणे तदंघ्रिभजने लक्ष्मी पृथुः पूजने ॥ अक्रूरस्त्वभिवंदने कपिपतिर्दास्ये च सख्येऽर्जुनः ॥ सर्वस्वात्मनिवेदने बलिरभूत्कृष्णाप्तिपारंपरा ॥ ५ ॥

श्रवणरसिककहूंसुनेनपरीक्षितसे पानहूंकरतलागैकोटिगुनीप्यासहैं । मुनिमनमांझक्योंहूंआवतनध्यावतहू वहीगर्भमध्य देखिआयोरूपरासहै । कहीशुकदेवजूसोंटेवमेरीलीजैजानिप्राणलागैकथानहींतक्षककात्रासहै।कीजियेपरीक्षाउरआनीमतिसानीअहो बानीविरमानीजहांजीवननिरासहै ॥ ९५ ॥ शुकदेवकीशंका ॥ गर्भतेनिक-

सचलेबनहींमेंकीनों बास व्याससे पिताको नहीं उत्तरहूदियोहै। दशमइलोकसुनिगुणमतिहरिगई नईभईरीतिपढ़िभागवतलियोहै। रूपगुणभरसह्योजातकैसेकरिआये सभानृपढारिभीज्योप्रेमरसहियोहै। पूछैंभक्तभूपठौरठौरपरैंभौरजाइ गाइउठैंजबैमानोरंगझरिकियोहै॥ ९६॥

प्यासहै॥ पारनो॥ प्रवराख्यातको हंसः शुको मीनादयस्तथा। अवरा वृक भूरण्डवृषोष्ट्राद्याःप्रकीर्तिताः॥ १॥ छप्पय॥ अन्य मनादगलोलपदछेदक असमंजस। स्थित अधीर श्रुति मंद पलक झपैकेनिद्रावस। प्रश्न प्रसंगति मिले मधुर अनुमोदन अक्रिय। बादर सिरसकछहर अभिनज्ञ अलापत प्रियाप्रिय। रसिक अनन्य बिशालमति बातकहत अनुभवसुकृत। दश दोषरहित श्रोतामिलै तौ उज्ज्वल रस बरषै अमृत॥ २॥ दशमश्लोक॥ दशमे॥ अहो बकीयं स्तनकालकूटं जिघांसयापाययदप्यसाध्वी। लेभे गतिं धात्र्युचितां ततोऽन्यं कं वा दयालुं शरणं व्रजेम॥ ३॥ परिनिष्ठितोपि नैर्गुण्येउत्तमश्लोकलीलया॥ गृहीतचेता राजर्षे आख्यानंतदधीतवान्॥ ४॥ परैंभवरजाइ॥ कवित्त॥ सूझत न वारापार लिख्यो प्रेमहै अपार मिलनै अथाह देखि धीरज हिरातुहै। पातीको अधारपाइ पैरत सनेह सिंधु बिरह की लहरि मांझ हियरा हिरात है। नवल गुनबंधीबूडि ढूंढ़तरतन औधी मूरति मरजियाकी नेकन थिरात है। एक बेरबांचि पुनि फेरि खोलि फेरि बांचि बांचि बांचि प्राणप्यारी बूड़ि बूड़िजातिहै॥ ५॥

प्रह्लादकीटीका॥ सुमिरणसांचोकियोलियोदेखिसबहींमें एकभगवानकैसेकाटैतरवारहै। काटिबोखड़गजलबोरिबोसकतिजाकी ताहीकोनिहारैंचहुँओरसोअपारहै। पूछतेबतायोखंभतहांहींदिखायोरूप प्रगटअनूपभक्तवाणीहींसोप्यारहै। दुष्टडारचोमारिगरेआंतेंलईडारितऊक्रोधको न पारकहाकियोयोंविचारहै॥ ९७॥

पूंछते॥ श्लोक॥ तत्साधु मन्ये सुरवर्य देहिनां सदा समुद्विग्नधियामसद्ग्रहात्। हित्वात्मपातं गृहमंधकूपं वनंगतो यद्धरिमाश्रयेतम्॥ १॥ श्रवणं की-

र्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् ॥ अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥ कवित्त ॥ पानिसों बांधिकै अगाध जलबोरि राखे तीर तरवारनि सों मारि मारि हारे हैं। गिरिते गिराय दिये डरपे न नेकु तब मतवारे परवत से हाथीतरडारे हैं ॥ फेरे शिर आरा लै अग्निमांझ जारे पुनि पूंछि मीडिगातनु लगाये नागकारे हैं। भावते के प्रेममें मगन कछू जानै नहिं ऐसे प्रह्लाद पूरे प्रेम मतवारे हैं ॥ ३ ॥ व्याल कराल महा विषपावक मत्त गयन्दनिके रद तोरे । ताते निशङ्क चले डरपे नहीं किंकरते करनी मुख मोरे । नेक विषाद नहीं प्रह्लादहि कारण केहरि केवल होरे । कौनकी त्रास सहै तुलसी जोपै राखिहै राम तौ मारिहै कोरे ॥ ४ ॥ छप्पय ॥ गगन गूंज गुंजरत शोर दशहूं दिशि पूरण । हरत धरति कलमलत शेष शंकर विषचूरण । उसरसंक सकपकत धीर धंपकत धमक्क सुनि । भगत भीर भहराइ खंभ फहराइफटितपुनि ॥ अति विकट दंत कट कट करत चट पटाइ नख करत तप । लफ लफतजीभ दुर्ज्जन दलन सुजय जय श्रीनृसिंह वपु ॥ ५ ॥ अति भक्तिके काज सुधारनको अद्भुत अवतार मुरारि धरे ॥ ६ ॥

डरेशिवआदिकहुँदेख्योनहींक्रोधऐसो आवत न ढिगकोऊलक्ष्मीहूंत्रासहै । तबतौपठायोप्रह्लादअह्लादमहा अहाभक्तिभावपग्योआयोप्रभुपासहै । गोदमेंउठाइलियोशीशपरहाथदियो हियोहुलशायोकहीवाणीविनयराशहै । आईजगदयालागिपरेउश्रीनृसिंहजूकोअरच्योयोंछुटावोकरौमायाज्ञाननाशहै ॥ ९८ ॥

वाणी विनयराशिहै ॥ पाद्मे ॥ कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुंधरा सा वसती च धन्या । स्वर्गे स्थितास्ततपितरोपि धन्या येषां कुले वैष्णवनामधेयम् ॥ १ ॥ छप्पय ॥ मनोरथ मनके भाव असत्त कहत अधिकारीसों हम निपट असत्य न आतहि देखि सुपनैतिय संगमः सोऊ झूठ जो होय तऊ नाहिं कामसतावै । जो मनके अनुभाव जासु तिहि जगत डरावै ॥ सुपनोंहू है सांच पुन जगतमिटै पहिंचानिये । योंहीं

विषय निवेशता गये सांचसो जानिये ॥ २ ॥ श्लोक ॥ विषयान् ध्याय-तश्चित्तं विषयेषु विसज्जते ॥ मामनुस्मरतश्चित्तं मय्येव प्रविलीयते ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ उबटि अन्हाइ लालधोती झमकाइ पट पीताम्बर छोरन झुराई झमकाइकै । मेलिकै अतरु वह चतुर किशोर बर बांध्यो केशजूरा कर चूरा चमकाइ कै । पहिरिखराऊं मणि रचित खचित तान बानमुसकान पानखात उठ्यो गाइकै । ठाढ़ोसिंह पौरिकर चन्दनकी खौरि चितै कन्यो मनकोरतन शिऱ्यो भौंरखाइकै ॥ ४ ॥

अक्रूरकीटीका ॥ चलेअकरूरमधुपुरीतेविसूरनैनचलीजलधाराकबदेखौंछविपूरको । शकुनमनावै एकदेखिबोईभावै देहसुधिबिसरा वैलोट्योलखिपगधूरिको । वंदनप्रवीनचाह निपटनवीन भईदईशुक देव कहिजीवनकी मूरिको । मिलेरामकृष्णझिलेपाइकैमनोरथको हिलेहगरूपकिये चूरिचूरिचूरिको ॥ ९९ ॥ टीकाबलिजूकी ॥ दियो सर्वसुकारि अतिअनुरागबलि पागिगयोहियो प्रह्लाद सुधिआईहै । गुरुभरमावैं नीतिकहिसमुझावैंबोलउरमें नआवैं किती भीतउपजाईहै ॥कह्योजोईकियोसांचोभावपनलियोअहो दियोडरहरिहूनेमतिनचलाईहै । रीझिप्रभुरहेद्वारभयेवशहारिमानी श्रीशुकवखानीप्रीतिरीतिसोईगाई है ॥ १०० ॥ मूल ॥ हरिप्रसादरसस्वादकेभक्तइतेपरवान ॥ शङ्करशुकसनकादि कपिलनारदहनुमाना । विष्वक्सेनप्रहलाद बलिरु भीषमजगजाना ॥ अर्जुन ध्रुव अम्बरीष विभीषणमहिमाभारी । अनुरागीअक्रूरसदाउद्धवअधिकारी ॥ भगवन्तभक्तअवशिष्टकी कीरतिकहनसुजान । हरिप्रसादरसस्वादके भक्तइतेपरवान ॥ १८ ॥

चूरिचूरि चूरिको॥कवित्त॥बांधिकै मुकेसी चीरा कलंगी जटित हीरा तुर्राडिगगोचपेंचललितही सँवान्योहै । झंगा एकलमकामकंचन वदरंग होत एक छोर पटकाको छैलतासों डान्योहै । धुकधुकी कंठ मध्य हीरा नग मोती जरे शोभित गलमाल आजु लालमें निहाऱ्यो है । पहुँचनिमें

पहुँची सुन्दर रतन जरी अमैट करे नने अमैटि मनडाऱ्यो है ॥ १ ॥ कह्यो जोई ॥ श्लोक ॥ असंतुष्टा द्विजा नष्टाः संतुष्टश्च महीपतिः ॥ सलज्जा गणिका नष्टा निर्लज्जा च कुलांगना ॥ २ ॥ हरिप्रसाद ॥ पाद्मे॥ बलिर्विभीषणो भीष्मः कपिलो नारदोऽर्जुनः ॥ प्रह्लादो जनको व्यासो अम्बरीषः पृथुस्तथा ॥ ३ ॥ विष्वक्सेनो ध्रुवोऽक्रूरो सनकाद्याः शुकादयः॥ वासुदेवप्रसादान्नं सर्वे गृह्णन्तु वैष्णवाः ॥ ४ ॥

ध्यानचतुर्भुज चितधऱ्यो तिन्हैं शरणहौं अनुसरौं।अगस्त्यपुलस्त्यपुलह चमनवशिष्टसौभरऋषि । कर्दमअत्रिरिचीकगर्गगौतमव्यासाशिषि ॥ लोमशभृगुदालभ्यअंगिराशृङ्गीप्रकाशी । मांडवविश्वामित्र दुर्वासासहसअठासी ॥ याबलिथामदग्निमयादर्शकश्यपपरचतपाराशरपदरजधरौं । ध्यानचतुर्भुजचितधऱ्यो तिन्हैंशरण हौं अनुसरौं ॥ १६ ॥

चतुर्भुज ॥ छप्पय ॥ क्रीट मुकुट अरु तिलकभाल राजतछवि छाजत । पीतबसन तनुश्याम कामकोटिक लखिलाजत ॥ कंठत्रिवली श्रीवत्ससुभग शोभित मनमोहत । वैजंतीबनमाल कौनउपमा कबि टोहत॥ कर शंख चक्र गदा पद्मधर रूपअमितगुण गरुड़ध्वज । गोविंद चरण वंदत सदा जय जय जय श्रीचतुर्भुज ॥ १ ॥

साधनसाध्यसत्रहपुराणफलरूपीश्रीभागवत ॥ ब्रह्मविष्णुशिवलिंगपद्मस्कंधविस्तारा । बावनमीनबराहअग्निकूरमऊदारा ॥ गरुड़नारदीभाविष्य ब्रह्मवैवर्त्तश्रवणशुचि । मार्कंडब्रह्मांडकथानानाउपजैरुचि ॥ परमधर्मश्रीसुखकथितचतुरश्लोकीनिगमसत । साधनसाधिसत्रापुराणफलरूपीश्रीभागवत ॥ १७ ॥ दशआठस्मृतिजिनउच्चारी तिनपदसरसिजभालभो ॥ मनुस्मृतिआत्रैवैष्णवीहात्तिकजामी । याज्ञवल्क्यअंगिराशनैश्चरसामृतकनामी ॥ कात्यायनिसांखिल्यगौतमीवशिष्ठीदाखी । सुरगुरुआशाताप पराशरकृतक्रुनिशाखी । आसापासउदारधी परलोकलोकसाधनसो । दश-

आठस्मृतिजिनउच्चरीतिनपदसरसिजभालभो ॥ १८ ॥ मूल ॥ पावैंभक्तिअनपायनीजेरामसचिवसुमिरणकरैं । सृष्टिविजयीजयंत नीतिपरशुचिरविनीता । राष्ट्रविवर्द्धननिपुणसुराष्ट्रपरमघुनीता ॥ अशोकसदाआनन्दधर्मपालकतत्त्ववेता । मंत्रीवरज्यसुमंतचतुर्जग-मंत्रीजेता ॥ अनायासरघुपतिप्रसन्नभवसागरदुस्तरतरैं । पावैंभ-क्तिअनपायनीजेरामसचिवसुमिरणकरैं ॥ १९ ॥

फलरूपी श्रीभागवत ॥ मंगल रूप अनूप निगम कल्पद्रुमको फल । बीजवकुलतैं रहित मधुररस सहित विमल कल ॥ कहत सुनत सुख देत अधिक हरि भक्ति बढ़ावत । सब सारनिको सार व्याससुत शुक मुख गावत ॥ तिमिर हरणको सूरसम श्रीगुविंद जंगजगमगत । पूरन पुराणपति प्रगट नित जय जय जय श्रीभागवत ॥ २ ॥ प्रथमे ॥ निगमकल्पतरोर्गलितं फलं शुकमुखादमृतद्रवसंयुतम् । पिबत भागवतं रसमा-लयं मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः ॥ ३ ॥ छप्पय ॥ एकवेदके चारि सह-सशाखा विस्तारी । साठि लाख इतिहास महाभारत किये भारी ॥ चारिलाख अरु अर्द्ध व्यास वेदांत बखान्यो । अष्टादश किये पुराण हृदय हरिनाम न जान्यो ॥ कहत पढ़त सीखत सुनत दाह न हिरदय-को गयो । तत्त्ववेत्तानारद मिले तब व्यास हृदय शीतल भयो ॥ ४ ॥ दशहजार ब्रह्म पुराण, इकतालीस हजार विष्णु पुराण, छिहत्तरि हजार शिव पुराण, ग्यारह हजार लिङ्गपुराण, पचपन हजार पद्मपुराण, एकसौ इक्यासी हजार स्कंद पुराण, दश हजार वावन पुराण, चौदह हजार मीन पुराण चौबीस वाराह पुराण, पंद्रह अग्नि पुराण, सत्रह कूर्म्म पुराण उनईस गरुड पुराण, पचीस नारद पुराण, चौदह भविष्य पुराण, ब्रह्मवैवर्त अठारह पुराण, नवमारकंडेय पुराण, बारह ब्रह्मांडपुराण अठारह हजार श्रीभागवत श्लोक एवं पुराण संदोहाश्चतुर्लक्षउदाहृता ॥ १ ॥ कृष्णतन छप्पय ॥ प्रथम द्वितिय दोऊ चरण तृतिय चतुर्थदोऊ उरु । पंचमनाभि गंभीर हृदय षष्टम मुख पुरु ॥ सप्तम अष्टम भुजा नवम कंठ विराजै ।

दशम वदन सुखसदन भाल एकादशराजै ॥ द्वादश शिर शोभित सदा संपल रूपी सुमिरनमन । तत्त्ववेत्ता तिहुंलोकमें कीर्तिरूपी कृष्ण तन ॥ २ ॥ नवमे ॥ मात्रास्वस्रा दुहित्रावा नविविक्तासनोभवेत् । बलवानिंद्रियग्रामो विद्वांसमपकर्षति ॥ ३ ॥ तापै संन्यासीको दृष्टांत ॥

शुभदृष्टिवृष्टिमोपरकरौ जेसहचररघुवीरके ॥ दिनकरसुतहरि राजबालिबच्छकेशरीऔरस ॥ दधिमुखद्विविदमयंदऋच्छपतिसम-कोपौरस ॥ उल्कासुभटसुसेनदरीमुखकुमुदनीलनल ॥ सरभांगवै-गवाछपनस गँधमादन अतिबल॥पद्मअठारहयूथपाल रामकाजभद्र-भीरके । शुभदृष्टिवृष्टिमोपरकरौ जेसहचररघुवीरके ॥२०॥ मूल ॥ ब्रजबड़ेगोपपरजन्यकेसुतनीकेनवनंद ॥ धरानंद ध्रुवनंद तृतियउप-नंद सुनागर । चतुर्थतहां अभिनंदनंदसुख सिंधुउजागर ॥ सुठि-सुनंदपशुपालनिर्मलानिश्चयअभिनंदन । करमाधरमानंद अनुज विदितवल्लभजगवंदन ॥ आसपास वा वगरके जहांविहरतपशुपशु छंद । ब्रजबडेगोपपरजन्यकेसुतनीकेनवनंद ॥ २१ ॥

बालबच्छ ॥ कवित्त ॥ हरगिरि हाल हद मेरुगिरि हाल पुनि उद्र-गिरि हाल और रुद्रगिरि हालवी । सप्तपाताल हाल दशों दिग्पाल हाल पलपल हाल ऊपर उझालवी । केशवदास लंकको विपुल दल बलहाल दशशीश हाल उठ्यो भुजबीश हालवी । लोक हाल और भूलोक हाल एकबालि बलवंत सुतपग नहीं हालवी ॥ १ ॥ पादरज भागवते ॥ तद्भूरि भाग्यमिह जन्म किमप्यटव्यामिह गोकुलेपि कतमांघ्रिरजो-भिषेकम् । यज्जीवतंतु निखिलं भगवान् मुकुंदस्त्वद्यापि यत्पदरजः श्रुति-मृग्यमेव ॥ अहो भाग्यमहो भाग्यं नंदगोपव्रजौकसाम् । यन्मित्रं पर-मानंदं पूर्णब्रह्म सनातनम् ॥ आशामहो चरणरेणुजुषमहं स्याम् वृन्दा-वने किमपिगुल्मलतौषधीनाम् । या दुस्त्यजं स्वजनमार्यपथं च हित्वा भेजुर्मुकुंदपदवीं श्रुतिभिर्विमृग्याम् ॥ ३ ॥ या दोहने वहनने मथनो-पलेपप्रेंखेंखनार्भरुदितेक्षणमार्जनादौ ॥ गायंतिचैनमनुरक्तधियोऽश्रुकं-

न्यो धन्या व्रजस्त्रिय उरुक्रमचित्तपानाः ॥ ४ ॥ षष्टिवर्षसहस्राणि मया तप्तं तपः पुरा ॥ नन्दगोपव्रजस्त्रीणां पादरेणूपलब्धये ॥ ५ ॥

वालवृद्धनरनारिगोप होंअरथीउनपादरज ॥ नंदगोपउपनंदध्रुव धरानंदमहरियशोदा कीरतदावृषभानकुँवरि सहचरिविहरतमनमोदा ॥ मधुमंगलसुवलसुवाहुभोजअर्जुनश्रीदामा । मंडलग्वालअनेकश्यामसंगीवहुनामा ॥ घोषनिवासनकीकृपा सुरनरवांछितआदि अज । वालवृद्धनरनारिगोप होंअर्थीउनपादरज॥२२॥ मूल ॥ व्रजराजसुवनसँगसदनवनअनुगसदातत्पररहैं ॥ रक्तकपत्रकऔर पत्रिसवहीमनभावैं । मधुकंठौवमधुवर्त्तरसालविशालसुहावैं । प्रेमकंदमकरंदआनंदसदाचंद्रहासा । यादवकुलरसदानशारदाबुद्धिप्रकासा ॥ सेवासमयविचारिकै चारुचतुरवितकीलहैं । व्रजराजसुवनसंगसदनवनअनुगसदातत्पर रहैं ॥ २३ ॥ मूल ॥ सप्तद्वीपमेंदासजेतेमेरेशिरताज । जंवूऔरपलछिशाल्मलिवहुतराजऋषि।कुशपवित्रपुनिक्रौंचकीनमहिमाजानैंलखि ॥ शाकविपुलविस्तारप्रसिद्धनामीअतिपुहकर । पर्वतलोकालोक ओकटापूकञ्चनधर॥हरिभृत्यवसतजेजेजहांतिनसोंनितप्रतिकाज । सप्तद्वीपमेंदासजे ते मेरेशिरताज ॥२४॥

मनमोदा ॥ कवित्त ॥ कहा इतरात जाइ अहो आवो कहैं वात सुनेमनकंठ सुखगात न समाइगो । थोरे वैस भोरे भाइ चोरे लेत लकाचित्त कुंडल झलकहेरि हियराहिराइगो ॥ तुमकाह्नसाँवरे पधारि देखौ एकवार मेरो गोरोकाह्न लखै मनललचाइगो । ग्रीवकी लटक मुरि भौंहकी मटकवीच वीराकी चटकमें अटकि मन जाइगो ॥ १ ॥ दोहा ॥ राधा हरि हरि राधिका, वनिआये संकेत । दंपति रति विपरीति रस सहज सुरति सुखलेत ॥ २ ॥

मध्यद्वीपनवखण्डमें भक्तजितेममभूप । इलावर्त्तआधीशसङ्कर्षणअनुगसदाशिव । रमनकमत्स्यमनुदासहिरण्यकूरमअर्जुनइव । क्रुद्धवराहभूभृत्यवारिपहरिसिंहप्रह्लादा । किंपुरुषरामकपिभरतनारायण

वीनानादा ॥ भद्राश्वग्रीवहयभद्रस्त्रवकेतुकामकमलाअनूप । मध्यद्वीपनवखंडमेंभक्तजितेममभूप ॥ २६ ॥ मूल ॥ श्वेतदीपमेंदासजेश्रवणसुनोंतिनकीकथा । श्रीनारायणकोवदननिरंतरताहीदेखें । पलकपरैजोबीचकोटियमजातनलेखें ॥ तिनकेदरशनकाजगयेजहँवीणाधारी । श्यामदईतहँसेनउलटिअबनाहिंअधिकारी । नारायणीअख्यानदृढ़तहांप्रसंगनाहिंनतथा । श्वेतद्वीपमेंदासजेश्रवणसुनोतिनकीकथा ॥ २७ ॥ टीका ॥ श्वेतद्वीपबासीसदारूपकेउपासी गयेनारदविलासीउपदेशआशलागीहै । दईप्रभुसेनजिनिआवोइहिऐनदृगदेखेसदाचैनमतिगतिअनुरागीहै । फिरेदुखपाइजाइकहीश्रीवैकुण्ठनाथसाथलियेचलेलखोभक्तिअंगपागीहै । देख्योएकसरखगरह्योध्यानधरिऋषि पूंछैंहरिकहोकह्योबड़ोबड़भागीहै ॥ १०१ ॥

पलक परै जो बीच ॥ कवित्त ॥ मंजु मोर मुकुट लटकि घुँघुवारी लटैं झूमिझूमि कुण्डल कपोलनिमें झलकैं । वारिज बदन रस रूपको सदन लखि दमकै रदन भारिभारि छबि छलकैं । कानन छुवतकोपे ऐन मैन कोटि मोहे शोभा सर लखिलखि मन मीन ललकैं । देखिबेको श्याम शोभा देतो दृग रोम रोम सोन करो बिधि औ अबिधि करी पलकैं ॥ १ ॥ दोहा॥ बड़ो मन्द अरबिंद सुत, जिहि न प्रेम पहिंचानि ॥ पियमुख निरखनि दृगनिको, पलकरची बिच आनि ॥ २ ॥

बरषहजारबीतेनहींचितचीते प्यासोईरहत ऐपैपानी नहींपीजिये पावैजोप्रसादजबजीभसोंसवादलेतलेतनहींऔरयाकीमतिरसभीजिये । लीजैबातमानिजलपानकरिडारिदियोचोंचभारिदृगभरबुधिमतिधीजिये। अचरजदेखिचपलगैनानिमेषकहूं चहूंदिशिफिरचोअबसेवायाकीकीजिये ॥ १०२ ॥ चलोआगेदेखेकोऊरहैनपरेखोभावभक्तकीरलेखोगयेद्वीपहरिगाइये । आयोएकजनधायआरतीसमयाविहायखैंचिलियेप्राणफेरिवधूयाकीआइये ॥ बहीइनकहीपतिदेखोनहीं महीपरचोचरचोयाकोजीवतनागिरचोमनभाइये । ऐसेपुत्रआदिआ-

येसांचेहितमेंदिखाये फेरिकैजिवायेऋषिगायेचितलाइये ॥ १०३ ॥ मूल ॥ उरगअष्टकुलद्वारपालसावधानहरिधामथिति ॥ इलापत्रमुखअनन्तअनन्तकीरतिविस्तारत। पद्मसंकुपनप्रगटध्यानउरतेनहिंटारत ॥ अश्रुकमलवासुकीअजितआज्ञाअनुवर्ती। करकोटकतक्षकसुभटसेवाशिरधरती ॥ आगमोक्तशिवसंहिताअगरएकरसभजनरत। उरगअष्टकुलद्वारपालसावधानहरिधामथिति ॥ १७ ॥

उरग अष्ट ॥ दोहा ॥ दोइ जीभ तनु श्याम हैं, वाक्चलन विष खानि ॥ तुलसी गुरुके मंत्रपै, शीश समर्पत आनि ॥ १ ॥ अनंत कीर्त्ति ॥ कवित्त ॥ दीननिको है दयाल दासनिको रक्षपाल सबको शिरोमणि है सदा अविकार है। धन धनहीन को है गुननि गुनीन औहै रूपहै विरूप को अनूप है उदारहै। आनंद को कंद भवसिंधु को पगार दुख द्वंदकी हरण हार महिमा अपारहै ॥ श्रीगुविंद हरिजूके नामको उचार चारु सारन को सार निरधारको अधार है ॥ २ ॥ दोहा ॥ मैं मानस सौ चित्तते, मनदीनो रवि सो ॥ मैं आवा जावा नित्त मैं तू नजरिन आवदा ॥ २ ॥

चौबीसप्रथमहरिवपुधरे त्योंचतुर्व्यूहकलियुगप्रगट। श्रीरामानुजउदारसुधानिधिअवनिकल्पतरु। विष्णुस्वामिबोहित्यसिंधुसंसारपारकरु ॥ माध्वाचारजमेधभक्तिसरऊसरभरिया। निंबादित्यआदित्य कुहरअज्ञानजुहरिया॥ जनमकरमभागवतधरमसंप्रदायथापींअघटा।चौबीसप्रथमहरिवपुधरेत्योंचतुरव्यूहकलियुगप्रगट ॥ २९ ॥

चौबीस ॥ एकादशे ॥ कृतादिषु प्रजा राजन् कलाविच्छन्ति संभवम्। कलौ खलु भविष्यंति नारायणपरायणाः ॥ १ ॥ गीतायां ॥ परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥ २ ॥ ननु भागवता लोके लोकतत्त्वविचक्षणाः। व्रजन्ति सर्वे संदिष्टा हृदि स्थितेन महात्मना ॥ ३ ॥ भगवानेव भूतानां सर्वत्र रूपया हरिः। रक्षणाय चरेल्लोकान्भक्तरूपेण नारद ॥ ४ ॥ आदि-

पुराणे ॥ भक्तानने वसेद् ब्रह्मा शिरस्येव वसाम्यहम् ॥ नाभौ च शंकरो देवः पदे गंधर्वकिन्नराः ॥ ५ ॥ दोहा ॥ दंभ सहित कलिधर्म लखि, छलहि सहित व्यवहार ॥ स्वारथ सहित सनेह सब, समैरुचित आचार ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ घोरे कलियुगे प्राप्ते सर्वधर्मविवर्जिते ॥ वासुदेवपरा भक्तास्ते कृतार्था न संशयः ॥ ७ ॥ कलियुगप्रगट ॥ छप्पय ॥ दया स्वर्ग उठि गई धर्म धँसिगयो धरणिमें। पुण्य गयो पाताल पाप भयो वरण वरण में। प्रीति रीति सब गई बैर भयो घर घर भारी। आप आपनी परी जिते जगमें नर नारी। कविराज कहत सांचो सबै निपट पलटि समयो गयो ॥ रेनर निरंध सुन कानदै अब प्रतक्ष कलियुग भयो ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कलियुग कालकरालकी, वरणि न जाइ अनीति। वैर बढ्यो चान्यो बरन, आप समय भय भीति ॥ २ ॥

निंबादित्यनामजातेभयोअभिरामकथाआयोएकदंडग्रामन्योतोकरिआयेहैं ॥ पाककोअबारभईसंध्यामानिलईयतीरतीहूनपाऊवेदवचनसुनायेहैं । आंगनमेंनीमतापैआदित्यदिखायोवाहिभोजनकरायो पाछेनिशिचिह्नपायेहैं । प्रगटप्रभावदेखिजान्योभक्तिभावजग दावयाव नामपन्योहन्योमनगायेहैं १०९ दोहा॥ रमापद्धितरामनुज राजैविष्णुस्वामित्रिपुरारि ॥ निम्बादित्यसनकादिकामधुकर गुरुमुखचारि ॥ ३० ॥ मूल ॥ संप्रदायशिरोमणिसिंधुजारच्योभक्तवित्तान । विष्वक्सेनमुनिवर्य्यसपुनषटकोपपुनीता । चोपदेवभागवतलुप्तउद्धन्योनवनीता । मंगलमुनिश्रीनाथपुंडरीकाक्षपरमयश । राममिश्ररसरासप्रगटपरतापपरांकुश । यामुनिमुनिरामानुजातिमिरहरणउदयभान । संप्रदायशिरोमणिसिन्धुजारच्योभक्तवित्तान ॥ ३१ ॥ मूल ॥ सहस्रआस्यउपदेशकरिजगतउद्धरणयत्नकियो । गोपुरह्वै आरूढ़उच्चसुरमंत्रउचान्यो । सूतेनरपरेजागबहत्तरश्रवणानिधान्यो । तिननेईगुरुदेवपद्धतिभइन्यारीन्यारी । कुरतारकशिष्यप्रथमभक्ति वपुमं

गलकारी। कृपणपालकरुणासमुद्ररामनुजसमनहिंवियोसह ॥३२॥

वेदवचन ॥ भागवते ॥ संध्याकाले च संप्राप्ते चतुष्कर्माणि वर्जयेत् ॥ आहारं मैथुनं निद्रां स्वाध्यायं च विशेषतः ॥ १ ॥ आहारे जायते व्याधिः गर्भदुष्टिश्च मैथुने ॥ निद्रायां हरते लक्ष्मीं स्वाध्याये मरणं ध्रुवम् ॥ ॥ २ ॥ आदित्य दिखायो ॥ समये ॥ यस्यास्ति भक्तिर्भगवत्यकिंचना सर्वे गुणास्तत्र समासते सुराः ॥ हरावभक्तस्य कुतो महद्गुणा मनोरथे नासति धावतो बहिः ॥ ३ ॥ रमा पद्धति ॥ पाद्मे ॥ कलौखलुभ-विष्यंतिचत्वारःसंप्रदायकाः ॥ श्रीब्रह्मरुद्रसनकावैष्णवाःक्षितिपावनाः॥ ४ ॥

टीका ॥ आस्यसोवदननामसहसहजारमुखशेषअवतारजानोव-हीसुधिआईहै । गुरुउपदेशमंत्रकह्योनीकेराखोअंत्रजपतहीश्यामजू-नेमूरतिदिखाईहै । करुणानिधानकहीसबभगवानपावें चढ़िदरवाजे-सोपुकारयोधुनिछाईहै । सुनिसीखिलियोयों बहत्तारिहीसिद्धभये नयेभक्तिचौजयहरीतिलैहैगाईहै ॥ १०६ ॥ गयेनीलाचलजगन्नाथ-जूकेदेखिबेको देख्योअनाचारसबपंडादूरिकियेहैं । संगलैहजारशि-ष्यरंगभरिसेवाकरैं धरैहियेभावगूढ़मतदरशायेहैं । बोलेप्रभुवेईआवैं-करैंअंगीकारमैंतो प्यारहीकोलेतकभूँअवगुणनलियेहैं । तऊहठ्ठकी-नीफिरकहीनहींकानकीनीलीनीवेदवाणीविधिकैसेजाताछियेहैं ॥ ॥ १०७ ॥ जोरावरभक्तसोंवसाइनहींकहीकितीरतीहूनलावैमन-चोजदरशायोहै । गरुड़कोआज्ञादईसोईमानिलईउनशिष्यनिसमेत निजदेशछोड़िआयोहै । जागिकैनिहारैठौरऔरहीमगनभरोदयेयों-प्रगटकरगूढ़भावपायोहै । वेईसबसेवाकरैंश्याममनहरैंसदाधरैं सांचो प्रेमहियेप्रभुजूदिखायोहै ॥ १०८ ॥

मूरति दिखाई है ॥ यह तो बड़ो आश्चर्य्य है तत्काल मूर्ति कैसे देखी तीन वस्तु शुद्धहोहिं तौ खेत में बीज ऊगे बीज घुनौं भूंजो न होइ खेतकर बंजर न होइ, किसान को भाग होइ चेला निवासिक होइ यह खेत शुद्ध गुरु निवासक यह बीजशुद्धः गुरु के भाग ॥ दोहा ॥ गुरु

लोभी शिष्य लालची दोऊखेलैं दाव ॥ दोऊबूड़ैं वापुरे, चढ़ि पाथरकी नाव १ पाथरकी नाव पै मल्लाहू बूड़ै चढ़न हारहू बूड़ै सच भगवान् पावै तापै कठारीजू वाको दृष्टांत॥ श्लोक॥ अपिचेत्सुदुराचारो भजते मामनन्य भाक् ॥ साधुरेवसमंतव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥ २ ॥

मूल ॥ चतुरमहंतदिग्गजचतुरभक्तिभूमिदाबेरहैं। श्रुतिप्रतापश्रुतिदेवऋषे वपुहकरइभएसे । श्रुतिधामाश्रुतिउदधिपराजितवामनजैसे । श्रीरामानुजगुरुबंधुविदितजगमंगलकारी । शिवसंहिताप्रणीतज्ञानसनकादिकसारी ॥ इंद्रापद्धितउदारधीसभासापिसारगकहैं । चतुरमहंतदिग्गजचतुरभक्तिभूमिदाबेरहैं ॥ ३२ ॥ आचारजजामातकीकथासुनतहरिहोइराति । कोऊमालाधारीमृतकबह्योसरितामें आयो । दाहकृत्यज्योंबंधुन्योतिसबकुटुंबबुलायो॥ नाकसकोचैंविप्रतब हरिपुरतेहरिजनआये । जेंवतदेखेसबनितबकोहूनहिंपाये । लालाचारजलक्षुधाप्रचुरभईमहिमाजगत । श्रीआचारजजामातकीकथासुनतहरिहोइरत ॥ ३३ ॥ टीका ॥ आचारजकोजामातबातताकी सुनोंनीकेपायोउपदेशसंतबंधुकरमानिये । कीजैकोटगुणीप्रीत अैपैनबनतरीतितातेइतिकरौयातेघटतीनआनिये । मालाधारीतनसाधुसरितामेंबह्योआयोलायोघरफेरके विमानसबजानिये । गावत बजावतलैनीरतीरदाहकियो हियोदुखपायोसुखपायोसमाधानिये ॥

चतुरमहंत ॥ श्लोक ॥ अद्यापिनोऽज्झतिहरः किलकालकूटं कूर्म्मोबिभर्तिधरणींखलुपृष्ठभागे ॥ अंभोनिधिर्वहतिदुःसहवाडवाग्निमंगीकृतं सुकृतिनः परिपालयंति ॥ १ ॥ लालाचार्य्यपैस्कंधे ॥ तुलसीकाष्ठजांमालांकंठस्थां वहतेतुयः ॥ अशौचश्चाप्यनाचारोमामेवैतिन संशयः ॥ १ ॥ केशरि कश्मीरमोंहोइ है सो राजा जैसिंहसवाई ने अजमेर में लगाई सो नहीं भई तब पूंछी काहेते न भई महाराज जल आवै तौ होइ जहां जलहू मँगायो तऊ न भई महाराज माटी आवै-

तौ होइ माटीहू आई तऊना भई महाराज हवाआवै तौ होइ जैसेही प्रेम हृदयते उपजे खैंचेते न आवै ॥ ३ ॥

कियोसोमहोछोज्ञातिविप्रनिकोन्योतोदियोलियोआयेनाहिंआनी शंकादुखदाहिये । भयेइकठोरेमायाकीनेसबबौरेकछूकहैबातऔरे मरोदेहवहीआहिहै । यातेनहींखातवाकी जानतनजातिपांति बड़ो उतपातवरलाइजाइदाहिये । मगअवलोकउतपन्योसुनशोचाहिये जियेआइपूंछैगुरुकैसेकैनिबाहिये ॥ १२० ॥ चलेश्रीआचार्य्यजूपै-वारिजवदनदेखिकरीसाष्टांगबातकहीसोजनाइये । जावोजूनिशंकवे प्रसादकोनजानेरंक जानैंजेप्रभावआवैवेगिसुखदाइये । देखनभभूमि द्वारएैहैनिरधारजन वैकुंठनिवासीपांतिढिगद्वैकैआइये । इन्हेंअब जानदेवोजिनकछूकहौअहोकरौ हांसिजवैघरजाइनिजपाइये १२१॥

आयेनहिं ॥ आगमे ॥ माला धारक मात्रोपि वैष्णवो भक्ति वर्जि-ताः ॥ पूजनीय प्रयत्नेन ब्राह्मणा किंतु मानुषैः ॥ १ ॥ प्रसाद कोन जानेरंक ॥ स्कांदे ॥ महाप्रसादे गोविंदनाम्नि ब्राह्मण वैष्णवे ॥ स्वल्प पुण्यवतां राजन् विश्वासो नैव जायते ॥ २ ॥ घरजाइ खाइये ॥ प्रतिमामंत्रतीर्थेषु भेषजे वैष्णवेगुरौ ॥ यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ मल्ल जानै कुलिश नरेश नरजानैं पुनि नारी-जानैं मीनकेत मूरति रसालहै । गोपजानैं स्वजन महीप जानैं दंडदेन यादव यों जानैं इष्ट देवता कृपालहै । अज्ञानी विराट जानैं गोपी परत-त्त्व जानैं रंगभूमि रामकृष्ण गये ऐसे हालहैं । नंद जानैं बालक गुविंद प्रतिपाल जानैं शाल शत्रु वंश जानैं कंस जानैं कालहै ॥ २ ॥

आयेदेखिपारपदगयोगिरिभूमिसद हदकरीकृपायह जानिनिज जनको । पायोलैप्रसादस्वादकहिअहलाददयो नयोलयोमोदजान्यो सांचोसंतपनको।विदाह्वैपधारेनभमगमोंसिधारेविप्र देखतविचारेद्वार व्यथाभईमनको । गयोअभिमानआतमंदिरमगनभये नयेदृगलाज चीनचीनिलेतकनको ॥ १२२ ॥ पाइलपटाइअंगधूरिमेंलुटाये कहैं

करौमनभायोऔरदीनबहुभाष्योहै। कहीभक्तराजतुम कृपामेंसमा जपायोगायो जोपुराणनमेंरूपनैनचाष्योहै। छांड़ोउपहासअबकरौ निजदासहमैं पूजीजिय आश मन अतिअभिलाष्योहै। कियेयेप्रशं समानौहंसयेपरमकोऊ ऐसेसेजसलाखभांतिघरघरराख्योहैं॥ १२३ ॥

मूल ॥ श्रीमारगउपदेशकृतिश्रवणसुनौ अख्यानशुचि गुरुगमन कियोपरदेशशिष्यसुरधुनीदृढ़ाई। इकमंजनइकपानएकहृदयबंद नाकराई। गुरुगंगामेंप्रवेशशिष्यकोवेगिबुलायो। विष्णुपदीभयजा निकमलपत्रनपरधायो। पादपदमतादिनप्रगटसबैप्रसन्नमनपरम रुचि। श्रीमारगउपदेशकृतिश्रवणसुनौआख्यानशुचि ॥ ३८ ॥

गयोगिरिभूमि ॥ पद ॥ संत चरण परशीश धऱ्यो। राखिलियो बहुभांति कृपाकरि मनते संशय शूल हऱ्यो। हमरे अवगुण मेटि दूरि घट मैं हरिरस अमृत भऱ्यो। कीटभृंग ज्यों मृतकजिवायो जीवकागते हंस कऱ्यो ॥ दूरि कियो अज्ञान अँधेरो ज्ञान रतन जब दीप बऱ्यो। हरिहि दियाइ कियो हरिहीसो इहि सुखमायादुरिततऱ्यो। प्रभुवश भये साधुकी सेवा साधु संगते काजसऱ्यो। राम राइके हित भगवानैं साधु-संगको अमल पऱ्यो ॥ १ ॥

टीका ॥ देवधुनीतीरसोंकुटीरबहुसाधुरहैं रहैगुरुभक्तएकन्यारो-नहींह्वैसके। चलेप्रभुगांवजिनितजोबलिजांवकही करौदाससेवागं-गामेंहींकैसेछ्वैसके। क्रियासबकूपकरैविष्णुपदीध्यानधरै रोषभरेसंत श्रेणीभावनाहिंभैसकै। आयेईशजानिदुखमानिसोबखानाकियो आनि-मनजानिबातअंगकैसेध्वैसकै ॥११४॥ चलेलैकेन्हानसंगगंगमेंप्रवेश कियो रंगभरिबोलेसोअँगोछावेगिलाइये। करतविचार शोचसागर-नवारापार गंगाजूप्रगटकह्योकंजनपरआइये। चलेईअधरपगधरैसोम धुरजाइ प्रभुहाथदियोलियोतीरभीरछाइये। निकसतधाइचाइपाइल प्टाइगये बड़ोपरतापयहनिशिदिनगाइये ॥ ११५ ॥

देवधुनीकैसी है॥तृतीये॥यावै सच्छ्रीतुलसीविमिश्रा कृष्णांघ्रिरेण्वभ्य

धिकांबुनेत्री ॥ पुनाति लोकानुभयत्र शेषान्कस्मान्न सेवेत मरिष्यमाणः ॥ ॥ १ ॥ आदिपुराणे ॥ दृष्ट्वा जन्मशतं पापं स्पृष्ट्वा जन्मशतद्वयम् ॥ स्नात्वा पीत्वा सहस्राणि हंति गंगा कलौ युगे ॥ २ ॥ तापै दृष्टांत भूतको अरुसिद्धको ॥ भो दरिद्र नमस्तुभ्यं सिद्धोहं तव दर्शनात् ॥ पश्याम्यहं जगत्सर्वं न मां पश्यति कश्चन ॥ कवित्त ॥ कारौकुलकंटक डरारो बोलभारो जाको तीरथके तीरपगकबहूं न लैगयो । कहैंकविगंगकारेकागहूते सरस-आप आनियमघेरचो तबखाटमें कुपैगयो । गंगाजीकी धोई चादरि वकुचामें धरी करी ताके अंग लागतही तारागणलैगयो । चाहचौर-ठौरे सबदेवता निहोरे वा गंगाजीकी चादरि सोंचत्रभुजह्वैगयो ॥ ४ ॥ ऐसो गंगाको प्रताप ताको क्यों न उठिधाइये ॥ ५ ॥

मूल ॥ श्रीरामानुजपद्धतिप्रतापअवनिअमृतह्वैअनुसऱ्यो ॥ देवाचारजद्वितीयमहामहिमाहरियानँद । तस्यराघवानंदभयेभक्त-नकोमानद ॥ पत्रावलंबपृथिवीकरिवकाशीअस्थाई । चारिवरण आश्रमसबहीकोभक्तिदृढ़ाई ॥ तिनकेरामानंदप्रगटाविश्वमंगलजिह-वपुधऱ्यो। श्रीरामानुजपद्धतिप्रताप अवनिअमृतह्वैअनुसऱ्यो॥३६॥ श्रीरामानंदरघुनाथज्योंद्वितीयसेतजगतरनकियो।अनंतानंदकबीरसु खासुरसुरापद्मावतनरहरि।पीपाभावानंदरैदासधनासेनसुरसुरकीधर हरि॥औरौशिष्यप्रशिष्यएकतेएकउजागर।विश्वमंगलआधारभक्तिद शधाकेआगर॥बहुतकालवपुधारिकैप्रणतजननिकोपारादियो। श्रीरा मानंदरघुनाथज्योंद्वितयिसेतजगतरणकियो३७अनंतानंदपदपरशकै लोकपालसेतेभये।योगानंदगयेशकरमचंदअल्हपैहारीसारी।रामदास श्रीरंगअवधिगुणमहिमाभारी॥तिनकेनरहरिउदित मुदितमोहामंगल तन।रघुवरयदुवरगायाविमलकीरतिसंच्योधन॥हरिभक्तिसिंधुवेलार-चैपानिपद्मजाशिरदये।अनंतानंदपदपरशकैलोकपालसेतेभये३८॥

चारिवरण एकादशो॥मुखबाहूरुपादेभ्यः पुरुषाः स्वाश्रमैः सह ।चत्वारो जज्ञिरे वर्णा गुणैर्विप्रादयः पृथक् ॥ परावपुरुषं साक्षादात्मप्रभवमीश्वरम् ।

न भजंत्यवजानंति स्थानभ्रष्टाः पतंत्यधः ॥ २ ॥ वारैसिषयेवारैहीसेत रूपीहोतभये ॥ छप्पय ॥ जगत समुद्र अपार तासके जेनममरनतट । काम क्रोध मद लोभ तासमेलहरि मैं महाभट ॥ मोहग्राहतम प्रबल निगलि जावै सीसारा । तामें गोताखातनाहिंकोउतनक अधारा ॥ दुखपाये बूड़क लत हैं सुखपाये उछरत जानि।दीनानाथ रघुनाथ बिन कौनछुटावैआनि ॥

टीका ॥ ग्योसाएकगांवतहां श्रीरंगसुनामरहैबनिकसरावगीकी-कथालैबखानिये । रहतोगुलामगयोधर्मराजधामवहां भयोबड़ो-दूतकहीयेरसुनिवानिये । आयेबनिजारेलेखितूदिखावैचैन बैलशृङ्ग मध्यपैठिमारच्योपहिचानिये । बिनहरिभक्तिसबजगतकीयहीरीति-भयोहरिभक्तिश्रीअनंतपदध्यानिये ॥ १२६ ॥ सुतकोदिखाईदेत-भूतनितसूक्योजातपूछैंकहीबाततनवाहीठौरस्वायोहै । आयोनि-शिमारवेकोधायोयहरोषभरच्यो देवोगतिमोको उनबोलिकैसुना-योहै । जातकोसुनारपरिनारलगप्रेतभयो लयोतेरोशरणमैं ढूंढ़जग-पायोहै । दीनोंचरणामृतलैकियोदिव्यरूपवाकोअतिहीअनूपसुनो भक्तिभावगायोहै ॥ १२७ ॥ मूल ॥ निर्वेदअवधिकलिकृष्णदास-अन्नपरिहारियपयानाकियो । जाकेशिरकरधरच्योतासुकरतरनहिं-आच्यो । अप्योपदनिर्वाणशोचनिर्भयकरिछांडच्यो । तेजपुंजबल-भजनमहामुनिऊरधरेता । सेवतचरणसरोजराइराणाभुविजेता । दाहिनावंशदिनकरउदयसंतकमलहियसुखदियो । निर्वेदअवधिक-लिकृष्णदासअन्नपरहारियपयानाकियो ॥ १९ ॥

धर्मराजधाम ॥ सवैया ॥ जागत के हम पाहरू हैं पुनि सोवतकै ग-ठिया सरकावैं । पटकोन करैं परकोधन चोरत दोरत चोरके शोरसु-नावैं । हमहीं शिरभूत चढाइ सुजाइके पांइधुवाइके प्याइछुड़ावैं । याहीते नाथ बरोबैरहो कहु धर्मअधर्म की बात चलावैं॥ १ ॥ चरणामृत॥ पाद्मे ॥ गंगासागरसहस्राणि द्वारकाणां शतैरपि ॥ एवं तीर्थादिकं पुण्यं सतां पादोदकं पिबेत् ॥ २ ॥ शिरकर धाच्यो ॥ स्वाने ॥

गुकारो ह्यंधकारस्तु रुकारोस्यै विनाशकृत् ॥ अंधकारविनाशश्च गुरुरित्यभिधीयते ॥ ३ ॥

टीका ॥ जाकेशिरकरधरचोतातरनओड़चोहाथदीनोबड़ोवरराजाकुल्हकोजुसाखिये । परवतकंदरामेंदरशनदीन्योआनिदियोभावसाधुहरिसेवाअभिलाखिये। गिरीजोजलेवीथारमांझतेउठाइबाल भयोहियेशालविन अरापितचाखिये । लैकारिखड्गताहि मारणउपाइकियो जियोसंतओटफिरफौलकरिराखिये ॥ १८ ॥ नृपसुत भक्तवड़ोअवलौंविराजमानसाधुसनमानमेंनदूसरोवखानिये । संतबधूगर्भदेखिउभयपनवारेदियेकहीगर्भइष्टमेरो ऐसीउरआनिये।कोऊभेपधारीसोव्योहारी पगदासनकोकहीकृपाकरोकहाजानेऔरप्रानिये । ऐपैतजिवोक्रियादेखिजगवुरोहोत जोतिबहुदईदामरामसमातिसानिये ॥ ११९ ॥ मूल ॥ पैहारीपरसादते शिष्यसबैभयोपारकर । कील्हअगरेकेवलचरणव्रतहठीनरायन । सूरजपुरुषापृथुतपूरहादिभक्तपरायन । पद्मनाभगोपालटेकटीलागदाधारी । देवाहेमकल्याण गंगागंगासमनारी । विष्णुदासकन्हररंगाचांदमशवरीगोविंदपर । पैहा रीपरसादते शिष्यसबैभयेपारकर ॥ ४० ॥

विनअर्पित ॥ श्लोक ॥ विनार्पितं तु गोविंदे भोजनं कुरुते यदि ॥ श्वानो विष्ठा समं चान्नं तोयं च सुरपासमम् ॥ १ ॥ भागवते ॥ येषां संस्मरणात्पुंसांसद्यः शुद्धयन्ति वै गृहाः ॥ किं पुनर्दर्शनस्पर्शपाद शौचासनादिभिः ॥ २ ॥ आगमे ॥ मालाधारकमात्रोपि वैष्णवो भक्तिवर्जितः ॥ पूजनीयः प्रयत्नेन ब्राह्मणाः किंतु मानुषैः ॥ ३ ॥ मालातिलकसंचिह्नैः संयुक्तो यः प्रदृश्यते ॥ चांडालोपि महीपाल पूजनीयो न संशयः ॥४॥ साधुके गुण अवगुण कछू न देखै भगवत्स्वरूपजानै॥५॥

गांगेयमृत्युगंज्योनहीं त्योंकोल्हकरणनहिंकालवश । रामचरण चितवतरहतानिशिदिनलौलागी । सर्वभूतशिरनमितसूरभजनानंदभागी । सांख्ययोगमतिसुदृढ़कियोअनुभवहस्तामल । ब्रह्मरंध्र-

करिगोनभयेहरितनकरणीबल।सुमेरदेवसुतजगविदित भुवविस्तारयोविमलयश।गांगेयमृत्युगंज्योनहींत्योंकील्हकरणनहिंकालवश॥ ४१ ॥ टीकासुमेरदेवकी॥ श्रीसुमेरदेवपितासूबेगुजरातहुतेभयेतनपातसोविमानचढ़िचलेहैं । बैठेमधुपुरीकोमानसिंहराजाढिगदेखेनभतातउठिकहीभलेभलेहैं । पूछैनृपबोलेकासोंकैसेकैप्रकाशोंकहोंकह्योहठपरे सुनअचरजरेलेहैं । मानसपठायेसुधिलायेसांचआंचलागी करोसाष्टांगबातमानीभागफलेहैं॥ ११९ ॥ ऐसेप्रभुलीननहींकालकेअधीनबातसुनियेनवीनचाहैरामसेवाकीजिये । धरीहीपिटारेफूलमालहाथडार्‍यो तहांव्यालकरकाढ्यो कह्योकेरिकाढ़िलीजिये । ऐसेहीकटायोबारतीनिहुलसायोहियो कियोनप्रभावनेकसदारस पीजिये । करिकैसमाजसाधु मध्ययोबिराजमान तजेदशेद्वारयोगीथकेसुनिजीजिये॥ १२० ॥

चितवनि दशमे ॥ मर्त्यो मृत्युव्यालभीतः पलायल्लोकान्सर्वान्निर्भयंनाध्यगच्छत्॥ त्वत्पादाब्जंप्राप्ययदृच्छयाद्यस्वस्थः शेते मृत्युरस्मादपैति ॥ सप्तमे ॥ तस्माद्रजोरोगविषादमन्युर्मानस्पृहाभयदैन्याधिमूलम्॥ हित्वागृहंसंसृतिचक्रवालंनृसिंहपादंभजताकुतोभयम् ॥ ३ ॥ ज्ञानवैराग्ययुक्तेनभक्तियोगेनयोगिनः॥ क्षेमायपादमूलंमेप्रविश्यंत्यकुतोभयम्॥ ३ ॥ दोहा ॥ मारिये मरिजाइये, छूटिपरै संसार ॥ अहम दमरनोकोवदै, दिनमें सौसौवार॥४॥ तापैदृष्टांतराजाकेगुलामनेविषकी गोलीखाईसोमरेउनहीं ॥

मूल ॥ श्रीअग्रदासहरिभजनबिन कालवृथानहिंवित्तयो । सदाचारज्योंसंतप्रीतिजैसेकरिआये । सेवासुमिरणसावधानचरणराघवचितलाये । प्रसिद्धबागसोंप्रीतिसुहथकृतकरतनिरंतर । रसनानिर्मलनाममनोवर्षतधाराधर । श्रीकृष्णदासकृपाकरीभक्तदत्तमनवचक्रमकरिअटलदियो । श्रीअग्रदासहरिभजनबिनकालबृथानहिंवित्तयो ॥ ४२ ॥ टीकाअग्रदासजीकी ॥ दरशनकाजमहाराजमानसिंहआयोछायोबागमाहिंबैठेद्वारद्वारपालहैं॥ झारिकैपतौवागये

वाहिरलैडारिवेको देखीभीरभाररहैवैठियेरसालहैं ॥ आयेदेखिना भाजूनेउठिसाष्टांगकरी भरीजलऔरैंचलेअँशुवनिजालहैं। राज मगचाहहारीआनिकै निहारैनैनजानीआपजातीभयेदासनिदया-लहैं ॥ १२१ ॥

काल वृथानहिं वित्तयो ॥ कुण्डलिया ॥ आगिलगंतेझोपरा जो निकसै सोलाभ। जो निकसै सोलाभ देखिमानुष तनचोरी। जेलोषेकी श्वास जात आवत न वहोरी। ज्योंकर अंजलि माहिं घटतजल थिर न रहाई। करि आरत हर भजन साखिकायावधगाई। अगरकहांलगिथे गरीदीजैफाटेआभ। आगिलगंते झोपरा जो निकसैसो लाभ ॥ १ ॥ सो श्रीअग्रदास अष्टपहर भजनहींमें लगे रहैं सोतो काल दोनोंहींको गयो अभजनीहू को और भजनी हूं को गयो हाथ तौ काहूके न आयो एक ब्राह्मण ने रुपैया साधुनको खवायो एक के गैलमें लूटिलिये ऐसे एक को तो माल ठिकानेगयो एकको वृथाही गयो ऐसे अग्रदासजीको माल-ठिकाने जाय जैसे नाव वहुतभरो तो बूडिही जाइ थोरीभरीहोइ तो पारलगि जाइ ऐसेही व्योहारी थोरो व्योहार करे तो हरिको भजन करि पार उतरि जाइ वहुत करे तो संसार में बूडिजाइ ॥ २ ॥

मूल ॥ कलियुगधर्मपालकप्रगटेआचारजशंकरसुभट। उतशृं पलअज्ञानजितेअनईश्वरवादी। बौधकुतर्कीजैनऔरपाखंडहैआदी। विमुखनिकोदियो देडऐंचिसनमारगआनैं। सदाचारकीसीवविश्वकी-रतिहिंवखानैं। ईश्वरअंशअवतारमहिमर्य्यादामाड़ीअवट। कलियुगधर्मपालकप्रगटआचारजशंकरसुभट ॥४३॥ टीका ॥ शं-कराचार्यकी ॥ विमुखसमूहलैकैकियेसनमुख श्यामअतिअभिराम-लीलाजगविस्तारीहै। सेवराप्रवलवासेकेवराज्योंफैलिरहेगयेनहीं जाहिवादीशुचिवातधारीहै। तजिकैशरीरकान्ह नृपमेंप्रवेशकियो दियोकरिग्रंथमोहसुन्दरसुभारीहै। शिष्यानिसोंकह्योकभूंदेहमें अ-वेशजानो तवहींवखानोआनिसुनिकीजैन्यारीहै ॥ १२२ ॥ जानिकै-

अवेशतनशिष्यनेप्रवेशकियो रावलेमैंदेखिसोंश्लोकलैउचारयोहै । सुनतहीतज्योतननिजतनआयलियोकियोसोप्रणामदास प्रणपूरो-पारचोहै । सेवराहरायेवादीआयेनृपपासऊंचीछातिपरबैठिएकमा-याफन्दडारचोहै । जलचढ़िआयोनावभावलैदिखायोकहैं चढ़ोनहीं-बूढ़ोआपकौतुकसोंधारचोहै ॥ १२३ ॥

कलियुग धर्म ॥ एकादशे ॥ कृते यद्ध्यायतो विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः ॥ द्वापरे परिचर्य्यायां कलौ तद्धरिकीर्त्तनात् ॥ १ ॥ हरेर्नामैव नामैव नामैव मम जीवनम् ॥ कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ॥ २ ॥ प्राते सन्निहिते मरणे नहि नहि रक्षतिडुकृञ्करणे ॥ भज गोविंदं भज गोविंदं भज गोविंदं मूढमते ॥ ३ ॥ शृंगारः शुचिरुज्ज्वल इत्यमरः ॥ ४ ॥ नलिनीदलगतजलवत्तरलं तद्वज्जीवनमतिशयचपलम् ॥ क्षणमपि सज्जनसंगतिरेका भवति भवार्णवतरणे नौका ॥ ५ ॥ कुण्डलिया ॥ मीयाघरानि कासियै तरकस कहांधरौं । तरकस कहांधरौं प्रथम जीवन निर्णयकरि ॥ पलकमाहिं प्रस्थान जीवपुनि चलि है परिहरि । धावत गहरी नींव सदन नोहरावगीचा । अश्व गजरथ परवान कोऊ ऊंचा अरु नीचा । अगर डरत ते मृत्युते तिन ते अधिक डरौं । मीया घरानिकासियो तर्क० ॥

आचारजकहीयोंचढ़ावोइनसेवरानिराजानेचढ़ायेगिरिह्वैकउड़िग-येहैं । तबतौप्रसन्ननृपपांइपरचोभावभरचोकह्योजोइकह्योधर्मभाग-वतलयेहैं । भक्तिहीप्रवारपाछेमायावादडारिदीनोंकीनोंप्रभुकह्यो-कितैविमुखह्वैभयेहैं । ऐसेसोगम्भीरसंतधीरवहरीतिजानैंप्रीतिहीमें सानेहरिरूपगुणनयेहैं ॥ १२४ ॥ मूल ॥ नामदेवप्रतिज्ञानिर्वहीज्यों त्रेतानरहरिदासकी । बालदशावीठलयपानजाकेपयपीयो । मृतक-गऊजिवाइपरचोअसुरनिकोदीयो । सेजसलिलतेकाढ़िपहलेजैसीही-होती । देवलउलटोदेखिसकुचिरहेसवहीसोती । पंडुरनाथकृतिअ-

नुगत्योंछानिसुकरछाईदासकी । नामदेवप्रतिज्ञानिर्वहीज्योंत्रेतानरहरिदासकी ॥ ४२ ॥

कीनों प्रभु कह्यो ॥ पद ॥ द्वापरादौ युगे भूत्वा कलया मानुषादिपु । स्वागमैः कल्पितैस्त्वं हि जनान्मद्विमुखान् कुरु ॥ १ ॥ आससो गंभीर ॥ नमश्चक्रपाणे हरे वासुदेव प्रभो ते भवारे मुरारे मुकुंद ॥ नमस्तुभ्यमित्यालपंतं मुदा मां कुरु श्रीपते त्वत्पदांभोजभृंगम् ॥ २॥ प्रतिज्ञापद॥ आये मेरे अंधेरे घरके मदनराइ । चाकी चाटैं चूपनखाइ ॥ तुरु गुरु गरूग प्रभुजूकी चालि । पूंछहलै ज्यों जौकी वालि ॥ चूल्है माहिं जुप्रभुजू की सेज । छींकेकीनो अधिकै तेज ॥ कातिक में जु प्रभु जी को भोग । लैलै लकुट खिजावैं लोग॥तीनि पाप प्रभु मेटन योग। नामदेवस्वामि बन्यो संयोग ॥ २ ॥ परजापतिके चितरहीं चढै । मंजारी के पुत्र अवां में उबारें ॥ आंचलगैनतपै तन बासन । राखिलये हरिनै विश्वासन ॥ ३ ॥

टीका नामदेवजूकी ॥ छीपावामदेवहरिदेवजूकोभक्तबड़ोताकीएकबेटीपतिहीनभईजानिये । द्वादशवरषमांझभयोतवकहीपितासेवासावधानमननीकेकरिआनिये । तेरेजेमनोरथहैंपूरणकरनयेईजोपैदत्तचित्तह्वैकै मेरीवातमानिये । करतटहलप्रभुवेगिहीप्रसन्नभये कीनीकामवासनासपोपीउनमानिये ॥ १२५ ॥ विंधवाकोगर्भताकी वातठौरठौरचलीदुष्टशिरमौरनिकीभईमनभाइये । चलतचलतवाम देवजूकेकानपरीकरीनिरधारप्रभुआपअपनाइये । भयोजूप्रगटवाल नामनामदेवधर्योकर्योमनभायो सवसंपतिलुटाइये।दिनदिनवढ्योकछुऔररंगचढ्योभक्तिभावअंगमढ्योकढ्योरूपसुखदाइये१२६। खेलताखिलौनाप्रीतिरीतिसवसेवाहीकी पटफहरावैंपुनिभोगकोलगावहीं । घंटालैवजावैंनीकेध्यानमनलावैं त्योंत्योंअतिसुखपावैंनैननीर आवहीं । वारवारकहैनामदेववामदेवजूसोंदेवोमोहिंसेवामांझ अतिहीसुहावहीं । जाऊँएकगांवफिरिआवोंदिनतीनमध्यदूधकोपिवावोमातिपीवोमोहिंभावहीं ॥ १२७ ॥

विपत्ति ॥ दोहा ॥ बड़ेबड़ेभोगैंविपति, छोटेदुखतेदूर ॥ तारेन्यारेह्वैरहे, गहतचंदअरुसूर ॥ १ ॥ कामबासना ॥ द्वितीये ॥ अकामः सर्वकामो वा मोक्षकामउदारधीः । तीव्रेणभक्तियोगेन भजेत पुरुषं परम् ॥ २ ॥ प्रीतिरीति ॥ छप्पय ॥ कठिन प्रीतिकी रीति कठिन तन मन बशकरिबो । कठिनहै कर्मनिकंद कठिनभवसागर तरिबो । कठिनसंकटमें दान कठिन संभ्रमकोसमता । कठिनहै परउपकार कठिनमन मारनममता । वचननिबाहन अतिकठिन निर्धन नेहपालनकठिन । मुनिईश्वर सिखवत चतुर नर ज्ञान युद्ध जीतन कठिन ॥ ३ ॥

कौनवहबेरजिहिबेरदिनफेरिहोइ फेरिफेरिकहैबहोबेरनहींआइहै । आई वहबेरलैकराहीमांझहेरिदूधडार्‍योयुगसेरमननीकेकैबनाइये । चौंपनिकेढेरलागींनिपटऔसेरहृगआयोनीरघेरिजिनिगिरे घूंटिजाइये । माताकहैटेर करीबड़ीतेअबेरअबकरौमातिझेरअजू चित्तदैऔटाइये ॥ १२८ ॥ चल्यौप्रभुपासलैकटोराछबिराशितामें दूधसोसुवासमध्यमिश्री मिलाइये । हियेमेंहुलासनिजअज्ञताकोत्रासऐसे करैजोपैदासमोहिं महासुखदाइये । देख्योमृदुहासकोटिचांदनीकोभासकियो भावको प्रकाशमातिअतिसरसाइये । प्याइबेकीआशकारि ओटकछुभर्‍योश्वासदेखिकैनिराशकह्योपीवोजूअघाइये ॥ १२९ ॥

फेरिफेरि ॥ कवित्त ॥ दिनतोनघटत औ घटत प्राण पल पल लाल मुखचंदको बिरोधी पलनाटरै । कबकी निहारिरही रबिन तजतठौर बीते युगकोटि तऊनेकहू नहींटरै ॥ तूतोरी कहत श्याम रजनी मिलाय देहौं मिलिबो न मेरेबांट मरिबोहूलैधरै । जानि पति बरनिबानाईहुती बिधिने जुफेरि मनआई मेरेरात्रिदिनको करै ॥ १ ॥ चौपाई ॥ कुँवरिकहै सखिया शशिराजै । राहुराड क्यों गिलिगिलिछाजै ॥ सखिकहै राहुअमृत जब पियो । तेरे कंतखंड बिबिकियो ॥ उदरनहीं तौनै यहपचै निकसि निकसि बिरही जनतचै ॥ कुंवरिकहै दोउखंडनि माहीं । जरा आनिकिनि लेहु जुराहीं ॥ २ ॥ दोहा ॥ कै अहरनि परधरि मुकर, सुकर

लोहवनलेहु। जबहीं आनिपरै जहां, तबहीं ता शिरदेहु ॥ ३ ॥ कौन दिवस आयो है सजनी ॥ इंदुअनलवरषैहैरजनी ॥ भलोकरै जो यादिनमाहीं। प्राण पियारो आवैनाहीं ॥ ४ ॥

ऐसेदिनबीतदोइराखीहियेबातगोइ रह्योनिशिसोइयेपनींदन-हींआवही। भयोजूसवारोफेरिवैसेहीसुधारिलियोहियोकियोगाढ़ौ जाइधर्‍योपीवौभावही। बारबारपीयोकहुँअबतुमपीवोनाहिं आवै भोरनानागैरछुरीदैदिखावही। गहिलियो करजिनिकरिऐसीपीवौमैं तोपीवेकोलगेईनेकराखौसदापावही ॥ १३० ॥ आयेवामदेवपाछे पूछैनामदेवजूसों दूधकोप्रसंगअतिरंगभरिभाषिये। मोसोंनापिछा निदिनदोइहानिभईतब मानिडरप्राणतज्योंचाहौअभिलाषिये। पियौसुखदियोजबनेकुराखिलियो मैं तौ जियोसुनिबातैंकहीप्यायो कौनसाखिये। धर्‍योपैनपीवैअर्‍योप्यायोसुखपायोनाना यामैंलै दिखायोभक्तवशरसचाखिये ॥ १३१ ॥

सदापावही तब तौ भगवान् ने हँसिदियो ॥ भागवते ॥ न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृन्मये। देवो हि विद्यते भावात्तस्माद्भावो हि कारणम् ॥ १ ॥ प्रतिमामंत्रतीर्थेषु भेषजे वैष्णवे गुरौ। यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी ॥ २ ॥ जिवाइ गाइ ॥ पद ॥ बिनती सुनु जगदीश हमारी ॥ तेरोदास आशमोहिं तेरी इतकरो कान मुरारी। दीनानाथ दीनह्वै टेरत गाइहि क्यों नहिं ज्यावो। आछे सबै अंगहैं याके मेरे यशहि बढ़ावो। जो कहुं याके कर्मनमें नहिं जीवन लिख्यो विधाता। तौ नामदेवकी आयुर्दा सों होहु तुमहिं प्रभुदाता ॥ ३ ॥ भक्त वछल भगवान्है दृष्टांत व्यासको ॥ शिशु शूकै जब व्यासजी लै गये तब मन्यो ॥ वेदशास्त्रप्रमाणं तु न करोत्यधमो नरः। अज्ञानी च मम द्रोही नरकं याति नित्यशः ॥ ४ ॥

नृपसोंमलेच्छबोलिकहीमिलसाहिबको दीजियेमिलाइकरामाति दिखराइये। होइकरामातितोपैकाहेकोकसबकरै भरैदिनऐसेबाटि संतनसोंखाइये। ताहीकेप्रतापआपइहांलोबुलाइये हमैंदीजियेजिवा

यगाइवरचलिजाइये । दैलैजिवाइगायसहजसुभावहीमें अतिसुख पाइपाइपरौमनभाइये ॥ १२२ ॥ लेवोदेशगांवयातेमरोकछूनाम होइ चाहियेन कछूदईसेजमणिमईहै । धरिलईशीशदेउसंगदशवी सनरनाहींकरआयेजलमांझडारिदईहै ॥ भूपसुनिचौंकिपर्‍योलावो फेरिआयेकहौकहीनेकुआनिकैदिखावोकीजैनईहै । जलतेनिका सिवहुभांतिगहिडारीतट लीजियेपिछानिदेखिसुधिवुधिगईहै ॥ ॥ १२३ ॥ आनिपर्‍योपाइँप्रभुपासतेवचाइ लीजै कीजै एकवात कभूंसाधुनदुखाइये। लेइयेहीमानि फेरिकीजिये नसुधिमेरी लीजिये गुणनि गाइ मंदिरलों जाइये । देखी द्वारभीर पगदासी कटिवांधी धरि करसों उछीर करिचाहैं पदगाइये।देखिलीनी वेईकाहू दीनीपांच सात चोट कीनी धकाधुकीरिसमनमेंनआइये॥१२४॥ वैठे पिछवारे जाइकीनीजुउचितयहलीजोलगाइचोटमेरेमनभाइये । कानदैकै सुनोअवचाहतनऔर कछूठौरमोकोयहीनितनेमपदगाइये । सुनत हीआनिकरिकरुणाविकलभजे फेर्‍योद्वारइतेगहिमंदिरफिराइये जेतिकवेसोतीमोती आवसीउतरिगई भईहियेप्रीति गह्योसवसुख दाइये ॥ १२५ ॥

साधुन दुखाइये ॥ दोहा ॥ साधु सताये तीन हानि अर्थ धर्म अरु वंश । टीलानीके देखिले, कौरव रावण कंस ॥ १ ॥ सुधि मेरी ॥ अति शीतलता कहकरै, कालूके डैलागि । मथत मथतही ऊपजै, चंदन हूतेआगि ॥ २ ॥ घास वासना हियेवन, ऊपरते जरि जाइ । विषयी वरषाके मिले ऊगै अंकुर पाइ ॥ ३ ॥ पदगाइये ॥ पद ॥ हीनहो जातिमेरी यादवराइ कलिमें नामा इहां काहेको पठाइयो तालप खाव जवाजे पातुरि नाचे हमरी भक्ति वोठल काहेकोराचै ॥ पंडव प्रभुजू वचन सुनीजे । नामदेव स्वामी दरशन दीजे ॥ ४ ॥ मंदिरके पिछवारे वैठिकै यह पदगायो तव प्रभुने विचारो यह भजन मेरे ऊपर कहेउ प्रसन्न ह्वैकै तुरत आइ मिले अव तू कहे सो करौं ॥ ५ ॥ मंदिर फिरायो ॥

पद ॥ उठि भाई नाम देवपरे ह्वै जाइ यहां दुबे तिवारी बैठे आइ। ब्राह्मण बनिया उत्तमलोग यहां नहीं नाम देव तुम्हारो संयोग । नामदेव कमरी लई उठाइ। मंदिर पाछे बैठे जाइ। पायँनघुंघरू हाथनि ताल। नामदेव गावैगुण गोपाल। मंदिर ऊपर ध्वजा फ़रहरै ॥ उलटि द्वार-नामातन करै। नामदेव नरहरि दर्शनपाये। बांहपकरि ढिग लैबैठाये। दोऊ हिलिमिलि एकै भये। दासकवीर अचंभैरहे ॥ १ ॥

औचकहीवरमांझसांझही अगिनिलागीबड़ोअनुरागीरहिगई सोऊडारिये। कहैआयोनाथसबकीजियेजूअंगीकार हँसेसुकुवारहरि मोहीकोनिहारिये ।तुमरोभवनऔरुसकैकौनआइ यहां भयेयोप्रसन्नछानिछाईआपसारिये। पूंछैंआनिलोगकौनेछाईहोछवाइलीजैदीजै-जोईभावैतनमनप्राणवारिये॥ १२६ ॥ सुनौऔरपरचेजेआयेनक-वित्तमांझवांझभईमाताक्योंनजौनमतिपागीहै । हुतौएकसाहतुला-दानकोउछाहभयो दयोपुरसबैरहौनामदेवरागी है । लेवौजूबुलाइ-एकदोइतौफिराइदियेतीसरेसोंआयेकहाकहौंबड़भागीहै । कीजिये-जूकछूअंगीकारमेरोभलोहोइ भयोभलोतेरोदीजैजोपैआशलागीहै ॥ ॥ १२७॥ जाकेतुलसीहैऐसेतुलसीकेपत्रमांझ लिख्योआधोरामनामयासोंतौलिदीजिये। कहापरिहासकरौढरौह्वैदयालदोखिहातकैसोख्यालयाकोपूरोकरौरीझिये। लायोएककांटौलैचढ़ायोपातसोनासंग भयोबड़ोरंगसमहोतनाहिंछीजिये । लईसोतराजूजासोंतुलैमनपांच-सातजातिपांतिहूंकोधनधरेउपंनधीजिये॥ १२८ ॥ परचोशोचभा-रीदुखपावैनरनारीनामदेवजूविचारीएककामऔरकीजिये । जितेव्रतदानऔअस्नानाकियेतीरथमें करियेसंकलपयापैजलडारिदीजिये । करैहुउपाइपातपलाभूमिगाड़ेपाइ रहेदेखिसाइकह्योइतनोहीलीजिये । लैकैकहांधरैंसरवरहूनकरैंभक्ति भावसोंलैभरे हियेमतिअतिभीजिये ॥ १२९ ॥

कीजियेजू अंगीकार ॥ श्लोक॥ जले विष्णुस्स्थले विष्णुर्विष्णुः पर्व-

तमस्तके।ज्वालामालाकुलेविष्णुः सर्वंविष्णुमयंजगत्॥पूछैं आनि लोग बैठि पादियोतजाइमाई । लोग परोसिन पूछैरे नामा किनि यह छानि छवाई । ताते अधिक मँजूरी देहौं वेगिहि देहु बताई । बैठिया प्रीति मँजूरी मांगै जो कोइ छानि छवावै । भाईबंधु संगेसों तोरे बैठिया आपहि आवै । जूठेफल शबरीके खायें ऋषिस्थान बिसरावै । दुर्योधनके मेवात्यागे शाक बिदुर घर खावै । कंचन छानि पद्मपट दीने प्रीतिकी गांठिजुराई । गोविंदके गुण भनै नामदेव जिन यह छानि छवाई ॥ जाके तुलसीहै ॥ दशमे । कच्चित्तुलसि कल्याणि गोविंदचरणप्रिये ॥ १ ॥ तापैस्कंद पुराणकी कथामेंहै इंद्रलोकते पारिजात लाये नारदजी याते व्रतदानको बड़ो अभिमान हो ताके खोइबे को यतन कियो । जैसे ऊपर को ज्वर गयो भीतर को विषम ज्वर खोयो चाहै व्रतदान धरवायो सो पूरे न भये॥ श्लोक ॥ गोकोटिदानं ग्रहणेषु काशी माघप्रयागे यदि कल्पवासी । यज्ञायुतं मेरुसुवर्णदानं गोविंदनाम्ना न भवेच्च तुल्यम् ॥ २ ॥ कबित्त ॥ मेरु सम हेमदान रतन अनेक दान गजदान भूमिदान अन्नदान करहीं । मोतिनके तुलादान मकर प्रयाग दान ग्रहणमें काशीवास चित्तमाहिं धरहीं । सेजदान कन्यादान कुरुक्षेत्रमें गोदान येते मैं पापहूं तौ नेकु नाहिं हरहीं । कृष्णके शरीरको नाम इकबार लियो ध्रुव पापी तीन लोक केशव क्षण माहिं तरहीं ॥ ३ ॥ गऊ दान कैसो है जैसे च्यवन ऋषीश्वरको ॥ ४ ॥

कियोरूपब्राह्मणकोदूबरोनिपटअंगभरयोहियेरंगव्रतपरचैकोलीजिये । भईएकादशीअन्नमांगतबहुतभूखोआजतौनदेहौंभोरचाहैजितौलीजिये । करयोहठभारीमिलिदोऊताकोशोरपरयोसमझावैनामदेवयाकोकहाखीजिये । बीतेयामचारिमरिरहेयोंपसारिपाइँभावपैनजानैदई हत्यानहींछीजिये ॥ १४० ॥ रचिकैचिताकोबिप्रगोदलैकैबैठेजाइदियोमुसुकायमैंपरीक्षालीनीतेरीहै । देखीसोसचाईसुखदाईमनभाईमेरेभयेअंतर्द्धानपरेपांइप्रीतिहेरीहै । जागरणमांझहरिभक्त

नकोप्यासलागीगयेलेनजल प्रेतआनिकीनीफेरीहै । फेंटतेनिकासि तालगायोपदततकालवड़ेईकृपालुरूपधरचोछबिहेरीहै ॥ १४१ ॥

गायोपद तत्काल ॥ पद ॥ ये आये मेरे लंबकनाथ । धरणी पाइ स्वर्गलों माथो योजन भरि भरि हाथ । शिव सनकादिक पारन पावैं तैसेइ सखा विराजत साथ । नाम देवके स्वामी अन्तर्य्यामी कीनों मोहिं सनाथ ॥ १ ॥ नवरस ॥ छप्पय ॥ श्रीवृषभानुकुंवरि हेत शृंगाररूप भय । हास्य वास्यरस हरे मात बंधनकरुणामय । केशीप्रति अति रुद्रबीर मारचो वत्सासुर । भय दावानल पान कियो बीभत्स वकीउर । अति अद्भुतबच विरंचमाति शांत सुसंतति शोच चित । कहिकेशव सुमिरौं मैं सदा नवरस में व्रजराज नित ॥ २ ॥ कवित्त ॥ बीरही को कामयाते समर मनाइवेको करुणा दिखाइ दूती विरह सुनाई है ॥ उलटि बिहा-रसो अदभुतको लखि सीखी सवर घृनिते हास्यरीतिपाई है । गुरुजनकी अहट भयानक विभत्स अंतसंतहू मनाइवो न आइवो रुदाई है।औरनिके सदन माहिं रसराज जान कैसे राजाके सदन माहिं सबकी समाई है ॥ ॥ ३ ॥ जयदेव कबिबड़ो भक्तराज है ॥ ४ । ५ । ६ ॥

मूल ॥ जयदेवकविनृपचक्कवैखंडमंडलेश्वरआनिकवि । प्रचुर भयोतिहुंलोकगीतगोविंदउजागर । कोककाव्यनवरससरसशृंगार कोआगर । अष्टपदीअभ्यासकरैतिहिबुद्धिबढ़ावै । राधारमणप्रसन्न सुनतहांनिश्चैआवै । संतसरोरुहखंडकोपदमावतिसुखजनकनरवि । जयदेवकविनृपचक्कवैखंडमंडलेश्वरआनिकवि ॥ ४४ ॥ टीकाजय-देवकी ॥ किंदुविलुग्रामतामें भयेकविराजराजभरचो रसराजहिये-मनमनचाखिये । दिनादिनप्रतिरुखरूखतरजाइरहेगहेएकगूदरी कमंडलकोराखिये । कहींदेवैविप्रसुताजगन्नाथदेवजूको भयोयाको समयचल्यो देनप्रभुभाखिये । रसिकजयदेवनाममेरोई स्वरूपता-हिदेवौ ततकालअहोमेरीकहीसाखिये ॥ १४२ ॥

सुखजन ॥ दोहा॥ जलजमीन जलरविनदिन, खुलैं निवारण धाम॥

निशिको अमृत पीवयह, जानिमुदे अभिराम ॥ १ ॥ रूखरूख तर ॥ भागवते ॥ सत्यांक्षितौकिंकशिपोः प्रयासैर्बाहोस्वसिद्धेह्युपबर्हणैःकिम् ॥ सत्यंजलौकिंपुरुधान्नपात्र्यादिग्वल्कलादौसतिकिन्दुकूलैः ॥ २ ॥ चीराणिकिंपथिनसंति दिशंतिभिक्षांनैवांघ्रिपाः परभृतः परितोप्यशुष्यन् । रुद्धा गुहाःकिमजितोवनतोपपन्नान्कस्माद्भजंतिकवयो धनदुर्मदांधान् ॥ ३ ॥ सवैया ॥ सीतजोशीत सतावै शरीरतो चीरिलैपंथके कंथाबनाइये । प्यास लगै वह तो जल पीजिये भूखलगै फल रूखके खाइये । छांहचहै तो गुहा गिरिको गहि कानसों आनन रक्षकपाइये । क्योंधनअंधपै जाइ सुहाइ कितेहित आपनपेको दिखाइये ॥ ४ ॥ जे कोई भक्तजनहै ताको यही शिक्षाकहै उपेक्षाहै जैसे जयदेव कविको सांच प्रभू को आयो हाथ पांव कटाये पै मनमें विषाद न आयो अपने शरीरही को दोषलगावै ॥ ऐसो सांच विश्वास आवै अरु युगयुगके प्रणाम प्रतापी कहावै जयदेव कवि बड़ेभक्तहैं ॥ ५ ॥

चल्योद्विजतहांजहांबैठेकविराजराज अहोमहाराजमेरीसुतायह लीजिये। कीजियेविचारअधिकारविस्तारजाकेताहीकोनिहारिसुकुमारियहदीजिये । जगन्नाथदेवजूकीआज्ञाप्रतिपालकरौटरौमातिधरौ हियेनातोदोषभीजिये । उनकोहजारसोंहैंहमको पहारएकतातफिरि जावोतुम्हेंकहाकहिखीजिये ॥ १४३ ॥ सुतासोंकहततुमबैठीरहौ याहीठौरआज्ञाशिरमौरमेरेनहींजातटारिये । चल्योअनखाइसमझाइहारेबातनिसोंमनतूसमुझिकहाकीजैशोचभारिये । बोलेद्विजबालकीसोंआपनोविचारकरौ धरौहियेध्यानमोपैजातनसँभारिये । बोली करजोरिमेरोजोरनचलतकछूचाहोसोईहोहुयहवारिफेरिडारिये ॥ ॥ १४४ ॥ जानीजबभईतियाकियाप्रभुजोरमोपैतौपैएकझोपड़ीकी छायाकारिलीजिये। भईतबछायाश्यामसेवापधराइलई नईएकपोथी मैंबनाऊंमनकीजिये । भयोजूप्रगटगीतसरसगोविंदजूको मनमें

प्रसंगशीशमंडनकोदीजिये । यहीएकपदमुखनिकसतशोचपरचो धरचोकैसेजातलाललिख्योमतिरीझिये ॥ १४५ ॥

मनतूसमुझ कुण्डलिया ॥ बाप न मारी पोदनी बेटा तीरंदाज । बेटा तीरंदाज विषैत्यागी न तनक मन । कहा इन्द्रियनि सधै दुखनि में रधै वृथातन ॥ नफा आपनेकुसब और तौ मूल गवावै । यों मनके अनुसार चलै तनहूं सुख पावै ॥ यह विचारि चित चेतिये नातरुहोइ अकाज । बाप न मारी पोदनी बेटातीरंदाज ॥ १ ॥ छायाकरिलीजियै॥ श्लोक ॥ द्वाविमौ पुरुषौ लोके शिरःशूलकरौ परौ । गृहस्थश्च निरारंभो यतिनश्च परिग्रहः ॥ २ ॥ शशिमंडलस्मरगरलखंडनं मम शिरसि मंडनं देहि पदपल्लवमुदारम् ॥ ३ ॥ लिख्योमतिरीझिये जयतिपद्मावतीरमण जयदेवकविभारतीभणितमति शांतकंयोप्रबंधः ॥ ४ ॥

नीलाचलधामतामेंपंडितनृपतिएक करीवहीनामधरिपोथीसुखदाइये । द्विजनिबुलाइकहीवहीहैप्रसिद्धकरौलिखिलिखिपठौदेशदेशनिचलाइये । वोलेमुसकाइविप्रक्षिप्रसोंदिखाइदई नईयहकोईमतिअतिभरमाइये । धरीदोउमंदिरमेंजगन्नाथदेवजूके दीनीयहडारिवहहारलपटाइये ॥ १४६ ॥ परचोशोचभारीनृपनिपटाखिसानोभयोगयोउठिसागरमेंबूडोयहवातहै । अतिअपमानकियोकियोमैंवखानसोई गोइजातिकैसेआंचलागीगातगातहै । आज्ञाप्रभुदईमतिबूडैतूसमुद्रमांझ दूसरोनग्रंथवैसोवृथातनपातहै । द्वादशश्लोकलिखिदीजैसर्गद्वादशमें ताहीसंगचलैजाकख्यातपातपातहै ॥ १४७ ॥ सुताएकमालीकीजुवैंगनकीवारीमांझ तोरैवनमालीगावैकथासर्गपांचकी । डोलैजगन्नाथपाछेकाछेअंगमिहीझंगा आछै कहिमूमैसुधिआवैविरहआंचकी । फट्योपटदेखिनृपपूछीअहोभयोकहाजानतनहमअवकहौंवातसांचकी । प्रभुहीजनाईमनभाईमेरे वहीगाथालायेवहवालकीकोपालकीमैंनाचकी ॥ १४८ ॥

वोले मुसिकाई ॥ दोहा ॥ अकथ कहानी प्रेमकी, कहीन याने कोइ।

कोइकाजाने खलकमें, जाशिर बीती होइ ॥ १ ॥ जैसे लैलैने मजनूको वुलायो अग्नि में तापै पोस्तीको दृष्टांत अरु पतंग माखी को ॥ २ ॥ विरह आंचकी ॥ श्लोक ॥ धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली । गोपीपीनपयोधरमर्दनचंचलकरयुगशाली । पीनपयोधरभारभरेण हरिं परिरभ्य सरागम् । गोपवधूरनुगायति काचिदुदंचितपंचमरागम् । कापि विलासिविलोलविलोचनखेलनजनितमनोजम् ॥ ३ ॥

फेरोनृपडोंड़ीयहओड़ीबातजानीमहा कहाराजारंकपढ़ैनीकि ठौरजानिकै । अक्षरमधुरऔरमधुरसुरनिहीसोंगावैजवलालप्यारी ढिगहीलैमानिकै । सुनोयहरीतिएकमुगलनेधारिलई पढ़ैचढ़ेघोरे आगेश्यामरूपठानिकै । पोथीकोप्रतापस्वर्गगावतहैंदेववधू आपुहीजोरीझेलिख्योनिजकरआनिकै ॥ १४९ ॥ पोथीकीतौबातसवकहींमैंसुहातहियेसुनोऔरवातजामेंअतिअधिकाइये । गांठमेंमुहरमगचलतमेंठगमिले कहौकहांजातजहांतुमचालिजाइये । जानिलईआपखोलि द्रव्यपकराइदियोलियोचाहोजोईसोईसांईमोकोलाइये । दुष्टनिसमझिकहीकीनीइनविद्याअहो आवैजोनगरइन्हैवेगिपकराइये ॥ १५० ॥

श्यामरूपठानिकै ॥ मीर माधव लाहौरके मुगल फकीर भये सो ॥ पद ॥ दिल जानप्यारे श्याम टुकगली असाड़ी आवरे । सांवरे वदन ऊपर कोटि मदनवारे॥ तेरी जुलफैं दिलदी कुलफैं दोऊ नैन हैं सितारे ॥ तेरी खूबीके देखनेको नैन तरसैं हमारे । जल जो कठोर होवै मीन क्यों जीवै विचारे । कृपा कीजै दर्शन दीजै मीरमाधव को नंदके दुलारे ॥ १ पोथी को प्रताप ॥ राजा वीर विक्रमाजीत की सभामें देवता आये तव राजाने सभा में गीतगोविंद गवायो देवताओंने कही याको तो हमारे सदा गावैहैं याको फल सुखकी उत्पत्ति करैहैं ॥ २ ॥ द्रव्यपकरायो ॥ श्लोक ॥ लोभमूलानि पापानि रसमूलानि व्याधयः ॥ स्नेहमूलानि दुःखानि तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥ ३ ॥ समझिकही दुष्ट

तीनि प्रकारके हैं । उत्तम मध्यम कनिष्ठ सज्जन तीनि प्रकारकेहैं । आगे गुणिन वेद निगुणाविंदकारि बतायेहैं ॥ ४ ॥

एककहैडारोमारिभलोहैविचारयही एककहैमारोमतिधनहाथ आयोहै । जोपैलेपिछानिकहूंकीजियेनिदानकहाहाथपांवकाटिवड़े गाढ़पधरायोहै । आयोतहांराजाएकदेखिकैविवेकभयो छपोउजियारोऔप्रसन्नदरशायोहै । बाहिरनिकसिमानौचंद्रमाप्रकाशराशि पूछोइतिहासकह्योऐसोतनपायोहै ॥ १५१ ॥ वड़ोईप्रभावमानिसकैकोवखानिअहो मेरेकोऊभूरिभागदरशनकीजिये । पालकी विठायलियेकियेसबढूंढ़िनीकिजीकेभायेभयेकछुआज्ञामोहिंदीजिये-करौहरिसाधुसेवानानापकवानमेवा आवैंजोईसंततिन्हेंदेखिदेखिभीजिये । आयेवेईठगमालातिलकविलकिकियेकिलकिकैकहीवड़ेवंधुलखिलीजिये ॥ १५२ ॥ नृपतिवुलाइकही हियेहरिभायभरठेरतेरेभागअवसेवाफललीजिये । गयोलैमहलमांझटहललगायेलोग लागेहोनभोगाजियशंकातनछीजिये । मांगैवारवारविदाराजानाहिंजानदेत अतिअकुलायकहीस्वामधिनदीजिये । देकैवहुभांतिसोपठायेसंगमानसहू आवोपहुँचाइतवतुमपररीझिये ॥ १५३ ॥

हाथ पाँवकाटे ॥ भगवान् में भलो सनेह कियो तहां टीकाकार ने लिख्योहै जयदेव मेरोही रूप है सो हाथ पांव कटाइ कै आपसों कियो ॥ फेरि ख्यात करिवेको आछे करिदिये कहैं नाम कौनको लीजै कोऊ काल कोऊ ईश्वर कोऊ गृह ये न जान्यो साक्षात् धर्महीहैं ऐसे परीक्षित सोंकहीही हिये हरिभाव भरेही वृहरणे धातु है ॥ हरिणी जो चोरी ताके अर्थ विषयवर्त्त हैं । ताते समझौती में समझाये हैं ॥ श्रीदामोदर नारायण वृंदावन वासुदेव मधुसूदन मुरारी ॥ १ ॥

पूंछैनृपनरकोऊतुम्हरीनसरवरिहैजितेआयेसाधुऐसीसेवानहिंभईहै । स्वामीजूसोंनातो कहाकहोहमखाहिंहाहाराखियेदुराययहवात अतिनईहै । हुतेइकठौरेनृपचाकरीमैंतहांइनकियोईविगारुमारिडा-

रौआज्ञादई है । राखेहमहितजानिलेनिदानहाथपाँववाहीकेईशानह-मअबभरिलईहै ॥ १५४ ॥ फाटिगईभूमिसबठगवेसमाइगये भयेयेचकितदौरस्वामिजूपैआयेहैं । कहीजितीबातसुनिगातगातकां पिउठेहाथपांवमोडेभयेज्योंकेत्योंसुहाये हैं । अचरजदोऊनृपपास जाप्रकाशकिये जियेएकमुनिआयेवाही ठौरधायेहैं ।पूँछैबारबारशी शपाँयनमेंधारि रहे काहिपै उघारि कैसे मेरेमनभाये हैं ॥ १५५ ॥

भरिलई ॥ दोहा ॥ सिंह खाल गाडर पहिरि, भेष सिंहको धारि । बोलनि बोली भेड़की, कूजनिडारी फारि ॥ १ ॥ फाटिगई भूमि तौ दंड क्यों न दियो भेषजानि दण्ड न दियो भेषमें बट्टो न लगै जैसे अपरस गुरु सपरस चेला ॥ कोऊ ने बस्तर उठाइकै मारे अपरस बनोरहै राजा के प्यादे ने जान्यों प्रह्लाद या बलि होहिंगे सो इच्छाचारी सिद्ध होइँगे वैकुंठ लोक ते आये पाताल लोकको गये जैसे दण्डहू दियो उत्कर्ष न राख्यो ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ घटि बढ़ि बातें भेषकी, कीजै नाहिं बनाइ । गुरुको बानो परशुराम, लीजै कंठ लगाइ ॥ साधन को घर दूरि है, समझौ चित्त लगाइ ॥ ४ ॥ प्रगट अवगुण दीसैं तौ जैसे नारद सनकादिकन में भलोइ करै चेला सो कही कोऊ कैसोई बुरो कहै ये तू मति कहै ऐसे वृक्ष समयमें फल होइ ऐसे हाथ पांउ पुण्य पापको फल सम प्राप्तिहोय ॥

राजाअतिअरगहीकहीसबबातखोलि निपटअमोलयहसंतनको भेसहै । कैसोअपकार करौतऊउपकारकरैंढरैंरीतिआपनीहीसरस-सुदेशहै । साधुतानतजैंकभूजैसेदुष्टदुष्टतान यहीजानिलीजैमिलैं रसिकनरेशहै । जान्योजबनामठामरहौइहांबलिजांव भयोमैंसनाथ प्रेमभक्तिभई देश है ॥ १५६ ॥ गयोजालिवाइल्याइकबिराजराज तियाकियालैमिलायआपरानीढिगआईहै । मर्‌योएकभाईवाको भईयोंभौजाईसती कोऊअंगकाढ़िकोऊकूदिपरीधाईहै । सुनतहीनृप वधूनिपटअचंभवभयो इनकोनभयोफेरिकहिसमुझाई है । प्रीतिकी नरीतियहवड़ीविपरीतिअहो छूटैतनजबैप्रियाप्राणछुटिजाईहै॥१५७

प्रीतिकी न रीति ॥ सोरठा ॥ मुख देखे की प्रीति, सब कोऊ ऐसी-करै ॥ वेतोन्यारे रीति जिये जियें मूये मुरैं ॥ १ ॥ ॥ कवित्त ॥ सती कहैं येरी मेरी मतिहौ सुमति कहौं प्रेम हैं लजावै माति यहै पीव जोइये । साखिदै अगिनि जार हथलेवा हाथ जोरे जाके साथ दीजै ताके साथ जीव खोइये ॥ कौन आगि को न आंचबरै ताहि लिये बरै ताको कहा बरै काहु कहे काज रोइये । जाके संग घनेदिन सेज माँहि सोय खोये ताके संग एकदिना आगिहूं में सोइये ॥ कवित्त ॥ अंगराग अंगकरि मोती माल ग्रीव धरि बैठी बाल सोहै अति चांदनी विमल में । आगी अँग पहरै सुराग रंग गहरै औ बारम्बार बलकै यों यौवनके बलमें । त्योंहीं काहू आली नंदनंदन आगम कह्यो सामुही निहारी मानों वारी है अनल में । मोतिन के हार की न छार रहो उरपर अंगराग उड़ि गयो अवीर ह्वैके पलमें ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ सफल फलै मनकामना, तुलसी प्रेम प्रतीति ॥ तिरिया अपने कारणे, लिखि पूजति हैं भीति ॥ ३ ॥ साधुता न तजै॥ जैसे शिष्यपै वेगार गुरु कही गारी दै ऐसे ॥ ४ ॥

ऐसीएकआपकहिराजासोंयहीं लैकेजावौबागस्वामीनिकुदेखौंप्रीति को । निपटविचारीवुरदितमेरे गरेछुरी तियाहठमानकरीऐसेही प्रतीतिको । आनिकैहंआपपायेकहीयाहीभांतिआइ बैठीढिगति-यादेखिलोढिगईरीतिको । वोलीभक्तवधूअजूवेतौहों वहुतनीके तुमकहाऔचकहीपावतहौंभीतिको ॥ १५८ ॥ भईलाजभारी पुनिफोरिकैसँभारीदिनवीतिगयेकोऊतवतववहीकीनी है । जानि-गईभक्तवधूचाहतपरीक्षालियोकहीअजूपायेसुनितजीदेहभीनीहै । भयोसुखश्वेतरानी राजाआयेजानीयह रचीचिताजरौंमतिभई-मेरीहीनीहै । भईसुधिआपुकोजुआये वेगिदौरिइहांदेखीमृत्युप्रा-यनृपकहीमरीदीनीहै ॥ १५९ ॥ वोल्योनृपअजूमोहितरैई-वनतअव सवउपदेशलैकेधूरिमेंमिलायोहै । कह्योवहुभांतिएवेआ-वतनशांतिकिहूं गाईअष्टपदीसुरदियोतनज्यायो है । लाजनकोमा-

रचोराजाचाहैअपघातकियो जियोनहींजातभक्तिलेशहूनआयोहै। करिसमाधाननिजग्रामआये किंदुबिल्व जैसोकछूसुन्यों यहपरचौलैगायो है॥ १६०॥

राजाको जयदेवजी के संगको रंग क्यों न लग्यो ॥ १ ॥ हरिविलासकाव्ये ॥ भवज्वरनिवृत्तये पतितपावन त्वत्पदं । प्रबलमिद मौषधं हृदि सकृत् सुधीर्द्धारयेत् ॥ २ ॥ अपथ्यमिहवर्जयेद्विषयवासनासंज्ञकं वसेतविजनेवने फलदलांबु सेवेदलम्॥ ३ ॥ गतिगाविन्दे ॥ वहति मलयसमीरे मदनमुपनिधाय स्फुटति कुसुमनिकरे ॥ विरहिहृदय दलनाय तव विरहे वनमाली सखि सीदति ॥ ४ ॥ करि समाधान ॥ ॥ दोहा ॥ गई मित्रकी मित्रता, रहेउ कथा को भाव। तोहिं न बेटा भूलही, मोहिं पूछको घाव ॥ ५ ॥

देवधुनीसोतहोअठारहकोसआश्रमते सदास्नानकरैंधरैंयोगताईको। भयोतनवृद्धतऊछांड़ैनहींनित्यनेमप्रेमदेखिभारीनिशिकहीसुखदाईको। आवौजनिध्यानकरौकरौजनिहठऐसो मानीनहींआऊँमैंहींजानौंकैसेआईको। फूलेदेखौंकंजजबकीजियोप्रतीतिमेरीभईवाहीभांतिसेवैअबलौंसुहाईको ॥ १६१ ॥ मूल ॥ श्रीधरश्रीभागवतमेंपरमधर्मनिर्णयकियो। तीनिकांडएकत्वसानिकेउअज्ञबखानत। करमठज्ञानीऐंचिअर्थकोअनरथवानत । परमहंससंहिताविदितटीकाविस्तारचो । षटशास्त्रअबिरुद्धवेदसंमताहिबिचारचो। परमानंदप्रसादतेमाधौसुकरसुधारिदियो। श्रीधरश्रीभागवतमेंपरमधर्मनिर्णयकियो॥ ४९ ॥

छांड़ैनहीं नित्यनेम ॥ दोहा ॥ उत्तम मध्यम अधमनर, पाहन सिकतापानि। योंति अनुक्रम जानिये, बैर व्यतिक्रम मानि ॥ १ ॥ साचौ पनकै गंगाजी आपही पधारीं झूंठे पनवारिनको मूठी चनाहू न मिलै जैसे छप्पन भोगीको दृष्टांत घोडाके मलीदाको अरु देखन हारेको ॥ २ ॥ साईं शक्कर खोरको, शक्करहू पहुंचावै । वेविश्वासीजीव एकापर

ज्यों विचावै ॥ ३ ॥ श्रीधरगीतायाम् ॥ सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुचः ॥ ४ ॥ षटशास्त्रछप्पय ॥ कर्ममिमांसाकहै देहवशकरैसुपावै। कालाधीन वैशेषन्याइ करतार बतावै ॥ नित्यानित्य विचार सांख्यमत ऐसो भावै । पातंजलि हठज्योति योग अष्टांग दिखावै। सबमें व्यापक ब्रह्म है वेदांत शास्त्र ऐसी कहै। षटशास्त्र सकल विरुद्ध ये हरि ज्ञानी दृष्टा ह्वैरहै ॥ ५ ॥ परम धर्म ॥ प्रथमे ॥ सवैपुंसां परोधर्मोयतोभक्तिरधोक्षजे । अहैतुक्यप्रतिहता ययात्मासंप्रसीदति ॥ ६ ॥

टीकाश्रीधरस्वामीजीकी ॥ पंडितसमाजवड़ेवड़ेभक्तराजजिते भागवतटीकाकरिआपसमेंरीझिये । भयोजूविचारकाशीपुरीअविनाशीमांझसभाअनुसारजोवसोईलिखिदीजिये । ताकोतौप्रमाणभगवानविंदुमाधव जूहैशोधोयहीबातधरिमंदिरमेंलीजिये । धरेसवजाइप्रभुसुकरवनाइदियोकियोसवौंपरिलैचल्योमतिधीजिये १६१॥

मूल ॥ कृष्णाकृपाकोपरप्रगटविल्वमंगलमंगलस्वरूपकरुणामृत सुकवित्तउक्तिअनुचिष्टउचारी । रसिकजनानिजीवनिहृदय जैहारावलिधारी । हरिपकरायोहाथवहुरितहँलियोछुटाई । कहाभयोकरछुटैं वदौतौहियेतेजाई। चिंतामणिसँगपाइकै ब्रजवधूकेलिवरणी अनूप । कृष्णकृपाकोपरप्रगटविल्वमंगलमंगलस्वरूप ॥ ४६ ॥

कांडकरंडे कपूर कपास धरी दोऊ ॥ श्लोक ॥ वागीशा यस्यवदने लक्ष्मीर्यस्यतु वक्षसि । यस्यास्ते हृदये संवित् तं नृसिंहमहं भजे ॥ १ ॥ दोहा ॥ श्रीधर स्वामी तोमनो, श्रीधर प्रगटे आन ॥ तिलक भागवत को कियो, सब तिलकन परमान ॥ २ ॥ अघनाशी ॥ सोरठा ॥ मुक्ति जन्म महिजानि, ज्ञान खानि अघहानिकर । जहँ बस शम्भु भवानि सोकाशी सेइय कसन ॥ ३ ॥ कहाभयो ॥ श्लोक ॥ हस्तमुत्सृज्यातोसि बलात्कृष्णाकि मद्भुतं ॥ हृदयाद्य दिनि र्यासि पौरुषं गणयामिते ४

चिंतामणि पाइकै ॥ दोहा ॥ पण्डित पूजा पाकदिल, ये दिमाक मतिलाव ॥ लगै जरब अँखियानकी, सबै गरब उडिजाव ॥ ५ ॥ मांझ बोलनि हँसनि चलनि बानैतनि लै महबूब जुधाया । धीरज धरम सरम समझ कादरबर गोल भगाया ॥ भर भर बासा कियो अकेला इस्के लिये ठहराया । बल्लभ रसिक इन इश्क दुजागी योगी मन पकराया ॥ ६ ॥ दोहा ॥ तानै तान तरंगकी, बेधन तनगन प्रान । कला कुसुमशर शरन की, अतिअयान तनत्रान ॥ ७ ॥

टीकाविल्वमंगलकी ॥ कृष्णवेनातीरएकद्विजमतिधीररहै ह्वैग-योअधीरसंगचिंतामणिपाइकै । तजीलोकलाजहियेवाहीकोजुराज भयो निशिदिनकाजवहैरहैवरजाइकै । पिताकोसराधनेकुरह्योमन साधिदिनसेसमैअवेशचल्योअतिअकुलाइकै । नदीचढ़िरहीभारीपै-यैनअवारी नाव भाव भरयोहियोजियोजातनंधिजाइकै ॥ १६२ ॥ करतविचारबारिधारमेंनरहैप्राणतातेभलीधारमित्रसन्मुखको जाइ-ये । परेकूदिनीरकछूसुधिनाशरीरकीहै वहीएकपीरकवदरशनपाइ-ये । पावतनपारतनहारिभयोबूड़िवेको मृतकनिहारिमानीनाव-मनभाइये । लगेइकिनारेजायचल्योपगधाइचाइआयेपटलागेआ-धीनिशिसोविहाइये ॥ १६३ ॥ अजगरघूमिझूमिभूमिकोपरसकि-यो लियोईसहाइचढ़ोछातपरजाइकै । ऊपरकेवारलगैपरयोकूदि-आंगनमें गिरयोयोंगरतरागीजागीशोरपाइकै । दीपकवरायजोपैदे-खैं विल्वमंगलहै बड़ोईअमंगलतूकियोकहाआइकै । जलअन्हवा-यसूखे पटपहरायहाइकैसेकरिआयो जलपारद्वारधाइकै ॥ १६४ ॥

हिये वाहीको जुराज्य भयो ॥ कवित्त ॥ मरकतके सूत किधौं पन्नग के पूत किधौं राजत अभूत तमराज कैसे तार हैं । मखतूल गुण-ग्राम शोभित सरस श्याम काम मृग कानन कुहूके ये कुवार हैं ॥ कोप की किरणि जल नीलके जराके तंत उपमा अनंत चारु चमर शृंगार हैं । कारे सटकारे भीने सोंधेते सुगंधवास ऐसे बलभद्र नव वाला तेरेबारहैं १

झूलना ॥ गुलौं विचौं गुलचन्यो सेषु ल्यानहीं पर खुलसी। जलौं गुलकलंमतआसी वाहुहुसन तेरी घुलसी। दाने देखि दिवाने थासी अकलतिनादा भुलसी। अवजी पाकनजरिकै देखन वारे छत्रतिना शिरहुरसी ॥ २ ॥ दोहा ॥ तनक न रहै विरक्तता, लगैं दृगनकी थाप। कहुं गीता माला कहूं, कहुं वटुवा कहुं आप ॥ ३ ॥

नौकापठाइद्वारनावलटकाईदेखि मेरेमनभाईमैंतौतवैलईजानि-कै। चलौदेखैंअहोयहकहाधौंप्रलापकरै देख्योविषधरमहाखीजी अपमानिकै। जैसोमनमेरेहाड़चामसोंलगायोतैसोश्यामसों लगावै तोपैजानियेसयानकै। मैंतोभयेभोरभजौंयुगलकिशोरअव। तेरी-तुहीजानै चाहौकरौमनमानिकै ॥ १६५ ॥ खुलिगईआंखैं अभि-लाखैं रूपमाधुरीको चाखैं रसरंगऔउमंगअंगन्यारिये। वणिलेव जाईगाईविपिननिकुंजक्रीड़ा भयोसुखपुंजजापैकोटिविषैवारिये। वीतिगईरातिप्रातचलेआपआपकोजु हियेवहीजायदृगनीरभारिडा-रिये। सोमगिरिनामअभिरामगुरुकियोआनिसकैकोवखानिलाल-भुवननिहारिये ॥ १६६ ॥

प्रलापोऽनर्थकंवचःइत्यमरः ॥ १ ॥ हाड़ चामसों ॥ कवित्त ॥ देह तौ मलीन मन वहुत विकार भरे ताहू मांझ जरा वात पित्त कफ खांसीहै। कवहुंक पेटपीर कवहुँक शिरवाहु कवहुंक आंखि कान मुख में विथासी है ॥ औरहू अनेक रोग मल मूत्र भरे सदा हरि तजि औरै भजे साधुकरे हांसीहै। ऐसो जो शरीर ताहि अपनो करि मानिरहै सुंदर कहत यामें कौन सुखराशीहै ॥ १ ॥ मांसकी गरैंथीं कुच कंचन कलश कहै मुख कहै चंद्रजो शलेपमा को घरु है। दोऊ भुज कमल मृणालनाभ कूप कहै हाडहीके खंभा तासों कहैं रंभातरु है। हाडहीके दशन आहि हीरा मोती कहैं तासों चामको अधर तासों कहै विम्वाफरु है। ऐसी झूठी जुगति वनावें वे कहावें कवि तापर कहत हमैं शारदा को वरुहै ॥ २ ॥ ओस कोसो मोती और पानीको ववूला जिमि सांचौकारि मान्यो सोई

बूझ्यो मंझधारहै । एकस्त्री को पुत्रगुरु पायसो साधुपै छुटायो ऐसे चिन्तामणिकही भोर मैंतौ जाहुँगी तेरी तूजानैं ॥

रहेसोवरसरससागरमगनभये नयेनयेचोजकेश्लोकपढ़िजीजिये। चलेवृन्दावनमनकहैकबदेखौंजाइआयेमगमांझएकठौरमतिभीजिये। परचोवड़ोशोरदृगकोरकैनचाहैकाहूतहांसरतियान्हातदेखिआँखैंरी। झिये ।लगेवाकेपाछेकाछकाछेकीनसुधिकछू गईघरआछेरहैद्वारतनछीजिये॥ १६७ ॥ आयोवाकोपतिद्वारदेखेभागवतठाढ़ेबड़ोभागवतअतिपूछीसोजनाइये । कहीजूपधारोपाँवधारोगृहपावनकोपाँवनिपखारौंजलधारोंशीशभाइये ॥ चले भौनमांझमनआरतमिटाइवेको गाइवेकोजोईरीतिसोईकोबताइये । नारिसोंकह्योहोतूशृंगारकरिसेवाकीजैलीजैयोंसुहागजामेंवेगिप्रभुपाइये ॥ १६८ ॥ चलीहैशृंगारकरिथारमेंप्रसादलैकेऊंचीचित्रसारीजहांबैठेअनुरागीहैं । झनकमनकजाइजोरिकरठाढ़ीरही गहीमतिदेखिदेखिनूनवृत्यभागीहैं । कहीयुगसुईलावौलाइदईगहीहाथफोरिडारीआँखैंअहोबड़ीयेअभागीहैं । गईपतिपासश्वासभरतनबोलिआवैबोलीदुखपाइआयेपांयपरेरागीहैं ॥ १६९ ॥

लागेवाकेपाछे ॥ भागवते ॥ पाठकापाठकाश्चैवयेचान्ये शास्त्रचिंतकाः ॥ सर्वेव्यसनिनोमूढा यः क्रियावान्सपंडितः ॥ १ ॥ कुंडलिया ॥ कूकर चौक चढाइये, चाकी चाटन जाइ। चाकी चाटन जाइ आदिअभ्यास न छाडै । बरजत वेद पुराण विषय पकरत हठि हाड़ै ॥ बच्छ पयोधर पान कहौ तेहि कौन सिखावै। अनभोजनम अनेक अवियाहीको धावै॥ अग्रदासको बशकहा परै कूपतनधाइ । कूकर चौक चढाइये चाकी चाटनजाइ ॥ २ ॥ शंकराचार्यजीकृत नूतन वृत्तभागी हैं ॥ नारीस्तनभरजघननिवेशं दृष्ट्वा मायामोहावेशम् ॥ एतन्मांसविषादविकारं मनसि विचारय वारंवारम् । भजगोविंदं भजगोविंदं गोविंदं भज मूढमते ॥

कियोअपराधहमसाधुकोदुखायोअहो वड़ेतुमसाधुहम साधुना-

मथरचोहै । रहौअजूसेवाकरैंकरीतुमसेवाऐसी तैसीनहींकाहूमांझ-मेरोउरहरचोहै । चलेसुखपाइहगभूतसेछुटाइदिये हियेहीकीआं-खिनसोंअवैकामपरचोहै । बैठेवनमध्यजाइ भूखेजानिआपआये भोजनकराइचलो छायादिनढरचोहै ॥ १७० ॥ चलेलैगहाइकर-छायावनतरुतरचाहतछुटायोहाथछोड़ैकैसेनीकोहै । ज्योंज्योंवल-करै त्योंत्योंतजतनयेऊ अरेलियोईछुड़ाइगह्योगाढ़ोरूपहीकोहै ॥ ऐसेहीकरतवृन्दावनघनआइलियेपियोचाहैरससवजगलाग्योफीको है । भइउतकंठाभारीआयेश्रीविहारीलालमुरलीवजाइकैसुकियो भायोजीकोहै ॥ १७१ ॥

हमनाम साधु ॥ दोहा ॥ गलियनिमें हर्षतफिरैं, साधुकहैं सब कोइ ॥ श्वान नाम वाघा धरचो, खोजी बाघ न होइ ॥ १ ॥ रूपही काहै ॥ हाथ छुडाये जातहो. निवलजानिकै मोहिं ॥ हियमेंते जब जाहुगे, सबल वन्दोंगी तोहिं ॥ २ ॥ ॥ कवित्त ॥ प्रीतम सुजान मेरे हितके निधान कहो कैसे रहैं प्राण जोपै अनाखि रिसाइहो । तुम तो उदार दीनहीन आइ परचो द्वार सुनिये पुकार याहि कौलौं तरसाइहौ ॥ चातक हौं रावरो अनोखो मोहिं आवरो सुजान रूपवावरो वदन दरशाइहौ । विरह नशाइ दया हिय में वसाइ आइ हाइ कव आनँदको घनवरसाइहौ ॥ ३ ॥ तापै सूरदासजी अरु साहूकार की स्त्रीको दृष्टांत ॥ ४ ॥ ऐसे जबकही तब करुणानिधान हँसे प्रीति के वशभये ॥ ५ ॥

खुलिगयेनयनज्योंकमलरविउदयभये देखिरूपराशिवाढ़ीको-टिगुणीप्यासहै । मुरलीमधुरसुररारव्योमदभरिमानोंढरिआयोका-ननमेंआननमेंभासहै । मानियेप्रतापचिंतामाणिमनमांझभई चिंता-मणिजैतिआदिवोलेरसरासहै।करुणामृतग्रंथहृदयग्रंथकोविदारिडा-रे वांधैरसग्रंथपंथयुगलप्रकासहै ॥ १७२ ॥ चिंतामणिसुनीवनमां झरूपदेख्योलाल ह्वैगईनिहालआईदेहनातोजानिकै । उठिवहुमान कियोदियोदूधभातदोना दैपठावैनितहरिहितूजनमानिकै । लियो

कैसेजायतुम्हैंभाइसोंदियोजोप्रभु लैहौंनाथहाथसोंजोदेहैंसनमानि-कैबैठेदोऊजनकोऊपावैनहींएककनरीझेश्यामवनदीनोदूसरोहूआ-निकै ॥ १७३ ॥

चिन्तामणि जयतिआदि ॥ श्लोक ॥ चिन्तामणिर्जयति सोम गिरिर्गुरुर्मेशिक्षागुरुश्चभगवाञ्छिखिपिच्छमौलिः ॥ यत्पादकल्पतरुपल्ल-वशेखरेषु लीलास्वयंवररसंलभतेचयच्छ्रीः ॥ १ ॥ करनाब्रतग्रंथ ॥ अद्वैतवीथीपथिकैरुपास्यास्वानंदसिंहासनलब्धदीक्षा ॥ शठेनकेनापिवयंहठेन दासीकृतागोपवधूवटेन ॥ २ ॥ कोऊ पावै ॥ दोहा ॥ निकट न देख्यो पारथी, लग्यो न देख्यो बाण ॥ मैं तोहिं पूछौं हेसखी, केहि विधि निकसे प्राण ॥ ३ ॥ जल थोरो नेहा घनो, लगे प्रीतिकेबाण । तूपी तूपी करिमरे इहिविधि छांडेप्राण ॥ पुमन आवमांगे आनन॥ ४ ॥देखा ज्ञानकर्म नाम सों शुद्धहोइ अरु गीतामें भक्ति योग चित्त शुकने लिख्यो ज्ञान कर्म आशा पाश शुद्ध होई बीचमें भक्तियोग भाष्यमें लिख्यो है भक्ति रत्न के दोऊ ढकनाहैं चक्रवर्ती ने लिख्यो है दोऊ लरैंगे नहीं बीचमें भक्तियोगरोकै है दोउनको ॥ ५ ॥

मूल ॥ कलिजीवजंजालीकारणे विष्णुपुरीबड़निधिसची ॥ भगवतधर्मउतंगआनधर्मआननदेखा । पीतरपाटितरविगतानिषक-ज्योंकुंदनरेखा ॥ कृष्णकृपाकारिबेलफलतसंगादिखायो । कोटिग्र-न्थकोअर्थतेरहविरंचनमेंगायो ॥ महासमुद्रभागवततेभाक्तिरतन राजीरची । कलिजीवजंजालीकारणैविष्णुपुरीबड़निधिशची॥४७॥

टीका ॥ जगन्नाथक्षेत्रमांझबैठेमहाप्रभूजबै चहूंओरभक्तभूपभीरअ-तिछाईहै । बोलेविष्णुपुरीपुरीकाशीमध्यरहैं यातेजानियतमोक्ष चाहनीकीमनआईहै । लिखीप्रभुचीठीओपमणिगुणमालएकदीजिये पठाइसोंहिलागतसुहाईहै । जानिलईबातनिधिभागवतरतनदाम दईपठैआदिमुक्तिखोदिकैवहाईहै ॥ १७४ ॥ मूल ॥ विष्णुस्वामि संप्रदायदृढ़ज्ञानदेवगंभीरमति ॥नामतिलोचनशिष्यसूरशशिसदृश

उजागर । गिरागंगउनहारिकाव्यरचनाप्रेमाकर ॥ आचार जहरिदासअतुलवलआनँददाइन । तिहिमारगवल्लभविदितपृथुपधितपराइन ॥ नवधाप्रधानसेवासुदृढ़मनवचक्रमहरिचरणरति । विष्णुस्वामिसंप्रदायदृढ़ज्ञानदेवगंभीरमति ॥ ४८ ॥

खोदिके वहाइ हनुमन्नाटके ॥ भवबंधच्छिदेतस्मैनस्पृहयामि मुक्तये । भवान्प्रभुरहंदास इतियत्रविलुप्यते ॥ १ ॥ सालोकसार्ष्टिसामीप्यसारूप्यैकत्वमप्युत । दीयमानंनगृह्णंति विनामत्सेवनंनराः ॥ २ ॥ विष्णुपुरीवाक्यम् ॥ येमुक्तावपिनिःस्पृहाःप्रतिपदं प्रोन्मीलदानंददां यामास्थायसमस्तमस्तकमणीं कुर्वंतियंस्वेवशे । तान् भक्तानपितांचभक्तिमपितंभक्तिप्रियं श्रीहरिं वंदेसंततमर्थयेनुदिवसं नित्यंशरण्यंभजे ॥ मुक्तिनिस्पृहा कथाएकपुराणकी एक समय श्रीनारदजी श्रीवृन्दावन में आये श्रीलालजीकी लीलादेखिकै बहुत प्रसन्न भये पीछेते रोवनलगे यह बड़ो आश्चर्य्यहै ॥५॥

ज्ञानदेवजूकीटीका ॥ विष्णुस्वामिसंप्रदायवड़ेईगँभीरमतिज्ञानदेवनामताकीवातसुनिलीजिये । पितागृहत्यागिआइग्रहणसंन्यासकियोदियोवोलिरूठतिया नहींगुरुकीजिये । आईसुनिवच्छपाछे कह्योजान्योमिथ्यावादभुजनपकरिमेरेसंगकरिदीजिये । आईसोलिवाइजातिअतिहीरिसाइदियोपांतिमेतेडारिरहे दूरिनहिंछीजिये ॥ ॥ १७८ ॥ भयेतीनिपुत्रतामेंमुख्यवड़ोज्ञानदेवताकीकृष्णदेवजूसों हियेकीसचाईहै ।वेदनपढ़ावैकोईकहैसवजातिगईलईकरिसभाअहोकहामनआईहै । विनसोंव्रह्मत्वकहीश्रुतिअधिकारनाहिवोल्योयोंनिहारिपढ़े भैंसालैदिखाइये । देखिभक्तिभावचाव भयो आनिगहेपाव कियोईसभाववहीगहीदीवताईहै ॥ १७९ ॥

काव्यरचनापद ॥ माईआजु होनिशान बाजे दशरथ राइके । रामजन्म सुनि रानी गावति आनँद वधाइके । उमँगे ऋषिविश्वामित्र पढत वशिष्ठ तंत्र चैत्रमासनौमी शुक्लपक्ष पाइके । उमँगे दलह किधौं जल उमँगे मत्तगज उमँगे महल सव कंचन जराइके । उमँगे पौरी पगार उमँगे वीथी

जार उमँगी अयोध्यापुरी रह्यो सुखछाइके । उमँगे सूरज कुल धरम
सुरकुल लंकके कँगूरा ढये अगम जनाइके।उमँगे वृक्ष सब सूखे हरेभये
वै उमँग्यो वनदंडक अधिक जिवाइके । उमँगे वृद्ध बाल सुर मुनि जेते
श उमँगे गौतम जानि त्रिया मोक्षदाइके । उमँगे बादर रीछ हनूमान
जाईश सुग्रीव रिपुको नाशकरि हानियै नशाइके । उमँग्यो सरयूको
र मज्जन करिहैं रघुबीर उमँगे सबजीव जन्तु कोउ न सकै सताइके।
मँगी सभा बिराजै अपने अपने समाजै उमँगे उमँगे तिलक
बमस्तक चढ़ाइके। उमँगे उघटत संगीत उमँगे तूवट गीत मृदंगी मन
दंग बजाइके । उमँगे मुनि समाजैं बहुविधि बाजे बाजैं महाराज दान
जै सजिकै तुलाइके। उमँगे ढाढ़िया गावैं ठाढे बजावैं उमँगि अशीश
। नृपमाथो नाइके। उमँगेनाचै लागदाट तालसांचै रीझि वस्तुदेत जो
हीलाइके । उमँगी कौशल्या रानी सुत जायो शारंगपानी उमँगे जन
न देव सीताराम गाइके १ मुताख्या ब्रह्मणकला सोपान देव महान देव
न देव ऐसे तीन जैसे धायपुत्र परोसी साखी ऐसे मखनमें ब्राह्मण
खी यह जानि लीजै सो भैंसा पढ्यो प्रमाण कौन ॥

टीकातिलोचनजूकी॥ भयेउभैशिष्यनामदेवश्रीतिलोचनजूसू-
शशिनाहींकियोजगमेंप्रकाशहै । नामीकीतौबातसुनिआये सुनो
सरेकीसुनेईवनतभक्तकथारसरासहै॥ उपजेवणिककुलसेवेकुलअ-
ग्रुतकोऐयेनहींबनेएकतियारहैपासहै। टहलुवानकोऊसाधुमनानि-
जानिलैयहीअभिलाषसदादासनिकोदास है॥१७७॥आयेप्रभुटह
वारूपधरिद्वारपर फटीएककामरीपन्हैयांटूटीपाइहै । निकसत-
छैंअहोकहांतेपधारेआप बापमहतारीऔरदेखियेनगाइहै । बाप-
हतारीमेरेकोऊनाहिंसांचीकहौंगहौजोटहलतौपैमिलतसुभाइहै ।
नमिलबातकौनदीजिये जनायवहखाऊंपांचसातसेरउठतरिसाइहै
१७८ ॥ चारिहीवरनकीजुरीतिसबमेरेहाथ साथहूनचहौंकरौ-
किमनलाइकै । भक्तनकीसेवासोतौकरतहीजनमगयोनयोकछु-

नाहिं डारेवरपविताइकै ॥ अंतर्यामीनाममेरोचेरोभयोतेरोहौंतो वोल्योभक्तभावखावोनिशंकअघाइकै । कामरीपन्हैयांसवनईकारि दुई औरु मीड़िकैन्हवायोतनमैलकोछुड़ाइकै ॥ १७९ ॥

अनमिलपै ॥ सवैया ॥ अरसात जम्हातलगे नखगात कितौ तुतरात सुवोलत हूं । कवि सुन्दर ऊलटि और सुनो इतनैं पर सौंहकरै अजहूं ॥ तिनसों वकहा कहिये जिनके सुपनेहूँ न लाज भई कबहूं । जग में सखी ओपधि है सव की पै स्वभावकी ओषधि नाहिंकहूं ॥ १ ॥ मनलाइकै ॥ दोहा ॥ चारि वरणकी चातुरी, सरै न मेरो काम ॥ भक्त सेवजो जानिहौं, तो रहौ हमारे धाम ॥ २ ॥ भक्तनकी सेवा ॥ गीतायां ॥ यद्यद्वांछति मद्भक्तस्तत्तत्कुर्य्यामातंद्रितः ॥ ३ ॥ बाप महतारी नहीं ॥ जयतिजगनिवासो देवकी जन्मवादो शास्त्रजन्मगावैं अजन्मगावैं दोऊ सत्तः भक्ति वेटा मित्र सारवा ऐसे जानिये ॥

वोल्योवरदासीसोंतूरहैयाकीदासी होइ देखियोउदासीदेतऐसो नहींपावनो । खाइसोखवावोसुखपावोनितनित्ताहिये जियेजगमाहिं जौलौंमिलिगुणगावनो । आवतअनेकसाधुभावतटहलुहिये लिये चावदाबैपांवसवनिलड़ावनो । ऐसेहीकरतमासतेरहव्यतीतभये गयेउठिआपनेकुवातकोचलावनो ॥ १८० ॥ एकदिनगईहीपरो सिनिकेभक्तवधूपूछिलईवातअहोकाहेकोमलीनहैं । वोलीमुसिकाई वेटहलुवालिवाइलाये कहूंनअघाइखोटिपीसितनछीनहैं ॥ काहूसों नकहौयहगहोमनमांझयेरीतिरीसोंसुनैगोजोपैजातरहैभीनहैं । सुनि लईयहीनिकुगयेउठिहूतीटेकदुखहूअनेकजैसेजलविनमीनहैं ॥१८१॥ वीतेदिनतीनिअन्नजलकरिहीनभयेऐसोसोप्रवीनअहोफेरिकहांपाइये।वड़ीतूअभागीवातकाहेकोकहनलागी रागीसाधुसेवामैंसुकैसेकरि लाइये । भईनभगनीतुमखावोअन्नपानीयहमैंहींमतिठानीमोको प्रीतिरीतिभाइये । मैंतोहौंअधीनतेरेघरहीमेंरहौंलीनजोपै कहौस दासेवाकरिवेकोआइये ॥ १८२ ॥ कौनेहरिदासमैंतोदासहूनभयो

नकु बड़ोउपहासमुखजगमेंदिखाइये। कहैजनभक्तकहाभक्तिहमकरी कहोअहोअज्ञताईरीतिमनमेंनआइये ॥ उनकीतौबातबनिआवैसब उनहींसोंगुनहीकोलेतमेरेअवगुणछिपाइये । आयेघरमांझताऊमूढ़ मैंनजानिसक्यों आवैअब क्योंहूंधाइपाँइलपटाइये ॥ १८३ ॥

आवत अनेक साधु ॥ गीतायां ॥ अपिचेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्। साधुरेव समंतव्यो सम्यसग्व्यवसितोहिसः ॥१॥ अन्न जल करि हीन ॥ श्लोक ॥ वैष्णवः परमोधर्मो वैष्णवः परमंतपः ॥ वैष्णवः परमोराध्यो वैष्णवः परमंगुरुः ॥ २ ॥ चारो वेदमें अरु अठारह पुराण में अरु श्री भागवत में यह सुनीहै वैष्णव स्वरूप सर्वोपरि श्री भगवत रूपी साक्षात् है ॥ ३ ॥

टीकाबल्लभाचार्य्यजीकी ॥ हियमेंस्वरूपसेवाकरिअनुरागभरे ठरेओरजीवनिकीजीवनकोदीजिये । सोईलैप्रकाशघरघरमोंबिलास कियो अतिहीहुलासफलनयननकोलीजिये । चातुरीअवधि नेकुआतुरीनहोतिक्योंहूं चहूं दिशिनानारागभोगसुखकीजिये । बल्लभजूनामलियोपृथुअभिरामरीतिगोकुलमें धामजानिसुनिअति रीझिये ॥ १८४ ॥ गोकुलकेदेखिबेकोगयोएकसाधुसूधो गोकुलमगनभयोरीतिकछुन्यारिये । छोकरकेवृक्षपरबटवाझुलाइदियोकियो जाइदर्शनसोभयोसुखभारिये । देखेआइनाहिंप्रभूफेरिआपपासआयो चिंतासोंमलीनदेखिकहीजानिहारिये ॥ वैसोईस्वरूपकैईगईसुधि बोल्योआनि लीजियोपिछानिकहीसेवानितधारिये ॥ १८५ ॥

गोकुलके देखिबेको ॥ कवित्त ॥ जौलौं ब्रज बीथिन में विथकै न येरेमन तौलौं कुटिलाई की सुकालिमा जनाइये। तौलौं नवनीत चोरचित्त में न आनै नेकु जौलौं और साधन में स्वच्छता न पाइये। स्मृति पुराण वेद पण्डित प्रवीणताई करि अभिमान शेष पंकलपटाइये । पैजकरि कहतु हौं प्रवीणन सों कान खोलि सोकल मलीन जहां गोकुल नगाइये ॥ १ ॥ वेर गोधूलिकै सुनत तिया गोरी गान दामिनी निकरसी निकर गृहतेघिरैं

गोधनके पाछे आछे नटवर वेष काछे श्याम चलत कटाछे तियनैन नैनसों- झिरैं । जारिनि किवारिनि अटारिनि झरोखनिते जित तितफूलपाती गैल छैलपै परैं । होति जब सांझ इन गोकुल गलिन मांझ कोटि वैकुंठसुख सहज वहे फिरैं ॥ २ ॥ नाहीं प्रभु ॥ दोहा ॥ छतौनेह कागदहि पै, भये लि-खाइनटांक ॥ आंचलगै उघऱ्यो अवै, सेहुंडकोसो आंक ॥ ३ ॥ स्नेह बिछुरनि में उखरि आवै वैसोई रूप ॥ दोहा ॥ प्रेम एकइक चित्तसों, एकै संग समाय ॥ गंधीको सोंधो नहीं, स्वजननहाथ बिकाय ॥ ४ ॥ नैन कोफल ॥ बर्हायितेतेनयनेनराणां लिंगानि विष्णोर्ननिरीक्षतोये ॥ ५ ॥

खुलिगईआंखैंअभिलाखैंपहिचानिकीजैदीजैजुबताइमोहिंपावैनिजरूपहै । कहीजाइवाहीठौरदेखौप्रेमलेखौहियेलियेभावसेवाकरोमारगअनूपहै । देखिकैमगनभयोलयोउरधारिहारिनैनभरिआये जान्योभक्तिकोस्वरूपहै । निशिदिनलग्योपग्योजग्योभागपूरणहो पूरणचमतकारकृपाअनुरूपहै ॥ १८६ ॥ मूल ॥ संतसाखि जानैंसबैप्रगटप्रेमकलियुगप्रधान । भक्तदासइकभूपश्रवणसीताहरकीनो । मारिमारिकरिखड्गवाजसागरमेंदीनो ॥ नृसिंहकोअनुकरणहोइहिरणाकुशमारचो । वहैभयोदशरथरामबिछुरेतनडारचो ॥ कृष्णदामचांधेसुनेतिहिक्षणदीनेप्रान । संतसाखिजानैंसबैप्रगटप्रेमकलियुग प्रधान ॥ ९० ॥ टीका—संतसाखिजानैंकलिकालमेंप्रगटप्रेमबड़ोई असंतजाकेभक्तसोंअभावहै । हुतौएकभूपरामरूपततपुरमहाराम हीकीलीलागुणसुनैंकरिभावहै । विप्रसोंसुनावैसीताचोरीकौनगावै हियो खरौभरिआवैवहजानतसुभावहै ॥ परचोद्विजदुखीनिज सुवनपटाइदियो जानैंनसनायो भरमायोकियोवावहै ॥ १८७ ॥

कालियुग प्रधान ॥ प्रेमते दर्शन प्रेमते वाको स्वरूप प्रेमते वाके स्वरूपको चाप प्रेमते स्वरूपके चाप को शिक्षाकार याते प्रधान ॥ १ ॥ चावहै ॥ कुंडलिया ॥ धोबीबेटा चांदसा सीटी और पटाक।सीटी और पटाक प्रेमहरि भक्ति नजानै । अनकनरहै न टांक छालनी सों मनछानैं ॥

श्वास धवनि ज्यों धवै अंग मूसा ज्यों दाढै । ऐसो महा अचेत थौस कूकर ज्यों काढै ॥ अगर कहैं निर्फलगई सेमरि फूली पाक । धोबीबेटा चांदसा सीटी और पटाक ॥ २ ॥ दोहा ॥ कबहुं न सुखमें हरिभजे, भक्तन मिले न दौरि ॥ तीनों पन योंहींगये, फिरत पराई पौरि ॥ ३ ॥

मारिमारिकरिकरखड्गनिकासिलियो दियोवोरसागरमेंसोअवे शआयोहै । मारौं याहीकालदुष्टरावणबिहालकरौंपावनकोदेखौंसी ताभावदृढ़छायोहै ॥ जानकीरमणदोऊदरशनदीनोआनि बोलेवि नप्राणकियोनीचफलपायोहै । सुनिसुखभयोगयोशोकसबदारुण जो रूपकीनिहारिनयेफेरिकैजिवायो है ॥ १८८ ॥ नीलाचलधाम तहांलीलाअनुकरणभयोश्रीनृसिंहरूपधारिसांचेमारिधारचोहै । को ऊकेहैदोसकोऊकहतअवेशतोपे करौदशरथकियोभावपूरोपारचो है ॥ हुतीएकबाईकृष्णरूपसोंलगाईमतिकथामेंनआईसुतसुनीकहे उधारचोहै ॥ बांधेयशुमतिसुनिऔरभईगतिकरिदईसांचीरतितन तज्योमानौवारचोहै ॥ १८९ ॥

सोये समस्त भाव प्रेमसों होतभये जैसे श्रीगोपिकान के प्रेमसों भाव होत भये ॥ १ ॥ तापै दृष्टांत एक प्रेम के द्वै स्त्री एकतो आनंदिता एक व्याकुलता तिनके एक एक पुत्र आनंदिताके तो सुनन्द व्याकुलताके विरह ता विरहकी स्त्री तदात्मकको स्वरूप ॥ २ ॥ सवैया ॥ वैर बढ्यो सुब- ढ्यो अतिही अबके कहिको लरिकौनको सूझै । कैसी भई हरि हेरतही अबको हियके जियकी गतिबूझै । बाहरहू घरहूमें सखी अँखियां निबहै छवि आनि अरुझै । सांवरो रूप रम्यो उरमें सगरोजग सांवरो सांवरो सूझै ॥ ३ ॥ ब्रह्मवैवर्त्तपुराणे ॥ यास्यामि तीर्थमद्यैव कंठेकृत्वातु बा- लुकम् ॥ अथवात्वं गृहाद्गच्छ त्वयामे किंप्रयोजनम् ॥४॥ ऐसे नन्दजी में बैठिकै सो बाईने कहो तदात्मकको पुत्रतद्वत् तद्वत्को स्वरूपसोकहैं५॥

कवित्त ॥ श्याम को जपतिहुती श्यामाजू स्वरूपभरी पगी प्रेम पूरणते ह्वैगई कन्हाई है । सुरति लिखी जो चिट्ठी प्यारी पिय ततकाल भामिनी

वियोगभयो अतिदुखदाई है। व्याकुल बिहाल अति प्यारीके बिरहतन राधे राधे रटि पुनिभई राधिकाई है। चकित सचेत कहैं बेर बेर हेरिपाती पथिक न आयो यह पाती कैसे आईहै ॥ १ ॥ पद ॥ दुहुं दिशिको अति बिरह बिरहिनी कैसे कै जुसहै। सुनो सखी यह बात श्यामसों को समुझा-इकहै ॥ जब राधा तबहीं मुख माधो माधो रटतिरहै। जब माधो ह्वैजाति क्षणकमें राधा बिरह दहै ॥ पहले जानि अगिनि चन्दनसी सतीहोन उमहै। समाचार ताते शीरेके पाछे कौनकहै। उभय दारुह्वै कीटमध्यज्यों शीतल-ताहिचहै। सूरदास प्रभु व्याकुल बिरहिनि क्योंहूं सुखनलहै ॥ २ ॥ दोहा ॥ पियके ध्यान गही गही, रही वही ह्वैनारि॥ आय आपही आरसी, लखि रीझत रिझवारि ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ तटभुवितरलाक्षो लक्षतो यास-मंतादिहवसतिसधूर्त्तः शीघ्रमायात यूयम्। असकृदिति वदंती कामिनी कापिबालं कपिकिमपितमालं गाढमालिंगतिस्म ॥ ४ ॥ तापै एक दृष्टांत लंका में त्रिजटा अरु सीताजीको ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ भृंगीभयते भृंगहोइ वहकीट महाजड। कृष्ण प्रेमतेकृष्णहोइ कछु अचरज नहिंबड ॥ ६ ॥ प्रेमहि पीवहि अंतरुपै तो। वीसि तीनि साठिहैं जेतो ॥ ७ ॥ एक सि-द्ध अमलीके नीचे बैठ्यो तप करतरह्यौ ता मग श्रीनारदजी आये सो पूछी हरि मिलैंगे सो परमेश्वर ते पूछी नारदजी कही अमलीके पत्ता इतने युग तब नाच्यो मिल्यो तापै राजाकी बेटी को अरु द्वै मित्रन को दृष्टांत॥८॥

मूल ॥ प्रसादअवज्ञाजानिकै पाणितज्योएकैनृपति ॥ हौंकहा कहौंबनाइबातसबहीजगजानै। करतेदोनोभयोश्यामसौरभरुचिमानै ॥ छप्पनभोगतेयहलखीचकरमाकोभावै सिलिपिल्लेकेकहतकुँवरिपैहरिचलिआवै ॥ भक्तनिहितसुतविषदियोभूपनारिप्रभुराखिपति। प्रसादअवज्ञाजानिकै पाणितज्योएकैनृपति ॥ ५१ ॥ पुरुषोत्तमकाशीराजा ॥ प्रसादकीअवज्ञातेतज्योनृपकरएककरीकैविवेकसुनोजैसीभांतिभईहै। खेलैनृपचौपरिकोआयोप्रभुभक्तमेश दाहिनेसेफासेवांयोलयोमतिगईहै। लैगयेरिसाइकैफिराइमहादुः

खपाइ उठचोनरदेवगेहगयोसुनिनईहै । लियोअनसनहाथतज्यो यहीछिनतव सांचौमेरोपनवोलिविप्रपूछिलईहै ॥ १९० ॥ काटै हाथकौनमेरोरहैगहिमोनयाते पूछतसचिवकहाशोचयोंविचारिये । आवैएकप्रेतमोदिखाईनितदेतनिशि डारिकैझरोखाकरशोरकरि भारिये। सोऊढिगआइरहौआपकोछिपाइतव डारैहाथआनितवहीं काटिडारिये । कहीनृपभलेचौकीदेतमेंचुमायोभूप डारयोउठिआ निछेदन्यारोकियोवारिये॥ १९१ ॥ देखिकैलजानो कहाकियोमैं अयानोनृप कहीप्रेतमानोनहींप्रभुसोंबिगारिये । कहीजगन्नाथदेव लैप्रसादजावोवहांलावोहाथवोवौबामसोईउरधारिये । चलेतहांधाइ भूपआगेमिल्योआइहाथ निकस्योलगाइहियेभयोसुखमारिये । लाये करफूलताकेभयेफूलदोनाके नितहीचढ़तअंगगंधहरिप्यारिये १९२

प्रसादअवज्ञा ॥ श्लोक ॥ प्रसादं जगदीशस्य अन्नपानादिकं च यत्॥ ब्रह्मवन्निर्विकारंहि यथा विष्णुस्तथैवतत् ॥ १ ॥ पूछि लई है ॥ दोहा ॥ वाम बाहु फरकत मिले, ज्यों प्रीतमरस भूरि ॥ त्यों तोहीसों भेंटिहौं, राखि दाहिनोदूरि ॥ २ ॥

करमाबाईकीटीका ॥ हुतीएकबाईताकोकरमासुनामजानि बि नारीतिभांतिभोगखीचरीलगावही । जगन्नाथदेवआइभोजनकरत नीके जितेलागैभोगतामेंयहअतिभावही । गयोतहांसाधुमानिबड़ो अपराधकरे भरेवहउवाससदाचारलैसिखावही । भईयोंअबारदेखे खोलिकैकिवारतोपैजूंठानिलगीहैमुखधोयेबिनआवही ॥१९३॥ पूछी प्रभुभयोकहाकहियेप्रगटखोलि बोलिहूनआवैहमैदेखिनईरीतिहै । करमासुनामएकखीचरीखवावै मोहिं मैंहूंनितपाऊंजायजानीसांची प्रीतिहै । गयोमेरोसंतरीतिभांतिसोसिखाइआयो मतमोअनतावेन जानेयोंअनीतिहै । कहीवाहीसाधुसोंजुसाधिआवोवहीबात जाइकै सिखाईहियआईबड़ीभीतिहै ॥ १९४ ॥ सिलपिल्लेउभैबाईकीटी का ॥ सिल्लिपिल्लेभक्तउभैबाईसोई कथासुनौएकनृपसुताएकसु

ताजिमीदारकी। आयेगुरुघरदेखिसेवाढिगबैठीजाइ कहीललचाइ पूजाकीजेसुकुवारकी । दियोशिलटूकएकनामकाहिदियोवही की जियेलगाइमनमतिभवपारकी । करतकरत अनुरागवढ़िगयोभारी वड़ीयेविचित्ररीतियहीशोभासारकी ॥ १९५ ॥

वैष्णव प्रेमको समझै नहीं ॥ वेदसमझै याते करमाबाई को वेदही सिखायो ॥ दोहा ॥ लकरी धोवै भ्योंसनै, करै छतीसौ पाक ॥ जाको पट षटकरम हैं, ताको भावै छाक १ सो प्रेमको समुझै नट गोपाल कपट क्यों भावै कोटिक स्वांग बनावै २ बड़ी भीति है ॥ साधुको फेरिआया देखिकै डरी। आप कहा सिखाइ गयो तब साधु बोले री तुडरै मतिरी ॥ यह क्रिया ब्राह्मण की है तेरी नहीं तब पोथी देखी तब जानी तू वैसेही कन्यो करि तब साधु हँसे कही ललचाइ ॥ ३॥

पाछिलेकवित्तमांझदुहुनिकीएकैरीति अवसुनौन्यारीन्यारीनी केमनदीजिये। जिमीदारसुताताकेभयेउभयभाईरहैंआपसमेंबैरगाम मारचोसुवेछीजिये । तामेंगईसेवाइनवड़ोईकलेशकियोतियोनहीं जातखानपानकैसेकीजिये । रहेसमुझाइयाहिकछुनसुहाइ तबकही जायलावौतेरेदोऊसमधीजिये ॥१९६॥ गईवाहीगांवजहांदूसरोसुभा ईरहैवैठचोहैअथाईमांझकहीवहीवातहै लेहुजूपिछानीतहांवैठचोइ कठेरप्रभुवोलि उठेउकोऊवोलिलीजेप्रीतिगातहै । भईआंखिराती लगीफाटिवेकोछातीसो पुकारीसुरआरतसोमानोतनपातहै। हियेआ इलागेसवदुखदूरिभागेकोऊवड़ेभागजागेघरआईनसमातहै ॥१९७॥

गई आँखिराती ॥ कवित्त ॥ कंचनमें आंचदई चुनी चिनगारीभई दूषण गयेरी सब भूषणउतारिले । पियहै विदेश वाही देश क्यों न परै धाइ ससकि ससकि उठै मनहूं विचारिलै । परघर आगि आली मांगन क्यों जाति अब आगिमेरे अंग चिनगारी चारिझारिलै। सांझ समैसांच सुनवाती क्यों न देति आली छाती सों छुवाइ दियां वाती क्यों न बा- रिलै ॥ १ ॥ वसन डसन भये हसन रसन होत श्वासनिसों जागिहै वियोग

आगिआगरी। धामतौ उजार से हैं छारसे हैं काम काज आलिनके यूथ जाल ऐसे हाल नागरी। भोजन हलाहल कुलाहल सो नाद जाति वाद है विवाह ऐसे विशदनिकी सागरी। आपुनु मृगीके तूल कामदेव शारदूल वचि है न मूल शूल उठी है उजागरी ॥ २ ॥ दोहा ॥ धवल महल शय्या धवल, धवल शरदकी रैन। एक श्याम विन विकल सब, ज्यों पुतरी विन नैन ॥ ३ ॥

टीकानृपसुताको ॥ सुनोनृपसुताबातभक्तिगातगानपगीभजी सबविषयव्रतसेवाअनुरागीहै । व्याहीहीविमुखवरआयोलेनवहेवर खरी अरवरीकोईचितचिंतालागीहै । करिदईसंगभरीआपनेहीरंग चली अलीहूनकोऊएकवहीजासोंरागीहै । आयोढिगपतिबोलिकि योचाहैरतियाकीऔरभईगतिमतिआवोविथापागीहै ॥ १९८ ॥ कौनवहविथाताकोकीजियेयतनबेगिबड़ोउदवेगनेकुबोलिसुखदीजि ये । बोलिबोजोचाहौतौपैकरौहरिभक्तिहियेबिनहरिभक्तिमेरोअंग जिनिछीजिये । आयोरोषभारीतबमनमेंविचारीवापिटारीमेंजुकछु सोईलैकेन्यारोकीजिये । करीवहीबातमूसिजलमांझडारिदईनईभई ज्वालाजियोजातनाहिंखीजिये ॥ १९९ ॥ तज्योजलअन्नअबचाहत प्रसन्नकियो होतक्योंप्रसन्नताकोसरवसलियोहै । पहुंचेभवनआइ दईसोजताइबातगातअतिछीनदेखिकहाहठकियोहै । साससमझावै कछूहाथसोंखवावैयाकोबोल्योहूनभावेतबधरकताहियोहै । कहैसोई करैंअवपरैपांइतेरेहमबोलीजबवेईआवेतौहीजातजियो है ॥ २०० ॥

तज्यो जल अन्न ॥ दोहा ॥ शठसनेहसों डरपिये, नंद और भय नाहिं। सांपिनि सुत हित जानि कै, गिले पेट पचि जाहिं ॥ १ ॥ कवित्त ॥ समरमें लऱ्यो जाहि गिरह ते गिऱ्यो जाइ गगन में फिऱ्यो जाइ पावक को दहिवो। कानन में रह्यो जाइ व्यालकर गह्योजाइ विर हहु सह्योजाइ और कहा कहिवो। हलाहल पियोजाइ सरवस दियो जाइ करवत लियो चाइ वारिधि को वाहिबो। और दुख याहूते जु दुसह

कठिन ऐसो जैसो कहूं विमुख संग एकछिनरहिबो ॥ २ ॥ ऐसो सतसंग मन में जानिबो ॥ ३ ॥

आयेवाहीठौरभौंरआइतनभूमिगिरचो गिरचोजलनैनसुरआरत पुकारीहै। भक्तिवशश्यामजैसेकामवशकामीनर धायलागेछातीसों जुसंगसोंपिटारीहै । देखिपतिसासुआदिजागताविवाहमिटचो वादि हीजनमगयोनेकुनसँभारीहै । कियेसबभक्तहरिसाधुसेवामांझपगे जगेकोऊभागवरवधूयोंपधारीहै ॥२०१॥ भक्तनकेहेतुसुतविषदियो उभयवाईकीटीका ॥ भक्तनकेहेतुसुतविपदियोउभैवाई कथासरसा ईबातखोलिकैजताइये । भयोएकभूपताकेभगतअनेकआवैंआयो भक्तभूपतासोंलगनलगाइये। नितहीचलतऐयेचलननदेतराजा चितयोवरपमांझकह्योमोरजाइये । गईआशटूटितनछूटिवेकीरीतिभई लई बातपूंछिरानीसबैलैजनाइये ॥ २०२ ॥

आयो भक्तभूप ॥ श्लोक ॥ मदाश्रयां कथामिष्टाः शृण्वंति कथयंति च ॥ तपंति विविधास्तापानैतान्मद्गतचेतसः ॥ १ ॥ साधुसेवामें कहा लाभ ॥ तुलयामल वेनापि न स्वर्गं न पुनर्भवम् ॥ भगवत्संगिसंगस्य मर्त्यानां किमुताशिषः ॥ २ ॥ प्रथमे ॥ वासुदेवे भगवति भक्तियोगः प्रयोजितः ॥ जनयत्याशु वैराग्यं ज्ञानं च यदहैतुकम् ॥ ३ ॥ सप्तमे ॥ वासुदेवे भगवति भक्तिमुद्वहतां नृणाम् ॥ ज्ञानवैराग्यवीर्य्याणां नेह कश्चिद्व्यपाश्रयः ॥ ४ ॥

दियोसुतविपरानीजानीनृपजीवैनाहिं संतहैस्वतंत्रसोइन्हेंकैसेराखिये । भयेविनभोरवधूशोरकरिरोइउठीभोइगईरावलमेंसुनीसाधु भाषिये । खोलिडारीकटिपट भवनमेंप्रवेशकियोलियोदेखिबाल ककोनीलतनसाखिये। पूंछ्यौभूपतियासोंजुसांचकहिकियोकहा कहीतुमचल्यौचाहौनैनअभिलाषिये ॥ २०३ ॥ छातीखोलिरोयेसंतबोलहूनआवैमुख सुखभयोभारीभक्तिरीतिकछुन्यारिये । जानी हूनजातिपांतिजाकोसोविचारकहा अहोरससागरसोसदाउरधारिये।

हरिगुणगाइसाखिसंतनिबतायदियोबालकाजिवाइलागीठौरवहप्यारि ये । संगकेपठाइदियेरहेजेवेभीजेहिये बोलेआपजाऊंजौनमारिकै विडारिये ॥ २०४ ॥ सुनौचित्तलाइकहीदूसरोसुहाइहिये जियेज गमाहिंजौलौंसंतसंगकीजिये । भक्तनृपएकसुताव्याहीसोअभक्तम हा जाकेघरमांझजनबामनहिंलीजिये । पल्योसाधुशीतसोंजुशरीर हगरूपपले जीभचरणामृतकेस्वादहीसोंभीजिये । रह्योकैसेजाइ अकुलाइनबस्याइकछुआवैं पुरप्यारेतवविषसुतदीजिये ॥ २०५ ॥

जानीहू न जातिपांति ॥ कुंडलिया ॥ सोईनारिसुतेवडीजाकीको ठीज्वारि । जाकी कोठीज्वारि जाहि यादवपति भावै । श्रवण सुनत हरिकथारसनगोविंदगुणगावै ॥ आरज विदुष उदार सुमति सुकुलीनी सो- ई । हृदय बसत हरिचरण जगत डाऱ्योकरि छोई ॥ अगर कहे तादासपर तन मन दीजैवारि।सोई नारि सुतेवडी जाकी कोठी ज्वारि ॥ १ ॥ दोहा ॥ यद्यपि सुन्दर सुघर पुनि, सगुनौ दीपक देह। तऊ प्रकाश करे तितौ, भरिये जितौ सनेह ॥ २ ॥ एकादशे ॥ मल्लिंगमद्भक्तजनदर्शनस्पर्शनार्चनम् ॥ परिचर्य्यास्तुतीप्राह गुणकर्मानुकीर्त्तनम् ॥ ३ ॥ हरिगुणगावैसाखि- संतन ॥ आदिपुराणे ॥ मद्भक्ता यत्र गच्छंति तत्र गच्छामि पार्थिव ॥ भ क्तानामनुगच्छंति भुक्तयो मुक्तिभिः सह ॥ ४ ॥

आयेपुरसंतआइदासीनेजनाइकही सहीकैसेजातिसुतविषलैकै दियोहै । गयेवाकेप्राणरोइउठीकिलकारिसबभूमिगिरेआनिदुकभयो जातहियोहै । बोलीअकुलाइएकजीवेकोउपायजोपै क्रियोजायपि तामेरेकोउवारकियोहै । कहैसोईकरैहगभरेलावोसंतनिको कैसेहोत संतपूंछौचेरोनामलियोहै ॥ २०६ ॥ चलीलैलिवायचेरीबोलिबोसि खाइदियो देखिकैधरणिपरीपांइगहिलीजिये । कीनीवहीरीतिहगधा रामानोंप्रीतिसत करियोंप्रतीतिगृहपावनकोकीजिये । चलेसुखपाइ दासीआगेहीजनाईजाहि आइठाढ़ीपौरिपांइगहेमतिभीजिये ।कहीहरे वातमेरेजानौपितामातमैंतौअंगमेनमातआजुप्राणवारिदीजिये २०७

रीझिगयेसंतप्रीतिदेखिकैअनन्तकह्यो होइगीजुवहीसोप्रतिज्ञातैजु करीहै । बालकनिहारिजानीविषनिरधारदियो दियोचरणामृतको प्राणसंज्ञाधरीहै । देखतविमुखजाइपाइततकाललिये कियेतवशिष्यसाधुसेवामतिहरीहै । ऐसेभूपनारिपतिराखी सबसाखीजन रहैअभिलाषी तोपैदेखोयह वरी है ॥ २०८ ॥

दियोचरणामृत ॥ श्लोक ॥ अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् । विष्णुपादोदकं पीत्वा शिरसा धारयाम्यहम् ॥ १ ॥ देवतानने कही शुकदेवजीसों श्रीभागवत हमैं देहु अमृत राजा परीक्षितकोदेहु सो इन भागवत न दयोहै याते हरिको बालकको चरणामृत दियो॥ २॥ दोहा ॥ धन्यसन्त जहँजहँ फिरे, तहँ तहँ करत निहाल। चरणामृत मुखडारिके, फेरि जियायोबाल ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ वरं हुतवहज्वालापिंजरांतर्व्यवस्थितिः । नासौ श्रीविष्णुविमुखो जनसंवासवैशसम् ॥ ४ ॥

मूल ॥ आसैअगाधदोउभक्तकोहरितोषनअतिशयकियो ॥ श्रीरंगनाथकोसदनकरनवहुवुद्धिविचारी । कपटधर्मरविजेन्द्र द्रव्याहितदेहविसारी । हंसपकरनेकाज वधिक वानोंधरिआये । तिलकदामकीसकुचजानितिहिआपवँधाये ॥ सुतवधहरिजनदेखिकैदैकन्याआदरदियो । आसैअगाधदोउभक्तको हरितोषनअतिशयकियो ॥ ॥ ५२ ॥ टीका ॥ आसैसोअगाधदोउभक्तमामाभानजेकोदियोप्रभुपोपताकीवाताचितधारिये । घरतेनिकसिचलेवनकोविवेकरूपमूरतिअनूपविनमंदिरानिहारिये । दक्षिणमेंरंगनाथनामअभिरामजाकोताकोलैवनावैधामकामसवटारिये । धनकेयतनफिरैभूमिपैनपायोकहूंचहूंदिशिहेरिदेख्योभयोसुखभारिये ॥ २०९ ॥ मंदिरसरावगीकोप्रतिमासोपारसकीआरसनाकियोवेदनूनहूंवतायोहै । पावैंप्रभुसुखहमनरकहूगयेतोकहा धरकनआईजाइकानलैफुकायोहै।ऐसीकरीसेवाजासोंहरीमतिकेवराज्यों सेवगासमाजसवनीकेकैरिझायोहै।दियोसोंपिभारतवलैनेकोविचारकरैहरैकौनराहभेदराजनपैपायो है२१०॥

घरसे निकसिचले ॥ कवित्त ॥ चाहैंधन धाम वाम सुत अभिराम सुख कह्यो नाहीं नाहीं कछू सरत न काजहै । चतुरन आगे कोटि चातुरी न काम आवै बातन बनाइ सुनि उपजत लाज है । जोपै कहों सांच यामें झूंठ न मिलाव नेकु तोपैश्वान से क्यों कहूं रांक्यो गजराज है । वृन्दावन चाहै तौ न चाहै जीवतनहूंको मनहूंको दूरि ऐसे मिलत समाज है ॥ वेद नूनहूं बतावै ॥ श्लोक ॥ गजैरापीड्यमानोपि नगच्छेज्जैनमंदिरे । याविनी नैव वक्तव्या प्राणैः कण्ठगतैरपि ॥ १ ॥ रंगनाथ ॥ कावेरी विरजा चैव वैकुण्ठं रंगमंदिरम् । प्रवासदेवरंगेशप्रत्यक्षं परमं पदम् ॥ २॥

मामारह्योभीतरऔऊपरसों भानजोहो कलसभँवरकलीहाथसों फिरायोहै । जेवरलैफांसिदियोमूरतिसुखैंचिलईऔरवारवहुआपनी कैचढ़िआयोहै । कियोहोजोद्धारतामेंफूलितनफँसिवैठेउअतिसुख पाइतववोलिकैसुनायोहै । काढ़िलेवोशीशईशभेषकीनानिंदाकरैं भरे अंकवारिमनकीजियोसवायोहै ॥ २११ ॥ काढ़िलियोशीशईश इच्छाकोविचारकियोजियोनहींजाततऊचाहमतिपागीहै । जोपैत नत्यागकरौकैसेआससिंधुतरौवाहीओरआयो तहांनीमखुदीलागीहै। भयोशोकभारीहमैंह्वैगईअवारीकाहूऔरनेविचारीदेखैंवहीवड़भागी है । भरिअंकवारिमिलेमांदिरसँवारिझिलेखिलेसुखपाइनयनजानेसोई रागीहै ॥ २१२ ॥ कोढ़ीभयोराजाकियोयतनअनेकएयेएकहूनला गैकह्योहंसनिमँगाइये । वधिकवुलाइकहीवेगिहीउपायकरौ जहांतहां ढूंढ़िअहो इहांलगिलाइये । कैसेकरिलावैंवैतोरहैंमानसरमांझलावौ गेह्छुटौगेतवजनेचारिजाइये । देखतहिउड़िजातजातिकोपिछानिलेत साधुसोनडरैंजानिभेषलैवनाइये ॥ २१३ ॥

मामारह्यो भीतर ॥ दोहा ॥ साधुसती अरु शूरमा, ज्ञानी अरु गजदंत येतेनिकसि न वाहुरैं, जो युगजाहिं अतंत ॥ १ ॥ श्लोक ॥ स्वर्गाप-वर्गनरकेष्वपि तुल्यार्थदर्शिनः । सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकं शरणं व्रजेति ॥ २ ॥ अग्रेवह्निः पृष्ठेभानुः सायंचिबुकसमर्पितजानुः । करतल-

भिक्षा तरुतलवासस्तदपि नमुंचत्याशापाशः ॥ ३ ॥ दोहा ॥ जौन युगति पिय मिलबकी, धूरि मुक्ति मुख दीन। जो लहिये सँग सजन तो, धरक नरकहू दीन ॥ ४ ॥ ईशइच्छा भलीकरी ॥ यद्यद्वांछति मद्भक्तः ॥ इनकही मुंह कैसे दिखावेंगे सेवराके चेला भये याते काढ्यो प्रथम पाप पुण्य भोगे ऐसे ओषधि ऋषीन व्यवहार कलिये वैद पसारी ऐसे कोढी भयो खर कुत्तानहीं भले मनुष्य पै है ॥

गयेजहांहंससंतवानोसोप्रशंसदेखि जानिकेवँधायेराजापासलैकै आयेहैं । मानिमतिसारप्रभुवैद्यकोस्वरूपधारिपूंछिकैवजारलोगभू पढिगलायेहैं । काहेकोमँगायेपक्षीआछीहमदेहकरें छांड़िदीजैइन्हें कहीनीठिकरिपाये हैं । औषधीपिसाईअंगअंगनिमिलाइकियेनीके सुखपाइकहीइनकोछुड़ाये हैं ॥ २१४ ॥

जानिके वधाये ॥ दोहा ॥ हंसकहै सुनि हंसिनी, सुनो पुरातन साखि॥ वधिकभेद जानेनहीं, पति वानैकीराखि ॥ १ ॥ वैद्यकी ॥ कवित्त ॥ तप वेल हजूर हरौल चंडोल कफवाइ मूलहूल हलकारा काहली विचारिये। कोटकोतवालको तो दादहै दिवानफोरा फौजदार पित्तीपदचर हंकारिये। तिजारी तापतिल्ली संग्रहणी सेठमानिलेहु खई खाज खांसी राजपत्नी निहारिये । शीत अतीसार युग मंत्री विषम बादशाह भाजि वैदराज आयो सेना लिये भारिये ॥ २ ॥ आई मनजूनके जनून बड़ीनून सेती भूनिडारें रोग अरुण आमल बैठायोहै। अरक फरकसेतो प्यादिनके यूथ वहु चूरण चतुर चोबदार मनभायो है। गोली किधौं गोला क्वाथ कटक भुसुण्डी मानों उसन सलिल शीत बातको नशायो है। अंजन सुगन्ध लेप मर्दन कराइ पुनि सेन चतुरंग साजि वैदराज आयो है॥ ३ ॥ छप्पय ॥ नारद शुक संदवैद ग्रंथ भागवत बतावैं। करै सतसंग जब वृत्ति कुपथ होने नहिंपावैं । ओषधि नवधाभक्ति यतन प्रभुको आचारा। चरणामृत करिक्काथ हरै सो सकल विकारा॥ संत रचण रजधोइकै तोइमारो करिदीजे । पथ्यहै महाप्रसाद अन्न रसना

नहिं लीजै । त्रिगुण दोष वाई चौरासी जनम मरणकोहठिहरै । तत्त्ववेत्ता तिहुँलोकमें फिरि न रोगतिहिं संचरै ॥ ४ ॥

लेवोभूमिगांवबलिजांवयादयालुताकीभागभालजाकेताकोदरश नदीजिये । पायोहमसबअवकरोहरिसाधुसेवामानुषजनमजाकीस फलताकीजिये । करिलैनिदेशदेशभक्तिविस्तारभई हंसहितसार जानिहियेधरिलीजिये । बधिकनजानीजासोंखगनिप्रतीतिकीनी ऐसोभेषछाड़िये नराख्योमतिभींजिये ॥ २१५ ॥ महाजनसदावर्ती कीटीका ॥ महाजनसुनोसद्राव्रतीताकोभक्तपनमनमें विचारसेवा कीजैचितलाइकै । आवतअनेकसाधुनिपटअगाधमतिसाधलेतजैसे अवेसुबुधिमिलाइकै । संतसुखमानिराहिगयोघरमांझसदा सुतसोंस नेहनितखेलेसंगजाइकै । इच्छाभगवानसुख्यगोनलोभजानि मारि डारयोधूरिगाड़िगृहआयोपछिताइकै ॥ २१६ ॥ देखैमहतारी मगबेटाकहांरह्योपगिबीतेचारियामतऊधाममेंनआयोहै । फेरीनृप डौंड़ीजाकेसंतसंगआयलौंड़ीकह्योयोंपुकारिसुतकोनेविरमायोहै । वेगिदेवताइदजैआभरणादियोलीजैकहीसोसंन्यासियहमारयोमन लायोहै । दईलैदिखाइदेहबोल्योयाकोगहिलेहुयाहीनेहमारोपुत्रमारे उनीकेपायोहै ॥ २१७ ॥

हिये ॥ श्लोक ॥ आराधनानां सर्वेषां विष्णोराराधनं परम् ॥ तस्मात्परतरं देवि तदीयानां समर्चनम् ॥ १ ॥ भक्ते तुष्टो हरिस्तुष्टो हरौ तुष्टे च देवताः ॥ भवंति सिक्ताः शाखाश्वतरोर्मूलनिषेचनात् ॥ २ ॥ आरंभगुर्वी क्षयति क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात् ॥ दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम् ॥ ३ ॥ मनमें विचार ॥ नवमे ॥ मन एव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः ॥ ४ ॥ चितलाइकै ॥ कर नहीं तौ भक्ति डिगिजाइ जैसे पाथर चढ़ावते तौ बडी बेर चढ़े चित्तविना नेक में गिरिपरे हैं ॥ ५ ॥ साधुलेत अनेक प्रकारके साधु आवे हैं ॥ जिन में न्यारी न्यारी क्रिया महादेवकीसी रीतिजानौ ॥ ६ ॥

बोल्योअकुलाइ मैंतौदियोहैबताइमोकोदेवौजुच्छुड़ाइनहींझूंठक छुभापिये । लेवौमतिनामसाधुजोउपाधिमेटउचाहौजावौउठिऔर कहूंमानिछौरिनाखिये । आइकेबिचाराकियोजानीसकुचायोहियोवो लिउठीतियासुतदैकनीकेराखिये । परेउवधूपांइतेरीलीजियेबुलाइ पुत्रशोककोमिटाइऔरखरीअभिलाषिये ॥ २१८ ॥ बोलिलियोसं तसुताकीजियेजुअंगीकारदुखसोअपारकाहूविमुखकोदीजिये । बो ल्योमुरझाइमैंतौमारच्योसुतहाइमोपैजियेहूनजाइ मेरोनामनहींली जिये । देखौंसाधुताईधरीशीशपैबुराईइनरतीहूनहोसाकियोमेरुसम रीझिये । दईबेटीब्याहिकहिमेरोउरदाहमिटेउकीजियेनिवाहजगमा हिं जौलौंजीजिये ॥ २१९ ॥ आयेगुरुघरसुनिदीजेकीनसखिड़े संतसुखदाईसाधुसेवालेबताईहै । कह्योसुतकहांअजूपायोसुतकैसी भांतिकहिकोवखानेजगमीचुलपटाईहै । प्रभुनेपरीक्षालईसोईहमैंआ ज्ञादई चलियेदिखावौजहांदेहकोजराईहै । गयोवाहीठौरशिरमौरह रिध्यानकियोजियोचल्योआयोदासकीरतिबड़ाईहै॥ २२०॥ मूल॥ चारोयुगचतुर्भुजसदाभक्तिगिरासांचीकरन दारुभईतरवारिमारुप यरचीभुवनकी । देवाहितासितकेशप्रतिज्ञाराखीजनकी । कमध्वज केकपिचारुचितापरकाष्टलाये । जैमलकेयुद्धमाहिंअश्वचढ़िआपन धाये । घृतसहितभैंसचौगुणीश्रीधरसंगशायकधरन । चारोयुगचतु र्भुजसदाभक्तिगिरासांचीकरन ॥ ५२ ॥

लेवोमति नाम साधु ॥ कुंडलिया ॥ भुस ऊपरको लीपनो अरु बा- रूकी भीति ॥ भूनकी मनो मिठाई ॥ बाजीगरको बागस्वनमें नवनिधि- पाई ॥ अजा स्तन ज्यों कंठ तुच्छ चादरकी छाया । पूरववस्तु बि- सारि पश्चिमदिशि ढूंढन धाया ॥ आन उपासक रामबिनु अगर सुऐ- सीरीति । भुस ऊपरको लीपनो अरु बारूकी भीति ॥ कर्त्तुमकर्त्तुमन्यथा कर्त्तुं समर्थः ॥ ऐसे प्रीतिमें अवगुण दीखे जैसे मजनू की सहनकफोरी जब नाच्यो ॥ १ ॥

भुवनचौहानकीटीका ॥ सुनोकलिकालबात औरहैपुराणख्यात भुवनचौहानजहाँरानाकीदुहाईहै । पट्टायुगलाखखातसेवाअभिलाष माधुचल्योई शिकारनृपभीरेसँगधाईहै । मृगीपाछेपरेकरेटूकहति ज्ञाभवनजे आइगईदयाकहीकाहेकोलगाई है । कहैमोकोभक्तक्रि याकरैंसैंअभक्तनिकी दारुतरवारिधरौयहैवनभाईहै ॥ २२१ ॥

सुनों कलिकालहै तीन युगनमें तौ पुराणन में विख्यातहैं सतयुगमें तौ ध्रुव त्रेतामें प्रह्लाद हैं दूसरो दास राजा रामाश्वमेधमें कथा है द्वापरमें भीष्मपितामह अरु द्रौपदी तीन युगन में हरि प्रकट दर्शन देते कलियुगमें तौ जीव लगोहहैं याते कलियुगके जीव अधिकारी नहीं शून्य हैं सो नहीं और युगनमें बरदेके छुटि जाते दश दश हजार वर्ष तप करिकै स्त्री धनमाल मांगते सोहै छुटिते और ये कलियुग के जीव तनकहू दर्शन देहिंतौ चिपटि जाहिं क्योंकि गोपिनने द्वापरमें कृष्ण देखिकै घरछोडेहैं कलिके जीव कागज देखिके घर छोडिदेहैं फिरि घरको मुख न देखैंगे पीतौ घरहूको आई॥ १॥ कवित्त ॥ रसिकप्रवीणनिकी कविताई नाना भांति गाई रसस्वादही सों होति सफलाई है । यहै जानि मोहनजू भोग भोगता बनाये आये चलेधु-रिही सो सबनिजनाई है । त्रियुग प्रकट रूप देखे नितनैनन सों बैनमें स्वरूप लखिहोति अधिकाई है। कल कलिकालके लगोहैं येरसाल जीव छोडि हैं नक्योंहू हरि मूरति छिपाईहै ॥ २ ॥ ये वाणीमें साक्षात् मूरतिही देखै है अधिकाई लो येईहै याते प्रगट दर्शन नहीं देहैंहरि ॥ ३ ॥ कृपा॥ श्लोक ॥ वैष्णवानां त्रिकर्माणि दया जीवेषु नारद ॥ श्रीगोविन्देपराभक्ति-स्तदीयानां समर्चनम् ॥ ४ ॥

औरएकभाईतानेदेखीतरवारिदारुसक्योनसँभारिजाइरानाकोज-नाईहै । नृपनप्रतीतकरैकरैयहसौंहनानाबानोप्रभुदेखितेजबातनच-लाईहै । ऐसेहीवरषएककहतव्यतीतभयोकहैमोहिंमारिडारोजोपेमैं बनाईहै करीगोटकुंडजाइपाइकैप्रसादबैठे प्रथमनिकासिआपसबन दिखाईहै ॥ २२२ ॥ क्रमसोंनिहारिकहीभुवनविचारिकहाकह्योचा-

हैदारुमुखनिकसतसारहै। काढ़िकेदिखाइमानोंवीजुरीचमचमाइआ ईमनमांझवोलेउवाकोमारौभारहै । भक्तकरजोरिकैवचायोअजु मारियेक्योंकहीवातझूंठनहींकरीकरतारहै। पटादूनादूनपावैआवौ मतिमुजराकोमैंहीवरआऊं होइमेरोनिस्तारहै ॥ २२३ ॥

मारिडारिये॥ एतेसत्पुरुपाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्यये।सामा- न्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये ॥ तेऽमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये ये निघ्नंतिनिरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे ॥ २ ॥ कवित्त॥ तजि स्वारथऔ परमारथको चित्तदैके सुधारत देवतजे। स्वारथहू परमारथहू चित्तदैके सँभारत मानुष ते। परमारथ को तजि स्वारथ चित्त- दैके सुधारत राक्षस जे। स्वारथहू परमारथहू चित्तदैके जे विगारत जानो नते ॥ ३ ॥ अरिल्ल॥ भई तला यागौ ठजुरेजाहि चक्कवे। परचौनीजै आ- जु खाइद्दै लप्यवे। परमेश्वर पतिराखी बात नहिं कहनकी। विजुली ज्यों तरवारी चमकी भुवनकी ॥ ४ ॥

रूपचतुर्भुजकेपंडाकीटीका ॥ दरशनआयोरानारूपचतुर्भुजजूकेर हेप्रभुपौढ़िहारशीशलपटायेहैं। वेगिदेउतारिकरिलैकेगरेडारिदियो देखिवारकहेउधौरोधौरयेआये हैं । कहततोकाहिगईसहीनहींजाति अव महीपतिडारिमारहरिपदध्यायेहैं । अहोऋपीकेशकरौमेरेलिये सेतकेशलेशहूनभक्तिकहीकियेदेखौछायेहैं॥ २२४ ॥ मानिराजा त्रासदुखराशिसिंधुवूड़ौहूतौसुनिकैमिठासवाणीमानोंफेरिजियोहै ॥ देखिश्वेतवारजानीकृपामोअपारकरी भरीआंखिनीरसेवालेशमैंनकि योहै । वड़ेईदयालसदाभक्तप्रतिपालकरैमैंतौहौंअभक्तऐयेहियोसकु चायो है । झूंठेसम्वंधहूतेनामलीजैमेरोहीजूतातेसुखसाजैयहदरशा इदियो है ॥ २२५ ॥ आयोमोररानासेजवारसोंनिहारिरहे केश काहूऔरकेलैपंडानेलगायेहैं । ऐंचिलियोएकतामेंखैंचिकेचढ़ाईना करुधिरकीधारानृपअंगाछिरकायेहैं । गिरयोभूमिमुर्छाह्वैकैतनकीन

सुधिकछूजाग्योयामवीतेअपराधकोटिगाये हैं । यहअबदंडराजवैठे सोनआवैइहांअबयोंहूंआनमानिकरै जेसिखाये हैं ॥ २२६ ॥

हरयदध्याइये ॥ कुंडलिया ॥ खटिया टूटे भ्यो सरन भुजा भगन भये-ग्रीव । भुजा भगन भये ग्रीव दंड यमराज धरैगो । तहां धराहर और रामविन कौन करैगो । मात तात सुत सुता प्रिय परिजन कहिचारो । सब सों पर्‌यो बिछोह सुदिन हरिनाम संभारो । अगर आसरो और तजि राम-नाम दृढ़सींव । खटिया टूटेभ्योसरन भुजा भगन भयो ग्रीव ॥ १ ॥ अहो ऋषीकेश ॥ गीतायां ॥ यंत्रस्य गुणदोषत्वं क्षमत्वं पुरुषोत्तम ॥ अहं यंत्रं भवान् यंत्री नमे दोषो नमे गुणः ॥ २ ॥ झूंठे सम्बंध ॥ दोहा ॥ परसा झूंठे भक्तको, हरि राखत सनमान ॥ जैसे प्रोहित कुपढ़को, देतदान यजमान ॥ ३ ॥ खरौखरौ सब लेतहै, परखि पारखी सार ॥ खोटेदास अनन्यके, गाहक नंदकुमार ॥ ४ ॥ मन बुद्धि चित्त अहंकार सो इनके प्रेरक नंदकुमार ॥ ५ ॥

भयेचारिभाईकरैंचाकरीवेरानाजूकी तामेंएकभक्तिकरैवनमेंवसेरोहै । आइकैप्रसादखावैफेरिउठिजाइतहांकहैनेकुचलौतौमहीनाली जैतेरोहै । जाकेहमचाकरहैंरहतहजूरसदामरैतौजरावैकौनवही जाकोचेरोहै । छूटेउतनवनरामआज्ञाहनुमानआयेकियो दागधूवां लागिप्रेतपारनेरोहै ॥ २२७ ॥

एकभक्ति ॥ श्लोक ॥ तुल्यं भूभृति जन्म तुल्यमुभयोस्तुल्यं च मूल्यं वपुरतुल्यं दार्ढ्यमुदग्रटंकखननं तुल्यं च पाषाणयोः ॥ एकस्याखिल वंदनाय विधिना देवत्वमारोपितम् ॥ तद्द्वारे विहिता परस्परपदाघाता-स्पदं देहली ॥ १ ॥ दोहा ॥ ज्ञाति गोत सब परिहरे, प्रभु सेवाकी आस ॥ रंक हरिहिको ह्वैरहै, सो कहिये निजदास ॥ २ ॥ जाके हम चाकर हैं ॥ सवैया ॥ जिनके चिरदै पतितैं अति पावनहै वचनै इमि छंदनिके । सुबड़ेइ कृपालु वड़ेइ दयालु बड़े गुणदुःख निकंदनि के । कवि सूरतिजे शरणागत पालहैं दायक सुख आनंदनिके । कृपालवडे करुणाकरहैं हम

चाकरहैं रघुनंदनके ॥ २ ॥ नरनकी करै सेव बड़े अहमद भेव पाछे काम क्रोध लोभ मोह अधिकात है। तासों जीव हिंसा झूंठ निंदा आदि कर्म ह्वै हैं ताहीके कुसंग नर दुःख दरशातहै। मेरेजान बीज सब दोसनि को चाकरीहै सोई ताहि भावै मद अंध उतपातहै। पूजा परमेश्वरकी परिहरै पुण्य पाप जैसे पौन परसेते पात उड़िजातहै ॥ ३ ॥ नेक सुजरा करिआव ॥ गीतायां ॥ मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु॥ मामेवैष्यसि सत्यंते प्रतिजाने प्रियोसि मे ॥ ४ ॥

सवैया ॥ होहुनिचिंतकरैमतिचिंततू चोंचेंदईसोईचिंतकरैगो । पाइपसारिपरेउरहिसोइतूपेटदियोसोइपेटभरैगो । जीवजितेजलके थलकेपुनिपाहनमेंपहुंचाइधरैगो । भूखहिभूखपुकारतुहैनरतूकहां सुन्दरभूखमरैगो ॥ ३ ॥ कुण्डलिया ॥ यहतौगलौगुपालवनायो सोखालीक्योंरहिसी । सोखालीक्योंरहिसीसंतौगलौगुपालवनायो। पांचमहीनापीछिजनम्यो दूधअगाऊआयो। निरधनकेवरचाकीहोती अन्नकहूंनहिंदीसै। ताहूकोहरिविमुखनराखै आनिपरोसिनिपीसै। कृष्णायहवरजातवतायो धृकमनमाहींवेसी । यहतौगलौगुपालवनायो सोखालीक्योंरहिसी ॥ ४ ॥ ॥ पद ॥ नारदजीमेरेसाधतेअन्तरनाहीं । जोमेरेसाधतेअंतरराखेतेउनरकमेंजाहीं । जहँजनजैहैतहँ मैंजैवोजहँसोवेतहँसोऊं । जोकवहूंमेरोभक्तदुखपावै कोटियतन करिखोऊं ॥

सवैया—पाइँदिये चलिये फिरिवेको हाथ दिये हरि कर्म कमायो ॥ कान दिये सुनिये हरिको यश नैन दिये हरि दरश दिखायो। नासिका दीनी हुतीरस सुंघन जीभदई हरिको यश गायो। ये सब साज दिये अतिसुंदर पेटदियो किधौं पाप लगायो ॥ पांडवगीतायाम् ॥ भोजने छादने चिंतां वृथाकुर्वंति वैष्णवाः ॥ योसौ विश्वम्भरो देवः कथं भक्तानुपेक्षते ॥ १ ॥ हाथ हलाये विनतौ पंखाहू न पवन देहै हाथतौ हलायोई चाहि-

ये यतन ॥ करि खाऊं ॥ लक्ष्मीमेरी अर्द्ध शरीरी हरिदासनकी दासी । सब तीरथ दासनिके चरणन कोटि गंग अरु कासी । जहँ जहँ मेरो हरि-यश गावै तैंहीं कियो मैं बासा । आगे साधु पाछे उठि धाऊं मोहिं भक्त-की आसा । मन बच क्रम करि हिरदै राखे सोइ परमपद पावै । कहत कबीर साधुकी महिमा हरि अपने मुख गावै ॥ ५ ॥ हरि अरु हरिजन एक समाना । खोजिलेहु सब वेद पुराना ॥ याते सबही संसार रूपी माया से छुटावे अरु हरिकी भक्तिको बढावे हरिमारगु लगावे ॥

मेरतौप्रथमवासजैमलनृपतिताकोसेवाअनुरागनेकुखटकौनभाव ई । करैंघरीदशतामेंकोऊजोखबरिदेतलेतनाहिंकानऔरठौरमरवा वई । हुतोएकभाईवैरीभेदयहपाइलियोकियोआनिघेरोमाताजाइके सुनावही । करैंहरिभलीप्रभुघोराअसवारभये मारीफौजसबैकहैलो गसचुपावही ॥ २२८ ॥ देखैंहाफेघोराअहोकौनअसवारभयोआगे जबेदेखौ कहीवहीवैरीपरच्योहै । बोल्योसुखपाइअजूसांवरोसिपाई कोहो अकेलेहीफौजमारीमेरोमनहरच्योहै । तोहीकोदिखाइदईमेरेत रफतनैन बैननिसोंजानीवहीश्यामप्रभूटरच्योहै । पूछिकेपढ़ाइदियो वानेपनयहालियोकियोइनदुःखकैरैभलीबुरोकियोहै ॥ २२९ ॥

खटको न भावई ॥ गीतायाम् ॥ चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बल-वद्दृढम् ॥ तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥ कवित्त ॥ छिन में प्रवीन छिन मायामें मलीन पुनि छिनमेंहीं दीन छिनमांहि जैसो शक्रहै । लिये दौरि धूप छिन छिनकमें अनंतरूप कोलाहलठाने मथानकैसो तक्र है । नटकोसो थार किधौं हारहै रहटकोसो धाराकोसो भँवरकै कुम्हार कोसों चक्रहै । ऐसो मन भ्रामकसो अब कैसे थिरहोत आदिहीको चंचल अनादिहीको वक्रहै ॥ श्लोक ॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्रपार्थो धनुर्द्धरः ॥ तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ ३ ॥ पूछिके पठाइ दियो कवित्त ॥ काहेको कपूर चूरि चंदनमें सानतहौ काहेको गुलाबनिको कीजत पतनु है।कहैं ऊधो राम राग औरै लग औरै ठठे दौरे कहाहोत यहां

जारत अतनुहै। वेई तरुणी बरुणी वेई सुई लालडोरे उनहींके टांके होत दुखको हतनुहै। छांडि देव पापनिको दूरिकै चवाइनिको आंखिनके घाइ-निको आंखेही यतनुहै ॥ ४ ॥

भयोएकग्वाल साधुसेवासोरसालकरै परैजोईहाथलैकैसंतनख वावही । पायोपकवानवनमध्यगयोखवाइवेकोआइवेकीढीलचोर भैंसिसोचुरावही । जानिकैछिपाईबातमातासोंवनाइकही दईविप्रभू खेघृतसंगफिरिआवही । दिनहोदिवारीकोसो उनपहरायोहांस आ ईवरजामलियेरांभिकैसुनावही ॥ २३० ॥ भागवतटीकाकारिश्री धरसुजानिलेहु गृहमेंरहतकरैंजगतब्योहारहै । चलेजातमगठगामि लैकहेकौनसंगसंगरघुनाथमेरोजीवनअधारहै । जानिइनकोईनाहिं मारिवोउपावकरैं धरेचापबाणआवैवहीसुकुवारहै । आयेघरलायेपू छैश्यामसोंस्वरूपकहां जानिवेतौपारकियेआपडारचोभारहै२३१॥ मूल ॥ भक्तनसंगभगवाननितज्योंगऊवच्छगोहनाफिरै ॥ निष्किंच नइकदासतासकेहरिजनआये । विदितवटोहीरूपभये हरिआपलुटा ये । साखिदेनकोश्यामखुरइहांप्रभुहिपधारे । रामदासकेसदनराइरन छोरसिधारे । आयुधछाततनअनुगके बलिबंधनअपुवपुधरे । भक्तनसंगभगवाननितज्योंगऊवच्छगोहनाफिरै ॥ ८४ ॥

आईघर ॥ दोहा ॥ छल करि बलकरि बुद्धि करि, साधनके मुख दोहिं ॥ हुंडीकेसे दामको, हरिजू सों गनिलेहिं ॥ १ ॥ धरे चाप बाण ॥ कोटि विघन शिरपररहे, कोटि दुष्टकोसाथ ॥ तुलसी कछू न करिसकैं जो सहाइ रघुनाथ ॥ २ ॥ गोहन फिरै ॥ ब्रह्मवैवर्त्ते ॥ भक्तसंगेभ्रम-त्येव छायेव सततं हरिः ॥ चक्रेण रक्षते भक्तान् भक्त्या भक्तजनप्रियः ॥ ३ ॥ कृष्णकृष्णेति कृष्णेति संप्रयाति भवेनरः ॥ पश्चान्मद्भ्रमनं पार्थ सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ४ ॥

टीका ॥ भक्तनकेसंगभगवानऐसेफिरचोकरैंजैसेवच्छसंगगायफिरैने हुवतीगाईहै । हरिपालनामाविप्रधाममेंजनमलियोकियोअनुरागसा

धुदईश्रीलुटाईहै । केतिकहजारलेवजारकेकरजआये गरजनसरै कियोचोरीकोउपाईहै । विमुखकोलेतहरिदासकोनदेतदुखआयेघर संततियासंगवतराईहै ॥ २३२ ॥ बैठेकृष्णरुक्मिणीमहलतहांशोच परचोहरयोमनसाधुसेवासाहरूपकियोहै । पूछिचलेकहाकहीभक्त हैहमारोएक मैंहूआऊंआवोआयेजहांपूछिलियोहै । अजूमगचल्यो जातवड़ोउतपातमध्यकोऊपहुंचाइदेवोलैरुपइयादियोहै । करौस माधानसंतमैंलिवाइजाउइन्हैंजाइवनमांझदेखिवहुधनजियोहै॥ २३३ देखिजोनिहारिमालातिलकनसदाचारहोंहिंगेभंडारधनजोपैइतोला यो है । लीजियेछिनाइयेहीवारकहेडारिदेवोदियोसवडारिछलाछि गुनीमेंछायोहै । अंगुरीमरोरिकहीवड़ोतूकठोरअहोतोको कैसेछाड़ौ सतजैवेमोकोभायोहै । प्रकटदिखायोरूपसुन्दरअनूपवह मेरोभक्त भूपलैकैछातीसोंलगायोहै ॥ २३४ ॥

चोरी को उपाय ॥ श्लोक ॥ वैष्णवो बंधुसत्कृत्य ॥ विजयरथ कुटुंबबैठे कृष्ण रुक्मिणी महल ॥ वर्जयित्वा महाराज श्रीमद्भगवदा यम् ॥ १ ॥ हर्‍यौ मनसाधु सेवा ॥ साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृद त्वहम् । मदन्यं ते न जानन्ति नाहन्तेभ्यो मनागपि ॥ २ ॥ को पहुंचावै विमुख को लेत वनिया ह्वैकै चोरी करी वह वैष्णव निकस्यौ पिछौरी लेकै भज्यौ द्वै रुपइया मेरे सारेको विवाहहै आजु पहुंचाना देखै जो निहारि जानीके सरावगी वनिया है ॥ ३ ॥

गौड़देशवासीउभयविप्रताकीकथासुनोंएकवैश्यवृद्धजातिवृद्ध छोटोसंगहै । औरऔरठौरफिरिआयेफिरिआयेवनतनभयोदुखीकी नीटहलअभंगहै । रीझेउवड़ोद्विजानिजसुतातोकोदंईअहोरहोनहीं चाहौंमेरलईविनयरंगहै । साखीदैगुपालअववातप्रतिपालकरो ठरोकुलग्रामभामपूंछौसोप्रसंगहै ॥ २३५ ॥ बोल्योछोटोविप्र क्षिप्रदीजियेकहीजोवाततियासुतकहैंअहोसुतायाकेयोगहै । द्विजक हैंनाहींकैसेकरौंमैंतौदेनकहीकहीकहाभूलिगयोविथाको प्रयोगहै।भई

सभाभारीपूंछेसाखीनरनारीश्रीगुपालवनवारीऔरकौनतुच्छलोगहै। लावोंजूलिवाइजोपैसाखीभरैआइतौपैव्याहिबेटीदीजैलीजैकरोसुख भोगहै ॥ २३६ ॥

फिरि आये वन ॥ पद ॥ ब्रजभूमि मोहनी मैं जानी। मोहन कुंज मोहन वृन्दावन मोहन यमुनापानी ॥ मोहननारि सकल गोकुलकी बोलत अमृतबानी ॥ जैश्रीभटके प्रभुमोहन नागर मोहन राधारानी ॥ १ ॥ श्रमू ॥ वृन्दावनरजो वन्दे यत्रासन्कोटिवैष्णवाः ॥ २ ॥ कवित्त ॥ कालिंदी के तीर द्रुमडार झुकिनीरआई त्रिविधि समीर वहै वहै मतिमनकी। कुंजकुंजकुंजनमें बोलत मधुप माते आवत सरसगन्धमाधुरी सुमनकी । राधेकृष्ण नाम धुनि छाइरही जहां तहां कही न परत शोभा पुलिन अवनिकी ॥ देखि देखि रहे फुलि सुधिबुधि भूलिझूलि ठौर ठौर राखे वृन्दावन वृन्दावनकी॥ ३॥ वन्दौंश्रीवृन्दावन धाम । ब्रह्मादिक दुर्लभ तिनहींको देत तुच्छ जीवन विश्राम। उद्धवसे हरि प्रीतम चाहत गुल्मजन्म लाग्यो अभिराम। वलिवलिजाई कृपा निधि मोको लाड़लड़ावत आठोयाम। यही रीति रानी श्रीराधा नहीं विचार रूप गुणधाम । पाइनिलाल भालवेंदी दई भोडरापिय लखिरीझतश्याम ॥ १ ॥ श्लोक ॥ वाराणस्यां विशालाक्षि विमला पुरुपोत्तमे ॥ रुक्मिणी द्वारकायां तु राधा वृंदावने वने ॥ २ ॥ छप्पय ॥ सघनकुंज अलिगुंज पवन तहँ त्रिविधि सुहाई। रतन जटित अवनी अनूप यमुना बहि आई ॥ छऋतुकोक संगीत रागरागिनि सखिरतिपति । सव सुखराज समाज सहज सेवत अतिनित प्रति ॥ शृंगारहास्यरसप्रेम हैं काल कर्म गुन कछु न डर। दंपति विहार गोविंद सरस जैजै वृंदाविपिनवर ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ ब्रह्माके कमंडलुते गिरिजा प्रचंडनते शिवजटा मंडनते धारायों वहतिहै। तीनों लोक पावनको आपदा नशावनको जाके गुणगावनको वाणी यों चहतिहै। कहै कविराइ सुर असुरहु पूजें जाहि सुरधुनी कहै दुख पाप नरहतहै। यमुनाजीकी महिमा याते न कही परै गंगापगपानी ताकी

पटरानी कहत है॥ ४ ॥ कवित्त ॥ रसिबो बसिबो वृन्दावन को हँसिबो मिलि संतनमें रहिये । पढ़िबो गुनिबो नित राम सदा सुख सों लहि जो जितनौ चहिये । योगी सुयती हियध्यान धरैं जगजीवनि भाग बड़ो चहिये । भ्रमणा मिटि जाइ सबै जियकी यमुना यमुना यमुना कहिये ॥ ॥ २ ॥ यमुना सुभगतीर कुंजसुख पुंजभीर मोर पिक कीर धुनि भांति भान्ति हेरीहै । फूलीद्रुम डारैं गुंजमधुप विहारैं प्यारी प्रीतम निहारैं आंखैं चहुंदिशि हेरी है ॥ पुलिन प्रकाश रास विविध बिलास जहां बढत हुलासबात बीते होति मेरी है । कैसो यहधाम अभिराम बृन्दावन नाम ऐसी छवि हेरीपरी रोमरोम बेरी है ॥ ६ ॥ दोहा ॥ उपमा बृन्दा बिपिनकी कहिधौं दीजे काहि ॥ कोटिकोटि बैकुंठहू, तिहि सम कहे न जाहि ॥ ७ ॥

आयोबृन्दाबनबनबासीश्रीगुपालजूसोंबोल्योचलौसाखीदेवलईहै लिखाइकै । बीतेकैंऊयामश्यामसुंदरजूप्रतिमानचलैतौपैबोल्योक्यों जुभाइकै । लागेजबसंगयुगसेरभोगधरेउरंगआधेआधपावैंचलेउनूपु रवजाइकै । धुनितेरेकानपरैपाछेजनिडीठि करैकरैरहोवाहीठौरक हीमैंसुनायकै । गयेढिगग्रामकही नेकुतौचिंताउरहैचितयतेठाढ़ेदि योमृदुमुसुकाइकै । लावौजाबुलाइकहीआइदेखौआयेआयसुनतही चौंकिसबग्रामआयोधाइकै । बोलिकैसुनाईसाखिपूजीहिये अभिला षलाषलाषभांतिरंगभरेउरभाइकै । आयोनसरूपफेरिबिनयकारि राख्योवेरिभूपसुखढेरदियेअबलौंबजाइकै ॥ २३७ ॥

सुखढेरदियो ॥ कवित्त ॥ लागी जब आश तब उतर्‍यो आकाश हूंते सिंधुजलजंत्र रसचीह्नो पानकीन्होहै । देख्यो हितसार वाको उदर बिदारि कढ्यो चढ्यो मोलभारी वाससंपुटनिलीनोहै । चाहत किशोर भ्रम्यो दशदिशिओर लग्यो व्रजचितचोर जियवारि फेरिदीनोहै । उरके सुलाक मोती नासिका बुलाकभयो बड़ोई चलाक मोहिं लाकमन कीनोहै ॥ १ ॥ बदन सुराही में छबीलो कबिछातौमद अधर पियाला

क्षणक्षणमें गहतुहै। अलसाइके पोटत कपोल पर्य्यंकपर कवहूं गजक जांनि भपन चहतुहै। प्रेमनगसाथी ये तौ सदाई अशंकभारि छकोई रहत कोऊ कछु न कहतुहै। झुकि परै बातके कहेते अनखात न्यारो बेसरिको मोती मतवारोई रहतुहै॥ २ ॥ दृष्टांत सिद्धको चौबेने तमाचोदियो ॥ ३

रामदासकीटीका ॥ द्वारकाकेढिगहीडांकोरएकगांवरहैरहैराम दासभक्तभक्तिजाकोप्प्यारिये । जागरणएकादशीकरैरणछोरजूके भयो तनवृद्धआज्ञादईनहींधारिये । बोलेभरमाइतेरोआइबोसह्योन जाइ चलोंघरधाइ तेरेलावौगाड़ीभारिये । खिरकीजुमंदिरकेपाछेत हांठाढ़ीकरौभरोअकवारमोकोवेगिहीपधारिये ॥ २३८ ॥ करीवा हीभांतिआयोजागरणगाड़ीचाढ़ि जानीसवबृद्धभयोथकीपांवगतिहै। द्वादशीकीआधीरातलैकैचलेउमोदगात भूषणउतारिधरेजाके सांची रतिहै । मंदिरउघारिदेपरिखैहैउजारितहांदेरैपाछेजानिदेखिकहीको नमातिहै। वायीपधराइहांकिजानिसुखपाइरहौगहौचलौजाति आनि मारेउवावआतिहै ॥ २३९ ॥ देखेचहुंदिशिगाड़ीकहूंपैनपायेहारिप छितावौकारिकहैभक्तिकेलगाईहै । बोलिउठेउएकयहओरयहगयोह तोदेखेजाइवावरीकोलोहूलपटाईहै । दासकोजुडारीचोटओटिलई अंगमेंहीनहीमेंतौजाहुविजयमूरातिवताईहै । मेरीसरसोनौलेहुकही जनतोलिदेहु मेरेकहावोलेउवारीतियाकेजताईहै ॥ २४० ॥ लगे जवतोलिवेकोवारीपाछेडारिदईनईगतिभईपलाउठेनहींवारीको । त वतौखिसानेभयेसवेउठिघरगयेकैसेसुखपावैंफिरौमतिहीसुरारीको । घरविराजैंआपकहेउभक्तिकोप्रतापजाइकरैजोपैफुरै रूपलालप्यारी को। वलवंधनामप्रभुवांधेवालिभयोतव आयुधकोक्षतसुनिआयेचो टमारीको॥ २४१ ॥

द्वारकासे दोसौ कोस काहू मंडलमें डांकोर गांव है खिरकीकी गेलव- ताई जैसे रुक्मिणी श्रीकृष्णने हरीही भगवान् अपने गुण अपने भक्त- नको सिखावैं सांचीरीति तापै दृष्टांत एकडोकरी ठाकुरकी सेवा महंतको

देतिही सो उनकही दर्शन करि लेंहिगे अंगमेंही ओटिलई तुम अपराधी भक्तमारेउ मरैंगे महाप्रलय करौ हत्यानहीं मेरी सर सोनों अब अपनो नहीं बलबंधन नाम इहां घावप्रति छवौना है रहे यात्रकारको नमतिहै महबूवा देश हर बिचिकोईआनि तमासा जो वैदीनक ॥

मूल ॥ बच्छहरणपीछेबिदितसुनोंसंतअचरजभयो । जसूस्वामिकेवृषभचोरिब्रजबासीलाये । तैसेइदियेश्यामबरषादिनखेतजुताये। नाभाज्योंनन्ददासमुईइकबच्छजिवाई । अम्बअलहकौनयेप्रसिद्धजगगाथागाई । बारमुखीकेमुकुटकोश्रीरंगनाथकोशिरनयो । बच्छहरणपीछेबिदितसुनोंसंतअचरजभयो ॥ ८४ ॥ जसूस्वामीकीटीका॥ जसूनामस्वामीगंगायमुनाकेमध्यरहैंसाधुसेवाताकोखेतीउपजावहीं। चोरीगयेबैलताकीइनकोनसुधिकछूतैसेश्यामहलजुतेमनभावहीं । आयेब्रजवासीपैठवृषभनिहारिकहीइहैंकौनलायोघरजाइदेखिआवहीं ऐसेबारदोइचारिफिरेउनठीकहोत पूछीपुनिल्यायेआयेइन्हें पैनपावहीं॥ २४२ ॥ बड़ोईप्रभावदेख्योतैसेप्रभुबैलदिये भयोहियेभावआइपाइनमेंपरेहैं । निपटअधीनदीनभाषिअभिलाषजानिदयाकेनिधानस्वामीशिष्यलैकेकरे हैं । चोरीत्यागिदईअतिसुधिबुधिभई नईरीतिगहिलईसाधुपंथअनुसरे हैं । अन्नपहुंचावैदूधदहीदैलड़ावैआवैसंतगुणगावै वेअनंतसुखभरे हैं ॥ २४३ ॥

साधुसेवैरागी हैं हरीको सांचो सनेहतो तबहीं जानिये जब हरिकेप्यारेन में सनेह होई ॥ १ ॥ संतसे बाहिरि प्रसन्न मजनूको तो सलाम करी लैलैकी गली में देखो करे द्विज दोष साधुसेवा के प्रतापसों बडो वैभव भयो ताहि देखिके ॥ २ ॥ श्लोक ॥ काककुक्कुटकायस्थाः स्वजातिपरिपोषकाः ॥ स्वजातिपरिहंतारः श्वानसिंहगजद्विजाः ॥ ३ ॥ तापैदृष्टांत राजा मरुतको अरुउतथ्यको ॥

नन्ददासकीटीका ॥ निकटबरेलीगांवतामेंसोहबेलीरहैनन्ददासविप्रभक्तसाधुसेवारागीहै । करैंद्विजदोषतासोंमुईएकबाछियाले डारि

दईखेतमांझगारीजकलागीहै । हत्याकोप्रसंगकरैसंतजनहूंसोंलरैहि न्दूसोंनमारैयहवड़ोईअभागीहै । खेतपरजायवाहिलईहैजिवाइदेखि परेदोपीपांइभक्तिभावमतिपागीहै ॥ २४४ ॥ अल्हकीटीका ॥ चले जातअल्हमगलगेवागदीठिपरचो करिअनुरागहरिसेवाविस्तारियै। पकिरहेआंवमांगैमालीपासभोगलियेकहोलीजैकहीझुकिआईसवडा रिये। चल्योदौरिराजाजहांजाइकेसुनाईबातगातभईप्रीतिअलुटतपां वधारिये । आवतहीलौटिगयोमैंतोजूसनाथभयो दयोलैप्रसादभक्ति भावईसँभारिये ॥ २४५ ॥ वारमुखीकीटीका ॥ वेश्याकोप्रसंगसु नोंअतिरसरंगभरचो भरचोधरधनअहोऐयेकौनकामको । चलेमग याचनकोठौरस्वच्छआईमनछाई भूमिआसनसोंलोभनहींदामको । निकसीझमकिद्वारहंससेनिहारिसवकौनभागजागेभेदनहींमेरेनामको मोहरनिपात्रभरिलैमहंतआगेधरचो ढरचोजलनैनकहीभोगकरो श्यामको ॥ २४६ ॥ पूछीतुमकौनकाकेभौनमेंजनमलियोकियोसु निमौनमहाचिंताजियधरीहै । खोलिकैनिशंककहोशंकाजिनिआनो मन कहीवारमुखीऐयेपाइआइपरीहै । भरचोहैभंडारधनकरोअंगी कारअजूकरियेविचारजोपैतोपैयहैएकहै । उपाइहाथरंगनाथजूकेअ होकीजियेमुकुटजामजातिमातिहरी है ॥ २४७ ॥

कौनकामको ॥ धर्मशास्त्रे ॥ दशश्वानसमश्चक्री दशचक्रिसमोध्वजः ॥ दशध्वजसमा वेश्या दशवेश्यासमो नृपः ॥ १ ॥ काकझुण्ड पैनबैठे हंस सतद्रव्य ऐसे कोन भाग ॥ नारदपंचरात्रे ॥ यास्यायमस्थानां हु गवामभयाय यत्नत् ॥ सर्वं भवतिगांगेय को न सेवेतवुद्धिमान् ॥ २ ॥ छप्पय ॥ ज्ञानवंत हठकरैं निवल परिवार बढावैं । विधवाकरैं शृंगार धनी सेवाको धावैं ॥ निर्धन समझैं धर्म नारि भरता नहिं मानैं ॥ पंडित किरिया हीन राज दुर्लभ करिजानैं ॥ कुलवंत पुरुष कुलविधि तजैं वंधु न मानत वंधु हित । संन्यास धारिधन संग्रहैं सुये जगमें मूरुख विदित ॥ ३ ॥ भेदनहीं नामको ॥ श्लोक ॥ नह्यंमयानि तीर्थानि न देवा

मृच्छिलामयाः ॥ जोपैद्वहम रीहै ॥ दोहा ॥ सब सुखपावै जासुते, सो हरिजूको दास। दुख पावै कोउ जासु ते, सो न दासरे दास ॥ रंगनाथ को मुकुट ॥ तेजीयसां न दोषाय वह्नेस्सर्वभुजो यथा ॥ ४ ॥

विप्रहूनछुवैजाकोरंगनाथकैसेलेतदेतहमहाथतोकोरहैइहांकीजिये । कियोईबनाईसबघरकोलगाईधनबानिठनिचलीथारमध्यधरिदीजिये । सन्तआज्ञापाइकेनिशंकगईमन्दिरमेंफिरीयोंसशंकधृगतियाधर्मभीजिये । बोलेंआइयाकोलाइआइपहराइजाइ दियोपहराइनयोशीशमतिभीजिये ॥ २४८ ॥ मूल ॥ औरयुगनतेकमलनयनकलियुगवहुतकृपाकरी । बीचादियेरघुनाथभक्तसंगठागेयालागे। निर्जन बनमेंजाइदुष्टक्रमकियेअभागे ॥ बीचादियेसोकहांरामकहिनारिपुकारी। आयेशारंगपाणिशोकसागरतेतारी । दुष्टकियेनिर्जीवसबदास प्राणसंज्ञाधरी । औरयुगनतेकमलनयनकलियुगवहुतकृपाकरी ॥ ॥८९॥टीका॥विप्रहरिभक्तकरिगौनोचलयोतियासंग जाकेदूनोरंगजाकीबातलैजनाइये। मगठगमिलेद्विजपूछेअहोकहांजातजहांतुमजातयामेंमननपत्याइये । पंथकोछुटायोचाहैबनमोंलिवाइजाइकहैअतिसूधोपैड़ोउरमेंनआइये। बोलेबीचरामतऊहियेनेकुधकधकी कहीउहीभामश्यामनामकहांपाइये ॥ २४९ ॥

बिप्रहू न छुवै राजाने ऋषिन्यौते सो छोडि गये वनमें कुत्ता को खायो यों सबको खवायो लिंग गाजर सोय वार अंडकोश प्याजनख लहसन हाडमूरी मूड तरबूजसो ऐसो मेरो धान्य निषिद्धहै ॥ १ ॥ नेकुधकधकी ॥ कुंडलिया ॥ बैरी बंधुवा बावरो, ज्वारी चोरलबार। व्याभिचारी रोगी ऋणी, नगर नारिको यार। नगर नारिको यार, भूलिपरतीति न कीजै । सौंहैंसौसौ खाइ चित्तमें एक न लीजै। कह गिरिधर कबिराइ न्याइमें भायो ऐसे। मुखसों हितको कहै पेटमें बैरी जैसे ॥ २ ॥ कमल नयन वहुत सूझै तीनयुग आयुर्दाबुद्धि वल धन रोग नहीं कर्म करसोइवनैं कलियुगमें कछू न बनै नाम बतायो कृपाकरि ॥ ३ ॥

चलेलागिसंगअवरंगकोकुरंगकरचो तियापररीझेभक्तिसांचीइन जानीहै। गयेवनमध्यठगलो भलगिमारचोविप्रक्षिप्रलैचलेवधूअति विलखानीहै । देखैफिरिफिरिपाछेकहैकहादेखोमारचो तवताेउचा रचोदेखोवाही विचप्रानीहै । आयेरामप्यारेसवदुष्टमारिडारेसाधुप्रा णदेउवारेहितरीतियोंवखानीहै ॥ २५० ॥ मूल ॥ एकभूपभागवत कीकथासुनतहरिकोइरति । तिलकदामधरिकोइताहिगुरुगोविंदजा ने। पटदरशनीअभावसर्वथाघटकरिमाने । भांड़भक्तकोभेषहासहि तभंडकुललाये। नरपतिकेहृढ़नेमताहिपैपाइँधुवाये । भाँड़भेषगा ढ़ोकह्योदरशपरशउपजीभगति । एकभूपभागवतकीकथासुनतहरि होइरति ॥ ५६ ॥

चलेलगि संग ॥ कवित्त ॥ विप्रसोई पढ्यो चारोवेदहूको भेद जाने स्मृति षट शास्त्रमति न्याइ सवरढ्यो है । सोई पढ्यो भारत पुराण पढ्यो पिंगलसो सवै कोश पढ्यो सोतौ काव्यकोषकढ्यो है । पढ्यो आगम सो अगम विचार वित्त सोई पढ्यो ज्योतिस सो ज्योतिरस मढ्यो है । सोई पढ्यो व्याकरण जानिलिये शब्द वर्ण सोई सब पढ्यो जोई रामनाम रढ्यो है ॥ दोहा ॥ जो है जाके आसरे, ताहीको शिरभार । करुई,हरुई तोमरी, खेइलगावे पार ॥ २ ॥ सवैया ॥ कामसे रूप प्रतापदिनेशसे सोमसे शील गणेश समाने । हरिचंदसे सांचे वडेविधिसे मघवासे महीप विषै सुख साने । शुकसे मुनिशारद सेवकता चिरजीवन लोमशसे अधिका- ने । ऐसे भये तौ कहा तुलसी जोपै राजिवलोचन रामनजाने ॥ ३ ॥ तिलक दामधरि चारि आश्रम हरिके अंगते संत शरीर । वैष्णवोममदे हस्तु तुलसीकाष्ठधारकः ॥ पूजनीयोमहीपाल वैष्णवो भक्तिवर्जितः ॥ पट्दर्शनीपट्शास्त्रवक्ता दासनहीं संतदास कहावै धनहरिको जैसे गुमास्ता दश रूपया महीना पावै ऐसे ॥ ४ ॥

टीका ॥ राजाभक्तराजडोमभांड़कोनकाजहोइभोइगईयाकेधन हरिकोनदीजिये । आयेभेपधारिलिपुजाइनाचेदैकनालनृपतिनिहा

रिकहीयोंनिहालकीजिये । भोजनकराइभरिमोहरनिथारलायेआगे धरिविनयकरीअजूयहलीजिये । भईभक्तिराशिबोलेआवैबासभावै नाहिबांहगहेरहेकैसेचलेमतिभीजिये ॥ २५१ ॥ मूल ॥ अंतरनिष्ठ नरपालइकपरमधरमनाहिंनधुजी । हरिसुमिरनहरिध्यानआनिकाहूनजनावै । अलगनइहिविधिरहैअंगनामरमनखावै । निद्रावशसो भूपवदनतेनामउचारचो । रानीपतिपररीझिबहुतबसुतापरवारचो । ऋषिराजशोचिकह्योनारिसोंआजभक्तिमेरीकुजी । अंतरनिष्ठनरपालइकपरमधरमनाहिंनधुजी ॥ ९७ ॥

राजाभक्तराज ॥ श्लोक ॥ दृढतरनिबद्धमुष्टेः कोशनिषण्णस्य सहजमलिनस्य॥कृपणस्य कृपाणस्य च केवलमाकारतो भेदः ॥ १ ॥ भई भक्तराशी॥ कवित्त ॥ जलके सनेही मीन बिछुरत तजैप्राण मणि बिन अहि जैसे जीवत न लहिये। स्वाति बूंदके सनेही प्रगट जगतमांझ एकसीपि दूजेपुनि नातकहूं कहिये। रविके सनेही बसैं कमल सरोवरमें शशिके सनेही था चकोर जैसे रहिये । तैसेही सुखद एकप्रभुसों सनेह जोरि और कछुदेखिकाहू और नाहिं बहिये ॥ १ ॥ राजानेतब बांह गहो ॥ सवैया ॥ तजे पितु मात तिया सुत भ्रात कियेजगमात पितातबऔरै । नंदकुमार भजै नहीं मूढ भजै सोइरूप ठहरात न ठौरै । लेत न सीख सिखावत औरै सुदौरत भोग दिशाकर कौरै । भांडभयो विषयी न भयो सुकछ्यो कछू और नच्यो कछू औरै ॥ २ ॥

टीकाअंतरनिष्ठराजाकी ॥ तियाहरिभक्तकहैपतिपैनभक्तपायोरहैमुरझायोमनशोचबढ्योभारीहै । मरमनजान्योनिशिसोवतपिछान्योभाव विरहप्रभावनामनिकस्योविहारीहै । सुनतहीरानीप्रेमसागरसमानीभोरसंपतिलुटाईमानोंनृपतिजियारीहै । देखिउत्साहभूपपूछोसुनिवाहिकह्योरह्योतनठौरनावजीवयोंविचारी है॥२५२॥ देखितनत्यागिपतिभईऔरगतियाकी ऐसीरतिवानमैंनभेदकछूपायोहै । भयोदुखभारीसुधिबुधिसबटारी तब नेकनविचारीभावरा

शिहियेछायोहै । निशिदिनध्यानविरहप्रवलतजेप्राणभक्तरसखान रूपकापैजातगायोहै ।जाकेयहहोइसोइजानेरसभोइयामें डारैमति खोइसन्तप्रकटदिखायोहै ॥ २५३ ॥

नाम निकस्यो विहारीहै ॥ कवित्त ॥ कुटिल अक्रूरकूर वैरी काहूजनमकोहै चेटकसोडारि शिरलैके व्रज भूरिगो । व्याकुल बिहालबाल वंशीधरलाल विन मीनज्यों तराफितन प्रेमरसै झुरिगो । चरण उचाइ चितवत ऊंचेधाम चढि चिंताके चकित भईचैनसव चूरिगो । वारवारकहत विसूरजलैनैनपूरि धूरि न उडाति आली अवरथदूरिगो ॥ १ ॥ भ्रमैंभौंर ठौर ठौर केतकी कुमुद और तनक जो लाज करै पंकजके संगकी । चंचल चलाक चित चोकरीकी भूलमति घायलज्यों घूम्योकरे लगनि कुरंगकी । और नहींस्वाद है विवाद काहू बातनिको मनमें न मनसाहै औरके प्रसंगकी । जग में सराहिये सनेहकी नवलरीति बिछुरनि मीनकी ओ मिलनि पतंगकी ॥ २ ॥

मूल ॥ गुरुगदितवचनशिष्यसत्यअतिदृढ़प्रतीतिगाढ़ोगह्यो । अनुचरआज्ञामांगिकह्योकारजकोजेहौं । आवारजइबाततोहिंआयेतैकहौं । स्वामीरह्योसमाइदासदरशनकोआयो । गुरुकीगिराविश्वासफेरिसववरमेंलायो । शिष्यपनसांचोकरनकोविभुसवसुनतसोईकह्यो । गुरुगदितवचनशिष्यसत्यअतिदृढ़ प्रतीतिगाढ़ोगह्यो ॥ ॥ ५८ ॥ टीकागुरुनिष्ठकी ॥ वड़ोगुरुनिष्टकछूघटिसाधुइष्टमाने स्वामीसंतपूजोमानेकैसेसमुझाइये । नितहीविचारैपुनिटारैयेउचारै नाहिं चल्योजवरामतिकोकहीफिरिआइये । शपथदिवाइनजराइवेकोदियोतनलायोयोंफिराइवहैवातजूजताइये । सांचोभावजानि प्राणआइसोनखानकियोकरैभक्तसेवाकरीवपलौंदिखाइये ॥ २५४ ॥

दृढ़ प्रतीति करि मानों गुरुके वचन को पर यामें गुरुको शिष्यको भलो होइ ऐसी दृढ़ प्रतीति न करै तापै घोराको दृष्टांत । वड़ोगुरुनिष्ट नारद वाक्यम् ॥ यस्य साक्षात् भगवति ज्ञानदीपप्रदे गुरौ । मर्त्यबुद्धिः

श्रुतं तस्य सर्वं कुंजरशौचवत् ॥ १ ॥ आचार्यंमाविजानीयात् ॥ करी भक्तसेवा नाभाजू कहीहै ॥ भक्त भक्ति भगवंत गुरु, गहीन भक्तामनहीं ॥ आदिपुराणे ॥ अस्माकं गुरवो भक्ता वो भक्तानां गुरुर्वयम् । अस्माकं बांधवा भक्ता भक्तानां बांधवा वयम् ॥ वैष्णवके अपराधों को गुरु अरु हरि न बचावै ॥ २ ॥ दोउनके अपराधों को साधु बचावै जैसे दुर्वासाको महादेव गुरु ब्रह्मा दादा गुरु हरि परम गुरु न बचाय सके अंबरीषने बचायो साधुही सब अपराध सों बचावैं और की सामर्थ्य नहीं सो छोड़ावै याते साधु त्रैलोक्य में बड़े हैं ॥ २ ॥

मूल ॥ संदेहग्रंथखंडननिपुणवाणीविमलरैदासकी । सदाचारश्रुतिशास्त्रवचनअविरुद्धउचारचो । नीरक्षीरविवरनपरमहंसनउरधारचो । भगवतकृपाप्रसादपरमगतिइहितनपाई । राजासिंहासनबैठिज्ञातिपरतीतिदिखाई । वर्णाश्रमअभिमानताजि पदरजवंदहिजासकी । संदेहग्रंथखंडननिपुणवाणीविमलरैदासकी ॥ ५६ ॥ टीकारैदासजूकी ॥ रामानंदजूकोशिष्यब्रह्मचारीरहैएकगहैब्रह्मचुटकीकोतासोंकहैवानिये । करौअंगीकारसीधोकहोदशवीसवारवरषैप्रबलधारातामेंवापैआनिये । भोगकोलगावैप्रभूध्याननाहिंआवैअरकैसेकारिलावैजाइपूछीनीचमानिये । दियोशापभारीबातसुनीनहमारीवाटिकुलमेंउतारीदेहसोईयाकोजानिये ॥ २५५ ॥

वाणी बिमलरैदासैकी केवल भक्तही गाई ॥ पद ॥ धन्यहरिभक्ति त्रयलोक यश पावनी । करौ सतसंग इहि बिमल यश गावनी । वेद पुराण पुराण ते भागवत भागवत ते भक्ति प्रकट कीनी । भक्तिते प्रेमते लक्षणा बिला सतसंग नहिं जाति चीनी । गंगा पापहरैं शशिताप अरु कल्पतरु दीनता दूरि खोवैं । पाप अरु ताप सब तुच्छ मति दूरि करि अमी की दृष्टि जब संत जोवैं । बिष्णुभक्त जिते चित्त पर्धरतिते मन वच करम करि बिश्वासा । संत धरणी धरी कीर्ति जग विस्तरी प्रणत जन चरण रैदास दासा ॥ १ ॥ नीरक्षीर ॥ गीतायाम् ॥ निर्मान-

मोहा जितसंगदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः ॥ द्वंद्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैर्गच्छंत्यमूढ़ाः पदमव्ययं तत् ॥ २ ॥ राजसिंहासन पै कहूं चमारहू बैठे हैं तव कही गुरुकी संतन की कृपाते बैठि जातहैं कामनहीं स्वरूप मुख्य है ॥ ३ ॥

भातदूधथावैंयाकोछुयोहूनभावसुधिआवैआवैसवपछिलीसोसेवा कोप्रतापहै । भईनभवाणीरामानंदमनजानीवड़ोदंडादियोमानिवेगि आयोचल्योआपहै । दुखीपितुमातुदेखिधाइलपटायेपांइ कीजिये उपाइकियेशिष्यगयोपापहै । स्तनपानकियोजियोलियेउन्हेंईशजा ननिपटअजामफेरिभूलेपायोतापहै ॥ २८६॥ वड़ेईरैदासहरिदासनि सोंप्रीतिवड़ीपितानसुहाइदईठौरपिछवारही । हुतोधनमालकनादि योहूनिहालतियापतिसुखजालअहोकियेजवन्यारही । गाढ़ेपगदासी काहूयतनप्रकाशीलावै खालकरैजूतीसाधुसंतकोसँभारही । डारि एकछानिकियोसेवाकोस्थानरहैंचौंड़ौअपजानिवांटिपावैयहैवारही॥

पितानसुहाई ॥ कवित्त ॥ पैसेविन वापकहै पूततौ कपूत भयो पैसे विन भाईकहै जीको दुखदाई है । पैसे विन यारकहै मेरो यह यार नाहीं पैसे विन ससुरकहै कौनको जमाई है । पैसे विन वैदकी प्रतीति नहीं पंचनमें पैसे विन आइघर रोइ रोटीखाई है । कहैं अलमस्तसजे वजेसहौ आठौ याम आजुके जमाने में पैसेकी वड़ाई है ॥ १ ॥ धर्म कर्म प्रीति रीति सजन सुहृदताई सकल भलाइनिको पुंजसो विलाइगो। अंतर मलीनह्वैके कलह प्रवेश भयो नरनकलेश निशि दिन सरसाइगो । नहीं रागरंग नहींचरचा चतुरता की नहीं सुखसेज घनआनँद नशाइगो । देखिकै निराश जिय लहतन हुलासमन देखतही देखतही ऐसोसमो आइगो ॥ २ ॥ वडेईरेदास ॥ दोहा ॥ नंदनँदनकी भक्तिविन, वडो कहावै सोइ ॥ जैसे दीपक दुझनको वड़ोकहै सबकोइ ॥ ३ ॥

सहैअतिकष्टअंगहियेसुखशीलरंगआयेहरिप्यारेलिखोभक्तिभेष धारिकै। कियोवहुमानखानपानसोंप्रसन्नह्वैकैदीनोकह्योपारसहैराखि

येसँभारिकै। मेरेधनरामकछूपाथरनसरैकामदाममेंचाहौचाहौडारौ तनवारिकै। राईएकसोनौकियोदियोकरिकृपाराखोराख्योवह छानि मांझलेहुगोनिकारिकै ॥ २५९ ॥ आयेफिरिश्यामस्मासतेरहव्यती तभयेप्रीतिकरिबोलेकहोपारसोकीरीतिको । वाहीठौरलीजैमेरोम ननपतीजैअब चाहौसोईकीजैमैंतोपावतहौंभीतिको । लैकैडाठिग येनयेकौतुकसो सुनोपावैसेवतसुहरपांचनितहीप्रतीतिको । सेवाहू करतडरलाग्योनिशिकहेउहरि छांड़ौअरआपनीऔराखोमेरीजीति को ॥ २६० ॥

याते हरि भक्तिही बडीहै किये शिष्य ॥ श्लोक ॥ अंत्यजाअपि तद्राष्ट्रे शंखचक्रांकधारिणः ॥ सुधिआवै राजा इंद्रद्युम्नअगस्तस्नापगज-मयेकियोबहुमान ॥ पद ॥ आजुके दिवसकी जाहुँ बलिहार। मेरेगृह आया राजारामजीका प्यार । करों दंडवत चरण पखारों । तन मन धन संतनि परवारों । आंगन भवन भयो अतिपावन । हरिजन बैठे हरियश गावन । कहैं कथा अरु अर्थ विचारें । आप तरैं औरनिको तारें । कहै रैदास मिले हरिदासा । जनम जनम की पूजी आसा ॥ १ ॥ पाथर न सरै काम पारसतो सोई जो पार उतारै सोतो एक रामनाम है ॥ २ ॥ डरलाग्यो ॥श्लोक॥ स्तेयं हिंसानृतं दंभः कामः क्रोधः स्मयो मदः। मदोवै रमविश्वासः संस्पर्द्धा व्यसनानिच । एतेपंचदशानर्थाह्यर्थमूलामता नृणाम्। तस्मादनर्थमर्थाख्यं श्रेयोर्थी दूरतस्त्यजेत् ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ कैमाया कैहरिगुण गाई। दोनो सेती दीनों जाई ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ विषयाविष्टचित्तानां विष्णवावेशः सुदूरतः । वारुणीदिग्गतं वस्तु व्रजन्नैंद्रींकिमाप्नुयात् ॥ ७ ॥

मानिलईबातनईठौरलैवनाइचाइसंतनिबसाइहरिमंदिरचिनायोहै विविधवितानतानगनौजोप्रमानहोईभोईभक्तिगईपुरीजगयशछायोहै दरशनआवैलोगनानाविधिरागभोगरोगभयोविप्रनकेतनसबछायोहै। वड़ेईखिलारीवेरहेहीछानिडारिकरी वरपैअटारीफेरिद्विजनसिखायो है ॥ २६१ ॥ प्रीतिरसराशिसोरैदासहरिसेवतहै घरमेंदुराइलोकरंज

नादिटारीहै । प्रेरिदियेहृदयजाइद्विजनपुकारकरीभरीसभानृपआगे कहेदमुखगारीहै । जनकोबुलाइसमुझाइन्याइप्रभुसौंपिकीनो जगय शसाधुलीलामनुहारी है । जितेप्रतिकूलमैंतौमानेअनुकूलयातेसंत नप्रभावमनिकोटरीकीतारी है ॥ २६२ ॥

लोक रंजनादि टारिये ॥ ४ ॥ सवैया ॥ हमसों मनमोहनसों हितहै चुगली करि कोऊ कहा करि है । अबतो बजिके बदनामी भई गुरु लोगनिकेजु कहा डरि है । कबि धीर कहै अटकी छबिसों ब्रजमे भटकी बिसऱ्यों घरहै । तुमको यह बातसों कामकहा अपने कोउ जान कुँवा परिहै ॥ १ ॥ मुखगारीहै ॥ पुष्करमाहात्म्य ॥ अपूज्या यत्र पूज्यंते पूज्यपूजाव्यतिक्रमः ॥ तत्र तत्र प्रवर्त्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम् ॥ २ ॥ न्याइ प्रभुसोंपि ॥ छन्द ॥ सदा कृपानिधान हो कहा कहौं सुजानहो अमान हान मानहो समान काहि दीजिये । रसाल प्रीतिके भरे खरे प्रतीतिके निकेत रीति नीतिके समुद्र देखि देखि जीजिये । टीकी लगी तिहारियेइ सुआइयो निहारिये लोक रंजनादि टारिये समीप यों बिहारिये । उमंग रंग भीजिये पयोदमोददाइये बिनोदको बढाइये बिलंब छांडि आइये ।किधों बुलाइ लीजिये॥ ३॥तारीहै॥दोहा॥ ज्यों ज्यों आवै बिघनडर त्यों त्यों प्रेम हुलास । जैसे दीपक तम चहै सतगुन होत प्रकास ॥ मन कोटरीकी तारी है हिरण्यकाशिपु दुःख दिये तब प्रह्लाद गुण प्रगटे ऐसे ॥ ४ ॥

बसतचितौरमांझ रानीएकझालीनामनामबिनकामखालीशिष्य आनिभईहै । संगहुतेविप्रसुनिक्षिप्रतनआगिलागीभागीमतिनृपआगे भीर सब गई है । बैसेहीसिंहासनपैआइकैबिराजेप्रभुपढ़ैवेदवाणीपैन आयेयहनई है । पतितपावननामकीजियेप्रगटआज गायोपदगोद आइबैठेभक्तिलई है ॥ २६३ ॥

पद गायो॥ ३॥ पद ॥ आयो आयो हो देवाधि तुम शरण आयो । सकल सुखकी मूल जाकी नाहिसम तूलसो चरण मूल पायो । लियो बिबिध जोन नान यगकी अगम त्रास तुम्हरे भजन बिन भ्रमत फिऱ्यौ ॥

माया मोह बिषय रस लंपट यह दुस्तर दूर तऱ्यौ । तुम्हरे नाम बि-श्वास छांडिये आन आश संसारी धर्म मेरो मन न धीजै । रैदास दास की सेवा मानहु देवा पतितपावन नाम आज प्रगट कीजै ॥ १ ॥ सवैया ॥ मृतको ठौर ठौवन कुल जाको हरि मूरति लो इनमें अरकी । सेवन लग्यो जग्यो जग ऊपर निंदक नर भूसन कूकरकी । हरि प्रसन्न शिर चढ़ौ सिंहासन जैति धुनि काशि नगर की । लाल कृपाल प्रेम रस बंधन निर्भय भक्ति राधिका बरकी ॥ २ ॥ जैमिनिपुराणे ॥ मोरध्वजस्थाने । अंत्यजा अपितद्राष्ट्रे शंखचक्रांकधारिणः ॥ संप्राप्य वैष्णवीं दीक्षां दीक्षि-ता इव संबभौ ॥ ३ ॥ सप्तमे ॥ विप्राद्विषड्गुणयुतादरविंदनाभपा-दारविंदविमुखाच्छ्वपचंवरिष्ठम् । मन्ये तदर्पितमनोवचनेहितार्थे प्राणं पुनंति सकुलं न तु भूरिमानाः ॥ ४ ॥

गईघरझालीपुनिबोलिकैपठायेअहो जैसेप्रतिपालीअबतैसेप्रति पालिये । आपहूपधारेउनबहुधनपटवारेविप्रसुनिपांवधारेसीधौदे निकारिये । करिकैरसोइद्विजभोजनकरनबैठद्वैद्वैमधिएकपोरैदास कोनिहारिये ॥ देखिभईआंखैदीनभाषैंशिष्यभष्येलावें स्वर्णकोजने ऊकाढ़चोत्वचाकीनोन्यारिये ॥ २६४ ॥ मूल ॥ कवीरकानिराखी नहींवर्णाश्रमषटदरशनी ॥ भक्तिविमुखजोधर्मसोअधर्मकरिगायो । योगयज्ञव्रतदानभजनबिनतुच्छदिखायो ॥ हिंदूतुरकप्रमानरमैनीस बदीसाषी । पक्षपातनहिंवचनसबहिकेहितकीभाषी ॥ आरूढ़दशा ह्वैजगतपरमुखदेखीनाहिंनभनी । कवीरकानिराखीनहींवर्णाश्रमषट दरशनी ॥ ६० ॥

पतितपावन नामकीजिये प्रगट आजुगायो पद आपु बैठे भक्ति मनं भाई है निहारिये ॥ भूतानांदेवचरितम् ॥ देखेते ज्ञान आयो ॥ यस्य नास्तिस्वयं प्रज्ञा ॥ १ ॥ जानिगये ॥ एकते अनेक भये परम भाग-वतही हैं भृंगी भयते भृंग होत ॥ शुकोहंशुकोहम् ॥ वृक्षनिमें दिखायो ऐसे इनको जीत्यो तब सोनेको जनेऊ दिखायो भक्ति विमुख जो धर्म

सो अधर्म करि गायो ॥ २ ॥ भागवते ॥ गुरु वैष्णवो गोविप्र हरि अर्थ सवको पूजै पै ग्रह व्यतीपात देखै सोइ अधर्म स्वर्ग नरक संसार कारण धरम वहै जगछूटै ॥ सोहरिकी शरण जायतव ऐसे ॥३ ॥ तुच्छ दिखायो ॥ दोहा ॥ रामनाम तौ अंक है, अरु सब साधन शून्य ॥ अक्षरके सन्मुख रहै, शून्य शून्य दश गून्य ॥ पक्षपात नहीं॥४॥छप्पय ॥ पांडे भली कथा कहिजानै । औरनि परमारथ उपदेशै आपु स्वारथ लपटानै, ज्यों दीपक घरु करै उजारो निज तन तम सन ठानै । महिषी क्षीर स्रवै औरनिको आपु भुसहि रुचि मानै ॥ श्रोता गोता क्यों न खाइ आचारज फिरै भुलाने । यह कलि छल सबकी मति नाठी समझत लाभ न हानै ॥ हितकी कहत लगत अनहितकी रज राजसमें सानै । कहत कबीर विना रघुवीरहि यह पीरहि को जानै ॥ ५ ॥ भजनविन ॥ सकर्ता सर्वधर्माणां भक्तोयस्तव केशव ॥ सकर्ता सर्वपापानां यो न भक्तस्तवाच्युत ॥ ६ ॥ यदि मधुमथन त्वदंघ्रिसेवां हृदि विदधाति जहाति वा विवेकी ॥ तदखिलमपि दुष्कृतं त्रिलोके कृतमकृतं तु कृतं कृतं च सर्वम् ॥ १ ॥

टीका ॥ अतिहीगँभीरमतिसरसकवीरहियोलियोभक्तिभावजातिपांतिसबटारिये । भईनभवाणीदेहतिलकरवानीकरौकरौगुरुरामानंदगरेमालधारिये । देखैनहींमुखमेरोजानिकैमलेच्छमोको जातन्हानगंगाकहीमगतनडारिये । रजनीकेशेशमयआवेशसोंचलतआपपरेपगरामकहैमंत्रसोंविचारिये ॥ २६५ ॥ कीनीवहीवातमालातिलकवनाइगातमांनिउतपातमातशोरकियोभारिये । पहुँचीपुकाररामानंदजूकेपासआइकही कोऊपूछैतुमनामलैउचारिये । लावोजूपकरिवाकोकवहमकियोशिष्यलायेकारिपरदामेंपूछीकहिडारिये । रामनाममंत्रयहीलिख्योसवतंत्रनिमेंखोलिपटमिलेसांचोमतउरधारिये२६६

सवतंत्रनिमें ॥ श्लोक ॥ श्रीरामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्मसंज्ञकम् ॥ ब्रह्महत्यादिपापघ्नमिति वेदविदो विदुः ॥ १ ॥ कवित्त ॥ रहै गोनराज

रजधानीपै न पानी पुनि कहै बाक बानी जिमि आशमान जाइगो । सत पाताल अरु सात द्वीप भाइ सत एक वेर चांद सूर्य ज्योतिहू बिलाइगो। जोइ कछू सृष्टि रची करताकी वृष्टिही सो एक वेर सृष्टिहूको करता समाइगो । कहैं कवि काशीराम और कछू थिर नाहिं रहिवे को एक राम-नाम रहि जाइगो ॥ २ ॥ छप्पय ॥ यत विन योगी अफल अफल भोगी विन माया। जलविन सरवर अफल अफल तरुवर विनछाया ॥ शशि विन रजनी अफल अफल दीपक विन मंदिर । नर विन नारी अफल अफल गुण बिन सब सुन्दर ॥ नारायणकी भक्तिविन राजा परजा सब अफल। तत्त्ववेत्तातिहुंलोक में रामरटैं ते नर सुफल ॥ ३ ॥

बुनैतानोबानोहियरामभ्रड़रानोकही कैसेकैबखानोवहीरीतिक छुन्यारिये। उतनोहीकरैतामेंतननिरवाहहोइभोइगइऔरैवातभक्ति लागीप्यारिये । ठाढ़ेमंडीमांझपटवेचनलैजनकोऊआयोमोकोदेहु देहमेरीहैउघारिये । लग्योदेनआधोफारिआधेसों नकामहोयदियो सबलैवोजोपैयहीउरधारिये॥ २६७॥ तियासुतमातमगदेखेभूंखेआ वैं कबदविरहेहाटनमेंलावैंकहाधामको। सांचौभक्तिभावजानिनिपट सुजानवेतो कृपाकेनिधानगृहशोचपरेउश्यामको । वालदलैधाये दिनतीनियोंवितायेजब आयेघरिडारिदईलहेउहेपरामको। भ्राताक रैशोरकोऊहाकिमसरोरिबांधै डारोबिनजानेसुतनहींलेतदामको ॥ ॥ २६८ ॥ गयेजनदोइ चारिढूंढ़िकेलिवाइलायेआयेवरसुनी बात जानीप्रभूपीरको। रहेसुखपाइकृपाकरीरघुराइदईक्षणमेंलुटाइसववा लिभक्तभीरको। दयोछोड़ितानोवानोसुखसरसानोहियेकियेरोषधा येसुनिविप्रतजिधीरको। क्योंरेतेजुलाहेधनपायोनाबुलायेहमें शूद्र निकोदियोजावोकहैयोंकबीरको ॥ २६९ ॥

बुनै तानो वानो दोऊकरैं सोदोऊ कैसे वने मनतौ एकही है मनको अ-भ्यास भजनको इंद्रियनको अभ्यास क्रियाको जैसे जडभरत शरीर त्यागती वार ॥ १ ॥ देवानां गुणलिंगानाम् ॥ अथवा हरि आपही

मडराइ ॥ २ ॥ सुख सरसानो एक फकीर तापै फकीर आवै कही गुजर कैसे है तब कही हमें साहिब देताहै जब खाते हैं संत संतोष सों परे रहेते दूसरो कही ऐसे हमारी गलीके कुत्ता हू करते हैं आप कैसे देताहै तब बांटि खाते हैं तब तो आनन्द माने है ॥

क्योंजूउठिजाऊंकछूचोरीधनलाऊंनितहरिगुणगाऊंकोऊराहमेंन मारीहै । उनकोंलैमानकियोयाहीमेंअमान भयो जोपैजाई हमेंतौहीतौजियारीहै । घरमेंतोनाहींमंडीजांउतुमरहौवैठे नीठिके छुड़ायोपैड़ोछिपैव्याधिटारीहै । आयेप्रभूआपद्रव्यलायेसमाधान कियोलियोसुखहोयभक्तिकीरतिउजारीहै ॥ २७० ॥ ब्राह्मणकोरू पधरिआयेछिपिवैठेजहांकाहेकोमरतभूखौजावोजू कबीरके । कोऊ जाइद्वारताहिदेतहैअढ़ाईसेरवेरजिनिलावोचलेजावोयोंवहीरके । आ येघरमांझदेखिनिपटमगनभये नयेनयेकौतुकसोंकैसेरहैधीरके । बा रमुखीलईसंगमानोवाहीरंगरंगेजानोयहवातकरीडरअतिभीरके ॥ ॥ २७१ ॥ संतदेखिदुरेसुखभयोईअसंतानिकेतबतौविचारिमनमांझ ओरआयोहै । वैठीनृपसभातहांगयेपैनमानाकियो कियोएकचीजउ ठिजलढरकायोहै । राजाजियशोचपरयोकह्योकहाकह्योतबजगन्ना थपंडापांवजरतबचायोहै । सुनिअचरजभारिनृपलेपठायेनरलायेसु- धिकहीअजूसांचहीसुनायोहै ॥ २७२ ॥

नये नये ॥ दोहा ॥ व्यास वडाई जगतकी, कूकरकी पहिचानि । प्रीति किये मुख चाटिहै, वैरकिये तनुहानि ॥ १ ॥ हाथ कछू न लगै भजन गांठिको जाइ ऐसे विपयिनको संगहै जैसे सेवरिके सुवाको कछू हाथ न लगै देखतही में सुन्दर सेवत विचारी वडाइ खोई आपही आवैगे ॥ २ ॥ वारमुखी लई संग या कुसंगसों कबीर परम साधुताकी महिमा घटाविपे कहनलगे ॥ दोहा ॥ संगति खोटी नीचकी, देखो कारिकै ख्याल । महिमा घटी समुद्रकी, बस्यौ जु रावन पास ॥ ३ ॥ जल ढर कायो कृपानदेव पयेष्ट कृपा देखि जगत बुरोहोय ॥

कहीराजारानीसोंजुबातवहसांचभईआंचलागीहियेअबकहौकहा कीजिये । चलेहीवनातिचलेशीशतृणबोझभारीगरेसोंकुल्हारीबांधि तियासंगभीजिये । निकसेबजारह्वैकेडारिदईलोकलाजकियो मैं अ काजछिनछिनतनछीजिये । दूरिजेकवीरदेखिह्वैगयोअधीरमहाआ योउठिआगेकह्योडारिमतिरीझिये ॥ २७३ ॥ देखिकेप्रभावफेरिउ पज्योअभावद्विजआयोबादशाहजूसिकंदरसोनामहै। बिमुखसमूहसं गमाताहू मिलाइलईजाइकैपुकारे जूदुखायोसबगाँवहै । लावौरेपक रिवाकोदेखौरेमकरकैसौअकरमिटाऊंगाढ़ेजकरतनावहै । आनिठा ढ़कियेकाजीकहतसलामकरौजानैनसलामजामैरामगाढ़ेपावहै ॥ ॥ २७४ ॥ बांधिकेजंजीरिगंगातीरमांझबोरिदियोजियोतीरठाढ़ोक हैयंत्रमंत्रआवहीं । लकरीनमांझडारिआगिनिप्रजारिदईनईमानोंभई देहकंचनलजावहीं । बिफलउपाइभयेतऊनहींआइनयेतबमतवारो हाथीआनिकेझुकावहीं । आवतनढिगऔचिंघारिहारिभाजिजाइआ गआपसिंहरूपबैठेशोभागावहीं ॥ २७५ ॥

भाजिजाइ भगवान सिंहरूपहाथीके पास सन्मुख आइ ठाढे भये हाथी चिंघारिके भाज्यौ बादशाह ने कही हाथी क्यों नहीं पेले कही महाराज सन्मुखसिंह है तो मोहिं क्यों नहींदेखै सन्मुख आवै तब देखो जब आयो तब देखतही बडो डरकियो यह वही नृसिंह है जो प्रह्लादकी रक्षाको प्रगट्यो है याते संतनिके सन्मुख तब हरि दीसै ॥ १ ॥ भगा- वही ॥ दोहा ॥ बधिक बाज करु दुष्ट नर जो इन चीत्यौ होइ । तुलसी या संसारमें, साधु न जीवैकोइ ॥ २ ॥ राजा स्त्रीसों पूछैं कृष्ण सान्दीपनके पढे दक्षिणा। मांगो सो कही स्त्रीसों पूछैं तब प्रभास में बूडिगयो पुत्र सोल्या- ई देव ऐसे पंडित पूछे बिफल उपाव ॥ जले विष्णुःस्थले विष्णुर्विष्णुः पर्वत मस्तके ॥ ज्वालामालाकुले विष्णुः सर्वं विष्णुमयं जगत् ॥ ३ ॥

देख्यौबादशाहिभावकूदिपरेगहेपाव देखीकरामातिमातभयेसब लोक हैं । प्रभुपैबचाइलीजैहमैंनगजबकीजैलीजैसोईभावैगांवदेश

नाभोग हैं । चाहैंएकरामजाकोजपैआठौयामऔरदामसोंनकामजा मेंभरेकोटिरोग हैं । आयेवरजीतिसाधुमिलेकरिप्रीतिजिन्हैं हरिकी प्रतीतिवेईगायवेकेयोगहैं ॥ २७६ ॥ होइकैखिसानेद्विजनिजचारिवि प्रनके सूड़निसुड़ाइभेपसुंदरवनायेहैं । दूरिदूरिगांवनमेंनामानिकोपू छिपूछि नामजोकवीरजूकोझूठेंन्योतिआयेहैं । आयेसवसाधुसुनिये तौदुरिगयेकहूंचहूंदिशिसंतनिकेफिरैंहरिधाये हैं । इनहीकोरूपधरि न्यारेन्यारेठौरवैठेएऊमिलिगयेनीकेपोखिकैरिझायेहैं ॥ २७७ ॥

गहेपाव ॥ पद ॥ कलिमें सांचो भक्त कवीर । जवते हरिचरणन रुचि उपजी तवते वुन्यो न चीर । दीनों लेहिं न यांचै काहू ऐसो मनको धीर । योगी यती तपी संन्यासी इनकी मिटी न पीर । पांच तत्त्वते जनम न पायो काल न ग्रस्यो शरीर । व्यास भक्तको खेत जुला योहरि करुणामय नीर ॥ १ ॥ मेरोमन अनतही सचुपावै । जैसे उडत जहाजको पक्षी फिरि जहाज पै आवै ॥ जो नर कमल नैनको तजिकै आन देवको ध्यावै । विद्यमान गंगातट प्यासो दुर्मति कूपखनावै ॥ जिनमधुक- र अंवुजरसचाखो ताहि करीलनभावै । सूरदास प्रभु कामधेनु ताजि छेरी कौन दुहावै ॥ २ ॥ दोहा ॥ कहाकरै रसखानिको, कोऊ दुष्ट लवार ॥ जोपतिराखन हारहै, माखन चाखनहार ॥ ३ ॥ हरिको निश्चय आनिके वनिजकरै जोकोइ ॥ तुलसी मन विश्वास सों, दाम चौगुना होइ ॥ ४ ॥ मछरी मीनखाई कुत्ता विलाईते वचै ॥

आइअप्सराछरिवेकोलियेवैसकियेहियेदेखिगाढ़ोफिरिगईनहींला गीहै । चतुर्भुजरूपप्रभुआनिकैप्रगटकियोलियोफलनैननिकोवड़ोव ड़भागीहै । शीशधरैहाथतनसाथमेरेधामआवौ गावोगुणरहौजौलौंते रीमतिपागीहै । मगमेंहैजाइभक्तिभावकोदिखाइवहु फूलनिसँगाइपौ ढ़िमिल्योहरिरागी है ॥ २७८ ॥

आई अप्सरा ताको देखिकै मोहित नहीं भये जैसे नारदजी ॥ १ ॥ पद ॥ तुम घरजावो मेरी वहिना । यहां तिहारो लेना न देना राम विन

गोविंद बिना विष लागैं ये बैना॥ जगमगात पट भूषण सारी उर मोतिनके हार । इन्द्रलोकते मोहनआई मोहिं करन भरतार ॥ इनबातनको छांडि देहुरी गोविंदके गुनगावो । तुलसीमाला क्यों नहिं पहिरो बेगिपरम पदपावो ॥ इन्द्रलोक में टोटपऱ्योहै हमसों और न कोई । तुमतो हमें डिगावन आई जाहु दईकी खोई ॥ बहुते तपसी बांधि बिगोये कच्चे सूतके धागे । जो तुम यतनकरो बहुतेरा जलमें आगिन लागे ।। होंतो केवल हरिके शरणै तुमतो झूंठीमाया । गुरुपरताप साधुकी संगति मैंजु परमपदपाया ।। नाम कबीर जाति जुलाहा गृह बनरहौं उदासी । जोतुम मान महत करि आई तो इकमाइ दूजे मासी ॥ १ ॥ कवित्त ॥ बहमति कहां गई अब मति औरो भव ऐसी मतिकी जो मति आपनी बिगारोगे । सुधि कहूं सोइ गइ बुद्धिकहूं बूडिगई अब क्यों न भई सो तो नईबाट पारोगे ॥ निपटानिरंजन निहारि के बिचारि देखो एकही बिचारि कहा दोसरी बिचारोगे । तुमसों न उज्यारो प्रभु मोसों न पतितभारो मोहिंमति तारो बैकुंठको बिगारोगे ॥ २ ॥

मूल ॥ पीपाप्रतापजगबासनानाहरकोउपदेशदियो । प्रथमभवानीभक्तमुक्तिमांगनकोधायो । सत्यकह्योतिहिशक्ति सुदृढ़हरिशरण बतायो ॥ श्रीरामानंदपदपाइ भयेअतिभक्तिकीसींवा । गुणअसंख निरमोलसंतधरिराखतग्रीवा ॥ परसप्रनालीसरसभईसकलविश्व मंगलकियो । पीपाप्रतापजगबासना नाहरकोउपदेशदियो ॥ ६१ ॥ टीकापीपाकी ॥ गांगरोलगढ़बठपीपानामराजाभयोलयोपनदेवीसेवारंगचढ़चोभारिये । आयेपुरसाधुसीधोदियोजोईसोईलियोकियोमनमांझप्रभुबुद्धिफेरिडारिये । सोयोनिशिरोयोदेखिसुपनोबिहाल अतिप्रेतबिकरालदेहिधरिकैपछारिये । अबनसुहाइकछूबहुपाइंपरिगई नईरीतिभईयाहिभक्तिलागीप्यारिये ॥ २७९ ॥

आयेपुरसाधु ॥ पीपाकी दयारहै भक्तिअंग में ॥ कवित्त ॥ देवी

हेठि शीतला वराही जा जगावै राति अऊत पितर पंचपीरको मनावै हैं। खेंतखाल गूंगारव भैरव भूपालादिक नाना देवता मनावै नगरकोट जावै से। व्याहकाज छोंछिक परोजन सराध भात काटिकै करज यों उदारता दिखावै हैं। केवल जगतहराम सुमिरै न सीतारामकोपैं जब धर्मराज नरकको पठावैहैं ॥ १ ॥ पीपाजी भवानी को सेवैं पै दया भक्ति अंगरहे याते साधुआये दियो सीधा जोई सोई लियो ॥ श्लोक ॥ यदृच्छा लाभसंतुष्टो द्वंद्वातीतो विमत्सरः ॥ २ ॥ कियो मनमांझ साधुनिने भोग धरिकै हरिसे कही जेइँके चुपकरि मति ह्वै रहियो राजाके भक्ति उपजाइयो ॥ ३ ॥ भागवते एकादशे ॥ भूतानां देवचरितं दुःखाय च सुखाय च। सुखायैवहि साधूनां त्वादृशामच्युतात्मनाम् ॥ ४ ॥

पूछौहरिपाइवेकोमगजवदेवीकही सहीरामानंदगुरुकरिप्रभुपाइये। लोगजानैबौरोभयोगयोयहकाशीपुरीफुरीमतिअतिआयेजहांहरिगाइये। द्वारपैनजानदेतआज्ञाईशलेतकहीराजमीनहेतसुनिसवहीलुटाइये। कहीकुंवागिरैचलेगिरनप्रसन्नहिये जियेसुखपायेलायेदरशदिखाइये॥ २८० ॥ कियेशिष्यकृपाकरीधरीहरिभक्तिहियेकही अवजावोगेहसेवासाधुकीजिये। वितयेवरषजवसरसटहलजानिसंत सुखमानिआवैवरमध्यलीजिये। आयेआज्ञापाइधामकीनीअभिराम रीतिप्रीति कोनपारावारचीठीलिखिदीजिये। हूजियेकृपालवहीवात प्रतिपालकरौचलेयुगवीशजनसंगमतिरीझिये॥ २८१ ॥

पूछो हरि पाइवोको मग जैसे राजा मुचुकुंदने देवतनपै मुक्ति मांगी देवता बोले हमपै मुक्ति कहां होइ तौ हमहूं मुक्ति न होई तापै दृष्टांत शीतलाको तव सोइवो मांग्यो मुक्तिही तुल्यहै देवीने रामानंद वताये धरी हरि भक्ति हिये उपदेशन करिधरि दियो जैसे आयेको अपनो बड़ो अभ्यास जैसे अज्ञानी विषयीको तौ विषयको स्वतै सिद्धि ज्ञान॥सवैया॥ जवते तुम आवन आशदई तवते तरफों कव आइहौजू। मन आतुरता मनहीं में लखौं मनभावन जान सुहाइ हौजू। विधिके छिनलौं दिन

बाटपरी यह जान वियोग बिताइहौ जू। सरसौ घन आनँद वारस सों सुमहारसको बरसाईहौजू ॥ १ ॥

कबीररैदासआदिदाससबसंगलियेआयेपुरपास पीपापालकीलै आयोहै। करीसाष्टांगन्यारीन्यारीविनयसाधुनिकोधनकोलुटाइसोस माजपधरायोहै । ऐसीकरीसेवाबहुमेवानानारोगभोगवाणी केनयोग भागकापैजातगायोहै । जानीभक्तिरीतिघररहौकैअतीतिहोहुकरिकै प्रतीतिगुरुपगलगिधायोहै ॥ २८२ ॥ लागीसंगरानीदशदोयकही मानीनहींकष्टकोबतावैडरपावैमनलावही । कामरीनफारिमधिमेष लापहिरिलेवोदेवोडारिआभरणजोपैनहींभावही । काहूपैनहोहिदि योरोइभोइभक्तिआइछोटीनामसीतागरैंडारीनलज्यावहीं। यहूदूरि डारौकरैतनकोउघारोकियोदयोरामानंदाहियोपीपानसुहावहीं२८३ जोपैयापैकृपाकरीदीजैकाहूसंगकरिमेरेनहींरंगयामैंकहीबारबारहै । सोंहकोदिवायदई लईतबकरधरिचलेढरिविप्रएकछोड़ेनाविचारहै । खायोविषज्यायोपुनिफेरिकैपठायोसबआयोसोसमाजद्वारावतीसुख सारहै । रहेकोऊदिनआज्ञामांगीइनरहिवेकीकूदेसिंधुमांझचाहउप जीअपारहै ॥ २८४ ॥

करी साष्टांगधनको लुटाय ॥ कवित्त ॥ जिन जिनकरनाई तिन करआई तिनकरननाई तिन करनआई है । कागर लिखाइ जिन कागरै लिखाई पाई धरामें धराई जिन धरा धूरि खाई है । दैदै लवराई जिन लई है पराई अब ताहू पास नेकहूं न रहति रहाई है । जिनजिन खाई तिन उदर समाती खाई जिन न खवाई तिन खाई बहुताई है॥ १ ॥ श्लोक॥बोधयंति न याचंति भिक्षां कारागृहे गृहे । दीयतां दीयतां नित्यमदातुः फलमीदृशम्॥ २ ॥ अहंता ममता बिनछूटेहारि प्रापति निश्चयन याते कुवागिरों प्रतीति गुरु पगलागि सूरदासग्रामकी खबरिराखे परग्रामकी नहीं ऐसे जीव विषे जाने हरिको नहीं सो इनकही गुरुआश्रयरहिये तो भलो हायसौंहको दिवाइदई जैसे तेरी प्रतीति भुक्त वैराग्य बलखबुखारेको बादशाह फकीर

एक संगस्त्री कही ऐसे आज्ञा ॥कवित्त॥ सबसुख दैकै शरणागत को एकै वार भक्तिके दियेपै और ठाठ ठठवत हौ । पावन पतित यह विरद तिहारो ताके दोष दुःख पुंज पलहीमें मिटवतहौ। सुरज कहत ताहि अपनो केराखोद्वार मेरी वारहीको क्यों अवार हट वत हौ ॥ देवकार काके वेद दानतार काके मोहिं नाथ द्वारकाके पठवत हौ ॥ १ ॥

आयआगेलेनआपुदियेहैंपठायजन देखीद्वारावतीकृष्णमिलेबहु भाइकै। महलमहलमांझचहलपहललखीरहेदिनसातसुखसकैकौन गाइकै । आज्ञादईजाइबेकोजाइबोनचाहैहियेपियेबहुरूपदेखौमोहिं कोजुजाइकै। भक्तबूड़िगयेयहबड़ोईकलंकभयो मेटौतमअंकशंक गहीअकुलायकै ॥ २८५ ॥ चलेपहुँचाइबेकोप्रीतिकेआधीनमहावि नजलमीनजैसेएसेफिरिआयेहैं । देखिनईबातगातसूकेपटभीजेहिये लियेपहिंचानिआनिपगलपटायेहैं । दईलैकैछापपापजगतकेदूरिक रोढरोकाहूओरकहिसीतासमझायेहैं । छटेईमिलानवनमेंपठानभेंट भई लईछीनितियाकियाचैनप्रभुधायेहैं ॥ २८६ ॥ अभूलगिजावो घरकैसैकैसेआवैडरवोलीहरिजानियेनभावपैनआयोहै । लेतहौंपरि मैंतौजानोंतेरीशिक्षाऐयेसुनिदृढ़वातकानअतिसुखपायोहै चलेमग दासैरैसतामेंएकसिधुरहै आयोवासलेतकियोशिष्यसमझायोहै । आयोऔरगांवशेषशाहीप्रभुनाव रहैकरेवासहरेटरेचींधरसुहायोहै॥

आयआगे लैन ॥ श्लोक ॥ क्षीरेणात्मगतोदकाय निखिला दत्ताः पुरा स्वेगुणाः क्षीरे तापमवेक्ष्य तेन पयसास्वात्माकृशानौ हुतः ॥ गंतुं पावकन्मुन्मनास्तदभवद्वातुंचमित्रापदं युक्तं तेन जलेनशाम्यति सतां मैत्रीपुनस्त्वीदृशी ॥ १ ॥ दोहा ॥ सीतापतिरघुनाथजी, तुमलगि मेरी दौर । जैसे कागजहाजको, सूझत और न ठौर ॥ ४ ॥

दोऊतियापतिदेखेंआयेभागवतऐयेधरकीकुगतिरसांचीलैदिखाईहै । लहँगाउतारिवेंचिदियोताकोसीधोलियोकरोअजूपाकनधूकोट मेंदुराईहै। करिकैरसोईसोईभोगलगिबैठेकहेउआवौमिलिदोऊलहुपो

छेसीतभाईहै । वाहूकोबुलावोलावौआनिकैजिमायोतव सीतागई वाही ठौररनगनलखाईहै॥२८८॥पूंछैंकहौबातयेउघारैक्यों हैं गातक हीऐसेहीविहातसाधुसेवामनभाईहै । आवैंजबसंतसुखहोतहैअनंतत नढक्योंकैउघारेउकहाचरचाचलाईहै । जानिगईरीतिप्रीतिदेखीएक इनहींमेंहमहूंकहावैंऐयेछटाहूनपाईहै । दियोपटआधोफारिगहिकैनि कारिलईभईसुखशैलपाछेपीपासोसुनाईहै ॥ २८९ ॥

दोऊतियापति महाराज पीपा अरु सीता श्रीद्वारका ह्वै आयेहैं वेई छाप लाये हैं श्रीकृष्ण जूने दई है ॥ १ ॥ सो इन्हैं लगावैगो सो मोहींपै आ- वेगो लंबेसे गोरेसे पीपाजी हैं वर्ष तीसमें अरु सीताजी वर्ष पंद्रह में सर्वांग सुन्दरी गौरांगी मानों सीताही हैं उनको दर्शन साक्षात् श्रीकृष्णही हैं याते नितकी बाटदेखै ॥ २ ॥ दोहा ॥ आज द्वैजतिथि है सखी शशि ऊग्यौ आकाश । मेरे दृग अरु पीवके, हैं दोउराकेपास ॥ ३ ॥ रति सांची जैसे नटकीसी कलालै ऐसे पहले ॥ ४ ॥

करैंवेश्याकर्मअवधर्मैहैहमारोयहीकहीजाइवैठीजहँनाजनकीढेरी है । घिरिआयेलोगजिन्हैंनयननकोरोगलखिदूरिभयोशोकनेकुनीके हूनहेरीहै । कहैतुमकौनबारमुखीनहींभोनसंगभरुवासगहैंमौनसुनि परीवेरीहै । करीअन्नराशिआगेमोहरेरुपैयापागे घठैदईचींधरकेतही नवेरीहै ॥ २९० ॥ आज्ञामांगिढोड़ेआयेकभूंभूखेकभूधायेऔचक हीदामपायेगयोस्नानको । मुहरनिभांड़ोभूमिगड़ेउदेखिछोंडिआयो कहीनिशितियाबोलीजावोशरआनको । चोरचाहैचोरीकरैढेरसुनिवा हीऔरदेखैंजोउघारिसांपडारेहतेप्राणको। ऐसेआइपरीगनीसातसत वीशभई तोरेपांचवांटकरैएककेप्रमाणको ॥ २९१ ॥ जोईआवैद्वा रताहिदेतहै अहारऔरबोलिकैअनंतसंतभोजनकरायोहै । बीतेदिन तीनिधनधाइघ्याइछीनकियोलियोसुनिनामनृपदेखिबेकोआयोहै । देखिकैप्रसन्नभयोनयोदेवोदीक्षामोहिं दीक्षाहैआतीतिकरैआपसोसु

हायेहै। चाहौसोईकरौहैकृपालमोकोढरौअजूधरौआनिसंपतिऔरा नीज्याइलायोहै ॥ २९२ ॥

करें वेश्या कर्म क्योंकि हमहूं देखा देखी आगेको बढ़े वह तन कौन कामकोहै और तन सबकाम आवे बैल भैंस सुरहगऊ हाथी भेड़ पीपाजी बोले हमें कोऊ लेइ तौ हमहूं बिकैं सीता बोलीं हमारे पीछे लगिलेहु तुम कैसे विकोगे बारमुखी होहिंगी सो सत्संगते रंग चढ़्यो गहगह्यो तीनि-वार पुटनि में गहगह्यो चढ़ा है एक पुट पीपाजीसों दूसरो चींधरजीसों तीसरो चींधररानी जीने गहगह्यो कह्यो ऐसे आनिपरी पीपाजीने कही कहा करौगी कही अब बाधा न करैंगी ॥ १ ॥ हतेप्राण ॥ श्लोक ॥ लिखिता चित्रगुप्तेन ललाटेक्षरमालिका ॥ न सापि चालितुं शक्या पंडितै-स्त्रिदशैरपि । लक्ष्मण दर्शन विभीषण आवै पड़ा फूल ढेरी लोह गुञ्जा मांगे ॥

करिकैपरीक्षादईदिक्षासंगरानीदईभईहैहमारीकरौपरदानसंतसों। दियोधनघोराकछूराख्योदैनिहोराभूपसानतनछोरावड़ोमान्योजीव जंतुसों। सुनिजीरवारिगयेभाईसेनसूरजकेऊरजप्रतापकहाकहैसी ताकंतसों। आयोवनजारोमोललियोचाहैखेलनकोदियोवहकाइक हौपीपाजूअनंतसों ॥ २९३ ॥ बोलेउवनिजारोदामखोलिखैलादी जियेजूलीजियेजूआइग्रामचरणपठायेहैं। गयेउठिपाछेबोलिसंतनम होछोकियो आयोवाहीसमयकहीलिहुमनआयेहैं। दरशनकरिहिये भक्तिभावभरेउआनिआनिकैवसनसवसाधुपहरायेहैं। औरदिनन्हा नगयेबोड़ाचढ़िछोड़िदियोलियोबांध्योदुष्टननेआयोमानोलायेहैं ॥ ॥ २९४ ॥ गयेहैंबुलायेआपपाछेघरसंतआये अन्नकछुनाहिंकहूं जाइकरिलाइये। विपईबणिकएकदेखिकैबुलाइलईदईसबसौंजक हीसलीनिशिआइये। भोजनकरतमांझपीपाजूपधारेपूछीवारेतनप्राण जबकहिकैजनाइये। करिकैशृंगारसीताचलीझाकिमेहआयोकांधेपैच ढाइनपुचानियांरिझाइये ॥ २९५ ॥

कंदीक्षा ॥ श्लोक ॥ राजश्चामात्यजा दोषा पत्नीपापं स्वभर्त्तरि ॥

यथा शिष्यार्जितं पापं गुरुः प्राप्नोति निश्चितम् ॥ १ ॥ दईसबसौंज ॥ कवित्त ॥ कागनि को मोती चुगावतहै रैनिदिन हंसनि को चुनी बूर कांकरी समेत है । चेरीको चूडा अरु सुन्दर दुशाला लाल शीलहू की बात कभूंहियेहूं न लेतहै । गुणीते गुमानता गुण की पहिंचानि नाहिं आवै जो अजान तासों निपट कछू हेतहै । कोऊ जोसी मांगै सीधा सूधही जवाब देत कंचनी को कंचन उधार लैलै देतहै ॥ २ ॥

हाटपैउतारिदईद्वारआप बैठिरहेचहेसूकेपगमाताकैसेकरिआईहै स्वामीजूलिवाइलायेकहांहै निहारोजाइआईपाइपरचौठरचोराखोसु खदाईहै । मानोंजिनिशंककाजकीजियेनिशंकधनदियोबिनअंकजा पैलरैमरैभाई है । मरचोलाजभारचाहैंधरचोभूमिफारिदृग बहैंनीर धारदेखिदईदीक्षापाई है ॥ २९६ ॥ चलतचलतबातनृपतिश्रवणप रीभरीसभाविप्रकहैबड़ीबिपरीतिहै । भूपमनआईयहनिपटघटाईहो तिभक्तिसरसाईनहींजानैघटीप्रीतिहै । चलैपीपाबोधदैनद्वारहीतिसु धिदईलईसुनिकहीआवोकरौसेवारीतिहै । बड़ोमूढ़राजासोजगौठैबै ठ्योमोचीघर सुनीदौरिआयोरहेठाढ़ेकौननीतिहै ॥ २९७ ॥ हुतीघ रमांझबांझरानीएकरूपवतीमांगीवहीलावोबेगिचल्योशोचभारीहै । डगमगपांवधरैपीपासिहरूपकरैठाढ़ो देखिडरैइतआवैआपरव्वारीहै । जाइतौबिलाइमयोतियाढिगसुतनयोनयोभूमपरकलाजानीनतिहारी है । प्रगटचौस्वरूपनिजाखिचिकै प्रसंगकह्योकहांवहरंगाशिष्यभयो लाजटारी है ॥ २९८ ॥

माता कैसे ॥ सवैया ॥ प्रीतम प्यारो मिल्यो सपने में परी जबने सुक्रनींद निहोरे । कंतको आइबो त्योंहीं जगाइ कह्यो सखि बैन पियूष निचोरे । योंमतिराम गयो हियमें तब बालके बालम सों दृगजोरे । ज्यों पटनें अतिही चटकीलो चढ़ैरंग तीसरी बारके बोरे ॥ १ ॥ याको शुद्ध हृदय अबहीं कैसेहै गयो सीताजी के दर्शन ते सीधेकी बेरक्यों न भयो तीनपुट में रंग है द्वै विधि दर्शन एक विधि भोजन विप्रकहैं यहां राजाके

ब्राह्मणनको पीपाजीको बोध क्यों न भयो बाससीपके लासी पत बासो पात्र भेद है ॥ २ ॥

कियोउपदेशनृपहृदयमेंप्रवेशकियोलियोवहीप्रणआपआयेनिज धामहै । बोल्योएकनामसाधुएकनिशिदेहुतिया लेहुकहीभागोसंग भागीसीतावामहै । प्रातभयेचलेनाहिं रैनिहीकीआज्ञाप्रभुचल्योहा रिआगेघरबरदेखीग्रामहै । आयोवाहीठौरचलौमातापहुँचाइआऊं आयगहेपांवभावभयोगयोकामहै ॥ २९९ ॥ विषयीकुटिलचारिसा धुभेपलियोधारिकीनीमनुहारिकहीतियानिजदीजिये । करिकैशृंगा रसीताकोठेमांझबैठीजाइ चाहैंमगआतुरह्वैअजूजाहुलीजिये । गयेज बद्वारउठीनाहरीसुफारिवेकोफारेनहींबानोजानिआइअतिखीजिये । अपनोबिचारोहियोकियेभोगभावनाको मानिसांचभयोशिष्यप्रभु मतिधीजिये ॥ ३०० ॥ गूजरीकोधनादियो पीयोदहीसंतननेब्राह्मण कोभक्तकियोदेवीदीनिकारिकै । तेलीकोजिवायोभैंसिचोरनपैफेरि लायोगाड़ीभरिगेहूंतनपांचठौरजारिकै । कागदलैकोरोबनियाकोशो कहरयो भरयोबरत्यागिडारीहत्याहूउतारिकै ॥ राजाकोओसेरभई संतकोजोविभवदईलईचीठीमानिगयेश्रीरंगउदारकै ॥ ३०१ ॥

गयो कामहै ॥ दोहा ॥ मन पक्षी जबलग उड़ै, विषय वासना माहिं ॥ प्रेम बाजकी झपटमें, जबलगि आयो नाहिं ॥ १ ॥ विषयी कुटिल ॥ चरण रँगे लोचन रँगे, चले मराली चाल॥ नीर क्षीर विवरण समय, बकउ- घर्यो त्यहि काल ॥ २ ॥ गूजरीको धनदियो साधु बोले ठाकुरजीको मन दही पै चल्यो है ठाकुर क्यों कहैं अपनोही क्यों न कहैं ॥ ३ ॥ ब्राह्मणको भक्तिकियो ॥ श्लोक ॥ वांछितकल्पतरुभ्यश्च कृपासिंधुभ्य एवच ॥ पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमोनमः ॥ ४ ॥

श्रीरंगकेचेतधरेउतियहियभावभरेउब्राह्मणकोशोकहरेउराजापै पुजाइकै । चँदवाबुझाइलियोतेलीकोलैबैलदियोदियोपुनिघरमांझ भयोसुखआइकै । पड़ोईअकालपरेउजीवदुखदूरिकरेउ परेउभूमि

गर्भधनपायोदैलुटाइकै । अतिबिस्तारलियेकियोहैविचारयहसुनेए कबारफिरिभूलेनहींगाइकै ॥ ३०२ ॥ मूल ॥ धन्यधनाकेभजनको बिनहीबीजअंकुरभयो । घरआयेहरिदासतिनहिंगोधूमखवाये । ता तमातदुरथोथखेतलंगूरखवाये ॥ आसपासकृषीकारखेतकीकरतव ड़ाई । भक्तभजेकीरतिप्रगटपरतीतिजुपाई । अचरजमानतजगत मेंकहुनिपज्योकहुवैबयो । धन्यधनाकेभजनकोबिनहिबीजअंकुरभ यो ॥ ६२ ॥ टीका ॥ खेतकीतोबातकहीप्रगटकावित्तमांझ औरए कसुनौभईप्रथमजुरीतिहै । आयेसाधुविप्रधामसेवाअभिरामकैरट रोढिगआइकहीमोहदीजैप्रीतिहै । पाथरलैदियोअतिसावधानकियो यहछातीलाइजियोसेवैजैसीनेहनीतिहै । रोटीधरिआगेआंखिमूंदिलि योपरदाकेछिपोनहींटूकदेखि भईबड़ीभीतिहै ॥ ३०३ ॥

चितधन्यो तियाहिये भावभन्यो ऐसी स्त्री जाति कैसे भावभन्यो सत्सं-गते एकादशे ॥ सत्संगेनहि दैतेया यातुधानाः खगामृगाः । गंधर्वाप्सरसो नागाः सिद्धाश्चारणगुह्यकाः ॥ २ ॥ विद्याधरमनुष्येषु वैश्याः शूद्राः स्त्रियों-त्यजाः ॥ ३ ॥ घरआये हरिदास ॥ कुंडलिया ॥ घरआये नाग न पूजई बांबी पूजन जाइ । बांबीपूजनजाइ भटकि भ्रम सबरैं आवै । हरिजन हर हँसे तिनहिं तजि अंतहि धावै । नकटी भूषण कोटि करै शोभा नहिं पावै । घरमें फजिहत होइ बाहर परिवार जनावै ॥ अगर भूख भाजे नहीं सुपने सो मनखाइ । घरआये नाग न पूजई बांबी पूजन जाइ ॥ ४ ॥ प्रीति है ॥ श्रवणाद्दर्शनाद्ध्यानाद्भक्तिभावोनुकीर्त्तनात् ॥ ५ ॥

बारबारपांवपरैऔरभूखप्यासतजीधरैहियेसांचौभावपाईप्रभुप्या रिये । छाकनितआवैनीकेभोगकोलगावैजोईछोड़ासोईपावैप्रीतिरी तिकछुन्यारिये । जाकोकोऊखाइताकीटहलबनाइकरैलावतचराइ गाइहरिउरधारिये । आयोफिरिविप्रनेहखोजहूनपायोकिहूं सरसायो बातलैदिखायोश्यामप्यारिये ॥ ३०४ ॥ द्विजलखिगाइनमेंचाचानिस मातनाहिंभाइनकीचीटहगलागीनीरझरीहै । जायकेभवनसोतारे

चनप्रसन्न करैवड़ेभागमानिप्रीतिदेखीजैसीकरीहै। धनाकोदयालहो इकैआज्ञाप्रभुदईठरौकरौगुरु रामानंदभक्तमतिहरीहै। भयेशिष्य जाइआयछातीसोंलगाइलियेकियेगृहकाजसवैसुनीजैसीधरीहै२०५॥

द्विजलखि गाइन में ॥ कवित्त ॥ गोरज विराजै भाल लहलही वनमाल आगे गैया पाछे ग्वाल गावैं मृदुवानिरी। जैसी धुनि वांसुरीकी मधुर मधुर तैसी वंक चितवनि मंद मंद मुसुकानिरी। कदम विटपके निकट तटनीके तट अटाचढ़ि वाहि पीतपट फह-रानिरी। रस वरखावै तनतपनि वुझावै नैन वैननि रिझावै वहुआवै रसखानिरी ॥ १ ॥ भूपके तेल लगायो यह तौ वड़ो आश्चर्य है वैष्ण-वकीतो टहलकरै पै अभक्त राजा ताके तेल लगायो तहां टीकाकारने कहो है वही भगवंत संत प्रीतिको विचारकरै धरै दूरि ईशताई पांडव-निसों करीहै ॥ २ ॥

मूल ॥ विदितवातजगजानियेहरिभयेसहायकसेनके। प्रभूदास केकाजरूपनापितकोकीनो। क्षिप्रछुरहरीगहीपानदर्पणतहँलीनो। तादृशिह्वैतिहिकालभूपकेतेललगायो। उलटिरावभयोशिष्यप्रगट परचौजवपायो। श्यामरहतसम्मुखसदाज्योंवच्छाहितधेनुके। विदितवातजगजानियेहरिभयेसहायकसेनके॥ ६३ ॥ टीका ॥ वां धोगढवासहरिसाधुसेवाआशलगीमतिअतिप्रभुपरचौदिखायोहै। क रिनितनेमचलेउभूपकेलगाऊंतेलभयोमगमेलसंतफिरिघरआयोहै। टहलवनाइकरीनृपकीनशंकधरीधराउरश्यामजाइभूपतिरिझायोहै। पाछेसेनगयोपंथपूछैहियेरंगछयोभयउअचरजराजावचनसुनायोहै॥ ॥ २०६ ॥ फेरिकैसे आयेसुनिअतिहीलजायेकहीसदनपधारेसंत भईयोंअवारहै। आवननपायोवाहीसेवाअरुझायोराजादौरिशिरना योदेखीमहिमाअपारहै। भीजिगयोहियोदासभावदृढ़लियोपियोभक्त रसशिष्यह्वैकेजान्योसोईसारहै। अवलौंहूप्रीतिसुतनातीभईरीति चलैहोइजाप्रतीतिप्रभुपावैनिरधारहै॥ २०७ ॥

नापित ॥ दशमे ॥ अनुग्रहाय भक्तानां मानुषं देहमास्थितः ॥ भजते तादृशीं क्रीडां यां श्रुत्वा तत्परोभवेत् ॥ २ ॥ ऐसे तुमने नाऊरूप धरचो तौ हम नाऊके शिष्य ॥ सारसमुच्चये ॥ न शूद्रा भगवद्भक्तास्तेपि भागवतोत्तमाः ॥ सर्ववर्णेषु ते शूद्रा ये न भक्ता जनार्दने ॥ १ ॥ पद रचना ॥ मधुपुरी क्यों न चलो हरिश्याम । इन चरणनकी बलि जाऊं रजधानी कैसे छांड़ि गोकुलघरसों ग्राम । नंद यशोदाकी रट मेटौ बेगि-चलो उठिधाम ॥ निशि बासर कहुँ कल न परतिहै सुमिरत तेरो नाम ॥ तब तुम बेनु बजाइ बुलाई कालिंदीके तीर। अब वै बातैं क्यों विसरैंगी हरि हलधर दोउ बीर । गोपबधू ब्रज मंडल मंडन सबामिलि जोरैं हाथ । सुखानंद स्वामी सुखसागर तुम बेगि चलो उठिसाथ ॥ २ ॥

मूल ॥ भक्तिदानभयहरणभुजसुखानंदपारसपरस । सुखसागरकीछापरायगौरीरुचिन्यारी । पदरचनागुरुमंत्रमनोआगमउनहारी । निशिदिनप्रेमप्रवाहद्रवतभूधरत्योंनिर्झर । हरिगुणकथाअगाधभालराजतलीलाभर । संतकंजपोषणविमलअतिपियूषसरसीसरस । भक्तदानभयहरणभुजसुखानंदपारसपरस ॥ ६४ ॥ मूल ॥ महिमामहाप्रसादकीसुरसुरानंदसांचीकरी । एकसमयअध्वाचलतबरावाकच्छलपाये। देखादेखीशिष्यतिनहुँपीछेतेखाये। तिनपरस्वामीखिजेबवनकरिबिनाविश्वासी । तिनतैसेप्रत्यक्षभूमिपरकीनीरासी । सुरसुरीसुधरपुनिउदकलैपुहपरेणुतुलसीहरी । महिमामहाप्रसादकीसुरसुरानंदसांचीकरी ॥ ६५ ॥ मूल ॥ महासतीसतऊपमात्योंसत्तसुरसुरीकोरहेउ । अतिउदारदंपत्यत्यागिगृहबनको गवनेउ । अचरजभयोतहांएकसंतसुनिजिनहोविभने । बैठेहुतेएकांतआइअसुरनदुखदीयो । सुमिरेशारंगपाणिरूपनरहरिकोकीयो । सुरसुरानंदकीघरनिकोसतराखेउनरसिंहज्यों । महासतीसतऊपमात्योंसत्तसुरसुरीकोरहेउ ॥ ६६ ॥

तब प्रतिमा रणछोरजीकी ॥ बहुतदिन बसे नगर द्वारका नदी गोम-

तीतीर। ब्रजवासी दरशनकोतरसें परशत श्यामशरीर। प्रेम तीनप्रकार-को तापै कबूतरको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ हितकरितुम पठयोलगी, वा व्यज-नाकी बाइ ॥ गई तपति तनकी तऊ, उठी पसीनान्हाइ ॥ १ ॥ महि-मा प्रसाद ॥ पाद्मे ॥ प्रसादं जगदीशस्य अन्नपानादिकं च यत् ॥ ब्रह्म-वन्निर्विकारं हि यथा विष्णुस्तथैव तत् ॥ विचारं येन कुर्वंति ते नश्यंति नराधमाः ॥ पिजे ॥ गुरोराज्ञा सदाकुर्यान्नतदाचरणं क्वचित् ॥ महादेवजीने विष पियो और कोऊ कैसे पीवैगो गुरुको गुरु न होइ जाइ तापै रोटीको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ गौनेब्याह उछाहको, संतअन्न नाहिंखाय ॥ जहां तहांके पायवे, भजन तेज घटिजाय ॥ ३ ॥

मूल ॥ निपटनरहरियानंदकोकरदाताद्दुरगाभई। झरघरलकरी नाहिंशक्तिकोसदनउदारै। शक्तिभक्तसोंबोलिदिनहिंप्रतिवरहीलैडारै। लगीपरोसनिहोसभवानीभैसोंमारै। वदलेकीबेगारिमूड़वाकेशिरडारै। भरतप्रसंगज्योंकालिकालइदेखितनमेंतई। निपटनरहरियानंदकेकरदाताद्दुरगाभई ॥ ६७ ॥ कबीरकृपातेपरमतत्त्वपद्मनाभपरचोलह्यो। नाममहानिधिमंत्रनामहीसेवापूजा। जपतपतीरथनाम नामविनऔरनदूजा। नामप्रीतिनामवैरनामकहिनामीबोलै। नाम अजामिलसाखिनामबंधनतेखोलै। नामअधिकरघुनाथतेरामनिकट हनुमतकह्यो ॥ कबीरकृपातेपरमतत्त्वपद्मनाभपरचोलह्यो ॥ ६८ ॥ टीका ॥ काशीवासीसाहभयोकोठीसोंनिबाहकैसेपरिगये कृमिचल्यो बूड़िवेकोभीरहै। निकसेपदमआइपूछीढिगजाइकहीगहीदेहखोलौगुणन्हाइगंगानीरहै। रामनामकरैवेरतीनिमेंनवीनहोतभयोईनवीनाकियोभक्तमतिधीरहै। गयेगुरुपासतुममहिमानजानीअहोनामाभासकामकरै कहीयोंकबीरहै ॥ २०८ ॥

कबीर ॥ दोहा ॥ समझि पढ़ैके पढ़ि समझि, अहो कहो द्विजराय ॥ सुनि यह बातकबीरकी, पण्डितरह्योहिराय ॥ १ ॥ तपजपतीरथनाम ॥ नामलियो जिनसबकियो योगयज्ञआचार ॥ जप तप तीरथपरशुराम, सबै

नामकीलार ॥ २ ॥ नाम्रबैर ॥ कवित्त ॥ कोऊ एक यमन जरठ संग जात कहूं सूकरकेशावकने मान्यो ताहिधायकै । जोरसों पुकान्यो मोहिं मान्यो है हराम जाति ऐसेकहिबेगि प्राणगये अकुलायकै । गोपदसमान भवसागर सों पारगयो नामके प्रताप ऐसो पद कह्यो गायकै । प्रेमसों कहैगो कोऊ नाम कृपाराम कौन अचरज रामधाम देत हैं जुचायकै ॥ ३ ॥

मूल ॥ तत्वाजीवादक्षिणदेशवंशीधरराजतविदित । भक्तिसुधा जलसमुद्रभयेबेलाबलिगाढ़ी। पूरबजान्योरीतिप्रीतिउतरोत्तरबाढ़ी। रघुकुलसदृशसुभावसृष्टिगुणसदाधर्मरत । शूरधीरउदारदयापरदक्ष अनन्यव्रत । पदमखंडपदमापधितप्रफुलितकरसविताउदित । तत्वाजीवादक्षिणदेशवंशीधरराजतविदित ॥ ६९ ॥ टीका ॥ तत्वाजीवाकी ॥ तत्वाजीवाभाईउभैबिप्रसाधुसेवापन मनधँसेबाततातें शिष्यनहींभयेहैं । गाड़ेउएकठठद्वारहोइअहोहरीडारसंतचरणामृत कोलैकैडारिनयेहैं । जबहींहरितदेखैंताकोगुरुकरिलेखैंआयेश्रीकवीर यूजीआशपावलयेहैं । नीठिनीठिनामदियोदियोपरचाइधामकामको इहोइजोपैआवोकहिगयेहैं ॥ ३०९ ॥ कानाकानीभईद्विजजानीजा तिगईपांतिन्यारीकरिदईकोउबेटीनहींलेतहै । चलेउएककाशी जहांबसतकबीरधीरजाइकहीपीरजबपूछेउकौनहेतहै । दोऊतुमभाई करोआपुमेंसगाईहोइभक्तिसरसाईनघटाईचितचेतहै। आइबहेकरीप रीजातिखरभरीकहै कहाउरधरीकछूमतिहूअचेतहै ॥ ३१० ॥

भक्तिसुधा अमृतमे ह्वै गुणमादिकता भिष्टभक्तिरूपी अमृत हूमादिक अतिमिष्टपै वहनश्वर अरु यह स्वमुख कर्त्ता यह सन्मुख कर्त्ता बेलाबेल घाटहै ॥ मनधरी ॥ दोहा ॥ तोलो बरोबरि गोगची, मोल बरोबरि नाहिं ॥ भेषबरोबरि परशुराम, भेद बरोबरि नाहिं ॥ २ ॥ नामदियो ॥ याते परीक्षा लई सब तीरथ करत कबीरजी आये ॥ ३ ॥ चितचेतहै ॥ चित्तमें विचारी सम्बन्ध तो सबसों है वेतो अभक्त तुम भक्तसो सम्बन्ध कामको नहीं परपरायो देख्यो स्वयंभू मुनि कर्दम ऋषि ॥ ४ ॥ वंशीधर

प्रह्लादकही पिताउद्धार इक्कीसकुली ब्रह्मा मारीच कश्यप हिरण्यकश्यप नाना फूफा मामा मौसी पूरबजान्यो ॥ आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी पुरावृद्धिमती च पश्चात् । दिनस्य पूर्वार्द्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्रीखल सज्जनानाम् ॥ दोऊ तुम भाई करौ ब्रह्माके अंगते स्वयंभू मनु शत रूपा तिनते देवहूती आकूती प्रसूती सृष्टि थोड़ी तब ब्रह्माके बेटा कर्दम आदिदई ॥

करैंयहीबातहमैंऔरनासुहातआयेसबैहाहाखातयहछांड़िहठदीजिये । पूंछिबेकोफेरिगयेकरौव्याहजोपैनयेदण्डकरिनानाभांतिभक्तिदृढ़कीजिये । तबदईसुतालईयातनप्रसन्नह्वैकैपांतिहरिभक्तनसों सदामतिभीजिये । विमुखसमूहदेखिसमुखबड़ाईकरै धरैहियमांझकहैपनपररीझिये ॥ २११ ॥ मूल ॥ विनयव्यासमनोप्रकटह्वैजगकोहितमाधवकियो । पहलेवेदविभागकथितपुराणअष्टादशभारतआदिभागवतमथितउद्धारेउ । हरियशअवशोधेसबग्रंथअर्थभाषाविस्तारेउ । लीलाजेजयजयतिगाइभवपारउतारेउ । श्रीजगन्नाथइष्टवैरागसींवकरुणारसभीज्यो । हियोविनयव्यासमनोप्रकटह्वै जगकोहितमाधवकियो ॥ ७० ॥

भाषा विस्तार्यो ॥ पद ॥ हरि हरि नाम उचारिये हरियश सुनि ये कान । हरिको मस्तक नाइये हरि हैं सकल गुणके निधान । हाथन हरिके कर्मकरि पावन परिकर्मा दीजै । नैन निरखि श्रीजगन्नाथ आत्मा समर्पण कीजै । कोटि ग्रंथको अर्थ यह श्रीभागवत विचारा । वासुदेव की भक्तिबिन नहीं नरको निस्तारा ॥ १ ॥ श्लोक ॥ स्त्रीशूद्रद्विज बंधूनां त्रयी न श्रुतिगोचरा । कर्मश्रेयसि मूढानां श्रेयएवं भवेदिह ॥ २ ॥ इति भारतमाख्यानं कृपया मुनिनाकृतम् ॥ ३ ॥ स्मृतौ ॥ आदौत्रयोद्विजाः प्रोक्तास्तेषां वै मंत्रतः क्रियाः ॥ ४ ॥ ऐसे व्यासने जगत्को हित कियो तैसेही माधवदासजीने ॥ मृषा गिरस्ताह्यसतीरसत्कथाः ॥ तापै भट्टजी अरु कूवाको दृष्टान्त ॥ ५ ॥

भिक्षाको आरंभ॥ दोहा॥ धरतीतौ खूंदनसहै, काठसहै बनराइ ॥ कुबचनतौ साधू सहै, और पै सहो, न जाइ ॥१॥ हार ॥ कवित्त ॥ दूनो भलो सुपथ पै न कुपथ ऊनो भलो सूनो भलो गेह पै न बल साथ करियेअनलकी लपट औझपट भली नाहरकी कपटी के कपटसों दूरिपरिहरिये। यहै जगजीवन परम पुरुषारथहै पर घर जाइ फेरि रससो निकरिये। हारिमानि लीजिये न कीजै बाद नीचलसो सर्वस्वदीजै पै न परवश परिये ॥ २ ॥ दोहा ॥ हारेतो हरिजन भले, जीतनदौ संसार ॥ हारेहरिपै जाहिगे, जीते यमके द्वार॥ ३॥जगन्नाथजीते तब जगन्नाथ कही गदहापै चढौ तेरे मुख न्याय है। जैसे वानेकही काजीके मुख न्यायहै ॥ ४ ॥

ब्रजहीकीलीलासबगावैंनीलाचलमांझमनभईचाहजाइनयननिहारिये। चलैवृन्दावनमगलागिएकगांवजहांवाईभक्तिभोजनकोलाईचावभारिये । बैठेयेप्रसादलेतलेतदृगभरिअहोकहौकहावातदुखहियेकोउघारिये । सांवरोकुँवरयहकौनकोभुराइलायेमाइकेसेजीवैसुनिमतिलैविसारिये ॥ ३१९ ॥ चलेऔरगांवजहांमहाजनभक्तरहैगहैमनमांझआगेविनतीहूकरीहै । गयेवाकेघरवहगयोकाहूऔरघरभावभीरतियाआयपाँयनमेंपरीहै। ऊपरमहंतकहीअबएकसंतआयोयहांतौसमाइनाहिंआईअरबरीहै। कीजियेरसोइँजोइसिद्धसोइलावोदूधनीकेकैपियावोनामसाधवआशभरीहै ॥ ३२० ॥ गयेउठिपाछेभक्तआयोसोसुनायोनामसुनिअभिरामदौरिसंगहीमहंतहै । लियेजाइपाइँलपट्यौसुखपायोमिलेझिलेवरमांझतियाधन्यतोसोंकंतहै। संतपतिबोलेमैंअनंतअपराधकियेजियेअबकहीसेवोसीतमानिजंतहै। आवतामिलापहोइयहीराखोवातगोइआयेवृन्दावनजहांसदाईवसंतहै ॥ ३२१ ॥

सवैया ॥ झीने झगामें दगाही भरी औ लगाही लगा सँगडोलतहैं । देखें पगान जगा जगमें सुभगा कुलकानिके गोलत हैं। नैनलगा सो लगाही गया सुभगा उर बान बिलोलत हैं । लरिकान में डोलत हैं जगन्नाथ हुरुरू कुरुरू करि बोलत हैं ॥ १ ॥ धूरिमें धूरिभरे सबगात

सुजात पुकारत डोलत हैं। अलकावलि राजति हैं बिथुरी सुथरी वरगोल कलोलत हैं। अंबुजलोचन चारुचितौनि सुभाल बिशाल बिलोलत हैं। लरिकानिमेंडोलत हैं जगन्नाथ हुरुरू कुरुरू करिबोलतहैं॥ २ ॥माधवदास पंडित सों बोले आपवड़े उतावले इतनेमें आऊं तोलों आपही चढिबैठे जवलाज में दबिगयो तव माधवदासजी जगन्नाथजीसे बोले यह दिग्विजय करि आयोहौ सो सब ख्वारकरी मेरहु बुरोभयो यह आछो न कियो मेरे बदले चढायो मैंतौ अपने वदले चढायोहै तव अपने हाथसों अपराध क्षमा करायो ये साधुताके लक्षणहैं ॥ ३ ॥ न्याये ॥ विद्या विवादाय धनं मदाय शक्तिः परेषां परिपीडनाय ॥ खलस्य साधोर्विपरीतमेतज्ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥ ४ ॥ पठकाः पाठकाश्चैव ये चान्ये शास्त्रचिंतकाः ॥ सर्वे व्यसनिनो मूढा यः क्रियावान् स पण्डितः ॥ ५ ॥ दोहा ॥ भक्ति विना श्रीभागवत, कहैं सुनैजे अंध ॥ त्यों दर्वी व्यंजननिमें, स्वाद न जानेमंद॥ ६ ॥ छप्पय ॥ पंडित पढि भागवत भक्ति भक्तनिजू सिखवत ॥ महिषी ज्योंपयस्त्रवत आपसो स्वाद न पावत। मृगजु नाभि नहिं लखै लेत तृण शिलमधि घ्रानैं। कट आगर करपरवहे ये मरम न जानै। तैसे दर्वीन्याय चतुरभुज भक्ति विना मंडक धुनि। दर्पण दियो जुनैनबिन त्यों अंधअंधेरो डोरिपुनि ॥ ७ ॥ सप्तमे ॥ यथाखरश्चंदनभारवाही भारस्य वेत्ता न तु चंदनस्य ॥ तथाल्पविज्ञाः श्रुतिशास्त्रयोगान्मद्भक्तिहीनाः खरवद्वहंति ॥ ८ ॥ तापै गंगला तेलीको दृष्टांत और पंडितको दृष्टांत ॥ ९ ॥ संतपतिः ॥ दोहा ॥ नैन निकट काजर बसै, पैदर्पणदरशाइ ॥ ज्यों साधुनके संगविन, हरि मुख छवि न लखाइ ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ वेदहूकी निंदाकरै साधुहूकी निंदाकरै गुरुकी आज्ञा विष्णु शिवभेदमानिये। नामहीके आसरे आइ वहुपाप औ अश्रद्ध दानहीसों उपदेशलै वखानिये । एक अर्थ बाद अरु व्याख्या कुतर्क करै महिमा सुनत हिये अश्रद्धा न आनिये। नामकी समान सब धर्म समान कहै नामन अफल अपराध दश जानिये ॥

देखिदेखिवृन्दावनमेंमगनभये गयेश्रीबिहारीजूकेचनातहीपायेहैं।

कहिरह्योद्वारपालनेकमैंप्रसादलालयमुनारसालतटभोगकोलगायेहैं। नानाबिधिपाकधरैस्वामीआपध्यानकरैबोलैहरिभावैनाहिंवेईलेखवा येहैं । पूछेउसोजनयोंढूंढ़िलायोआगेगायोसबतुमतौउदासहासरसस मझायेहैं ॥ ३२२ ॥ गयेब्रजदेखिवेकोभांडीरमैंपैमरहेनिशिकोदुराइ पाइक्रमलैदिखायेहैं । लीलासुनिवेकोहरियानेगांवरहैंजाइगोबरहूपा थिपुनिनीलाचलधायेहैं । घरहूकोआयेसुतसुखीसुनिमाताबाणीमार गमेंसुपनदेकैवणिकमिलायेहैं । याहीविधिनानाभांतिचरितअपारजा नोजितेकछुजानेतितेगाइकैसुनायेहैं ॥ ३२३ ॥ मूल ॥ श्रीरघुनाथ गुसाईगरुड़ज्योंसिंहपौरिठाढ़ेरहैं । शीतलगतसकलातविदितपुरुषो त्तमदीनी । शोचगयेहरिसंगकृत्यसेवककीकीनी । जगन्नाथपदप्रीति निरंतरकरतखवासी । भगवतधर्मप्रधानप्रसन्ननीलाचलवासी। उत्क लदेशउड़ीसानगरवैनतेयसबकोऊकहै ॥ श्रीरघुनाथगुसाईं गरुड़ ज्योंसिंहपौरिठाढ़ेरहैं ॥ ७१ ॥

बिसारिये ॥ दोहा ॥ जो मोसों मोसों करौ, तौ रनहै कहुँ ठौर ॥ तुमहो जैसी कीजियो, अहो रसिक शिरमौर ॥ तुमतौ उदास हास रस समझायो तुम जगतसों विरक्तभये सोतौ आछो पै हरिसों विरक्त भये सो आछोनहीं माधवदास कही मैं तुम्हारे ठाकुरकी सचिक्कणता देखि सो प्रसं-ग ॥ २ ॥ निशिको दुराइ खाइ क्रमसों दिखाई है जब डरे तब कही मथुरा विश्राम घाट झारो संत चरणोदक शीत सेचन करो सोई कियो मूलमेंनाभाजीनेधरे हैं खेमगुसाईं खेमकर लीला सुनिवेको हरियानेगोलीगां वरहें गोबरपाथो सो प्रसंग ॥

टीका ॥ अतिअनुरागवरसंपतिसोंरहेउपागिताहकरित्यागनीला चलकियोवासहै । धनकोपठावैपिताएपैनहींभावैकछूदेखिबोसुहावै महाप्रभुजूकोपासहै । मंदिरकेद्वाररूपसुंदरनिहारोकरै लग्योशीत गातसकलातदईदासहै। शौचसंगजाइवेकीरीतिकोप्रमानवहै वसेसब ज्ञानौमाधवदाससुखरासहै ॥ ३२४ ॥ महाप्रभुकृष्णचैतन्यजूकीआ

ज्ञापाइआयेवृन्दावनराधाकुंडवासाकियोहै । रहनिकहनिरूपचहनि कहनिसकैथकैसुनितनभावरूपकरिलियोहै । मानसीमैंपायोंदूधभा तसरसातहिये लियेरसनारीदेखिवैदकाहिदियोहै । कहांलौंप्रतापक हौंआपहीसमझिलेहुदेहुवहीरीझिजासोंआगेपायजियोहै ॥ ३२५ ॥

भावरूप ॥ दोहा ॥ चढिकर मैंन तुरंग पर, चलिबो पावक माहिं ॥ प्रेमपंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निवहत नाहिं ॥ १ ॥ यह स्वरूप मोम-रूपी भावना हरिकी अग्निरूपसों कैसें निवहै या शरीरको सखी भावरूप अष्टधातुको कियो अग्निरूप रस तामें प्रवेश कियो ॥ दोहा ॥ भजन रसिक रघुनाथजी, राधा कुंडनिवास ॥ लोन तक्र ब्रजको लियो, आसुनहीं कछुआस ॥ २ ॥ राधाकुंडवास ॥ यथा राधा तथा विष्णुः यथाकु-ण्डप्रियं तथा ॥ सर्वगोपसु सेवैका विष्णोरत्यंतवल्लभा ॥ ३ ॥ छप्पय ॥ रतन जडित नगखचित घाट सिढियनकी शोभा । गुंजत मोर मराल भरे आनंदकी गोभा ॥ माधव काज तमाल वृक्ष सबही झुक झूमैं । छबिकी उठति तरंग निरखि नंदलाल जुघूमैं ॥ दोहा ॥ श्री महारानी राधिका अष्ट सखिनके झुंड । डगर बहारें साँवरो, सुजय जय राधाकुंड ॥

मूल ॥ श्रीनित्यानंदकृष्णचैतन्यकीभक्तिदशोंदिशिविस्तरी । गौड़देशपाखंडमेंटिकियोभजनपरायन । करुणासिंधुकृतज्ञभयेअग तिनगतिदायन । दशधारसआक्रांतिमहतजनचरणउपासे । नामलेत निःपापदुरिततिहिनरकेनासे । अवतारविदितपूरबमहीउभयमहतदे हीधरी । श्रीनित्यानंदकृष्णचैतन्यकीभक्तिदशोंदिशिविस्तरी ॥ ॥ ७२ ॥ नित्यानंदकीटीका ॥ आयबलदेवसदावारुणीसोंमत्तरहें चाहेमनमान्योंप्रेममत्तताईचाखिये । सोईनित्यानंदप्रभुमहंतकीदेही धरीभरीसबआनितऊपुनिअभिलाखिये । भयोबोझभारीकिहूंजातन सैंमारीबातठौरठौर पारपदमांझधरिराखिये । कहतकहतअरुसुनत सुनतवाकेभयेमतवारेबहुग्रंथताकीसाखिये ॥ ३२६ ॥

देही धरी ॥ पद ॥ अब तौ हरी नामलौ लागी साधौ हरी नामलौ

लागी । सब जग को यह माखन चोरा नाम धन्यो वैरागी । कहँ छोड़ी वह मोहन मुरली कहँ छोड़ी सब गोपी । मूंड मुड़ाइ डोरि कटि बांधी माथे मोहन टोपी । मात यशोमति माखन कारण बांधे जाको पांव । श्यामकिशोर भये नवगोरा चैतन्य जाको नांव । पीताम्बर को भाव दिखावै कटिकोपीनकसे । दास भक्तकी दासी मीरा रसना कृष्णवसे ॥ १ ॥ दशमे ॥ आसन्वर्णास्त्रयो ह्यस्य गृह्णतोऽनुयुगं तनूः । शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतांगतः ॥ २ ॥ एकादशे ॥ कृष्णवर्णत्विषा कृष्ण सांगोपांगास्त्रपार्षदाः ॥ यज्ञैःसंकीर्त्तनप्राया यजंतिहि सुमेधसः ॥ ३ ॥ चाषिये॥दोहा॥भूतलगे मदिरापिये, सबकाहू सुधि होइ॥प्रेम सुधारस जिन पियो, तिहि न रहै सुधिकोइ ॥ ४ ॥ जैसे गंगा यमुना सरस्वती महिमा गौर नाम गोरतन अन्तर कृष्ण स्वरूप ॥ ५ ॥

टीकाश्रीकृष्णचैतन्यमहाप्रभुकी ॥ गोपिनकेअनुरागआगेआप हारेश्यामजान्यो यहलालरंगकैसेआवेतनमें । योंतोसबगौरतनीनख शिखबनीठनी खुलेउयोसुरंगरंगअंगरंगेबनमें । श्यामताईमांझसों ललाइहूसमाइजाइतातेमेरेजानफिरिआईयहमनमें । यशुमतिसुतसो ईशचीसुतगौरभयेनयेनयेनेहचोजनाचेनिजगनमें ॥ ३२७ ॥

हारेश्याम ॥ पंचाध्यायी ॥ भगवानपि तारात्रीः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः ॥ वीक्ष्य रंतुं मनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः ॥ २ ॥ कवित्त ॥ पाग जिमिरागही भन्यो है या बांसुरीमें ताको ताने शिखा सुनि गोपी कांत चतिहै । कानमध्य तूलदिये दिये जैसी बाती बरै नाहिं नेउपाइ कोऊ वाद जहीं पचतिहै ॥ बनके पखेरू उठि पांखन बयारि करैं गोकुल की कुलवधू कैसे कैबचतिहै । जरिगई अतिताती ताते तकिनेही कान्हें फूंकिफूंकि गहैं तऊ आगरी नचतिहै ॥ २ ॥ एक ओर बीजना ढुरावति चतुर नारि एक ओर झारी लिये करजलपानकी । पाछेते खवासिनी खवावैं पान खोलि खोलि राधे मुख लाली मानों तम करतानकी ॥ ताही छिन बांसुरी बजाई नँदनन्दन जू आई सुधि वाही ब्रज कुंज की

लतान की। बांयेंगिरि नीरवारी दाहिने समीर वारी पाछे पानदान वारी आगे वृषभान की ॥ ३ ॥ वेमगदापग अंधनिको इन चालिबो आछि निहूं को नियान्यो। सूरति थाह दिखावत वे इन प्रेम अथाह के बारिधि डान्यो। वेवशवास वसावत हैं इन बास छड़ाइ उज्यारनिल्यान्यो। देखो अहो हरि की वंसुरी इन कैसे सुवंशको नाम विगान्यो ॥ ४ ॥ दियाके उज्यार तिय दूधसीरो करतिही संगवाके आसपास भावजन भीरकी। लौनेहू ते सुलख सलोनी साठि सोनेकीसी गौनकीसी आई किधौं आई सुनासीर की॥ काशी राम रूपभरी रतिहूते अति खरी कहूंवाके कान परी वंशी बल वीरकी ॥ सानो लागी तीरकी यापरी है अहीरकी सँभार न शरीरकी न ओरकी न छोरकी ॥ ५ ॥ भूलीसी फिरति फिराति कुंज कुंजनिमें केतौ समझाइ रही बैठीरहो गेहमें।तबतो न मानी काल्ह सुनिवेको जातितान मानी नहीं कान्ह तरुणाई केतेहमें। अव तौ प्रह्लाद डसी विरह के भुअंगम ने अंग रोमरोम विप रमिगयो शरीर में। सांसरी भरन लागी आंसुरी ढरन लागी पांसुरी निकासि आई बांसुरीके नेहमें॥ २॥इन जेते सुरलीने तेते वेधउर कीने जेते राग तेते दाग रोम रोम छीजिये। अन्तरकी सूनीघर करैसूने औरनिके शेपसुनि श्रवण बसेरो वन कीजिये। ताननकी तीखीउर वानन चलाये देत चीरी चीरी अंगनि तुणीन तनकीजिये। बांसुरीवसैंगी तौ हम न वसैंगी श्याम बांसुरी वसाइ कान्ह हमें विदा कीजिये॥ १॥वाजी उठिधाईं वाजी देखिवेको दौरी आई बाजी सुनि आईं पौरि वंशी गिरिधरकी। वाजी हँसि बोलैं बाजी संगलगी डोलैं बाजी भई बौरी बाजिन विसारी सुधि घरकी।बाजी न धरत धीर बाजिन संभारे चीर बाजिन की छाती पर पीर दावानलकी। बाजी कहैं बाजी पुनि बाजीकहैं कहां बाजी बाजीकहैं बाजीवंशी चंचलचतुरकी॥ ३॥ श्लोक॥ तासां तत्सौभगमिदं वीक्षमाणश्चकेशवः। प्रशमायप्रसादाय तत्रैवांतरधीयत ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ जाही कुंज पुंजतर गुंजत भवँर भीर ताही तरुवर तर शीश धुनियत हैं। जाही रसनासे कही रसकी रसीली बात ता-

ही रसनासों आप गुण गुनियतहैं । आलम बिहारी लाल हियेते अचेत भये येहों दई हेत खेत कैसे लुनियतहैं॥जेइ कान्ह आंखिनके तारेहुते निशि दिन तेई कान्ह काननि कहानी सुनियतहैं।।६॥मंजु रची रसरुचिके सुगुमानकी मेंड़ खसाइ गयोरी।थाह बताइहमैं सजनी मँझधारमें छांडिनशागयोरी। खेल संयोगकी नेकोदिखाइ बियोग फनीये कटाइ गयोरी । प्रेमके फंदफँसाइगयो ब्रजमेंघरकान्ह बसाइ गयोरी ॥ २ ॥ कदमकरील तीर पूछति अधीर गोपी आनन रुखौहौंगरौं खरौंई भरौहौंसौं । चोरहो हमारो प्रेम चौत रानि ताऱ्यो गदरानिकसि भाज्यो ह्वैके करिल जौंहौं सो । ऐसेरूप ऐसेभेषमेंहू दिखैयो अति देखतहिं रसखानि नैनचुभोंहौंसों॥। मुकुटझुकौहौं हियहारहैं हरौहौं कटि फेटापियरौहों अंगरंगसबरौ हंसों ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ चूतप्रियालपनसासनकोविदारजम्ब्वर्कबिल्वबकुलांबुक दंवनीपाः । येन्ये परार्थभविका यमुनोपकूले शंसं तु कृष्ण पदवीं रहितात्मनां नः ॥ ४ ॥ पंचाध्यायी ॥ यमुनाके विटप पूछि भई निपट उदासी । क्यों कहिहै सखि महाकठिन येतीरथबासी ॥ श्लोक ॥ पुनः पुलिनमागत्य कालिंद्याः कृष्णभावनाः । समवेता जगुःकृष्णं तदागमनकांक्षया ॥ ॥ ५ ॥ तब गोपी अधीनह्वै वृक्षनसों बलिनसों पूछतभईं महा विह्वल शरीरह्वैगये सोकहैं हैं तुमकहूं श्रीकृष्णदेखे हैं ॥ श्लोक ॥ भजतोपिनवै केचिद्भजंत्यभजतः कुतः । आत्मरामा ह्याप्तकामा अकृतज्ञा गुरुद्रुहः ॥ ६ ॥ नपारयेहं निरवद्यसंयुजां स्वसाधुकृत्यं विबुधायुषापि वः । यामांभजन दुर्जरगेहशृंखलां संवृश्च्य तद्वत प्रतियातु साधुना ॥ ७ ॥ दोहा ॥ कसत कसौटी हेमको, लोकरीति यहनेम । प्रेम नगरकी पैठमें भयो कसौटी हेम ॥ ८ ॥ बातैं श्रीकृष्णजी गोपिकनिके आगेहारे इनके प्रेमको देखिकै महा प्रफुल्लित ह्वैकै हाथजोरिके आइमिले ॥ ९ ॥

आवैकभूप्रेमहेमपिंडवततमहोइकभूसंधिसंधिछूटिअंगबटिजात है । औरएकन्यारीरीतिआंसूपिचकारीमानोंउभैलालप्यारीभाव

सागरसमातहै। ईशतावखानिकहाकरोसोप्रमाणयाको जगन्नाथक्षे त्रनेत्रनिरखिसाक्षातहै । चतुर्भुजषटभुजस्वरूपलैदिखायदियोदियो जोअनूपहितवातपातपातहै ॥३२८॥कृष्णचैतन्यनामजगतप्रकटभ योअतिअभिरामलैमहंतदेहीधरीहै । जितोगौड़देशभक्तिलेशहूनजा नेकोऊ सोऊप्रेमसागरमेंवोरेउकहिहरीहै । भयेशिरमौरएकएकज गतारिवेकोधारिवेकोकौनसाखिपोथिनमेंधरीहै । कोटिकोटिअजामी लवारिडारेदुष्टतापैऐसेहूमगनकियेभक्तिभूमिभरीहै ॥ ३२९ ॥

आवै कभूप्रेम ॥ पद ॥ रासमंडल बने नृत्य नीकी बनी । गौर गोविंदके नयन अरविंदसों छटत आनंद मकरंद चहुंदिशि घनी । ताल वस मृदु चरण धरत धरणी हुलसि बिलस हस्तक भेद चलन लोयन अनी । फुलका आयाद घन कंपभारि थरहरनि परसत प्रस्वेद सुरभेद भारी बनी । अहित सित आरकत धरत जड़ता जवहिं वहिठाढ़े रहत गहत वानक फनी । निपट अवसन्न जब तबहिं क्षिति धुकि परत अंग नाहिं हलत गत श्वासकी निगमनी । ता समय जगतमें जीवजेतिक वसत प्रेम आनंदके होत सबरेधनी । चकृत सब पारषद शब्द मुखमें मिलत लगी टकटकी यह सुख मनोहर भनी ॥

मूल ॥ सूरकवित्तसुनिकौनकविजोनहिंशिरचालनकरै। उक्ति चोजअनुप्रासवरनअस्थितअतिभारी । वचनप्रीतिनिर्वाहअर्थअद्भु तुकधारी । प्रतिबिंबितदिव्यदृष्टिहृदयदेहरिलीलाभासी । जन्म कर्मगुणरूपसवैरसनापरकासी । विमलवुद्धिगुणऔरकीजोयहगुणश्र वणनिधरै । सूरकवित्तसुनिकौनकविजोनहिंशिरचालनकरै ॥ ७३ ॥

शिरचालनकरै ॥ श्लोक ॥ किंकवेस्तस्य काव्येन किं काण्डेन धनुर्भृतः । परस्य हृदये लग्ना यन्न घूर्णयते शिरः ॥ २ ॥ दोहा ॥ किधौं सूरको शर लग्यो, किधौं सूरकी पीर । किधौं सूरको पदसुन्यो, यों शिर धुनत अधीर ॥ २ ॥ कवित्त ॥ जासों मनहोत तासों तन मन दीजियत जासों मनभंग तासों कछू न विशेषिये । बोलै तासों बोलि अन-

बोलै तासों अनबोलि प्रेमरस चाहै तासों प्रेमरस पेखिये । प्रीतिरीति चाहै तासों प्रीति रीति जानियत नातरु अनेक रूप सबही अलेखिये । नर कहा नारी कहा खूबी महाबूबी कहा आपको न चाहै ताहि आपहू न देखिये ॥ ३ ॥ कहावत ऐसे त्यागी दानि । चारि पदारथ दिये सुदामा गुरुके सुत दिये आनि । विभीषणै निज लंकादीनी प्रेमप्रीति पहिंचानि । रावणके दश मस्तक छेदे दृढ़गहिं शारँगपानी । प्रहलादकी जिन रक्षा-कीनी सुरपति कियो निधानि । सूरदासपर बहुत निठुरता नैननहूं की हानि ॥ ४ ॥ बचन प्रीति ॥ ऊधो यह निश्चय हम जानी । खोयो गयो नेह न गुनपै प्रीति कोठरी भई पुरानी । यह लै अधर सुधारस सींची कियो पोष बहु लाड़ लड़ानी । बाहुरौ कियो खेल शिशुको गृह रचना ज्यों चलति बिजानी । ऐसी हितकी रीति दिखाई पन्नग कांचुरी ज्यों लपटानी । फिरिहू सुरति करत नहीं ऐसे त्यागत भँवर लता कुम्हिलानी । बहुरंगी जित जाति तिते सुख एक रंगी दुख देह दहानी । सूरदास पशु-बनी चोरकी खायो चाहैं दाना पानी ॥ ५ ॥

मूल ॥ ब्रजवधूरीतिकलियुगविषेपरमानंदभयोप्रेमकेत । पौगंड बालकिशोरगोपलीलासबगाई । अचरजकहाइहिबातहुतौयहलौज़ु सखाई । नयननिनीरप्रवाहरहतरोमांचरैनिदिन । गदगदगिराउ दारश्यामशोभाभीजेउतन । शारंगछापताकीभईश्रवणसुनतआवेस देत । ब्रजवधूरीतिकलियुगविषेपरमानंदभयोप्रेमकेत ॥ ७४ ॥ श्रीकेशवभटनरमुकुटमणिजिनकीप्रभुताविस्तरी । काश्मीरकीछा पपायतापनजगमंडन । दृढ़हरिभक्तिकुठारआनधर्मविटपविहंडन । मथुरामध्यमलेच्छवदकरिवरबटजीते । काजीअजितअनेकदेखिप रचेभयभीते । विदितबातसंसारसबसंतसाखिनाहिंनदुरी । श्रीके शवभटनर मुकुटमणिजिनकीप्रभुताविस्तरी ॥ ७५ ॥ टीका श्रीकेशवभट्टकी ॥ आपकाशमीरसुनीवसतविश्रामतीरतुरकसमूह द्वारयंत्रइकधारिये । सहजसुभायकोऊनिकसतआइताको पकरत

धाइताकेसुनतनिहारिये । संगलैहजारशिष्यभरेभक्तिरंगमहा अरे वाहीठौरबोलेनीचपटटारिये । क्रोधभरिझारेआयसुवापैपुकारेवेतो देखिसबैहारेमारेजलबोरिडारिये ॥ ३३० ॥

पौगंड बाल किशोर ॥ रसामृते ॥ कौमारं पंचमादात्तं पौगंडं दशमावधि ॥ आषोडशं चकैशोरं यौवनं स्यात्ततः परम् ॥ १ ॥ हरिकुवार॥ दोहा ॥ व्यास विषयजल बटिरह्यो, नीचसंग जलधार ॥ हरिकुठारसों प्रीतिकरि, कटत न लागे वार ॥ २ ॥ वाराहे ॥ अहो मधुपुरी धन्या वैकुंठाच्च गरीयसी ॥ विना कृष्णप्रसादेन क्षणमेकं न तिष्ठति ॥ ३ ॥ जाके सुनत निहारिये ॥ श्लोक ॥ मणिमंत्रमहौषधीनामचिंत्यशक्तिः ॥ ४ ॥ जलबोरिडारिये ॥ कवित्त ॥ गये सबदौरि जहां काजीकी जुपौरियति कियो तिनसोई अजू कीजिये पुकारहै । औ जुकोऊऐसो एक आयोहै जुमथुरामें संगहैं हजार शिष्य तेजका न पारहै। लैके झरकारे थरकारे मति भांतिकह्यो क्योंरे अधर्मी हिंदु धमकियो ख्वारहै । होहु तुम रांडकियो पुरुपारथ भांड़जोई हरिसों विमुख ताको नहीं पारावारहै ॥ २॥ काजी अति डरेउ हिये परेउ खरभरेउ यह कौमआई अरेउ अबकसे का उपाइ मैं । रचे भूत वैताल मूठि दीठि मायाजाल सुदर्शन किये ख्याल सहज सुभाइ मैं । असुरके तनमें सो अगिनि लगाइ दई दई कहो दई कहा कहा कियो हाइमैं । येतोहैं बडे प्रतापी मैं तौ रहौं महापापी अहो मतिथापी आवैं परो भेद पाइ मैं ॥ २ ॥ आयपाइंपरेउनीर नयननि ते ढरेउ बैन कहै मरेउ मरेउ प्रभु मेरी रक्षा कीजिये । तब स्वामी कह्यो तोहिं लैहौं मैं बचाय पुनि एकहै उपाइ सीख सुनि मेरी लीजिये । फेरि जो अधर्म ऐसो करौगे न कर्म आव मेटौ सबगर्भ सदा शीतल ह्वैजीजिये । और जितेबादी हरि विमुख प्रसादी तिन्हैं लीये सतमारगमें नौधारस पीजिये ॥ ३ ॥ जिते हिंदू तुरुकनि सैकरानि मारिहारे भरेदुःखभारे वेतो स्वामि जूपै आये हैं ॥ प्रभु कह्यो आवो अब दुःख जनिपावो कैसो राइ गुणगावो यमुना जल अन्हाये हैं । महीन एक वस्तर लाये तिनकोलै

पहराये हिंदूको चिह्नपाये जग यश गाये हैं । तुरक तिया काह्न धरीआइ सब पाई परी करी प्रभु दया नरनारी दरशायेहै ॥ ४ ॥

मूल॥ श्रीभटसुभटप्रगटयोअघटरसरसिकनमनमोदघन । मधुरभावसंमिलितललितलीलासुवलितछबि । निरखतहरषतहृदैप्रेमबरषतसुकलितकबि । भवनिस्तारनहेतदेतदृढ़भक्तिसबनानित । जासुसुयशशशिउदैहरतअतितमभ्रमश्रमचित । आनंदकंदश्रीनंदसुतश्रीवृषभानुसुताभजन । श्रीभटसुभटप्रगटयोअघटरसरसिकनमनमोदघन ॥ ७६ ॥ श्रीहरिव्यासतेजहरिभजनबलदेवीकोदीक्षादई । खेचरनरकीशिष्यनिपटअचरजयहआवै । विदितबातसंसार संतमुखकीरतिगावै । बैरागिनिकेवृन्दरहत सँगश्यामसनेही । ज्योंयोगेश्वरमध्यमनोशोभितवैदेही । श्रीभटचरणरजपरसिकैसकलसृष्टिजाकीनई । श्रीहरिव्यासतेजहरिभजनबलदेवीकोदीक्षादई ॥ ७७॥

मधुर कहिये माधुर्य शृंगाररस ॥ पद ॥ राधिका आजु आनंदमें डोलैं। सांवरेचंद गोविंदके रस भरी दूसरी कोकिला मधुरसुरबोलैं । पहर पट नील तान कनक हीरावली हाथलै आरसी रूपको तौलैं। जै श्रीभट आजु नागरि नीकी बनी कृष्णके शीलकी ग्रंथको खोलैं ॥ २ ॥ संतो सेव्य हमारे श्री प्रियप्यारे बृन्दाबिपिन बिलासी । नंद नँदन वृषभानु नंदनी चरण अनन्य उपासी । मतप्रणय वश सदा एक रस विविध निकुंज निवासी । जै श्रीभट युगुल बंशीवट सेवत मूरति सब सुखरासी ॥ २ ॥ तौ नंद वृषभान कहैं इनके उपासिक श्री राधाकृष्णके संतहैं ॥ ३ ॥ दोहा ॥ साधुसराहैं सो सती, यती योषिता जानि । रज्जवसांचे शूरको, वैरीकरै बखानि ॥

टीकाश्रीहरिव्यासदेवकी ॥ चढ़थावरगावबागदेखिअनुरागभयोलयोनितनेमकरिचाहैपाककीजिये । देवीकोस्थानकाहूबकरालैमारोआनिदेखतगिलानिइहांपानी नहींपीजिये । भूखोनिशिभईभक्तितेजमिटिगईनई देहधरिलईआइलखिमतिभीजिये । करौजूरसोईकौन

करैकछूऔरैभोईसोईमोकोदीजैदानशिष्यकरिलीजिये ॥ ३२१ ॥
करीदेवीशिष्यसुनिनगरकोसटकीयोंपटकीलैखाटजाकीवड़ोशिरदा
रहै । वढ़ीमुखवोलैंहौंतौभईहरिदासदासीजौनदासहोहुतौपैअभीडा
रौमारहै । आयेसवभृत्यभयेमानोंतननयेलयेगयेदुखपायतापकिये
भवपारहै । कोऊदिनरहेनानाभोगसुखलहेएक श्रद्धाकेसुपचआयो
पायोभक्तिसारहै ॥ ३२२ ॥

पायो भक्तिसार है ॥ श्लोक ॥ अश्वत्थं काकविष्ठाया जातइत्युच्यते बुधैः । देवानामपिनृणांवै पूज्य एव न संशयः ॥ पद ॥ जाति भेद जो करै भक्त सो तौ वड़ो पापी । ताते भलो वधिक पर निंदक गुरु-तालप मदरापी । वायसकी विष्ठासों उपजै पीपर नाम कहावै । परिकर्मा दंडवत करै द्विज सव जग पूजन आवै । तुलसी जो घूरेपै उपजै दोष न कोई धरई । ता तुलसीके पात फूल दल हरि पूजनको रहई । कूकरमरै गोमती संगम अश्व चक्र ह्वैरहही । तिन चक्रनको सव जग वन्दै दोष न कोऊ कहही । ज्यों जल वरषै पुरवीथिनमें गंगामें वहि आवै । सो तिहि परशि महा अपराधी कल्मष सवै नशावै । सेन धना रैदास कवीरा और किते परवाना । इनको दरशन दीनो है हरि प्रगट सवै जग जाना ॥ योग यज्ञ जप तप व्रत संयम इनमें तौ हरि नाहीं । गंगाराम हित नवल युगलवर वसत भक्त उरमाहीं ॥ २ ॥

मूल ॥ अज्ञानध्वांतअन्तहिकरनद्वितियदिवाकरअवतरचो । उ
पदेशेनृपसिंहरहतनितआज्ञाकारी । पक्ववृक्षज्योंनायसंतपोपकउप
कारी । वानीभोलारामसुहृदसवहिनपरछाया । भक्तचरणरजयाचि
विशदरावचगुणगाया । करमचंदकश्यपसदनवहुरिआइमनोंवपुध
रचो । अज्ञानध्वांत अंतहिकरनद्वितीयदिवाकरअवतरचो ॥ ७८॥
श्रीविट्ठलनाथव्रजराजज्योंलाललड़ाइकेसुखलियो । रागभोगनितवि
विधहरतपरिचर्य्यातततपर । शय्याभूषणवसनरुचिररचनाअपनेकर।
वहगोकुलवहनंदसदनदीक्षतकोजोहै । प्रगटविभवजहँघोपदेखिसुर

पतिमनमोहै । बल्लभसुतबल्लभजनकेकलियुगमेंद्वापरकियो । श्री विट्ठलनाथब्रजराजज्यों लाललड़ाइकेसुखलियो ॥ ७९ ॥ टीका ॥ कायथत्रिपुरदासभक्तिसुखरासभयोकरयो ऐसेपनशीतदगलापठा इये । निपटअमोलपटहियेहितजटिआवेतातेअतिभावैनाथअंगपहि राइये । आयोकोऊकालनरपतितेबिहालकियोभयोईशव्यालनेकुघ रमेंनखाइये । वहीऋतआईसुधिआईआंखिपानीभारि आई एकखा-तिदीठिआईवेलिलाइये ॥ ३२३ ॥

चरण रज यांचि देव प्रसन्न कियो बरमांगौं वह चतुर अधवंश धन नहीं पुत्रको सोनाके कटोरामें दूध प्यावते देखो ऐसे आत्म हरि ज्ञान ॥ ॥ १ ॥ ब्रजराज ज्यों ॥ पद ॥ जे वसुदेव किये पूरण तप तेइ फल फलत श्री वल्लभ देव । जे गोपाल हुते गोकुलमें तेई अब आनि वसे करि गेह । ते वे गोपवधू हुती ब्रजमें आवतेई वेद ऋचा भई येह । छीतस्वामी गिरिधरन श्री बिठल वेई वेई बेष पैई कछु न सँदेह ॥ २ ॥ भेदियाकी प्रेरणा दई आये इनवे ॥ ३ ॥

बेंचिकेबजारयोंरुपैयाएकपायो ताकोलायोमोटोथानमात्ररँगला लगाइये । भीज्योंअनुरागपुनिनयनजलधारभीज्योभीज्योदीनताई धरिराखो औरैआइये । कोऊप्रभुजनआइसहजदिखाईदई भईमनदि योलैभँडारीपकराइये । काहूदासदासीके नकामकोपैजाउलैकेबिन तीहमारीजूगुसाईनसुनाइये ॥ ३२४ ॥ दियोलेभंडारीकरराखेधारिप टवायेनिपटसनेहीमाथबोलेअकुलाइके । भयेहेजड़ायेकोऊबेगिहीउ पायकरैविविधउठाये अंगबसनसुहाइके । आज्ञापुनिदईयोंअँगी ठीबारिदईफेरिवहीभई सुनिरहेअतिहीलजाइके । सेवकबुलाइक हीकौनकीकवाइआईसबैसोसुनाईएकवहलीबिचाइके ॥ ३२५ ॥ सुनीनात्रिपुरदासबोल्योधननाशभयो मोटौएकथानआयोराख्योहै बिछाइके । लावोवेगियाहीक्षणमनकीप्रवीनजानिलायोदुखमानिज्यों तिलईसोसिमाइके । अंगपहराईसुखदाईकोपेगाईजातिकहीजबबात

जाड़ोगयोभरिभाइके । नेहसरसाईलैदिखाईउरआईसबै ऐसीरसिकाईहृदयराखीहैवसाइके ॥ ३२६ ॥

नेह सरसाई ॥ दोहा ॥ हरिरहीम ऐसी करी, ज्यों कमान शर पूर ॥ खैंचि आपनी ओर को, डारि दियो अति दूर ॥ १ ॥ यह कहिकै मंदिरके द्वार पै गोविंद कुण्ड की छत्री पैजाय बैठे गुसाँई के टहलुवा प्रसाद लायो सो न लियो तव नाथजी आपही लाये ॥ दोहा ॥ खौंचि चढ़निटीली ढरनि, कहो कौन यह प्रीति ॥ आज काल्हि मोहनगही, वंश दिया की रीति ॥ कवित्त ॥ जबलौं न कोऊ पीर लागतिहै अपने उर तवलौं पराई पीर कैसे पहिंचानिहौं । आजुलों न जानतहौं लग्योहै नेह काहूसों जबनेह लागिहै तौ हित उनमानिहौं । कहत चतुर कवि मेरे कहिबे की तौ एकौ न रहेगी तब समझि जिय आनिहौं । जैसे नीके मोहिं तुम लागतहो प्यारेलाल तैसो नीको तुम्हैं कोऊ लागिहै तौ जानिहौं ॥ १ ॥ तव रहीम पीठि फेरि लई नाथजी थार धरिके अंतर्ध्यान होत भये तब यह पद गायो ॥ पद ॥ छवि आवन मोहनलालकी । लाल काछनी काछे कर मुरली पीत पिछौरी सालकी । वंक तिलक केसरिको किये द्युति मानों विधुवालकी । बिसरत नाहिं सखी मोमनते चितवनि नयन विशालकी । नीकी हँसनि अधर सधरनिकी छवि छीनी सुमन गुलालकी ॥ जलसों डारि दियो पुर इनपर डोलनि मुक्ता मालकी ॥ आपमोलबिन मोल न डोलनि बोलनि मदन गोपालकी । यह स्वरूप निरखै सोइ जानै इस रहीम के हालकी ॥ २ ॥ कमलदल नैननिकी उन मानि । बिसरत नाहिं सखी मोमन ते मंद मंद मुसकानि । यह दशननिद्युति चपलाहूते महा चपल चमकानि । वसुधाकी वशकरी मधुरता सुधापगी वतरानि । चढ़ी रहे चितउर विशालकी मुक्तमाल थह रानि । नृत्य समय पीतांवर हूकी फहर फहर फहरानि । अनुदिन श्रीवृंदावन व्रजते आवन आवन जानि । छवि रहीम चितते न टरतिहै सकल श्यामकी वानि ॥ ३ ॥ दोहा ॥ मोहन छवि नैननिबसी, परछवि दृगनि सुहाइ । भरी सराइ रहीम ज्यों, पथिक

आइ फिरिजाइ ॥ ४ ॥ अंतर दाव लगीरहै, धुवां न प्रगटै सोइ । कै जिय जानै आपनो, कैजाशिर बीती होय ॥ ५ ॥ तिहि रहीम तनमन दियो कियो हिये में भौन । तासों दुख सुख कहनकी, बात रही अब कौन ॥ ॥ ६ ॥ स्त्रीकी चूरीको दृष्टांत ॥ ७ ॥

मूल ॥ श्रीविठ्ठलेशसुतसुहृदश्रीगोवर्द्धनधरध्याइये । श्रीगिरिधरजूसरसशीलगोविंदजुसाथहि । बालकृष्णयशवीरधीरश्रीगोकुलनाथहि । श्रीरघुनाथजुमहाराजश्रीयदुनाथहिभजि । श्रीघनश्यामजुपगेप्रभुअनुरागीसुधिसजि । येसातप्रकटविभुभजनजगतोरततसयशगाइये । श्रीविठ्ठलेशसुतसुहृदश्रीगोवर्द्धनधरध्याइये ॥ ॥ ८० ॥ गिरिधरनरीझिकृष्णदासकोनाममांझसाझोदियो । श्रीवल्लभगुरुदत्तभजनसागरगुणआगर । कवित्तनोषनिर्दूषनाथसेवामेंनागर । वाणीवंदितविदुषसुयशगोपालअलंकृत । ब्रजरजअतिआराध्यवहैधारीसर्वसुचित । सांनिध्यसदाहरिदासवर्यगौरश्यामदृढ़व्रतलियो । गिरिधरनरीझिकृष्णदासकोनाममांझसाझोदियो॥८१॥

यदुनाथ ॥ सवैया ॥ शीश दिनेश तपै जिहि बार सुबारहि बार विहारीको ऐबो । बास में बैरिनि आरज लाज सुएकहुबार बनैं न चितैबो । शोच यहै सजनी रजनी दिन कौन से अवसर अवसर पैबो । जानतहौं यदुनाथ यहै कबहूं कमहौसानिही मरिजैबो ॥ २ ॥ पद ॥ बातनहीं हौं पतित पावन । मोते काम परे जानोगे बिन रणशूर कहावन ॥ सतयुग त्रेता द्वापरहूके पतितनकी गति आपी । हमैं उन्हैं बहुतै अंतरहै हम कलियुगके पापी ॥ कोऊ टांकद्वै टांक पौसेरा बडी बडाई सेर । हौं पूरन पति ताई ऐसो त्यों आननि में मेर ॥ हौं दिनमणि खद्योत आनखल अविद्याको जु उजागर । गोपद पावनके न सरबरैं हौं दुर्मति जल सागर । पतित पावनहै बिरद तिहारो सोइ करौ परवान । पाहन नाव पार करौ नाभाको केहर पकरौ कान ॥ २ ॥

टीका ॥ प्रेमरसरासिकृष्णदासजू प्रकाशकियोलियोनाथमानि

सोप्रमाणजगगाइये । दिल्लीकेवजारमेंजलेवीसोनिहारिनयनभोगले लगाईलगीविद्यमानखाइये । रामसुनिभक्तनकोभयो अनुरागवसि शशिमुखलालजूकोजाइकैसुनाइये । देखिरिझवाररीझिनिकटबुलाइ लयेलईसंगचलेजगलाजकोवहाइये ॥ २३७ ॥ नीकेअन्हवाइपटआ भरणपहिराइसुगन्धहूलगाइहारिमंदिरमेंलायेहैं । देखिभईमतवारीकी नीलै अलापचारीकह्योलालदेखिबोलीदेखेमोहभायेहैं । नृत्यगानता नभावमुरिमुसकानिदृगरूपलपटानीनाथनिपटरिझायेहैं । ह्वैकैतदा कारतनछूटेउअंगीकारकरीधरीउरप्रीतिमनसवकेभिजायेहैं ॥२३८॥ आयेसूरसागरसोकहीवड़ेनागरहौ कोऊपदगावोमेरीछायानमिलाइ ये । गायेपांचसातसुनिजातमुसुकातकही भलेजूप्रभातआनिकरिकै सुनाइये । परेउशोचभारीगिरिधारीउरधारीवातसुंदरवनाइसेजधरेउ योंलखाइये । आइकेसुनायोसुखपायोपक्षपातले वतायोहूमनायोरंग छायोअभूंगाइये ॥ २३९ ॥

दिल्लीके सेवकनको प्रसाद दियो काहूनेतौ लियो कही अधिकारी भ्रष्ट-भयो है काहू लयो पै पायो नहीं विचार्‌यो वडेनकी क्रिया में मन दीजै कौ भावसों भोग लगाइये तापै दृष्टांत नारदजीको नृत्यगान ॥ पद ॥ मोमन गिरिधर छविपर अटक्यो । ललित त्रिभंगी अंगनपर चलिगयो तहांही ठटक्यो । सजलश्याम घन वरण नीलह्वै फिरि चित अनतन भट क्यो । कृष्णदासके प्राण निछावरि यह तन जग शिर पटक्यो ॥ २ ॥ दोहा ॥ सखियां कखियां हाथदे, तन राख्यो ठहराइ । मनहरि मदिरा छविछक्यो, दईनारि लटकाइ ॥ २ ॥ अभूंलगि गाइये ॥ पद ॥ आवत वनकान्ह गोप बालक संग नेचुकी खुररेणु छुरित अलकावली । भौंहमन्मथ चाप वक्र लोचन वाण शीश शोभित मत्तमोर चन्द्रावली । उदित उडुराज सुंदर शिरोमणि वदन निरखि फूली नवलयुवति कुमुदा-वली । अरुण सकुचत अधर विंवफल उपहसत कछुक प्रगटे होत कुमुद दशनावली । श्रवण कुंडल तिलक भाल बेसरि नाक कंठ कौस्तुभमणि

शुभग त्रिवलीवली । रत्न हाटक खचित उरसि पद कनक पांति बीच राजत शुभ झलक मुक्तावली । वलय कंकण वाजुबंद आजानु भुज मुद्रिका करतल बिराजत नखावली । कुणित कर मुरलिका अखिल मोहित विश्व गोपिका जन मन ग्रन्थित प्रेमावली । कटि क्षुद्रघंटिका कनक हीरामई नाम अंबुज बलित श्रृंगार रोमावली । धाइ कबहुंक चलत भक्त हित जानि पिय गंड मंडल रचित श्रम जल कणावली । पीतकौशेय प्रधान सुंदर अंग बजत नूपुर गीत भरत सदावली । हृदय कृष्णदास बलि गिरिधरन लालकी चरणनख चंद्रिका हरत तिमिरावली ॥ २ ॥ यहपद गावत सुनतप्रभु, हर्षतहियसुखपाइ । छवि निरखत हरि आपनी, मनहीं मन मुसक्याइ ॥

कूवामैंईखिसिलेदेहछुटिगईनईभईभयो अशंकाकछूऔरैउरआई है । रसिकनिमणिदुखजानिसोसुजाननाथदियोदरशाइतनग्वालसु खदाइये । गोवर्द्धनतीरकहीआगेबलवीरगये श्रीगुसाईंधीरसोंप्रणा मयोंजनाइये । धनहुवतायोखोदिपायोविश्वासआयो हियेसुखछा योशंकएकलेबहाइये ॥ ३४० ॥ मूल ॥ श्रीवर्द्धमानमंगलगँभीरउ भैथंभहरिभक्तिके । श्रीभागवतबखानिअमृतमयनदीवहाई । अ मलकरीसबअवनितापहारकसुखदाई । भक्तनसोंअनुरागदीनसों परमदयाकर । भजनयशोदानंदसंतसंघटकेआगर । भीषमभट अंगजउदारअतिकलियुगदातासुगतिके । श्रीवर्द्धमानमंगलगँभीर उभैथंभहरिभक्तिके ॥ ८२ ॥ रामरामप्रतापतेखेमगुसाईंखेमकर । रघुनंदनकोदासप्रकटभूमंडलजान्यो । सर्वसुसीतारामऔरकुछुउर नहिंआन्यो । धनुषबाणसोंप्रीतिस्वामिकेआयुधप्यारे । निकटनि रंतररहतहोतकबहूंनहिंन्यारे । शूरबीरहनुमंतके सदृशपरमउपास कप्रेमभर । रामरामप्रतापतेखेमगुसाईंखेमकर ॥ ८३ ॥

माथुर बाराह पुराण में लिख्यो है सब ब्राह्मणनके मुकुट माथुर सो मथुरियनि के मुकुट मणि बिठ्ठलदास ॥श्लोक॥ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वा य

दिवेतरः ॥ विष्णुभक्तिसमायुक्तो ज्ञेयः सर्वोत्तमोत्तमः ॥ २ ॥ मानदद ॥ तृणादपि सुनीचेन तरोरिव सहिष्णुना ॥ अमानिनां मानदेन कीर्त्तनीयः सदाहरिः ॥ २ ॥ गुनहिगुनअंतरधान्यो संतनिको सुभाव सूपको सोहै सारही लेहिं असार फटाकि डारें असंतको सुभाव चालिनी कोसों ॥ ॥ ३ । ४ । ५ । ६ ॥

विठ्ठलदासमाथुरमुकुट भयोअमानीमानप्रद । तिलकदास सोंप्रीतिगुणहिगुणअंतरधारेउ । भक्तनकोउत्कर्षजन्मभरिरसनउचारेउ । सरलहृदैसंतोषजहांतहँपरउपकारी । उत्सवमेंसुतदानकियौक्रमदुष्कृतभारी । हरिगोविंदजयजयगोविंदगिराहुसदआनंदकृत । विठ्ठलदासमाथुरमुकुटभयोअमानीमानप्रद ॥ ८४ ॥ टीका ॥ भाईउभैमाथुरसोंरानाकेपुरोहितहेलरिमरे आपसमेंजियोएकजामें है । ताकोसुतविलसुदाससुखराशिहियेवैसथोरीभयोवड़ोसेवैश्यामें है । वोल्योनृपसभामध्यआवतनविप्रसुतक्षिप्रलैकेआवौकहीकहोपूजेकामहै । फिरिकेवुलायोकरौजायरणयाहीठौर काहूसमझायोगावैनाचैप्रेमधामहै ॥ ३४१ ॥ गयेसंगसाधुनलैविनयरंगरँगेसवराना उठिआदरदेनीकेपधरायेहैं । कियेजाविछौनातीनिछातिनके ऊपर लैनाविगाईआयेप्रेमगिरेनीचेआयेहैं । राजामुखभयोश्वेतदुष्टनको गारीदेत संतभरिअंकलेतघरमधिलायेहैं । भूपवहूभेंटकरीदेहवाही भांतिपरीपाछे सुधिभईदिनातीसरेजगायेहैं ॥ ३४२ ॥ उठजवमापनेजनायसववातकही सहीनहींजातिनिशिनिकसेविचारिकै । आयेयोंछटीकरामें गरुड़गोविंदसेवाकरतमगनहियेरहतनिहारिकै । राजाकेजोलोगसुतौढूंढ़िकररहेवैठि तियामातुआइकरेरुदनपुकारिकै । कियेलेउपाइरहीकितौ हाहाखाइयेतौ रहेमड़रायतववसीमनहारिकै ॥ ३४३ ॥

विनय रंगरंगे ॥ कवित्त ॥ कविता रसिकतादि गुन सव उर वसे नम्रता सजनता न रीझि आप पास में । वातें गाढ़ि छोलि कहैं

द्दशभागवतवखाने । श्रुतिस्मृतिसंवतपुराणततमुद्राधारीभुजा कमलाकरभटजगतमेंतत्त्ववादरोपीध्वजा ॥ ८६ ॥ ब्रजभूमिउपासकभट्टसोरचिपचिहारिएकैकियो । गोप्यस्थलमथुरामंडलजिसेवाराहवखाने । तेकियेनारायणप्रकटेप्रसिद्धपृथ्वीमेंजाने । भक्तिसुधाकोसिंधुसदासतसंगसमाजन । परमरसज्ञअनन्यकृष्णलीलाकोभाजन । ज्ञानस्मारतकपक्षकोनाहिंनकोउखंडनवियो । ब्रजभूमिउपासकभट्टसोरचिपचिहारिएकैकियो ॥ ८७ ॥ टीका ॥ भट्टश्रीनारायणजूभयेब्रजपरायणजायताईग्रामतहांव्रतकरिध्यायेहैं । बोलिकैसुनावैंइहांअमकोसरूपहैजू लीलाकूडधामश्यामप्रगटदिखायेहैं । ठौरठौररासकेविलासलैप्रकाशकियेजियेयोंरसिकजनकोटिसुखपायेहैं । मथुरातेकहीचलौवैनीपूछैवैनीकहोऊंचेगावआइखोदसोतलैदिखाये हैं ॥ ३४९ ॥

ब्रजभूमि ॥ कवित्त ॥ ब्रजमान ब्यापक अखंड प्रेम ब्रह्म जैसे सच्चित आनंद माया त्रिगुणते न्यारो है । जाके वन उपवन ग्राम नदी परवत हरिरूप रचे हरिखेले खिलख्यारो है । रत्नमय भूमि अरु अमृतमय जल ताको मारुत सुगंधनि सों भन्यो हरियारो है । ब्रह्मा शिव नारद मुनींद्रकहैं वेद चारो खेद मिटिजाइ जाके सुमिरो उचारो है ॥ १ ॥ दोहा ॥ ब्रजवृन्दाबन अवटरस,राधा कृष्ण स्वरूप। नाम लेत पातक कटै,ज्यों हरिनाम अनूप ॥ २ ॥ ज्ञान कृष्णरत सो ज्ञान अद्वैत वेदांत सों सुखी रहत है ॥ ३ ॥

मूल ॥ श्रीब्रजवल्लभवल्लभसुदुर्लभसुखनयननदिये । नृत्यगानगुनिनिपुणरासमेंरसबरषावत । अवलीलाललितादिवलितिदंपतिहिरिझावत । अतिउदारानिस्तारसुयशब्रजमण्डलराजत । महामहोत्सवकरतबहुतसबहीसुखसाजत । श्रीनारायणभट्टप्रभुपरमप्रीतिरसवशकिये । श्रीब्रजवल्लभवल्लभसुदुर्लभसुखनयननदिये ॥ ८८ ॥ मूल संसारस्वादसुखबातज्योंदुहुश्रीरूपसनातनत्यागदियो । गौड़देशबंगालहुतेसबहीअधिकारी । हयगयभवनभँडारविभवभूभुजअ

सुहारी । यहसुखअनित्यविचारवासवृन्दावनकीनो । यथालाभ संतोषकुंजकरवामनदीनो । ब्रजभूमिरहस्यराधाकृष्णभक्ततोषउद्धारकियो॥संसारस्वादसुखवातज्योंदुहुश्रीरूपसनातनत्यागदियो ८९॥

संसारस्वाद ॥ भागवते ॥ जहौ युवैव मलवदुत्तमश्लोकलालसः ॥ भर्तृहरिशतके ॥ यां चिंतयामि सततं मयि सा विरक्ता साप्यन्यमिच्छति जनं सजनोन्यसक्तः । अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या धिक्तां च तं च मदनं च इमांच मांच ॥ २ ॥ कवित्त ॥ जिते मणि माणि कहैं जोरे मणि माणिकहैं धरामें धरा धूरही मिलाइवी । देह देह देह फेर पौपाइहै न ऐसी देह कौन जानै कौन देह कौन योनि जाइवी । भूख एक राखै मतिराखै भूख भूषणकी भूषणकी भूषण ते भूषण न पाइवी । गगनके जगम गन गगन न देह घाते नगन चलैंगेसाथ नगन चलाइवी । भुवन अनुहारि वादशाही की उनहारि तापै दृष्टांत गुलामको अनित्य विचार ॥ श्लोक ॥ धनंहिपुरुषोलोके पुरुषंधनमेवच । अवश्यमेकं त्यजति तस्मात्किं धनतस्त्वया ॥ ४ ॥ विना परमेश्वर निर्वाह काहूको नहीं ॥ ५ ॥

टीका ॥ कहतवैरागगयेपागिनाभास्वामीजू वेगईयोनिवरतुकपां चलागीआंचहै । रहीएकमांझधरचोकोटिककवित्तअर्थयाहीठौरलै दिखायोकविताकोसांचहै । राधाकृष्णरसकीआचारजताकहीयामें सोईजीवनाथभटछ्पैवानीनाथहै । वड़ेअनुरागीयेतोकहिवोबड़ाईक हा अहोजिनकृपाहृष्टप्रेमपोथीवांचहै ॥ ३५० ॥ वृंदावनब्रजभूमि जानतनकोऊप्रायदईदरशाईजैसीशुकमुखगाई है । रीतिहूउपासना कीभागवतअनुसारलियो रससारसोरसिकसुखदाई है । आज्ञाप्रभु पाइपुनिगोपेश्वरलगेआई कियेग्रंथभाइभक्तिभांतिसवपाई है । एक एकवातमेंसमातमनवुद्धिजव पुलकितगातदृगझरीसीलगाई है ॥ ॥ ३५१ ॥ रहैनंदगांवरूपआयेश्रीसनातनजू महासुखरूपभोगखी रकीलगाइये । नेकुमनआइसुखदाईप्रियालाड़िलीतू मानोंकोऊवाल

कीसुसौंजसबलाइये । करिरसोईसोईलैप्रसादपायोभायोअमलसोंआ योचढ़िपूछीसोजनाइये । फेरिजिनऐसीकरौयहीदृढ़हियेधरौढरो निजचालिकहिआंखेंभरिआइये ॥ ३८२ ॥

सांचहै ॥ दोहा ॥ थोड़े अक्षर रससहित, कहैं सुनै रससार । ताहि मनोहर जानियो, रसिक चतुरनिरधार ॥ कवित्त ॥ भक्त रसरूप राधा कृष्णरसरूप पद रचनाकेरूप यातेरूपनाम भाषिये । त्यागरूप भागरूप सेवा सुखसाजरूप रूपही की भावना औ रूप मुखचाखिये । कृपारूप भावरूप रसिक प्रभावरूप गावत जातरूप लखिमन अभिलाषिये । महाप्रभु कृष्ण चैतन्यजूके हृदयरूप श्रीगुसाँई रूप सदा नयननिमें राखिये ॥ २॥ शुकमुखसों रजयमुनागाई रत्नादिक नगाये ॥ ३ ॥

रूपगुणगानहोतकानसुनिसभासब अतिअकुलानप्राणमुरछासी आईहै । बड़ेआपधीररहेठाढ़ेनशरीरसुधिबुधिमेंनआवैऐसीबातलैदिखाई है । श्रीगुसाईंकर्णपूरिपाछेआइदेखेआछे नेकुढिगभयेइवासलाग्योतबपाई है । मानोंआगआंचलागीऐसोतनाचिह्नभयो नयोयहप्रेमरीतिकापैजातिगाईहै ॥ ३८३ ॥ श्रीगोविंदचंदआइनिशिकोसुपन दियो दियोकहिभेदसबजासोंपहिचानिये । रहोंमेंखरिकमांझखोखैनिशिभोरसांझसींचै दूधधारगाईजाइदेखिजानिये । प्रगटलैकियोरूपअतिहीअनूपछवि कविकैसेकहैंथकिरहेलखिमानिये । कहांलौंबखानोंभरेसागरनगागरमें नागररासिकहियेनिशिदिनआनिये ३८४॥

ऐसी बात ॥ दोहा ॥ हृदय सरोवर छलछलहि, दंत गयंद झकोर । महासमुद्राहि परै जब, पावत ओरनछोर ॥ २ ॥ कवित्त ॥ पावक प्रचंडहूके पुंजते अधिकताते वज्रसों विचारौ कहाताकी समतूलहै । कोटिक कटककी मुकुटताके आगेकहा महा दुःख दारुणके डरहूको मूलहै । जाके डरमीचहूनआवै पानलेत और सोई रैनि दिनमोही सरको न शूलहै । मरयोहूनजाय कितौ जियोहाइहाइ यह नेह किधौंवैरी देवताही मति भूलहै ॥ २ ॥ कौने कह्यौ बधिरे अवधिके करैया लागि येरेबि-

नकहैं ऐसो काम कारियतुहै । जासों भजै छूटियेन डरेहू अहूंटिये जू टूटिये पतंगलौं पुकारे पारियतु है । नंद न अचम्भौ और गोकुलकचंद कीसों हरिहारि हाइहाइ वरैं मारियतुहै । कहाकहि कासों तोसों बावरे विरंचि ऐसो पावकको नाम कहूं प्रेम धरियतुहै ॥

रहैंश्रीसनातनजूनंदगांवपावनपै आवनदिवसतीनिदूधलैकेप्यारिये । सांवरोकिशोरआपपूछैंकिहिओररहौकहैंचारिभाईपितारोतिहूउचारिये । गयेग्रामबूझिघरहरिपैनपायेकहूं चहूंदिशिहेरिहेरिनयनभरिडारिये । अबकैजोआवैफेरिजाननहिंपावैशीशलालपागभावै निशिदिनउरधारिये ॥ ३८५ ॥ कहीव्यालीरूपवेनीनिरखिस्वरूपनयन जानीश्रीसनातनजूकाव्यअनुसारिये । राधासरतीरद्रुमडारगहिमूलेफूले देखतसफलफानिगतिमतिवारिये । आयेयोंअनुजपासफिरेआसपासदेखि भयोअतित्रासगहेपांवउरधारिये । चरितअपारउभैभाईहितसारपगें जगेजगमाहिंमतिमनमेंउचारिये३८६॥

शीशलालपाग ॥ सवैया ॥ वरषा उघरैं ऋतु सावनकी निकस्यो वह छैल महाछल डारे । फूल अनार के रंग रँगी पगियाखिरकी न वनाय सँवारे ॥ तादिन ते रँग और कहै हो सखी सुन श्यामा सुने झिझकारे । झुके दृग वाल लखे तव लाल सुभाल पै लालही पाग निहारे॥१॥ व्याली रूप देखत सफल फानि ॥ कवित्त ॥ पीतपट नाकतही दीठि डसिलेते फिरि फैलिके विरह विष रोम रोम छावतो । हौतौ जब ऐसो हाल केतेव्रज वासिनको ऐसो कोक गाडरू कहांते ढूंढिलावतो । ईश्वर दुहाई जोपै होतो ऐसी नागिनतो कालीको नथैया कान्ह काहेको कहावतो ॥ मुरि मुसकानि मंत्र जानति नराधे जीतो वेनीकीडसनि व्रजवसन नपावतो ॥ १ ॥ वेणीव्यालांगनाफणी ॥ २ ॥

मूल ॥ श्रीहरिवंशगोसाईंभजनकीरीतिसुकृतकोईजानि है ॥ श्रीराधाचरणप्रधानहृदयअतिसुदृढ़उपासी । कुंजकेलिदंपतितहांकीकरतखवासी॥सर्वसुमहाप्रसादप्रसिद्धताकेअधिकारी । विधिनिषे

धनहिंदास अनन्यउतकटव्रतधारी। व्याससुवनपथअनुसरैसोईभलै-पहिंचानिहै।श्रीहरिवंशगुसाईंभजनकीरीतिसुकृतकोईजानिहै॥९१॥

हरिवंशगुसाईं ॥ पद॥ बंदौं राधिका पदपदम। परम कोमल शुभग शीतल कृपायुत सुख कदम ॥ चरणचिंतत अमल उरसिज जगत सबही छदम। भालपर अक्षर अनायास सोहै होतपरसत रदम॥ कृष्ण अलंकृत स्वहस्तपूजन निगम नूपुर रदम। रसिक जनजीवन समूली अग्रसर बसुसदम ॥ रीति सुकृत ॥ कवित्त ॥ जाके हित हेत धनधाम तजिदेतपुनि वनवासलेत मुनि क्लेशन करतहैं। तारीलै लगावैं देहसुधि बिसरावैं तऊ उरमें न आवै तब दुखमें जरत हैं। बहुत उपाय करैं मरिबेते नाहीं डरैं गिरिहूते गिरैं नदीमाहिं न परत हैं। ऐसे नंदनंदन महावर सुजाके देत ताको व्यासनंदन जू ध्यानहीं धरतहैं। सुधानिधौ ॥ यस्याः कदापिवसनांचलखेलनोत्थधन्यातिधन्यपवनेनकृतार्थमानी। योगीन्द्रदुर्गमगतिर्मधुसूदनोपि तस्यैनमोस्तुवृषभानुभुवोदिशेपि ॥ ॥ २ ॥ ब्रह्मवैवर्ते ॥ राशब्दंकुर्वते राधा ददामिभक्तिमुत्तमाम्। धाशब्दं कुर्वतेपश्चाद्द्यामिश्रेणैवलोभितः ॥ ३ ॥ राधाचरण प्रधान ॥ दोहा ॥ कुँवरि चरण अंकित धरणि, देखत जिहिजिहि ठौर। प्रियाचरण रजजानिकै, लुटत रसिक शिरमौर ॥ ३ ॥ जिहिउर सर राधा कमल, बसौलसौ बहुभाय ॥ मोहन भौंरा रैनिदिन, रहै तहां मड़राय ॥ ६ ॥ चौपाई॥ जाके हियेसरहितजलनाहीं। राधापदकलताननमाहीं ॥ चरणकमल उदय होइ जौलौं। मोहन भँवरन आवै तौलौं ॥ २ ॥ कवित्त ॥ ब्रह्ममें ढूंढ़ौं पुरानमें ढूंढौं वेदऋचापढ़िचौगुने चाइन। जान्यो नहीं कबहूं वह कैसोहै कैसे स्वरूप है कैसे सुभाइन। हेरत हेरत हारपरचो रसखानि बतायो न लोग लुगाइन। देखौ कहां दुरचो कुंज कुटीर में बैठो पलोटत राधाके पाइन ॥ २ ॥ कहा जानौं कौने बीचन देखो उन प्राणप्यारी तादिन ते मिलिबे के यतन करतहैं। पानीपान भोजन भुलानो भवन सोजन सनिदक बनाइ कन धीरज धरत हैं। दैगई महावर तिहारे

तरवानिमांझ ताके करपल्लवकीपैरै पकरतहैं । नयननसों लाइ उरलाइ कहे हाइहाइ वारवार नाइनके पाइन परत हैं ॥ ३ ॥ पद ॥ भज मन राधिका के चरण । सुभग शीतल परम कोमल कमलकेसे वरण । क्वणित नूपुर शब्द उचरत विरहसागर तरण । वलिताहि परमानंद बालिवलि श्याम जाकी शरण ॥ ४ ॥ राधेजूके चरणपलोटत मोहन । नीलकमलके दलन लपेटे अरुण कमल दलसोहन । कवहुंक लैलै नयनन लावत अलिधावत ज्यों गोहन । जैश्रीभट्टछवीली राधे होत जगेते छोहन ॥ ५ ॥ राधासुधानिधौ ॥ योब्रह्मरुद्रशुकनारदभीष्ममुख्यैरालक्षितोनसहसापुरुषस्यतस्य ॥ सद्योवशीकरणचूर्णमनंतशक्तिंतंराधिकाचरणरेणुमनुस्मरामि ॥ ३ ॥ आगमे ॥ ब्रह्मानंदरसादनंतगुणतो रम्योरसोवैष्णवस्तस्मात्कोटिगुणोज्ज्वलश्चमधुरः श्रीगोकुलेन्द्रोरसः ॥ तच्चानंतचमत्कृतिप्रतिमुहुः सद्बल्लवीनांपुरः श्रीराधापदपद्ममेवपरमं सर्वस्यभूतंमम ॥ ७ ॥ दशमे ॥ नेमंविरंच्योन भवोनश्रीरप्यंगसंश्रया ॥ प्रसादंलेभिरेगोपीयत्तत्प्राप विमुक्तिदात् ॥ ८ ॥ ब्रह्माण्डे ॥ शृणुगुह्यतमंतात नारायणमुखाच्छ्रुतम् ॥ सर्वैश्वर्यपूजितादेवी राधावृंदावने वने ॥ २॥ माधुर्य्येमधुराराधामहत्त्वे राधिकागुरुः । सौंदर्येसुंदरी राधाराधैवाराध्यतेमया ॥ प्रधानकोअर्थ ॥ कवित्त ॥ भूपतिके संपतिसों भरेहैं विविध कोशदीनी तहां छापकहौ रंकपावै कैसे हैं । विना रीझ रावरी निहारि सकै राजूकौन पांगुलौ सुमेरु चढिसकै नहींजैसे है । राजाहूकी दईपै मिलैगी प्रधान हाथ नीतिमेंप्रमाण वात कहियेजु ऐसेहैं । राधिका चरण रतिपावै हितकृपाही सों नाभाजी प्रधानता दिखाई यह ऐसे हैं ॥ ३ ॥ हृढउपासि सुधानिधौ ॥ धर्माद्यर्थचतुष्टयंविजयजा क्विंत द्वृथा वार्त्तयासैकांतेश्वरिभक्तियोगपदवीत्वारोपितामूर्द्धनि ॥ यावृंदावनसीम्नि काचनचनाश्चर्यं किशोरीमणिस्तत्कैंकर्यरसामृतादिहपरंचित्तेनमेरोचते ॥ ४ ॥ करतखवासी ॥ तांबूलंक्वचिदर्पयामिचरणौ संवाहयामिक्वचिन्मालाद्यैः परमंडयेक्वचिदहोसंवीजयामि क्वचित् ॥ कर्पूरादिसुवासितं क्वचिदहं तुस्वादुचांगोमृतं यास्याम्येवगृहेकदाखलुभजे श्रीराधिकामाधवौ ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ जहां नव नागरी रसिक नागरदोऊ प्रेमसोंविवश ह्वै करतहांसी । हुलस हुलसात लपटात तन सुधिजात परस्परबात रस के विलासी । इतै अनखातउतबाना पगपरसनिकीहै चरणकी छबिहियेहरि प्रकासी । जहां दृगसैन की बात समझन हेत हितभरी खरी हरि वंशदासी ॥ ६ ॥ परस्परबात ॥ दोहा ॥ बतरस लालच लालकी, मुरली लई लुकाइ । सौंहकरै भौंहन हँसै, देनकहै नटजाइ ॥ ७ ॥ सर्वसुमहाप्रसाद ॥ सवैया ॥ काहूलियो जपकाहू लियो तप काहू महाव्रतसाधिकियोहै । काहूलियोगुण काहूलियो धन काहू महाउनमादहियो है । रंचक चारु चकोरनि दंपति संपति प्रेमपियूष पियोहै । राधिकावल्लभलालके थारको श्रीहरिवंशप्रसाद लियोहै ॥ ८ ॥ कवित्त ॥ आद्योप्रसाद औनिरादरी जगत रीति इष्टही की मिष्ट बात सबहीमन भाईहै । सुहथ जिमाये गौरश्याम रस रीति प्रीति अर्थोभयो गुणातीत नेमको जताई है। पर्म धर्म वरण्यो चरणोदक प्रदास मुख सर्वसु सो मान्यो भक्ति वेलिही बढाई है । शुद्ध रस मारग चलायो लोक शंकेनाहि युगल उचिष्ट की अधिकारतायों पाई है ॥ २ ॥ आदिपुराणे ॥ एकादशीसहस्राणि द्वादशीनांशतानिच॥ कर्णिकायांप्रसादस्य कलांनार्हन्तिषोडशीम् ॥ ३ ॥ गरुडपुराणे ॥ आकंठभक्षितं नित्यंपुनातिसकलांहसः ॥ सर्वरोगोपशमनं पुत्रपौत्रादिवर्द्धनम् ॥ ४ ॥ विधिनिषेध ॥ स्मर्तव्यःसततंविष्णुर्विस्मर्त्तव्योनजातुचित् ॥ सर्वेविधिनिषेधाः स्युरेतयोरेवकिंकराः ॥ ५ ॥ अनुसरै ॥ कवित्त ॥ हितहरि वंश बिन हितकी न रीति जानै कैसे वृषभाननंदनी सों प्रीति करिये । कौन सौंहै धर्म जासों कर्मनिको भर्मजाय सुत वित्त राज पाय कैसे ध्यान धारिये । रसिकनरसनिकी राह औ कुराहकौन कौन की उपासना सों आशु सिंधु तरिये । जो पै नंद नंदनको चहै जगवंदनको तोपै व्यास नंदनको नाम उच्चरिये ॥ दोहा ॥ रेमन श्रीहरिवंश भज, जो चाहत विश्राम ॥ जिहि रस सब ब्रज सुन्दरी, छाँडि दिये सुखधाम ॥ ७ ॥ जय जय श्री हरि बंश सहहंसनि लीलारति । जय जय श्री हरिवंश भक्ति

में जाकी दृढ़ मति ॥ जय जय श्री हरि वंश रटन श्री राधा राधा। जय जय श्री हरि वंश सुमिरि नाशै भव बाधा ॥ व्यास आश हरिवंशकी सु जय जय श्री हरिवंश ॥ कवित्त ॥ तूही हरिवंशी हरिकर सों प्रसंशी है राधा गुण गान हेत अधर पै बसना । नई नई तानन से कानन में पैठि पैठि दंपति के आनन में तेरी ये विलासना। प्यारे के हिये लागि प्यारी के अनुराग उत और प्रेम इत रूपहै बरसना। हिय में हित भई चित्त में चोपनई नयननि में नेह नई रस रस रसना ॥ ९ ॥

टीका ॥ श्रीहरिवंशीगुसाईं ॥ हितजूकीरीतिकोईलाखनमें एकजानैंसधाईप्रधानमानैंपाछेकृष्णध्याइये । निकटविकटभावहोत नसुभावऐसोगुणहीकीकृपादृष्टिनेकु क्योंहूंपाइये । विधि औ निषेधछेदडारेप्राणप्यारेहियेजियेनिजदासनिशिदिनवहैगाइये । सुखदचरित्ररसरसिकविचित्रनकेजानतप्रसिद्धकहाकहिकेसुनाइये ॥ ॥ ३५७ ॥ आयेवरत्यागरागवढ्योपियाप्रीतमसों विप्रवड़भागहरि आज्ञादईजानिये । तेरीउभैसुताव्याहिदेवोलेवोनाममेरोउनकोजोवंशसोप्रशंसजगमानिये। ताहीद्वारसेवाविस्तारनिजभक्तनिकीआगतनकीगतिसोप्रसिद्धपहिचानिये। मानिप्रियवातगृहगयोसुखलह्योतवकह्योकैसेजातयहमनमनआनिये ॥ ३५८ ॥ राधिकावल्लभलालआज्ञासोरसालदईसेवासोप्रकाशऔविलासकुंजधामको । सोइविस्तारसुखसारदृगरूपपियोहियोरसिकनिजिनलियोपक्षवामको। निशिदिनगानरसमाधुरीकोपानउरअन्तरसिहातएककामश्यामाश्यामको । गुणसोंअनूपकहिकैसेकैस्वरूपकहैंलहैमनमोहजैसेऔरनहींनामको॥

मानि प्रियबात ॥ दोहा ॥ टोना टामन सहस विधि, करि देखो सब कोय ॥ पीवकहैं सो कीजिये, आपुनहीं वश होय ॥ २ ॥ पद ॥ प्रीतम प्रीति सों वश होइ । मंत्र यंत्र अरु टोना टामन काम न आवत कोइ । जो अपने प्रीतम प्यारे सों रहिये प्राण समोइ । तो काहेको और ठौर वह जान प्रीति पति खोइ । हितकेगुणनें प्रीतमको मन मानिकलीजे खोइ ।

सुर बिहँसति राखै अपने मन तन मँजूष में गोइ । गवौं भार गरव को सजनी अब तौ तू जिहि ठौरहि जोइ । उठि चलि मिलो किशोरी पतिसों केलि कल्पतरु बोइ ॥

मूल ॥ आशधीरउरदोतकररसिकछापहरिदासकी । युगलनाम सोंनेमजपतनितकुंजबिहारी । अवलोकतरहैंकेलिसखीसुखकेअधिकारी । गानकलागंधर्वश्यामश्यामाकोतोषे । उत्तमभोगलगाइमोर मर्कटतिमिपोषे । नृपतिद्वारठाढ़ेरहेदर्शनआशाजासकी । आशधीर उरदोतकररसिकछापहरिदासकी ॥ ९२ ॥

रसिक छाप हरिदासजी रसिकहरिदास ॥ दोहा ॥ श्रीस्वामी हरिदासको यश त्रैलोक विस्तार । आप पियो प्यायो रसिक, नवल निकुंज बिहार ॥ कबित्त ॥ रतन सुदेशमई अवनि निकुंज धाम अति अभिराम पिय प्यारी केलिरास है । रमत रमत दोऊ सुमति सुरति सेज अमित कटाक्षन के हाव भाव हासहै ॥ भावक प्रवीण सुपुनीत गुणगानरटैं याते लोक लोकनमें सुयश सुवास ह । सखी रुद्र गनिस पानकरै रसिक शिरोमणि श्री स्वामी हरिदास है ॥ २ ॥ पद ॥ रसिक अनन्यनको पंथ बांको । जा पंथको पंथ लेत महामुनि मूंदति नयन गहे नितनाको । जापंथ को पछतातहै वेद लहै नहिं भेद रहै जकजाको । सो पंथ श्रीहरिदास लहेउ रसरीतिकी प्रीतिचलाय निशानको । निशान बजावत गावत गोबिंद रसिक अनन्यको पंथ बांको ॥ ३ ॥ युगल नामसों नेम ॥ दोहा ॥ तुलसी जनक कुमारि बिन, जे सेवत रघुबीर । जैसे चंदा रैनि बिन, श्रवै न अमृत सीर ॥ कवित्त ॥ वहै है शरद चंद दिनमें उदोत देख्यो ज्योतिको न लेश लागै थारी के अकार है । रैनि रस देन मांझ चैन के समूह होत सो तज्यो प्रकाश रास ताको यों बिचारहै । शब्द सुधाकर औ पात्र निशि बासर है तासरन कोऊ जामें सार निरधार है । रसिक प्रवीणहू चकोर रजनीशहीसों युगल स्वरूप गुण नामही अधारहै ॥ ५ ॥ संमोहनीतंत्रे ॥ गौरतेजो विनायस्तु श्यामतेजः समर्चयेत् । जपेद्वाध्यायते

वापि समभवेत्पातकी शिवे ॥ २ ॥ सखीसुख ॥ कवित्त ॥ विपिन विहार फूलफूलेहैं अपार लाल लाड़िली निहार मन आई यों शृंगारिये। बीनि बीनि फूल मृदुअंगकी सुसम लैलै भूषण रचत सीरिनी के कै सँवारिये। सन्मुख ही मोहन हियेमें लख्यो प्रतिबिंब सोहन सनेह मोह भरी अंकुवारिये। यहै जानि श्यामा पीठि दई अति बामा येहो जीती चतुराई यों भुराइ पर वारिये ॥ ३ ॥ पद ॥ होड़परी मोराहिं अरु श्यामहिं। आवो चलो मथि सबकी गति लीजै रंगधौं कामहिं। हमारे तिहारे मध्यस्थ राधे और जाहि बदौ पूंछ देख्यो तृण दै कहाहै यामहिं। श्रीहरिदासके स्वामी श्यामा को चौपरि कोसो खेल एकगुण द्विगुण त्रिगुण चतुर गुण दीजै री जाके नामहिं ॥ ४ ॥ पियको नचावन सिखावती प्यारी। वृन्दावन में रास रच्यो है शरद रैनि उजियारी। रूप भरी गुणहाथ छरी लिये डरपत कुंजविहारी। व्यास स्वामिनी निरखि नट श्यामहिं रीझदेत करतारी ॥ ५ ॥ महाराज कौन आछो नृत्य करैहै तृण दैके पूंछे द्वै वेर गोरी कह्यो तीजे लालजी को अंक में भरि लयो कही तो समान को नृत्य करैहै जैसी चौपरि की नरद एकबेर कची होय फेरि पकै सोई चौपरि को खेलकहिये जय लाड़िली लाल मिले तब प्रियाजी ने रीझि कै रसिक छापदई ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ चहूं ओर बैठे मोर दाविचारो ओरनते जोत्यो मनमथ राख्यो मनहिं दुहाई में। कस्तूरी अरगजा को तिलक विराजै भाल भाग भरे यौवन की जगमग जाई में। अलक चमर घनश्याम बाजे नूपुरादि हँसनि अवलोकनि सो बटति बधाई में। थिरचर ऐसी राज देखो देखो सखी आज दुहुनि रजाइ पाई एकही रजाई में ॥ २ ॥ सवैया ॥ जैसे अनखानि सतरोनि लपटानि पुनि अति इतरानि मुसकानि रंग बरषे। जैसे किरजान अति दीनता निदान पानआपने प्रमाण डाहि मिसिपानकरषे। झटक रिसान भुवतान त्यों त्यों प्राणनाथ प्राणन सिहान मान मनमेंही हरषे। ऐसी कुंजकेलि रस बेलि सुखझेलि रही विना हरिदासदासी ताहि कोन निरषे ॥ पद ॥ प्यारी तेरी

पुतरी काजरहूते कारी। मानों द्वै भवँर उड़े हैं बराबर। चंपकी डार बै-
ठे कुंद अलि लागी है जेब अराअर। जब आइ घेरत कटक कामको
तब जियहोत दरादर। हरिदासके स्वामी श्यामा कुंजबिहारी दोऊमिल
लरत झराझर। अनन्य नृपति श्री स्वामी हरिदास। श्रीकुंजबिहारीसे ये
बिन छिन नकरी काहूकी आस। सेवा सावधान करिजाने सुघरगावत
दिनरसरास। देहबिदेहभये जीवतिही बिसरे विश्वबिलास। श्रीवृन्दावन
रज तन मन भज तजि लोकबेदकी आस। प्रीति रीति कीनी सबहिनसों
किये नखासखवास। यह अपनो व्रत और निबाहो जबलग कंठ उसास।
सुरपति भूपति कंचिन कामन तिनके भावे घास। अब के रसिक व्यास
हम ऐसे जगत करत उपहास ॥ ३ ॥ ऐसो ऋतु सदा सर्वदा जो रहै बो
लत नित मोरनि। नीकेबादर नीके धनक चहूंदिशि नीको वृन्दावन आ-
छी नीकी मेघनकी घोरनि। आछी नीकी भूमि हरीहरी आछी नीकीरग
निकामकी रोरनि। श्रीहरिदास के स्वामी श्यामाको मिलगावत बन्यो राग
मलार किशोर किशोरनि ॥ ४ ॥

टीका ॥ स्वामीहरिदासरसराशिकोबखानिसकैरसिकताछापजो
ईजायमध्यपाइये। लायोकोऊचोवावाकोअतिमनभोवावामें डार्यौ
लैपुलिनयहैखोवाहियेआइये। जानिकैसुजानकहीलैदिखावोलाल
प्यारे नेसुकुउघारेपटसुगंधउड़ाइये। पारसपषानकरिजलडरवाइ
दियोकियोतबशिष्यऐसेनानाविधिपाइये ॥ ३६० ॥ मूल ॥ उत्क
र्षतिलकअरुदासकोभक्तइष्टअतिव्यासको। काहूकेआराध्यमच्छ
कच्छशूकरनरहरि। बावनफरसाधरनसेतुबंधनशैलकर। एकतकें
यहरीतिनेमनवधासोंल्याये। सुकलसमोखनसुवनअच्युतगोत्रीजुल
ड़ाये ॥ नौगुनतौरनूपुरगुह्योमहतसभामधिरासको। उत्कर्षतिल
कअरुदासकोभक्तइष्टअतिव्यासको ॥ ९३ ॥

लायो कोऊ चोवा ॥ दोहा ॥ कै सुगंध सोंधौ सरस, कै उत्तम क-
लगान ॥ इनही के कर मीचहै, मेरी मेरे जान ॥ २ ॥ दुखाइ दियो कु-

ण्डलिया ॥ रानी राज सिंगार पट धोबी को धुबरोट । धोबीको धुबरो-
ट कियो दुर्लभ मानुष तन । सुलभ विषय सब जोर ब्रह्मआधीन जगत
जन ॥ कौड़ी कामिनि कुटुम्ब तिनहिं हित हीरा हार्यौ । ज्यों बनिजा-
रो बैल थक्यौ तब मगमें डार्यौ । नेगन लाग्यो रामके अगर बड़ो यह-
खोट । रानी राज सिंगार पर धोबीको धुबरोट ॥ गाडर आनी ऊनको
बांधी चरै कपास । बांधीचरै कपास विमुखहरि लों न हरामी । प्रभुप्रता-
पकी देह कुछित सुखसोई कामी ॥ जठर यातना अधिक भजन बदि बा-
हर आयो । पवन लगत संसार कृतघ्नी नाथ भुलायो । चाकरी चोर हा
जिरकुँवर अगर इते पर आस । गाडर आनी ऊनको बांधी चरै कपा-
स ॥ ३ ॥ उत्कर्ष तिलक अरु ॥ पद ॥ मेरे भक्त हे देवा देऊ । भक्तनि
जानौभक्तनि मानौ निजजनमो जिवतेऊ । मातपिता भक्त ममभाई या
भक्त दमा दस जनवसनेऊ । सुत संपति परमेश्वर मेरे हरिजन जाति
जनेऊ, भवसागरकोबेरोभक्तहै हरिखेवट कुरखेऊ । बूड़तबहुत उबारे
भक्तनलियेउबारि जरेऊ । तिनकी महिमा ब्यास कपिल कहि हारे सब
परवेऊ ! ब्यास दासकी प्राणजीवन धन हरि परिवार बड़ेऊ । रासकेलि
कवित्त ॥ शरद उज्यारी फुलवारी में विहारी प्यारी श्रीगोविंद तैसी वाणी
मंडली सखीन की । प्रेमको प्रकाश रास रसको विलास तामें राग
रागिनी है सुरसात ग्राम तीनकी । उरपतिरप के संगीतनि के भेद भाव
नीकी धुनि नूपुर किंकणी चुरीन की । लीन भई मुरली मृदंग की नवीन
गति बीन की बजनि औ बजावनि प्रवीन की ॥ २ ॥ उचकि ॥ २॥
उचकी पग धरत धरणिपर झिझकि झिझकि कर करन उचतहैं । ल-
लक ललक गति लेत सुवह पुनि झपक झपक दृग पलन सुचतहै । ठुमुक
ठुमुक पग चजत घुंघरू धुनि मधुर मधुर सुरतानन खचतहैं । मुलक
मुलक मन हरत सकल जन आज राज ब्रजराज रास में नचत हैं ॥ ३॥
ऐसे रास में जनेऊ तोरिके श्री प्रिया जूको नूपुर गुह्यो तब यह पद
गायो ॥ पद ॥ रसिक अनन्य हमारो जाति । कुलदेवी राधाबरसानो

खेरो ब्रज बासिनकी पांति । गोत गोपाल जनेऊमाला शिखा शिखंडी हरि मंदिर भाल । हरिगुणगानवेद धुनि सुनियत मंजुपखावज कुशकरताल । शाखा यमुना हरिलीला षटकर्म प्रसाद प्राणघनरास । सेवा विधि निषेध सतसंमत बसत सदा वृन्दावनवास । स्मृति भागवत कृष्ण ध्यान गायत्री जाप । वंशीऋषि निजमान कल्पतरु प्यास अशीशनदेत शराप ॥

टीका ॥ आयेगृहत्यागिवृन्दावनअनुरागकरिगयोहियोपागिहो इन्यारोतासोंखीजिये । राजालेनआयोऐपैजाइबोनभायोश्रीकिशोर अरुझायोमनसेवामतिभीजिये । चीराजरकसीशीशचिकनोखिसिल जाइ लेहुजूबँधायनहींआपबांधिलीजिये । गयेउठिकुंजसुधिआईसुख पुंजआयेदेख्योबंध्योमंजुकाहिकैसेमोपैरीझिये ॥ ३६१ ॥ संतसुखदे नबैठेसंगहीप्रसादलेतपरोसततियासबभांतिनप्रवीनहै । दूधवरताइ लैमलाईछिटकाईनिज खिजउठेजानिपतिपोखतनबानिहै । सेवासोंछु ड़ायदईअतिअनसनीभईगईभूखबीतेदिनतीनितनक्षीनहै । सबसमु झावेंतबदंडकोमनावेंअंगआभरणबेचिसाधजैवेयोंअधीनहैं ॥३६२॥ सुताकोविवाहभयोबड़उत्साहकियो नानापकवानसबनीकेबानिआ येहैं । भक्तनिकीसुधिकरीखरीअरबरीमतिभावनाकरतभोगसुखदल गायेहैं । आइगयेसाधुसोबुलाइकहीपावौजाइपोटनिबँधायचाइकुजन पठायेहैं । वंशीपहराईद्विजभक्तिलैदृढ़ाईसंतसंपुटमेंचिरीयादेहितसो बसाये हैं ॥ ३६३ ॥

आयेवृन्दावन ॥ सवैया ॥ भूमिहरी द्रुमझूमिरहे लखि ठौर रहे दृग-ठौर सुहाते । न्यारेसे लोग रँगीले तहांके मिले हँसि प्रेम हिये सरसाते । नाम न आवै औ आवै गरोभरि नामलियो नहिं जात है याते । सांवरी एक नदी पै बसे सो कहौ किमि कोउ या गांवकी वाते ॥ २ ॥ खीजिये॥

॥ पद ॥ सुधारोहरि मेरो परलोक । वृन्दावनमें कीनोदीनो हरि अप-नो निजओक । माताको सों हित कियो हरिजानि आपने तोक । चरण धूरि मेरे शिरमेली और सबनिंदै रोक । जेनर राकस कूकर गदहा ऊंट

वृषभ गज बोक। वृन्दावन तजि बाहर भटकत तो शिर पनहीं ठोक ॥ ॥ २ ॥ जाईवोन भावै ॥ वृन्दावनके रूप हमारे मात पिता सुतबंध। गुरु गोविंद साधुगति मतिफल अरु फूलनको गंध । इन्हैं पीठि दै अनत दीठिकरि सो अंधन में अंध। व्यास इन्हैं छोडै रुछड़ावै ताको परियो कंध ॥ ३ ॥ दोहा ॥ वृन्दावनको छांड़िकै, और तीर्थको जात । छांडि बिमल चिंतामणी, कौड़ीको ललचात ॥ ४ ॥राधा बल्लभ कारणै सही जगत उपहास । वृन्दावनके श्वपचकी, जूठनिखाई व्यास ॥ १ ॥ वृन्दाबन छांड़िये नहीं॥ ६ ॥खिजउठे पद ॥ तिया जो न होइ हरिदासी ।सोदासी गणिका सम जानो दुष्टराड़ मसवासी । निशिदिन अपनो अंजन भंजन करत विषयकी रासी। परमारथ कबहूं नहिं जाने आनिपरे यमफांसी। कहाभयो स्वरूप गुण सुंदर नाहिंन श्याम उपासी। ताके संग न पतिगति जैहै याते भली उदासी। साकतनारि जुघर में राखै निश्चय नरक निवासी। व्यासदास यह संगति तजिये मिटै जगतकी हांसी ॥ २ ॥ अंग आभरण वेंचि बीस हजार रुपैया के वेचिकै वैष्णव जिमाये तब तिया रसोई में लई में श्वेत वस्त्र पहिराइ कैसे वामें आवै ॥ २ ॥ पद ॥ विनती सुनिये वैष्णव दासी। जा शरीरमें बसत निरंतर नरक बात पितखांसी । ताहि भुलाइ हरिहि यों गहिये हँसै संग सुखवासी । बढ़ै स्वहाग ताहि मन दीजे औरु बराक बिशवासी। ताहि छांड़ि हित करै और सों गरेपरै यम फांसी। दीपक हाथ परै कूवांमें जगत करै सबहांसी । सर्वोपरि राधापतिसों रति करत अनन्य विलासी । तिनकी पद रज शरण व्यासको गति वृन्दावन वासी ॥ २ ॥ पोटन पद ॥ हरिभक्तनते समधी प्यारे। आये भक्त दूरि बैठारौ फोरत कान हमारे। दूर देशते समधी आये तेवर में बैठारे । उत्तम पलिका सों रसपेदी भोजन बहुत सँवारे। भक्तनको दे चून चनाको इनको सिलवट न्यारे । व्यास दास ऐसे विमुखनको यमसदा टेरतहारे। तापर दृष्टांत उंगली सों राहबताई ॥ २॥ पोटयँधाइ के मिठाई साधुनको दई तब पुत्र खिझे यह कहा करतहो॥ २॥

शरदउजियारीरासरचेउपियप्यारीतामेंरंगवढ़ोभारीकैसेकहिकै सुनाइये । प्रियाअतिगतिलईबिजुरीसीकौंधिगईचकचौंधीभईछविमं डलमेंछाइये । नूपुरसोटूटिछूटिपरचोअरवरचोमनतोरिकैजनेउक रचोवाहीभांतिभाइये । सकलसमाजमेंयोंकहेउआजकामआयो ढो योहैजनमताकीवातजियआइये ॥ ३६४ ॥ गायोभक्तइष्टअतिसुनि कैमहंतएकलेनकोपरीक्षानायोसंतसंगभीरहैं । भूखकोजताववाणी व्यासकोसुनावैसुनिकहौभोगआवै इहांमानेहारिधीरहैं । तवनप्रमाण करीशंकधरीलैप्रमादश्रासदोइचारिउठेमानोंभईपीरहैं । पातरिसमे टिलईसतकरिसोकोदईपावोतुमऔरपावलियेदृगनीरहैं ॥ ३६५ ॥

तोरिकै जनेऊ ॥ पद ॥ इतनो है सब कुटुंब हमारो । सेन धना-नाभा अरु पीपा अरु कबीर रैदास चमारो ॥ रूप सनातन को सेवक गंगल भट्ट सुढारो । सूरदास परमानंद मेहा मीराभक्त बिचारो । ब्राह्मण राजपूज्य कुलउत्तम करत जातिको गारो । आदिअंत भक्तनको सर्वस राधा वल्लभ प्यारो । इहिपंथचलत श्यामश्यामाके व्यासहि बोरो भावैतारो ॥ ३ ॥

भयेसुततीनवाटनिपटनवीन कियेएकओरसेवाएकओरधनध रचोहै । तीसरीजुठौरश्यामबंदनीअरुछापधरीकरीऐसीरीतिदेखिव ड़ोशोचपरचो है । एकनेरुपैयालयेएकनेकिशोरजूको श्रीकिशोर दासभालतिलकलैकरचोहै । छोयेदियेस्वामीहरिदासदिशिराशि कियोवहीराशिललितादिगायोमनहरचोहै ॥ ३६६ ॥

शीतकरी पद ॥ जूठन जे न भगत की खात । तिनके बदन सदन नरकनके जेहरि जनन घिनात । काम विबशकामिनके पीवत अधरन लार चुचात । भोजन पर माखी सूततहैं जिहि जेंवत नाहिं सकात । बाजदारकी पांति ब्याहमें जेंवत विप्रबरात । भेंटत सुतहिं रेंटमुखलागत सुखपावत जड़तात । अपरसहै भक्तनिछुइ छुतिहातल सचेरू अन्हात।भक्तनपीछे सब डोलत हैं हरिगंगाअकुलात । साधुचरण रज मांझ व्याससे कोटिक पतित समात ॥ २ ॥ आदिपुराणे ॥ मद्भक्तायत्रगच्छंतितत्रगच्छामिपार्थिवा ॥

भक्तानामनुगच्छंतिमुक्तयःश्रुतिभिःसहः ॥ २ ॥ भागीरथके पीछे डोली-ही हैं आपजगमें तीर्थही है ॥ ३ ॥ वहीरीति ॥ पद ॥ लाल लटकता योवन मंता खेलतरास अनंता। यमुना तीर भीरयुवतिनकी बांहजोरि मंडली वनाई मध्यराधिका कंता॥एकनि के कर कंजकपोल पर रंभनि देत हसंता। किशोर दासके स्वामी कुंजविहारी विहारिनकेसंग विहरत केलि करंता ॥ ४ ॥

मूल ॥ श्रीरूपसनातनभक्तिजलश्रीजीवगुसाईंसरगँभीर। वेला भजनसुखककपायनकवहूंलागी। वृन्दावनदृढ़वासयुगलचरणनिअनुरागी। पोथीलेखनपानअघटअक्षरचितदीनो। सदग्रंथनकोसारस वैहस्तामलकीनो॥ संदेहग्रंथछेदनसमर्थरसराशिउपासकपरमधीर। श्रीरूपसनातनभक्तिजलश्रीजीवगुसाईंसरगँभीर॥ ९४ ॥ टीका॥ कियेनानाग्रन्थहृदैग्रन्थिदृढ़छेद डारैंधनयमुनामेंआवैचहूंओरते। कहीदाससाधुसेवाकीजेकैहैंपात्रजान करौंनीकेकरीवोल्योंकटिकोप जोरते। तवसमझायोसंतगौरववढ़ायोयह सवकोसिखायोवोलेमीठे निशिभोरते। चारितअपारभावभक्तिकोनपारावार कियोहूंवैरागसारकहैंकौनछोरते ॥ ३६७ ॥

भक्त जलपद। जयजय मेरे प्राण सनातन रूप। अगतनकी गति दोऊ भैया योग यज्ञके जूप। श्रीवृंदावन की सहज माधुरी प्रेम सुधाके कूप। करुणासिंधु अनाथ वंधुजय भक्तसभाके भूप। भक्त भागवत मत आचारज चतुर कूल चतुरभूप।भुवन चतुरदश विदित विमलयश रसनाके रसतूप।चरणकमल कोमलरज छापा मेटत कलरजभूप। व्यास उपासक सदा उपासी श्रीराधा चरणअनूप ॥ वोले कवित्त ॥ सीखे व्याकरणकोप काव्य औ पुराणसीखे सीखे वेदपढ़िवो जो धर्मनको मूरिहै। न्याय वेदान्त आदि सीखे षटशास्त्र वर पंडिताई चतुराई जानै भारि पूरिहै। सीखे घटपट सांप जेवरी वखानिवेको माया भ्रमजाकी अति जीवनि की मूरिहै। भक्तनकी सभावीच प्रेमरस सींचि सींचि वोलिवो न सीख्यो सवसीखिवे में धूरि है॥ २॥

प्रसंगमजरंपासमात्मनःकवयो विदुः । सएवसाधुसुकृतंमोक्षद्वार मपावृतं ॥ १ ॥ मूल ॥ श्रीवृन्दावनकीमाधुरीइनमिलआस्वादन कियो । सर्वसुराधारवनभट्टगोपालउजागर । हृषीकेशभगवानविपुलबिट्ठलरससागर ॥ थानेश्वरीजगन्नाथलोकनाथमहामुनिमधुश्री रंग । कृष्णदासपंडितउभैअधिकारीहरिअंग ॥ घमंडीयुगलकिशोर भूगर्भजीवदृढ़ ब्रत लियो । श्रीवृंदावनकी माधुरी इनमिलिआस्वा दनकियो ॥ ९५ ॥

इनमिल विषैरस स्वादीको मिलबोकहा राजा को दूसरो न रुचै अरु दत्तात्रेयहूने क्वारी कन्याकी चूरी दूसरी हू दूरिकरी पै कैसेमिलै दत्तात्रेयजी ने ब्रह्मज्ञानीन को संग निषेधकियो उपासकनको नहीं ब्रह्मज्ञानी बिधवा तुल्य हैं उपासक सुहागवती तिनको संगचूरी चाहिये जैसे चूरी को शब्द पतिको प्यारो लगै ऐसे संग रूप चूरीको शब्द कृष्णपतिको प्यारो लगै याते ब्रह्मज्ञानीके कृष्ण पति नहीं तिनहीं को संग चूरी त्याग है याते इनै मिलिकै रूप माधुरी को स्वादालिये ॥ पद ॥ जो कोऊ वृन्दावन रसचाखैं । खारी लगत खांड़ अरु खारक आन देशकी दाखैं । प्राणसमानतजैन हिं सीवालोभदिखावतलाखैं । भूखेरहिकै पावेभाजी निरखि रहै तरुसाखैं । परे रहैं कुंजनिके कोने कृष्ण राधिका भाखैं । जनगोबिंद बलबीर कृपाते घटरानी जूराखैं ॥ २ ॥ क्योंकि राधेको वृन्दावन वेदन में गायोहे ॥ ॥ सवैया ॥ पौरिकै पौरिया द्वारके द्वारिया पाहरूवा घर के घनश्याम हैं। दासी के दास सखीनके सेवक पार परोसिन के धनधाम हैं । श्रीधर कान्हभरे हित भामर मानभरी सतभामासी बाम हैं। एक वही विश्राम थली वृषभानलली की गली के गुलाम हैं ॥ २ ॥

टीकागोपालभट्टकी ॥ श्रीगोपालभट्टजूकेहियेवेरसालबसेलसे योंप्रगटराधारवनस्वरूपहैं । नानाभोगरागकरैं अतिअनुरागपगे ज गेजगमाहिं हितकौतुक अनूपहैं । वृंदावनमाधुरी अगाधकोसवाद लियो जियोजिनपायो शीतभयेरसरूप हैं । गुणहीकोलेतजीव औ

गुणकोत्यागदेतकरुणानिकेतधर्मसेतुभक्तभूपहैं ॥ ३६८ ॥ टीका ॥ अलिभगवानकी ॥ अलिभगवानरामसेवासावधानमनवृन्दावनआइ कछूऔररीतिभई है । देखेरासमंडलमेंविहरतरसरासबाढ़ीछविन्या सहगसुधिबुधिगई है । नामधरिरासऔविहारीसेवाप्यारीलली खगी हियमांझगुरुसुनीवातनई है । विपिनपधारेआपजाइपगधारेशीश ईशमेरेतुमसुखपायोकहिदई है ॥ ३६९ ॥

वाटीछवि पद ॥ रहौ कोउ काहू मनहिं दिये । मेरे प्राणनाथ श्री श्यामा सपथकरौ तृणलिये। जे अवतार कदंब भजत हैं धरि दृढ़ ब्रतजुहिये। तेऊ उमँगि तजत मर्यादा वन विहार रसपिये । खोये रतन फिरत जे घर घर कौनकाज अपजिये । जय श्री हित हरिवंश अनंत सचनाहीं विनधारत ताहिलिये २ आनि देशकी गैलहारिति श्री कृष्ण दौरि मेवाती लूटैले हैं जो रावरी । सोई अलि भगवानको लूटिलियो जो जोरावर रा-महो तौ बचायले तो श्री शुकदेवजी ने ब्रह्मनेष्टको लूटिलियो ॥ दोहा ॥ अनब्याही हँसैंकरैं, ब्याही लेत उसास । गौनेकी मौने रहीं, देख राममृदुहास ॥

टीकाविट्ठलविपुलकी ॥ स्वामीहरिदासजूकेदासनामविट्ठलहैं गुरुकेवियोगदाहउपज्योअपारहै । रासकेसमाजमेंविराजसबभक्तरा जबोलिकैपठाये आयेआज्ञावड़ोभारहै । युगलस्वरूपअवलोकना नाभेदनृत्य गानतानकानसुनिरहीनसँभारहै । मिलिगयेवाहीठौरपा योभावतनऔरकहैंरससागरसोताकोयोंविचारहै ॥ ३७० ॥ टीका लोकनाथकी ॥ महाप्रभुश्रीकृष्णचैतन्यजूके पारषदलोकनाथनाम अभिरामसबरीतिहै । राधाकृष्णलीलासोंरंगीनमेंनवीनमन जलमी नजैसेतैसेनिशिदिनप्रीतिहै । भागवतगानरसखानसोतौप्राणतुल्य अतिसुखमानिकहैगावेजोईनीतिहै । रसिकप्रवीणमगचलतचरणला गि कृपाकैजताइदईजैसीनेहरीतिहै ॥ ३७१ ॥ टीका ॥ मधुगुसाईं की ॥ श्रीमधुगुसाईंआयेवृन्दावनचाहवढ़ीदेखेइननयननसोंकैसोधौं

स्वरूपहै । ढूंढ़तफिरतबनबनकुंजलताद्रुममिटीभूखप्यासनहींजाने छांहधूपहै।यमुनाचढ़तिकाटिकरतकरादेजहां वंशीवटतटदीठिपरेवे अनूपहै । अंकभरिलियोदौरिअजहूंलौंशिरमौर चहैभागभालसाथ गोपीनाथरूपहै ॥ ३७२ ॥

पायो भागवतन ॥ पद ॥ प्यारी नेकु निरखौ नवरँग लाले । तुवपद पंकज तल रजबंदत तिलक बनावत भाले । तेरेबरण वसन आभूषण उरधरि चंपकमाले । वीठल विपुल बिनोद करोबल भुजभरि बाहु बिशाले ॥ जलमीन जैसे ॥ दोहा ॥ मीनमारि जलधोइये, खाये अधिक पियास । बलिहारी वा चित्तकी, मुये मित्तकी आस ॥ २ ॥ परसा हरिसों प्रीतिकरि मछरी कीसी न्याइ॥जीवत मरत न छांड़हीं, जल बिन रह्यो न जाइ॥ ३॥

गुसाईंश्रीसनातनजूमदनमोहन रूपमाथेपधरायकहीसेवानीकें कीजिये ।जानोकृष्णदासब्रह्मचारीअधिकारीभयेभटश्रीनारायणजू शिष्यकियेरीझिये । करिकैशृङ्गारचारुआपहीनिहारिरहेगहे नहीं चेतभावमांझमतिभीजिये ।कहांलौंबखानकरौंरागभोगरीतिभांति अबलौंबिराजमान देखिदेखिजीजिये ॥ ३७३ ॥ श्रीगोविंदचंदरूप राशिसुखराशिदासकृष्णदासपंडितयेदूसरेयोंजानिले ।सेवाअनुरागअंगअंगमतिपागिरही पागिरहीमतिजोपैतोपैयाहिमानिले । प्रीति हरिदासनसोंविविधप्रसाददेताहियेल्याइलेतदेखपद्धतिप्रमानले । सहजकीरीतिमेंप्रतीतिसोंबिनीतकरैटेरेवाहीओरमनअनुभवआनिले ॥

मतिपागिरही ॥ कवित्त ॥ गोविंद रँगीले रंगरंगनि शृंगार कियो लिये करछरी हिये सबके बिलोये है । इतरात जातधरे पगधरणीपर यौवन उमंग आप अंगअंग भोये हैं । चितवनि में न सनी सैननसों बातैंकरै हरै मनलाड़ भरे नेहसों समोये हैं । ऐसो कविकौन सकै नयनन स्वरूप कहि लाल लाल कोयनमें केते बर खोयेहैं ॥ २ ॥ प्रसाददेत ॥ कुंडलिया॥ राइनिभाइनि जासुको खँड़ावरादेहाथ खँड़ावरादे हाथ देत प्रभुकोतुलसी दलकैदोनाभरि फूल कै करुवा भरिकै जल। भोजनगटकत आपरजोगुणदे

पुनि हरषे। यावारूथल माझदयानिधिको लै बरषे । भवभोरै सेवा खड्ग लैकाट्यो निजमाथ। राइनि भाइनि जासुको खड़ा वरा दै हाथ ४। ५ अलोनी रोटी गले में अटकै कही कहा गीता विस्तार करोगे॥

गुसाईंभूगर्भवृन्दावनदृढ़वासकियो लियोसुखबैठिकुंजगोविंदअनूपहैं। बड़ेईविरक्तअनुरक्तरूपमाधुरीमेंताहीकोसवादलेतामिलेभक्तभूपहैं। मानसीविचारहीअहारसोंनिहाररहेगहे मनवृत्तिवेईयुगलस्वरूपहैं । बुद्धिकेप्रमाणउनमानिमेंबखानकियो भरचोवहुरंगजाहिजानेरसरूपहैं॥ ३७५ ॥ मूल ॥ श्रीरसिकमुरारिउदारअतिमत्तगजहि उपदेशदियो। तनमनधनपरिवारसहितसेवतसंतनकाहि । दिव्यभोगआरतीअधिकहरिहूतेहियमाहि । श्रीवृन्दावनचंदश्यामश्यामारँगभीने। मगनसुप्रेमपियूषपयधपरचेवहुदीने । श्रीहरिप्रियश्यामानंदवरभजनभूमिउद्धारकियो । श्रीरसिकमुरारिउदारअतिमत्तगजहि उपदेशदियो॥ ९५॥ टीका॥ श्रीरसिकमुरारिसाधुसेवाविस्तारकियोपावैकौनपाररीतिभांतिकछुन्यारिये । संतचरणामृतकेमाठगृहभरेरहेताहिकोप्रणामपूजाकरिउरधारिये । आवेंहरिदासतिन्हैंदेतसुखराशिजीभएकनप्रकाशसकैथकैसोविचारिये । करेंगुरुउत्सवलैदिनमानसवै कोई द्वादशदिवसजनघटालगीप्यारिये॥ ३७६ ॥ संतचरणामृतकोलावोजायनीकीभांतिजीकीभांतिजानिवेको दासलपटायोहै। आनिकैबखानकियोलियोसवसाधुनको पानकरिवोलेसो सवादनहींआयोहै । जितेसभाजनकहीचाखौदेवौमनकोऊमहिमान जानेकनजानीछेड़िआयोहै । पूछीकह्योकोटीएकरह्योआनौलायोपियोदियोसुखपासनयननीरढरकायोहै॥ ३७७॥

आनो ॥ चैतन्यचरितामृते ॥ दृष्टैः स्वभावजनितैर्वपुषस्तु दोषैर्न प्राकृतत्वमिहभक्तजनस्य पश्येत् ॥ गंगाम्भसान्खलुबुद्बुदफेणपंकैर्ब्रह्मद्रवत्वमुपगच्छति नीरधर्म्मैः ॥ १ ॥ सोप्याईन एक तिसाई जैसे प्रीतिकरि शालिग्रामसों पूजे ॥

नृपतिसमाजमेंबिराजभक्तराजकहैं गहैंवेविवेककोऊकहनप्रभाव है। तहांएकठौरसाधूभोजनकरतरौरदेवोदूजीसोंटासंगकैसेआवेभावहै । पातरिउठाइश्रीगुसाईंपरडारिदईदईगारिसुनीआपबोलेदेखोदावहै । सीतासोंबिमुखमैंतोआनिमुखमध्यदियोकियो दासदूरिसेतसेवामेंनचावहै ॥ ३७८ ॥ बागमेंसमाजसंतआपचलेदोखिबेकोदेखतदुरायोजनहूंकोशोचपर्यौहै । बड़ोअपराधमानिसाधूसनमानचाहैंघूमितनबैठिकहीदेख्योकहूंधर्यौहै । जाइकैसुनाईदासकाहूकेतमाखूपास सुनिकैहुलासबढ़ेउआगेआनिकर्यौहै । झूठहीउसासभरिसांचेप्रेमपाइलियेकियेमनभायेऐसेशंकादुखहर्यौहै ॥ ३७९ ॥ उपजतअन्नगांवआवेसाधुसेवाठांवनयोनृपदुष्टआयकावाकाविकियोहै। ग्रामसोंजबतकरौकरेउलैबिचार आपश्यामानन्दजूसुरारिपत्रलिखिदियोहै । जाहीभांतिहोहिताहीभांतिउठिआवौयहांआयेहाथबांधिकरिआचेहूंनलियोहै । पाछेसाष्टांगकरीकरीलैनिवेदनसोभोजनमेंकहीचलेआयेभीज्योहियोहै ॥ ३८० ॥

शीत विमुख ॥ दोहा ॥ जानि अजानी ह्वै रहै, तातलेइ जो जानि। अगिला होवै अगन सम, आपुन होवै पानि ॥ २ ॥ कियो दास दूरि रसोई पावो ले महाराज लाज कैसे रहै सोंटा को मांगै है सोंटाहू खाइहै बावरे मनुष्य खाइसेर सोंटा खाइ चारि सेर कैसे महाराज जब सोंटा सों भांग घोटिकै पीवैं तब चारि पनवारे उड़ाइ जाइ सोंटाही तौ खाइहै दासको दूरि करि दियो ॥ ३ ॥ शोच पर्‍यो संतके लक्षण हैं कुछ न किया करै तौलाज करै नाहीं काहेको करे॥ ३ । ४ । ५ । ६ ।

आज्ञापाइअचयोलैदैपठायेवाहीठौर दुष्टशिरमौरजहांतहांआप आयेहैं । मिलेमुत्सद्दीशिष्यआइकैसुनाईबातजावोउठिप्रातयहनीच जैसेगायेहैं । हमहींपठावैंकामकरिसमझावेंसबमनमेंनआवैंजानीनेहडरपायेहैं । चिंताजनिकरौहियेधरौनिहचिंतताई भूपसुधिआई

दिनातीनकहांछायेहैं ॥ ३८१ ॥ सुनिआयेगुरुवरकलआवोमेरे घरदेखौकरामातिवातपहलैसुनाईहै । कह्योआनिअभूजावोचलौउन मानदेखें चलेसुखमानिआयोहाथीधूमछाईहै । छोड़िकेकहारभाग येननिहारिसके आपरससारवानीवोलीजैसीगाईहै । वोलौहरिकृष्ण कृष्णछांड़ौगजतमतनसनिगयोहियेभावदेहसोनवाईहै ॥ ३८२ ॥ वहेहगनीरदेखिहोइगयोअधीरआपकृपाकरिखीरकियोदियो भक्तभा वहै । कानमेंसुनायोनामनामदेगोपालदास मालापहिरायग रेप्रगट्योप्रभावहै । दुष्टशिरमौरभूपलखिवहिठौरआयोपाइलपटाइभ योहियेअतिचावहै । निपटअधीनग्रामकेतिकनवीनदियेलियेकरजो रिमेरोफल्यांभागदावहै ॥ ३८३ ॥

आज्ञा पाइ अचयो लै गुरुमें भाव भक्तिकी नीम है जैसे हवेली को नीम होइ तौ सतखण्डौ उठाइ लई नहीं तौ गिरिपरै ऐसेही गुरुमें भक्ति होइ तौ दशधा भक्ति दशखण्डी सिद्धहोइ उनमान देखे हकीम प्रबल रोग सुनतही न भाजै रोगको उनमान देखिये बोले हरे कृष्ण ॥ भागवते ॥ प्रविष्टः कर्णरन्ध्रेण स्वानां भावसरोरुहे । धुनोति शमलं कृष्णः सलिलस्य यथा सरित् ॥ प्रभाव है ॥ शृण्वतां स्वकथां कृष्णः पुण्यश्रवणकीर्त्तनः ॥ हृद्यंतस्थो ह्यभद्राणि विधुनोति सुहृत्सताम् ॥ ३ ॥

भयोगजराजभक्तराजसाधुसेवासाजसंतनसमाजदेखकरतप्रणाम है । आनिडारेगौनवानिजारिनिकीवारिनिसोंआयेईपुकारनवेजहांगु रुधामहै । आवतमहोछेमध्यपावतप्रसादशीतवोलेआपहाथीसोंयों निन्दवहुकामहै । छोड़िदईरीतितवभक्तनिसोंप्रीतिवढ़ी संगहीसमूह फिरैफैलि गयोनामहै ॥ ३८४ ॥ संतसातपांचसातसंगजितजातति तलोकउठिधावैंल्यावैंसीधेवहुभीरहै । चहूंओरपरीहईसुवासुनिचाहभ ई हाथपैनआवतसोआनैकोऊधीरहै । साधुएक गयोगहिल्योभे पदासतनु मनमेंप्रसादनेमपावैनहींनीरहै । बीतेदिनतीनिचारिज

लैपिवावैधारिगंगाजूनिहारि मध्यतज्योज्योशरीरहै॥३८५॥मूल॥ भवप्रवाहनिस्ताररहित अवलंबनयेजनभये। सोझासींवांअधार धीर हरिनामत्रिलोचन। आशाधरदेवराजनीरसधनादुखमोचन। काशीश्वरअवधूतकृष्णकिंकरकटहरियो। सोभूउदारामनामडूंगरब्रतधरियो। पदमपदारथरामदासविमलानंदअमृतसृये। भवप्रवाहनिस्ता रहितअवलम्बनयेजनभये॥ ९६॥

निंद बहुकामहै॥ वैष्णवो बंधुसत्कृत्य ॥ २ ॥ महाराज बंधुन के लिये चोरी करै ठगाई करै आप बोले धन न होइ तौ करै ताते यह काम छोड़िदे भेट मुक्ती आइ रहैगी बहु भीरहै पांचसौ सातसै वैष्णवनकी भीररहै संग जहां चलै गोपाल दास हाथी सीधे चलै आवै और याते भीर बहुत रहै वैष्णवनकी गूदरी तौ लाद लेहै और हारो नीरो साधुहु चढ़ि लेहि ऐसो महंत कहा पाइये और महंत तौ वैष्णवन कंधे लादे यह वैष्णवनको सब बोझले चलै ॥ २ ॥

टीका ॥ सदनाकसाईताकीनीकीकसआईजैसेबारहबानीसोनेकीकसौटीकसआईहै। जीवकोनवधकरैऐपैकुलाचारढरैंबेचैमांसलाइप्रीतिहरिसोंलगाईहै। गंडकीकोसुतविनजानेतासोंतौल्यैंकरैभरैहगसाधुआनिपूजेपैनभाईहै कहीनिशिस्वपनमेंवाहीठौरमोकोदेवोसुनौ गुणगानरीझैहियेकीसचाईहै॥ ३८६ ॥ लैकेआयोसाधुमैंतौबड़ोअपराधकियोकियोअभिषेकसेवाकरौपैनभाईहै।येतौप्रभुरीझैतौपैजोइचाहौसोईकरौगरीभरिआयोसुनिमातिविसराई है। वेईहरिउरधारि डारिदियोकुलाचारि चलेजगन्नाथदेवचाहउपजाई है। मिल्योएकसंगसंगजातवेसुज्ञातसबतबआपदूरिदूरिरहेजानिपाई है॥३८७॥

सुनौ गुनगान ॥ पद ॥ मैंतौ अतिही दुखित मुरार। पांच ग्राहगीलत हैं मोको गज ज्यों करौ उधार॥ नाम गरीब निवाजउजासों करन विषय हठतार। सदनाको प्रभु तारौ ऐसे बहतहै कारी धार॥ २ ॥कवित्त वह पद भाषा के हैं एक कारि गावतहौ हम तुम्हैं गावत हैं सदा वेद वाणी

सों । मास भरे हाथनि सों आई तुम्हैं छूवत हौ हमैं केऊ मास बीते तुम्हरी कहानी सों ॥ लक्ष्मी नारायण जू बड़े रिझवार तुम्हारी रीझनिक सतेहै तुम्हारी रजधानीसों । हम निरमल गंगा जलसों न्हवावैं नित तुम रीझे सदना के वदना के पानीसों ॥ २ ॥ डारिदियो ॥ पद ॥ तजौ मन हरि विमुखनको संग । तिनके संग कुमति उपजतहै परत भजनमें भंग ॥ कागे कहा कपूर चुनावे मर्कट भूषण अंग । खरको कहा अरगजालेपै श्वान अन्हाये गंग ॥ काह भयो पयपान कराये विषनहिं तजतभुवंग । सूरदास कारी कामरि पर चढ़त न दूजोरंग ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥

आयोमगग्रामभिक्षालेनइकठामगयोनयोरूपदेखकोऊ तियारीझ परीहै । वैठोयाहीठौरकरौभोजननिहोरकह्योरह्योनिशिसोइआईमेरी मतिहरीहै । लेवोमोकोसंगगरोकाटोतौनहोइरंगवूझआौरकाटीपाति ग्रीवपैनडरीहै । कहीअवपागौमोसोंनातैकौनतोसोंमोसों शोरकरिउ ठीइनमारौभीरकरीहै ॥ ३८८ ॥ हाकिमपकरिपूछेंकहैहाँसिमारौहम डारचोशोचभारीकहीहाथकाटिडारिये । कट्योकरचलेहरिरंगमांझ झिलेमानी जानीकछूचूकमेरीयहैउरधारिये । जगन्नाथदेवआगेपाल कीपठाईलेन सदनासुभक्तकहांचढ़ैनविचारिये । चढ़ेआयेप्रभुपाससु पनोसोंमिट्योत्रासवोलेदैकसौटीहूपैभक्ताविस्तारिये ॥ ३८९ ॥ गुसा ईश्रीकाशीश्वरआगेअवधूतवरकरप्रीतिनीलाचलरहेलागेनीकोहै । महाप्रभुश्रीकृष्ण चैतन्यजूकीआज्ञापाइ आयेवृन्दावनदेखिभयोभा योहीकोहै । सेवा अधिकारपायोरसिकगोविंदचंदचाहतमुखारविंद जीवनजोजीकोहै । नितहीलड़ावैभावसागरछुड़ावै कौनपारावारपा वैसुनें लागैजगफीकोहै ॥ ३९० ॥

चूक मेरी ॥ कुण्डलिया ॥ डाक चढ़त चारी गिरै करै रावसों रोस। करै रावसों रोस दोष हरिको कहँ दीजे ॥ आपुन कुमति कमाय परेखो कको कीजे । तृषावंत ह्वै जीव सरोवर पै चलि आवै ॥ यह नाहिं देखी

सुनी आइ सर तृषा बुझावै । अगर कहै अपराध यह प्रभु हैं सदा अदोष॥ ढाक चढ़त बारी गिरै करै रावसों रोष ॥ २ ॥ पालकी पठाई ॥ श्री जगन्नाथ देव जीकरई औषधि दै पिछले जन्मको अपराध खोयो- चांहैं तब बुलाया ॥ दोहा ॥ दुर्जन को है तन भलो, सज्जनको भलो त्रास ॥ जो सूरज अधिकी तपै, तौबरषनकी आस ॥ २ ॥ न्यायके कर्त्ता न्याय करतही हैं ॥

मूल ॥ करुणाछायाभक्तिफलयेकलियुगपादपरचे । जतीराम रावल्यश्यामखोजीसंतसीहा । दलहापद्ममनोरथएकाद्योगूजपजीहा जाड़ाचाचागुरूसवाईचांदनपा । पुरुषोत्तमसोंसांचचतुरकीतामनको जिहिमेटचोआपा । मतिसुंदरधीधागैश्रमसंसारचालनाहिंननचे । करुणाछायाभक्तिफलयेकलियुगपादपरचे ॥ ९७ ॥ टीकाखोजी जूकेगुरुहरिभावनाप्रवीणमहादेहअंतसमय बांधिघटासोंप्रमानिये । पावैंप्रभुजबतबबाजिउठेजानौयहैपायेनबाज्यौबड़ीचिन्तामनआनिये तनत्यागबेरनहींहुतेफेरिपाछेआयेवाहीठौरपौढ़िदेख्यौआवपक्योमा निये । तोरताकेटूकाकियेछोटोएकजन्तमध्यगयो सोबिलाइबाजउठे जगजानिये ॥ ३९१ ॥ शिष्यकीतौयोगताईनीके मनआइआजुगुरू कीप्रलवलऐपैनेकुघटिक्योंभई । सुनोयहीबातमनबातबतकहीसही लैदिखाईऔरकथाअतिरसमई । वेतोप्रभुपाइचुकेप्रथमप्रसिद्धपाछे आछो फलदेखिहरियोगउपजीनई । इच्छासोसफलश्यामभक्त बश करीवहीरहीपूरपक्षसबव्यथाउरकीगई ॥ ३९२ ॥

मतिसुन्दर धीधागै मृदंग कैसी मतिहीसों सुन्दर ठहराई है पैहै झूठी ताकी चालमें सब संसार नचै है ॥ १ ॥ कावित्त ॥ आवो सदा काल पै न पायो कहूं सांचो सुख रूप सों विमुख दुख कूप वास बसाहै । धर्म को संघाती है न महाही अफाती पुनि एपै यह सन्निपात कैसी युत द- शाहै । माया कोऊ पटि गहै काया सों लपटि रहै भूल्यो भ्रम भीर में व-

हीर को सों शशाहै। ऐसो मन चंचल पताका कोसों अंचल सुज्ञानके ज-गेते निर्वाण पद धसाहै ॥ २ ॥ ऐसे श्रम करिके नहीं नचै संसार की चालमें रम्यो है ॥ ३ । ५ । ६ ॥

टीका राकाबांकाकी ॥ राकापतिबांकातियाबसैपुरपंडुरमेंउरमें नचाहनेकुरीतिकुछुन्यारिये । लकरीनबीनिकरिजीविकानबीनेकरै धरैहरिरूपहियेतासोंयोंजियारिये । बिनतीकरतनामदेवकृष्णदेवजू सों कीजैदुखदूरिकहीमेरीमतिहारिये । चलौलैदिखाऊंतबतेरेमनभा ऊंरहेबन छिपदोऊथैलीमगमांझडारिये ॥ ३९३ ॥ आयेदोऊतिया पतिपाछेवधूआगेस्वामीऔचकहीमगमांझसंपतिनिहारिये । जानी योंयुवतिजातकभूमनचलिजात यातेबेगिसंभ्रमसोंधूरिवापैडारिये । पूछीअजूकहांकियोभूमिमें निठुरितुमकहीवहीबातबोलीधनहूबिचा रिये । कहैमोकोराकाएपै बांकाआजुदेखी तुहीसुनिप्रभुबोलेबातसां चीहै हमारिये ॥ ३९४ ॥

जीविका नवीन करै ॥ उतनी ही लावै उतनी ही नृत्य करै अथवा साधुनको दैकै बचे सो आप पावै यह नवीनता तो काहूपै न बने विनती करता नामदेव ॥ दोहा ॥ कहूं कहूं गोपालकी, गई सिटल्लौ नाहिं। काबुलमें मेवा करी, ब्रजमें टेटी खाहिं ॥ २ ॥ कहूं कहूं गोपा-लकी गई सिटल्लौ नाहिं। विमुख लोग घोड़ा चढ़े, काठबेंच जनखाहिं ॥ ॥ २ ॥ कहा भयो जल में जल बर्षत बर्षत नाहिं खेत जहँ सूखा ॥ अघाये आगे बहुत परोसत परसत नाहिं मरत जहँ भूखा॥ ३॥सवैया ॥ श्री हरिदासके गर्भ भरे कमनेत अनन्य निहारिनि के । महा मधुरे रस पान करैं अवसान खतासिल हारिनि के । दियो नहिं लैहन मांगत काहूपै जोरत नेहतिहारिनिके। किये रहे अंड विहारिय सों हम ठेपर चाह विहारिनि के ॥ ४ । ५

नामदेवहरिहरिदेवकहीऔरैबातजोपैदाहगातचलौलकरीसकोलि ये । आयेदोऊबीनिबेकोदेखीइकठौरीढेरीद्वैहूमिलीपावेतेउहाथनहीं

छेरिये । तवतौप्रगटश्यामलायोयोंलेवाइवरदेखिमूढ़फोराकह्योऐसे प्रभूफेरिये । विनतीकरतकरजोरिअंगपटधारोभारो बोझपरोलियो चीरमात्रहेरिये ॥ ३९५ ॥ मूल ॥ परअर्थपरायणभक्तयेकामधेनु कलियुगकेलक्षिमनलफरालडूसतजोधपुरत्यागी । सूरजकुंभनदास विमानीखेमबैरागी । भावनाविरहीभरतनफरहीरेकेशटटेरा । हरी दासअयोध्याचक्रपाणिदियोसरयूतटडेरा । तिलोकपुषरदीबीझुरी उद्धवचनचरवंशजे । परअर्थपरायणभक्तयेकामधेनुकलियुगके ॥ ॥ ९८ ॥ टीका ॥ लड़नामभक्तजाइनिकसेविमुखदेशलेशहूनसंत भावजानेपापपागेहैं । देवीकोप्रसन्नकरैमानसकोमारिधरैलैगयेपकरि जहांमारिवेकोलागेहैं । प्रतिमाकोफारिविकरालरूपधरिआईलेकेत रवारमूड़काटेंभीजेवागे हैं । आगेनृत्यकरैहगभरैसाधपावधरैंऐसे रखवारेजानिजनअनुरागेहैं ॥ ३९६ ॥

नहीं छेरिये ॥ कही कोऊ कंगला धरिगयो आगे ले लेंहिंगे लकरी क्यों न मिले प्रातहि धनको मुहड़ो देख्यौ हो ले जतो नजानिये कहा है तौ ॥ आचाह सों कंगाल कह्यो ॥ दोहा ॥ घर घर डोलत दीन ह्वै जन जन याचत जाइ । दिये लोभ चसमा चखन लघु पुनि बड़ो लखाइ॥ १ ॥ जैसे लोभी को लघु बड़ो दीखै तैसे त्यागी तो बड़े हैं ते लघु दीखैंहै । पर्यंत धन मुक्ति स्वर्ग तुच्छ दीखै अत्यन्त ॥ दोहा ॥ राम अमल तेरहैं पीवै प्रेम निशंक ॥ आठ गांठि कोपीन में कहे इंद्र सों रंक ॥ २ ॥ बे पर-वाही वैष्णव ऐसे ॥ ३ ॥

टीकासंतकी ॥ सदासाधुसेवाअनुरागरंगपागिरह्योगह्योनेमभि क्षाव्रतगांवगांवजाइके । आयेघरसंतपूछेतियासोंयोंसंतकहासंतचूल्हे झांझकहीऐसेअलसाइके । बानीसुनिजानीचलेमगसुखदानीमिलेक हौकितहुतेसोबखानीउरआइके । बोलीवहसांचवोहीआंचहीकोध्या नमेरेआनिगृहफिरिकियेमगनाजिवाइके ॥ ३९७ ॥ टीकातिलोक

की ॥ पूरवमेंओकसोतिलोकहैसुनारजाति पायोभक्तसारसाधुसेवा उरधारिये । भूपकेविवाहसुताजोराएकजेहरिकोगढ़िबेकोदियोकह्यो नीकेकैसँवारिये । आवतअनंतसंतऔसरनपावैकिहूंरहेदिनदोयभूप रोसयोसँभारिये । लावोरेपकरलाये छाड़ियेमकरकही नेकुरह्यो का म आवै नातैमारिडारिये ॥ ३९८ ॥ आयोवहीदिनकरछुयोहून इननृपकरैप्राणविनवनसांछछिप्योजाइकै । आयेनचारिपांचजानी प्रभुआंचगढ़िलियोसोदिखायोसांचचलेभक्तभाइकै । भूपकोसला मकियोजेहरिकोजोरादियो लियोकरदेखिनयनछोड़ैनअघाइकै।भईरी झभारीसबचूकमेटिडारीधनपायोलैमुरारीऐसेवैठेघरआइकै॥३९९॥

वानीसुनिजानी चाले ॥ सवैया ॥ होतही प्राण जो घात करै तिन पार परोसिन सो कलगाढ़ी । हाथ नचावति मूड़ खुजावति पौरि खड़ी अति कोटिन बाढ़ी ॥ ऐसी बनी नखते शिखलौं मनों क्रोधके कुंडमें बोरिकै काढ़ी । ईंट लिये पियको मुख जोवत भूतसी भामिनि भौनमें ठाढ़ी ॥ २ ॥ ऐसी कलहा को वचन सुनिके साधू उटि चले क्योंकि जिनके वचन सुनिकै भूतहू भाजिजाहिं ॥ २॥ राजाके पुरोहित कुरला डारा अपनी स्त्री पतोह संपत्ति और शरीर सुख विद्या अरु बरनारि मांगे मिलैं न चारि विन पूरवके पुण्य विन अनंत संत ॥ पंचमे ॥ तुलया म लवेनापि न स्वर्गं न पुनर्भवम् ॥ भगवत्संगिसंगस्य मर्त्यानां किमुता शिषः ॥ ३ ॥ सत्ससंगको मार्ग आछो है ॥ ४ ॥

भोरहीमहोत्सवकियोजोईमांगैसोईदियो नानापकवानरसखान खादलागे हैं । संतकोस्वरूपधरिलैप्रसादगोदभरिगयेजहांपावौंजो तिलोकगृहपागेहैं । कौनसोत्रिलोकअजूदूसरोत्रिलोकोसैन वैनसुनि चैनभयोआयोनिशिरागे हैं । चहलपहलधनभरचोघरदेखिढरचो प्रभुपदकंजजानीमेरेभागजागेहैं ॥ ४०० ॥ मूल ॥ अभिलाषअधि कपूरणकरनचिंतामणिचतुरदास । सोमभीमसोमनाथविकोविशा

खालमध्याना। महदामुकुंदगयेसत्रिविक्रमरघुजगजाना। बालमी किवृद्धव्यासजगनझांझबीठलआचारज। हरभूलालाहरीदासबाहुब लराघवआरज। लाखाछीतरउद्धवकपूरघाटमचूराकियोप्रकास। अभिलाषअधिकपूरणकरनयेचिंतामणिचतुरदास॥ १९९॥ भगत पालदिग्गजभगतयेथानापतिशूरधीर। देवनन्दबरहरियानंदमुकुन्द महीपतिसंतरामतमोली। खेमश्रीरंगनंदविष्णुबीदावानूसुतनोरी। छीतमद्वारकादासमाधवमांडनरुपादमोदर। भलनरहरिभगवान बालकहरकेशवसोहेंघर। दासप्रियागलोहंगगुपालनागूसुतगृहभक्त भीर। भक्तपालदिग्गजभगतयेथानापतिशूरधीर॥ २००॥

चहल पहल ॥ दोहा॥ परमारथ अनुसरतहीं बीचहि स्वारथ होइ। खेतीकीजै नाजकी सहज घास तहँ होय ॥ २॥ घाटम ॥ पद॥ जोनर रसना नाम उचारै। केतिक बात आप तरिबेकी कोटि पतित निस्तारै। काम क्रोध मद लोभ तजै जो जीवदशा प्रतिपालै ॥ तीरथ जेतिक ते वसु- धापर तिनहूंके अघटारै। मेना जाति यद्यपि कुल नीचो सत गुरु शब्द वि- चारै। घाट मदास राम जो परचै तीन लोक उद्धारै। थानापति क्योंन भये॥ क्षुधारूपिणी कूकरी हरिने दई लगाई। परसा टूकाडारिकै गोविं- दके गुणगाई। ३। ४। ५॥

मूल ॥ बद्रीनाथउड़ीसिद्वारकासेवहरिभजनपर। केशवपुनिह रिनाथभीवखेतागोविन्दब्रह्मचारी। बालकृष्णभलभरतअच्युतअ पपाव्रतधारी। पंडागोपीनाथमुकुन्दागजपतिमहायसु। गुणनिधि यशगोपालदेइभक्तनकोसर्वसु। श्रीअंगसदासानिधिरहैकृत्यपुण्य पुं जभलभागभर। बद्रीनाथउड़ीसाद्वारकासेवहरिभजनपर॥२०१॥ टीकाप्रतापरुद्रराजाकी॥ श्रीप्रतापरुद्रगजपतिकोबखानकियोलि योभक्तिभावमहाप्रभुपैनदेखहीं। कियेहूउपायकोटिऔटिलैसंन्यास लियो हियोअकुलायअहो कहूंमोकोपेखहीं। जगन्नाथरथआगेनृ

त्यकरैंमत्तभयेनीलाचलनृपपाइपरचोभागलेखहीं । छातीसोंलगायोप्रेमसागरडुबायो भयोअतिमनभायोदुखदेतयेनिमेपहीं ॥४०१॥
मूल ॥ हरिसुयशप्रचुरकरिजगतमेंयेकविजनअतिशयउदार । विद्यापतिब्रह्मदासवहोरणचतुरविहारी । गोविंदगंगारामलालवरसानियामंगलकारी । पियदयालपरशुरामभक्तिभाईखाटीको । नंदसुवनकीछापकवित्तकेशवकोनीको । आशकरणपूरणनृपतिभीषमजनदयालगुणनाहिंपार । हरिसुयशप्रचुरकरिजगतमेंयेकविजनअतिशयउदार ॥ ४०२ ॥

प्रेमसागर ॥ महा प्रभु जू प्रेम भक्ति देत भये ॥ श्लोक ॥ ज्ञानतः सुलभा भक्तिर्मुक्तिर्यज्ञादिपूर्णतः । समासहस्रैर्हरिभक्तिदुर्लभा ॥ १ ॥ अर्जुनके रथकी रक्षाके निमित्त अनेक झूठ सांच बोले ऐसे भक्तन सों बँधेहैं पै हरिके बँधेहि में शोभा है ॥ श्लोक ॥ तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मपापहम् । श्रवणमंगलं श्रीमदाततं भुविगृणंति ये भूरिदाजनाः ॥ २ ॥ भूरिदा कहि बड़े दाता जन्म कर्म के दूरि करनेहारे सो इन कविन हरिके गुण रूपही वर्णन करे हैं तिन गुणाविंदन को बांचिकै जगत् तरि जायगो विश्वास मानि ॥ ३ ॥

टीकागोविंदस्वामीकी ॥ गोवर्द्धननाथसाथखेलेसदाझेलेरंगअंगसख्यभावहियेगोविंदसुनामहै । स्वामीकरिख्यालताकीवातसुनिलीजेनीकेसुनेसरसातनयनरीतिअभिरामहै । खेलतहौलालसंगगयोउठिदांवलैकैमारीखेचगिलीदेखिमंदिरमेंश्यामहै । मानिअपराधसाधूधकादैनिकारिदियोमातिसोअगाधकैसेजानेवहवामहै ॥ ४०२ ॥
वैठेकुंडतरिजाइ निकसैगोआइवन दियोहैलगाइताकोफलभुगताइये । लालहियेशोचपरचोकैसेजातभरचोवहअटेडमगमांझभोगधरचोपैनखाइये । कहीश्रीगुसाईंजीसोंमोपैकोनभावैकछूचाहौजोखवायोतौपैवाकोजामनाइये । वाकोहुतोदांवमोपैसोतौभावजानौ

नाहिं कहैसोसोंबातैशोकमारैबेगिलाइये ॥ ४०३ ॥ बनबनखेलेबिन बनतनसोकोनेकुभनतजगारीअनगनतलगावैगो । सुधिबुधिमेरीगई भईबड़ीचिंतामोहिंलाइयेजूढूंढ़िजबचैनढिगआवैगो । भोगजेलगाये मैंतौतनकनपाये रिसवाकीजबजाइजबमोहिंकछूभावैगो । चलेउठि धाइनीठिनीठिकेमनाइलायेमंदिरमेंखाइमिलिकहीगरेलावैगो४०४॥

सख्यभाव ॥ नवप्रकारकी भक्तिहै तामेंसख्य बडी कठिन है तामें ईश्वरताकी गंध न रहै दृष्टांत बादशाह के खिलवत बखाने अरु दो मित्रनको ॥ २ ॥ विश्वासंसमतानित्यं सख्यत्वं भावउच्यते ॥ २ ॥ पन्हैयां पराई नाथजीको खेलत पाषाण की मूरति चैतन्य ह्वै कैसे खेलन लगी ॥ ३ ॥ यादृशी भावनायस्य ॥ ४ ॥ गोविन्द स्वामीके अबलों मन भावना रहै याते संगखेले एकगोपहौं सो नंदजीके मंदिर में जाइकै पगडी उतारि लायो लालकी सगाई मारि जाइ है ॥ ५ ॥

गयेहैंबहरभूमितहांकृष्णझूमिआये करीबड़ीधूमआकबौंड़ानिसों मारिकै । इनहूंनिहारिउठिमारिदईवाहीसोंजुकौतुकअपारसख्यभाव रससारिकै । मातामगचाहैबड़ीबेरभईआईतहांकहीबारबारओटपाई उरधारिकै । आयोयोंबिचारअनुसारसदाचारकियो लियोप्रेमढिगक भूंकरतसँभारिकै ॥ ४०५ ॥ आवतहैभोगमहासुंदरसोमंदिरकोरहे उमगबैठिकहीआगेमोहिंदीजिये । भयोकोपभारीथारडारिकैपुकार करीभरीनअनीतिजातिसेवायहलीजिये । बोलिकैसुनाईअहोकहाम नआईतबखोलिकैबताईअजूबातकानकीजिये । पहिलेजुखाइबनमां झउठिजाइपाछेपाऊंकहांधाइसुनिमतिरसभीजिये ॥ ४०६ ॥ मूल॥ जेवसेसबमथुरामंडलतेदयादृष्टिमोपरकरौ । रघुनाथगोपीनाथराम भद्रदासस्वामी । गुंजामालीचित्तउत्तमबीठलमरहटानिःकामी । यदु नंदनरघुनाथरामानंदगोविंदमुरलीसोती । हरिदासमिश्रभगवानमु कुंदकेशवडंडोती । चतुर्भुजचरित्रविष्णुदासबेनीपदमोशिरधरौ । जेवसेबसमथुरामंडलतेदयादृष्टिमोपरकरौ ॥ २०३ ॥

आइतहां देखै तौ धूममचाइ रह्योहै मताकहै ओटपाई धूम कौन सों मचाइ रह्योहै इहां तौ कोई है नहीं माताको कृष्ण क्यों न दीखे गोविन्द स्वामीको कैसे दीखे गोविन्द स्वामी श्रीकृष्णके संगते अप्राकृतभयो याते दीखे जैसे कच्चोआंब पालसों पकै खटाई जातिरहै मिठाई ह्वै जाइ जैसे ध्रुव भगवानके संगते अप्राकृतभये ऐसेही गोविंदस्वामी अप्राकृतभये मतिरसभी जिये विट्ठलनाथजीकी मति रसमें भीजिगई सो सख्यभावमें भीजिगये हैं२॥

टीकागुंजामालीकी ॥ कहीनाभास्वासीआपगायोमैंप्रतापसंत वसेव्रजवसेसोतौमहिमाअपारहै । भयेगुंजामालीगुंजहारधारुनामप रच्यो करचोवासलाहौरमेंआगेसुनौसारहै । सुतवधूविधवासोंबोलिकै सुनायोलेहु धनपतिगेहश्रीगुपालभरतारहै । देवोप्रभुसेवामांगेंनारि वारिवारयहै डारैसववारियापैगनैजगछारहै ॥ ४०७ ॥ दईसेवावाहि औरघरधनतियादियो लियोव्रजवासवाकीप्रीतिसुनिलीजिये । ठाकु रविराजैजहांखेलैसुतऔरनके डारेईंटखोवारयोप्रभुपरखीजिजे ।दिये वेविडारिधरयो भोगपैनखातहारि पूछीकहीवेईआवैंतवहींतौजीजिये कह्योरिसभरिवूरिनीकेभोरडारौभरिखावौ हमहाहाकरीपायोलाइरी झिये ॥ ४०८ ॥ मूल ॥ कलियुगयुवतीजनभगतराजमहिमासवजा नेंजगत ॥ सीताझालीसुमतिशोभाप्रभुताउमाभटियानी । गंगागौरा कुवरीउवीटागुपालीगणेशदेरानी ॥ कलालखाकृतगढ़ौमानमतीशु चिसतभामा ॥ यमुनाकोलीरामामृगादेभक्तनविश्रामा ॥ युगजीवा कीकमलादेवकीहीराहरिचेरीपोपेभगत । कलियुगयुवतीजनभगत राजमहिमासवजानेजवत ॥ २०४ ॥

भक्तराज ॥ स्कांदे ॥ स्त्रियोवायदिवा शूद्रो ब्राह्मणः क्षत्रियोऽपिवा ॥ पूजयित्वा शिलाचक्रं लभते शाश्वतं पदम् ॥ १ ॥ दोहा ॥ राम रंग लाग्यो नहीं, विप्र जनेऊ बांह ॥ रज्जब लोनानागलगि, चक्र चूनरी चाह ॥ २ ॥ महिमा यह सब भक्त राज है जाति पांति की गनती नहीं एक पंगतिमें

राखी रानी ब्राह्मणी कोली भठियानी रैदासिनी भक्तिही श्रेष्ठ है जहां भक्ति तहां भगवान शबरी के गये अभिमानी ऋषिन के न गये प्रीति की रीति सांची जानी ॥

टीकागणेशदेरानीकी ॥ मधुकरशाहभूपभयोदेशओडछेकोरानीसोगणेशदेसुकामवाकोकियोहै । आवैंबहुसंतसेवाकरतअनंतभांतिरह्योएकसाधुखानपानसुखलियोहै ॥निपटअकेलीदेखिबोल्योधनथैलीकहां होइतौबताऊंसबतुमजानौहियोहै । मारीजांघछूरीलखिलोहुवेगिभागिगयो भयोशोचजानैजिनिराजाबंददियोहै ॥ ४०९ ॥ बांधिनीकीभांतिपौढ़िरहीकहीकाहूंसोंन आयोढिगराजामतिआवोतियाधर्म्महै । बीतेदिनतीनजानीबेदननवीनकछूकहियेप्रवीणमोसोंखोलिसबभर्महै । टारीबारदोइचारिनृपकोबिचारपरयो कह्योसावधानजिनिआनोजियमर्म्महै । फिरयोआसपासभूमिपरितनरासकरी भक्तिकोप्रभाव छांड़ितियापतिशर्म्महै ॥ ४१० ॥

आवैं बहुसंत वह तरंग के पै सबही को सेवै कह्यो सावधान ॥ कवित्त ॥ संतहैं अनंत गुण अंतको न पावै याको जाने रसवंत कोई रीझै पहिचानि कै । अवगुण न दीठिपरै देखतही नैन भरै ढरै पग ओर उर प्रेम भरि आनिकै ॥ जोपै कछूघटि क्रिया देखि पति इनमांझ करिलै बिचार हरिही की इच्छा मानिकै । बालक शृंगारके निहारि नेहवती माता देतिहै दिठौनाकारो दीठि दुर जानिकै ॥ दोहा ॥ कामी साधु कृष्ण कहि लोभी बावन जानि ॥ क्रोधीको नरसिंहही नहीं भक्ति की हानि ॥ २ ॥ जाको जैसो सुभाव जायनहिं जीवसों । नींब न मीठी होइ सींचि गुण घीवसों ॥ ३ ॥ कोइला होइ न ऊजला, नौमन साबुन लाइ । मूरख को समझावनो, ज्ञान गांठिको जाइ ॥ काहू ने कही सुंदर क्यों न भये तापै दृष्टांत राजा आशकरन को और साहब जादे फकीरको प्रसंग ॥ १ ॥

मूल ॥ हरिकेसम्मतजेजगततेदासनकेदास ॥ नरबाहनबाहन

वरीसजापूजैमलवीदावत । जयंतधारारूपाअनभईउदरावत ॥ गंभी रैअर्जुनजनार्दनगोविंदजीता । दामोदरसांपिलेगदाईश्वरहेमविदीता॥ मयानंदमहिमाअनंतगुढ़ीलितुलसीदास । हरिकेसम्मतजेभगततेदा सनकेदास ॥ २०५ ॥ टीकानरवाहनजीकी । हैभैगांवनावनरवाहन साधुसेवीलूटिलईनावजाकीवंदीखानेदियोहै । लौंडीआवैदेनकछुखा इवेकोआईदया अतिअकुलाइलैउपाइयहकियोहै । वोलिराधावल्ल भऔलेवोहरिवंशनामपूछेशिष्यनामकहौपूछीनामलियोहै । दईमँग वायवस्तुराखियोदुराइवातआपुदासभयोकहीरीझिपददियोहै ४११ मूल ॥ श्रीमुखपूजासंतकीआपुनतेअधिकीकही॥ यहवचनपरिमान दासगाँवढीजढियानैभाऊ । वूंदीवनियारामसड़ौतैंमोहनवारीदाऊ ॥ मांड़ौढीजगदीशलक्षिमणचटथावरभारी । सुनपथमेंभगवानसवैसल खानसुपालउधारी ॥ जोवनेरिगोपालकेभक्तइष्टतानिर्वही । श्रीमुख पूजासंतकीआपुनतेअधिकीकही ॥ २०६ ॥ टीकाजोवनेरगोपाल की ॥ जोवनेरवाससोंगुपालभक्तइष्टताको कियोनिर्वाहवातमोकोला गीप्यारिये । भयोहौविरक्तकोऊकुलमेंप्रसंगसुनौआयोयोंपरीक्षालेन द्वारपैविचारिये । आइपरचोपाईंधारोनिजमंदिरमेंसुंदरनदेखौमुखप नकैसेटारिये । चलौजिनिटारौतियारहैगीकिनारोकरिचलेसवछिपी नेकुदेखियाकेमारिये ॥ ४१२ ॥

लूटिकैसेवै तो पापलगैगो जगतके पाप पुण्य मिथ्याजाने स्वप्नवत् ताकोफल दुखसुख कहा जैसे व्यभिचारिणी स्त्रीके स्वप्नको फलझूठो सेवा में सांचो॥यादृशीभावना यस्य॥ १ ॥दई ऊंचे को देखि यामें मारिये ॥४१५॥ मगवाई १ कामदार वोले तीनि लाख तीस हजारको माल क्यौं फेरि दियो नरवाहन वोले ॥ जो हरिवंशको नामसुनावै तन मन धन तापै वलिहारी । जो हरिवंश उपासक सेवै सदा सेऊं ताके चरण विचारी ॥ श्री हरिवंश गिरा यश गावै सर्वस देहौं तेहि वारी । जो हरिवंश को धर्म सि-

खावै सो मेरे प्रभुते प्रभु भारी ॥ पददियो ॥ पद ॥ मंजुल कल कुंज देश राधा हरि विशद वेश राका नभ कुमुद चंद शरद यामिनी ॥ श्यामल द्युति कनक अंग बिहरत मिलि एक संग नीरद मनो नील मधि लसत दामिनी । अरुण पीति नव दुकूल अनुपम अनुराग मूल सौरभ युत शीत अनिल मंदगामिनी । किशलय दल रचत सेन बोलत पिय चारुवैन मानस हित प्रति पद प्रतिकूल कामिनी ॥ मोहन मन मथत मार परसत कुचनी बिहार नेपथ युत नेति नेति बदति भामिनी । नर बाहन प्रभु सकेलि बहु बिधि भर भरति झोलि सो रति रस रूप नदी जगत पावनी ॥ २ ॥ चलि हे राधिके सुजान तेरे हित सुख निधान रास रच्यो श्याम तट कलिंद नंदनी । निर्त्तत युवती समूह रागरंग अति कुतूह बाजत तमूल मुरलिका आनंदनी । बंशीबट निकट जहां परम रवनि भूमि तहां सकल सुखद मलय बहै वायु मंदनी । जाती ईषत् विकास कानन अतिशय सुवास राकानिशि शरद मास बिमल चांदनी। निरबाहनप्रभुनिहारि लोचन भरिघोषनारि नख शिख सौंदर्य काम दुख निकंदनी । विलसौ भुज ग्रीव मेलि भामिनि सुख सिंधु झोलि नव निकुंज श्याम केलि जगत बंदनी ॥ ३ ॥ आपन ते अधिक पूजा अष्ट प्रकार की ब्राह्मण भोजन अग्नि होम जल मंत्र गोत्रन बैष्णव उदर और इत्यादि ॥ ४ ॥ आदिस्तुपरिचर्यायां सर्वांगैरपिवंदनम् । मद्भक्तपूजाभ्यधिकासर्वभूतेषुमन्मतिः ॥ ५ ॥

एकपैतमाचोदियोदूसरेनेरोषकियो देवोयाकपोलपैयोंबाणीकही प्यारिये। सुनिआंसूभरिआये जाइलपटाये पांयकैसेकहीजाइयहरीतिकछुन्यारिये । भक्तइष्टसुनोमेरेबड़ोअचरजभयोलईमैंपरीक्षामोको भईशिक्षाभारिये ।बोलेउअकुलाइअजूऐपै कहांभायऐपैसाधुसुखपायकहैंयहीमेरोज्यारिये ॥ ४१२ ॥ मूल ॥ परमहंसबंशनमेंभयोबिभागीवानरो। सुरधरिखंडनिवासभूपसबआज्ञाकारी । रामनामाबिश्वासभक्तपदरजब्रतधारी । जगन्नाथकेद्वारदंडवतप्रभुपरधायो । दईदासकोदादिहुंडीकरिफेरिपठायो । सुरधुनीओघसंसगेततामवद

लिकुच्छितनरो। परमहंसवंशनमैंभयोविभागीवानरो ॥ २०७ ॥

टीकालाखाभक्तकी॥ लाखानामभक्तताकोवानरोवखानकियो कहेंज गडौमजासोंमेरोशिरमौरहै । करैसाधुसेवावहुपाकडारिमेवासंतजें वतअनंतसुखपावैंकोरकोरहै ॥ ऐसेमंअकालपरयोआसैंघरमालजा लकैसेप्रतिपालकरैंताकीऔरठौरहै । प्रभुजीस्वपनादियोकियोमैं यतनएकगाड़ीभरिगेहूंभैंसआवेकरोगौरहै ॥ ४१४ ॥

विभागी वानरो ॥ भगवान्‌की भक्ति रूपी संपत्ति चारों बाटि पावें ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र काहूसों घटती नहीं जैसे काहू के चारि पुत्र पंडित मूरख निर्धन पंगुला सवही बांटि पावें कुच्छित ॥ नारदपंचरात्रे ॥ यस्माद्यस्मादपि स्थानाद्गंगायामंभ आपतत् ॥ सर्वंभवति गांगेयं कोन सेवेत बुद्धिमान् ॥ १ ॥ दोहा ॥ तुलसी नारो जगत को, मिलै संगमें गंग। महा नीचपन आदिको, शुद्ध करै सतसंग ॥२॥ नीर नगरको परशु- राम ता समरत अज्ञान। साधु समागम सुरसरी, मिल इक होत समान॥ ३॥

गेहूंकोठीडारिमुहुंमूंदिनीचेदेखोखोलि निकसेअतोलिपीसिरोटीलै वनाइये। दूधजितोहोइसोजमाइकैविलोइलीजेदीजेयोंचुपरिसंगछांछ दैजिमाइये । खुलिगईआखेंभापेंतियासोंजुआज्ञादई भईमन भाईअजुहरिगुणगाइये । भोरभयेगाड़ीभैंसिआईवही रीतिकरी करीसाधुसेवाकीप्रीतिहूवखानिये ॥ ४१५ ॥ प्रीतिहूवखा नकीजेलीजेउरधारिसारभक्तिनिरधारहै । रहैढिगगांवतहांसभाएक ठांवभईडाटिगयेभाईसोउगाहीकोविचारहै । वोलिउठ्योकोऊयों हारकोतौभारचुक्यो लीजियेसँभारिलाखासंतभवपारहै। लाजदवि तिनादियेगेहूंलैपचासमन दईनिजभैंससंगसवसरदारहै॥ ४१६ ॥ मारवाड़देशतेचल्यौईसाष्टांगकियेहियेजगन्नाथदेवयाहीपनजाइये । नेहभरिभारीदेहवारिफारिडारीकैसेकरैतनधारीनेकुश्रमसुरझाइये । पहुंच्योनिकटजाइपालकीपठाइदईकहैलाखाभक्तकौनवेगदेवताइये। काहूकहिदियोजाइकरगहिलियोअजू चलोप्रभुपासइहिक्षणहींवुलाइ

ये ॥ ४१७ ॥ कैसेचलौपालकीमेंप्रणतप्रतिपालकीजेदीजेमोकोदान याहिभांतिजानिहारिये । बोलेप्रभुकहीआपुसुमिरनीबनाइलायेअब पहराइमोहिसुनिउरधारिये । चढ़ेचाढ़िबढ़कियोचाहेंयहजानीमैंतौ पढ़िपढ़िपोथीप्रेममोपैविस्तारिये । जाइकैनिहारेतनमनप्राणवारेजग न्नाथजूकेप्यारेनेकढिगतेनढारिये ॥ ४१८ ॥

बोलीदेवता पितृ अतिथि इनको ऋणियारहे न देइ तौ ताते लाखा को दीजै ॥ २ ॥ एकोपि कृष्णस्य कृतः प्रणामोदशाश्वमेधावभृथे नतुल्यः । दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय ॥ वडेगहे करहोत बड ज्यों बावन कर दंड । मौजी प्रभुको संगबडगयो अखिलब्रह्मांड ॥

बेटीएकक्कारीब्याहिदेतनबिचारी मनधनहरिसाधुनकोकैसेकैल गाइये। कीजैवाकोकार्यकहीजगन्नाथदेवजूनेलीजेमोपैद्रव्यउरनेकहू नआइये। बिदापैनभयेचलेहगमनलयेगयेआगेनृपभक्तसगचौकीअ टकाइये । दियोहैस्वपरिप्रभुजनिहठकरौअजू हुंडीलिखिदइलईबि नयकेजताइये ॥ ४१९ ॥ हुंडीसौहजारकीलैगृहद्वारआयेजब तामें तेलगायेसोकबेटीब्याहकियोहै । औरूसबसंतनबुलाइकैखवाइदिये लियेपगदाससुखराशिप्रणलियोहै । ऐसेहीबहुतदामवाहीकेनिमित्त लैलै साधुभुगतायेअतिहरषतहियोहै । चरितअपारकछूमतिअनु सारकहेउ लहेउजिनस्वादसोतौपाइनिधिजियोहै ॥ ४२० ॥

पद ॥ हरिके जनकी अतिठकुराई । महाराज ऋपिराज देव मुनि सकुचि रहत शिरनाई। दृढ़ विश्वास दियो सिंहासन तापर बैठे भूप। हरि-यश छत्र विमल शिरसाजत राजत परम अनूप। निशिप्रहदेश राज करता को लोकन अति उत्साह । काम क्रोध मद मोह लोभ ये भये चोरते शाह । अर्थ काम कहुं दूरिगये दुरि धर्म मोक्ष शिरनायो । बुधि विवेक दोउ पवँरि पवँरिया समय न कबहूं पायो । अष्टसिद्धि नवनिद्धि चातुरी करजोरे आधीनी । छरीदार बराग विनोदी झरक बाहिरीकीनी ॥ हरिपद

पंकज प्रीति प्रियावरताही सों अनुराता। मंत्री ज्ञान न अवसर पावै बात कहत सकुचाता ॥ माया मोह न व्यापे कबहूं जो यह भेदहि जाने । सूर-दास पदटरत न टारे गुरुप्रसाद पहिंचाने ॥ १ ॥ धनहम तो गुमस्ताऐसे ॥

मूल ॥ जगतविदितनरसीभगतजिनगुज्जरधरपावनकरी । महास्मारतकलोगभक्तिलवलेशनजाने । मालासुद्रादेखितासुकीनिंदाठाने । ऐसेकुलउतपन्नभयोभागवतशिरोमनि । ऊसरतेसरकियोषंडदोषहिखोयोजिनि । बहुतठौरपरचेदियेरसरीतिभक्तिहिरदैधरी । जगतविदितनरसीभगतजिनगुज्जरधरपावनकरी ॥ २०८ ॥ टीकानरसीमहिताकी ॥ जूनागढ़बासपितामाततननाशभयो रहैएकभाईऔभौजाईरिसिभरीहै । डोलतफिरतआइबोलतापिवावोनीरभाभीपैनजानीपीरबोलीजरीबरीहै । आवतकमायेजलप्यायेविवसरैकसैपियोयोजबावदियोदेहथरहरीहै । निकसेविचारकहूंदीजेतनडारमानों शिवपैपुकारकरीरहेचितधरीहै ॥ ४२१ ॥ बीतेदिनसातशिवधामतेनजातचारपरैकाहूतुच्छद्वारसोऊसुधिलेतहै । इतनीविचारिभूखप्यासदईढारिलियोप्रगटस्वरूपधारिभयोहितहेतहै । बोलेवरमांगिअजूमांगिमैंनजानतुहौं तुम्हैंजोइप्यारोसोइदेबोचितचेतहै । परचोशोचभारीमेरीप्राणप्यारीन्यारीतासों कहतडरतवेदकहैंनेतिनेत है ॥४२२॥

पावनकरी पहले अपावनता कैसी है जाहि पावनाकियो जैसे खाई गढ़-अरावो बड़ोहोइ तो ताको सरकरै सो शूरमा कहावै अरु शोभापावै ऐसे अपावन बड़ी होइ तब पावन की शोभा सो नरसी तौ अभक्तदेश जीतिकै भक्तिको राज्य कियो ॥ १ ॥ महा स्मा रत लोग स्मारतकतौ यह कर्म करिकै नाम लीजे केसरि जाइ ॥ अष्टमे ॥ मंत्रतस्तंत्रतश्छिद्रं देशकालोहिवस्तुतः । सर्वं करोति निश्छिद्रं नामसंकीर्तनं तव ॥ ३ ॥ ऐसो क्यों बांकी गढ़ी सुरंगसो टूटैहै ॥

दियोमैंवृकासुरकोवरडरभयोजहां वैसेवरकोटिकोटियापैवारिडारेहैं । बालकनहोइयहपालकहैलोकनकोमनकोविचारकहादीजेप्रा

णप्यारेहैं । जोपैनहींदेतमेरोबोलिबोअचेतहोतादियोनिजहेततनआलिनकेधारेहैं । लायेवृन्दावनरासमंडलजटितमणि प्रियाअनगतबीचलालजूनिहारेहैं ॥ ४२३ ॥ हीरानिखचितरासमंडलनचतदोऊरचतअपारनृत्यगानतानन्यारिये । रूपउजियारीचंदचांदिनीनसमतारीदेतकरतारीलालगतिलेतप्यारिये । ग्रीवकीदुरनिकरअँगुरीमुरनिमुखमधुरसुरनिसुनि श्रवणतापारिये । बजतमृदंगमुरचंगसंगअंगअंगउठततरंगरंगछबिजीकीज्यारिये ॥ ४२४ ॥ दईलैमशालहाथनिरखिनिहालभईलालदीठिपरीकोऊनईयहआई है । शिवसहचरीरंगभरीअटकरीबातमृदुमुसुकातनयनकोरमेंजताई है । चाहयाहिटारचोयहचाहैप्राणवारचो तबश्यामढिगआइकहिनीके समुझाई है । जावोयहध्यानकरौ करौसुधिआऊँजहांआयेनिजठौरचटपटीसोंलगाई है॥

बजत मृदंग ॥ कवित्त ॥ पियप्यारी दोऊमिल रासको मचाइ रहे देखै जो निहारि वाहिरहीन संभार है । तता थेईथेई करत नृत्यतगति लेतरंग सौभरत पेख सकुचत मारहै । बाजत मृदंग मुरचंग उठत उमंग गावत हैं ताल संग लाग्यो प्रेमलारहै । शरद समाज वन वृन्दावन प्रगटभ- यो कहैं कबि कौन जाको पावै नहीं पारहै ॥ १ ॥ भागवते ॥ वलयानां नूपुराणां किंकिणीनां च योषिताम्। सप्रियाणामभूच्छब्दस्तुमुलो रासमण्डले ॥ २ ॥ वकारतेमानिये ॥ ३ ॥

कीनीठौरन्यारीबिप्रसुताभईन्यारीएकसुताउभयवारीजगभक्तिविस्तारीहै । आवैबहुसंतसुखदेतहैअनंतगुणगावतारिझावतऐसेसेवाविधिधारीहै । जितीद्विजजातिदुखभायोअतिगातमानीबड़ोउतपातदोषकरैनविचारीहै । येतोरूपसागरमेंनागरमगनमहा सकैकहाकारिचहूंओरगिरिधारीहै ॥ ४२६ ॥ तीरथकरतसाधुआयेपुरपूछेकोऊहुंडीलिखिदेहिहमैंद्वारकासिधारिबे । जेवरहैदूषिकहीजातहीभगावैभूखनरसीविदितसाहआगेदामडारिबे । चरणपकरिगिरिजावोसुलिखावौअहोकहौवारवारसुनिविनतीनटारिबे । दियोलैबतायघरजाय

वहीरीतिकरी भरीअङ्कवारिमेरेभागकहावारिये ॥ ४२७ ॥ सातसै रुपैयागनिढेरीकारिदईआगेलागेपगदेवोलिखिकहोवारवारहै । जानी वहँकायेप्रभुदामदेपठायेलिखि कियेमनभायेसाहसांवलउदारहै । वाहीहाथदीजैपैलेकीजियेनिशङ्ककाज गयेयदुराजधानीपूछोसोवजा रहै । ढूंढ़िफिरिहारेभूखप्यासमीड़िडारेपुर तजिभयेन्यारेदुखसागर अपारहै ॥ ४२८ ॥

कीनी ठौर न्यारी ॥ सवैया ॥ देव औ दानव दोऊ छले बलि हू को छल्यो बलिबावन यातैं । आनि छल्यो सिगरो ब्रजरी पुनि ऐसी छली नहिं और है यातैं । होहु छली छलसों कह्यो वेद हो जानि परी न किशोरकी बातैं । मोहिं वरीकु जिवायो चहै तौ करौ कि निवाही विश्वासी की वातैं ॥ १ ॥ आवैं बहु सन्त ॥ दोहा ॥ नागरसो हरिरूप पर, सागर पग न रसाल। मत आगर जागर सदा, सेवत संत मराल ॥ २ ॥ दोष ॥ मृदुसों मृदुअति कठिनहै, कठिन मंदमतुसार । अलि अंबुजमें दुरिरह्यो काटे काट अपार ॥ ३ ॥

शाहकोस्वरूपकारिआयेकाँधेथैलीधारि कोनपासहुंडीदामलीजि येगिनाइकै । बोलिउठेढूंढ़हारेभलेजूनिहारआजुकहलाजहमैंदेतमै हूंपायेआइकै । मेरोहैइकोसौवासजानैकोऊहरिदास लेवोसुखराशि करोचीठीदीजेजाइकै । धरेहैंरुपैयाढेरलेखोकरोवेरवेर फेरिआइपाती दईलईगरेलाइकै ॥ ४२९ ॥ देखिआयेशाहदौरिमिलेउत्साहअंगवे उरंगवोरेसतसंगकोप्रभावहै । हुंडीलिखिदईदामलियेसोखवाइदिये कियेप्रभुपूरेकामसंतनसोंभावहै । सुतासुसरारिभयोछूछकविचारसा सदेतबहुगारिजाकेनिपटअभावहै । पितासोंपठाइकहीछातीलैजराई इन जोपैकछूदियोजाइआवोइहिदावहै ॥ ४३० ॥ चलेगाड़ीटूटीसी लैबूढ़ेउभैबैलजोरिपहुंचेनगरछोरद्विजकहीजाइकै । सुनतहिआईदे खिमुहँपियराईफिरीदामनहींएकतुमाकियाकहाआइकै । चिंताजनि करोजाइसासुढिगढरोलिखिकागजमेंधरो अतिउत्तमअवाइकै । कही

समुझाइसुनिनिपटरिसाइउठी कियोपरिहासलिख्योगांवखुनसाइकै। आये ॥ कबित्त ॥ बलिजूके नित्त चित्त रहतहीमेरे हियेहरि जू की भक्तिमेरे आई है कि नादिनै। मोरध्वज करत बिचार यह बार बार कबहुंक प्रभु अपनाइ हैं कि नाहिं नै। पारषद दोऊ सोऊ चहतहैं मनको निवेश और देशहमैंहोइगो किनाहिंनै ॥ गुणगणखानि भगवानजोई लीलाकरैं साधुसुख इच्छाहेतु और हेतुनाहिंनै ॥ १ ॥ जानेहरिदास बोले हम हरि दासनहीं तुमदास हौ मिले कैसे नरसीजी के संगते जो कछू नरसी को लिख्यो चिट्टीमें आयो सो सब देनौं ॥ २ ॥

कागदलैआईदेखिदोसरेफिराईपुनि भूलेपैनपाईजातपाथरलिखाये हैं। रहिबेकोदईठौरफूटीदईपौरिजहां बैठेशिरमौरआपबहुसुखपाये हैं। जलदैपठायोभलीभांतिकैऔटायोभई बरषासिरायोसोसमोइकेअन्हाये हैं। कोठरीसँभारिअगिपरिदासोदियोडारि लैबजायेतालवेसअगिनितआये हैं ॥ ४३२ ॥ गांवपहरायोछबिछायोयशगायोअहोहाटकरजतउभैपाथरहूआये हैं। रहिगईएकभूलेलिखनअनेकजहां लैहौताहीपासजापैसबमिलपाये हैं। बिनतीकरतिबेटीदीजियेजूरहैलाज दियोमँगवाइहरिफेरिकैबुलाये हैं। अंगनसमातिसुतातातकोनिरखिरंग संगचलीआईपतिआदिबिसराये हैं ॥ ४३३ ॥

जलदै पठायो जल लावनवारे बोले मूंडतौ ढको तब कही बावरे हों मूड उघारिके लज्जा छोडिकै हरिको भजन करिये ये अपनी ओर खैंचैं वे अपनी ओर खैंचैं जैसे निपट और बादशाह को प्रसंग ॥ १ ॥ लै बजाये ताल ॥ कबित्त ॥ लैकरि ताल बानी बोले सो रसाल सुनियो नंदलाल मैं कहावत ब्रजराजको। तुम गणि का सीरीतारी प्रहलाद भीरटारी कवि जासुधारी कान्ह द्रौपदी की लाज को। चरणद्रोही बधिक तार्‍यो गजने पुकार्‍यो अति केवल रामआये श्रीसुदामा गृहकाजको। नरसीकी बार हरिक्यों अबार लागे आव आये ततकालरूप धरिकै बजाजको ॥ २ ॥ रहै लाज नाहीं तौ नाककटैगी तब नरसीजी बोलैकै नाककटैगी तौ

कृष्णकी रहैगी तापै दृष्टांत व्रजोह लालखारी को सुतादोइ नरसीकै कुँवर सेना रतनसेना ये तौ बैठोनिकेनामहैं आगेविस्तार कह्यो है ॥ ३ ॥

सुताहुतीदोइभोइभक्तिरहीघरहीमेंएकपातित्यागिएकपातिहूनाकियोहै। भूमिमेंफिरतउभैगाइनिसोंचाइनिसोंधनसोंनभेटकाहूनामकहिदियोहै । आइलागीगाइवेकोकहीसमुझाइअहोपाइवेकोनहींकछुपावैदुखहियोहै । चाहैहरिभक्तितोसुड़ाइकैलड़ाइलीकीजैबारदूरिरहीप्रेमरसपियोहै ॥ ४३४ ॥ मिलीउभैसुतारंगझिलीसंसगाइनिवेचाइनिसोंनृत्यकरैभाइनिबताइकै । सालंगहैनामग्रामामंडलीकमंत्रीरहैकहैविपरीतिबड़ीराजासोंसुनाइकै । बड़ेबड़ेदंडीअरुपंडितसमाजकियो करौवाकीभंडीदेशदीजियेछुड़ाइकै । आयेचारिचोवदारचलैजूविचारकीजैभयोदरबारहमैंदियोहैपठाइकै ॥४३५ चारौतुमजावोदूरिभयोहमैंराजाडर सकैकहाकरिअजूचलैसंगरसंगही । नाचतवजावतयेचलीढिगगावतसुभावतमगनजानीभीजिगईरंगही । आयेवाहीभांतिसभाप्रबलबहुतभई तऊबोलेरीतियहयुवतीप्रसंगही । कहीभक्तिगन्धदूरिपढ़ेपोथीपरीधूरिश्रीशुकसराहीतियामाथुरनभंगही ॥ ४३६ ॥

पति त्यागि ॥ कुंडलिया ॥ नारीतजै न आपनो, सपनेहू भरतार । गुंग पंगु बहिरा बधिर, अंध अनाथ अपार ॥ अंध अनाथ अपार वृद्धबाचन अतिरोगी । बालक पंड कुरूप सदा कुबचन जडयोगी ॥ कलही कोढी भीरु चोर ज्वारी ब्यभिचारी । अधम अभागी कुटिल कुमति पति तजैननारी ॥ २ ॥ छप्पय॥ पितावचन प्रहलाद मेटि अपनो मतठान्यो। बलिराजा गुरु वचन नेकुहिरदे नहिं आन्यो ॥ दई स्वामिको पीठि विभीषण कुलमरवायो । गोपिन पतिव्रत त्यागि कियो अपनो मनभायो ॥ निगम निरूपहि मन्द कर्म की लगी नहीं प्रतिबाइ । हरि धर्म के साथे जगन्नाथ अधर्म धर्म ह्वै जाइ ॥ २ ॥ पोथी ॥ दोहा ॥ पोथी तौ थोथी भई, पंडित भयो न कोइ । एकै अक्षर प्रेमको, पढ़ै सुपंडितहोइ ॥ १ ॥

शुक सराही ॥ भागवते ॥ धिग्जन्मनस्त्रिवृद्धियांधिग्व्रतं धिग्बहुज्ञताम् ॥ धिक्कुलं धिक्क्रियादाक्ष्यं विमुखायेत्वधोक्षजे ॥ पद ॥ हम सबहिं मंद भाग भगवान सों विमुख भये विमुख भये धन्य वे नारि गोविंद पूजे । मूंदिरहे नैन हम सबै उलूक ज्यों भानु भगवान आये न सूझे ॥ ३ ॥ संग गोधन लगे खेल रसरंगमे भोरके निकासि भूखे आइये । देहु तौ भात कर जोर ग्वालन कह्यो अहो भूदेव तुमपै पठाये ॥ ४ ॥ केवल करुणा टरनि प्रात भोजन करनि निगमहू अगम महिमा बतावे । कहां प्रभुकीय चनि हमरे मदकी मचनि देवकीरचनि कछु कहि न जावे ॥ ५ ॥ शौच आचार गुरु कुलहि सेवा कछू कुटिल करकस हिये बुद्धिहीनी ॥ देखो इनतियनि को भाग या जगत में सच्चिदानंदके रंग भीनी ॥ ६ ॥ उमंगि पहिले चली पार संसारके सांवरो कुँवर हिय मांझ पोयो । धरि रहेकूर सुरलोक आशा अलप पाइ अमी आश अमृत निचोयो ॥ ७ ॥ तिया कौतुक मिली कछुक जानी चली कमलिनी हियो मनला मिलावैं । शेष त्रिपुरारि ब्रह्मादि सनकादि सुख चरणकी रेणु शिरपर चढ़ावैं॥ ८ ॥ यदपि नारायण अवतार यदुकुल बिषे सुन्यो बहु भांति तौ मनन आये । देखो या दैव की माया अति मोहनी दई दग धूरि हम सब भुलाये ॥ ९ ॥ धिक् जन्म जाति कुल क्रिया स्वाहा स्वधा योग यज्ञ जप तप सकल धुग हमारे ॥ ज्ञान विज्ञान धर्म कछू कर्म नहीं ईश पद विमुख आरंभ न सारे ॥ गृह आगार संसार दुख संभवे मिथुन मृग निर्मयो मन मिलावे । सूरकी शोर हरि बिमुख जग में बड़े बूझि गयो दीप जब बड़ कहावे ॥ ऐसे संसारी जीव बड़े कहावें साधु उन्हैं छोटो मानैं ॥

बोलिउठोविप्रएकछकप्रसंगदेख्यो कह्योरसरंगभरचोढरयोनृपपाइमें । कहीजूविराजोगाजोनितसुखसाजोजाइकियेहरिशइवशभीजेरहौभाइमें । धारोउरऔरोझिरमोरप्रभुमंदिरमें सुंदरकेदारोरागगावैभरेचाइमें । श्यामकंठमालटूटआवतरसालहिये देखिदुखपायेपरे विमुखसुभाइमें ॥ ४३७ ॥ नृपतिसिखायोजाइवृथायशछायो काचे

सूतमेंपुहायोहारटूटैख्यातकरीहै । माताहरिभक्तभूपकहोजनिकरो कातनऊवाणि राजसकीमायामतिहरीहै । गयोढिगुमंदिरकेसुंदरमैं गाइपाट तागोवटवाइकरिमालागुहिधरीहै । प्रभुपहिराइकहेउगाइअ वजानिपरे भरैसुरराग औरगायोपैनपरीहै ॥ ४३८ ॥ विमुखप्रसन्नभ येतवतौउदारनैदेनयेनयेचोजहरिसन्मुखभाषिये । जानेग्वालबालए कमालगहिरहेहिये जियेलग्योयहीरूपकहेउलाखलाखिये । नारायण वड़ेमहाअहोमेरेभागलिख्यो करैकौनदूरिछविपूरिअभिलाखिये । मरौकहाजाइआपपरसैकलंकतुम्हैंराखियेनिशंकहारभक्तिमारिना खिये ॥ ४३९ ॥

नयेनये चोज ॥ सवैया ॥ अति सूधो सनेह को मार गहै जहँ नेकु सयानप बांकनहीं । तहँ सांचे चले तजि आपनपौ झिझकै कपटी जुनिसांक नहीं। घर आनँद प्यारे सुजान सुनौ इत एकते दूसरो आंक नहीं । तुम कौन धौं पाटी पढ़ेहौ लला मनले तपै देत छटांक नहीं ॥ १ ॥ प्रण राखि लियो तुम भीषमको क्षण मे गजराज के काजको धायो । देत विलंब नलायो सुदामहि पावक ते प्रहलाद बचायो । दीनदयाल सुने मनीराम सुयाहीते मैं चित दै गुण गायो । मैं तौ गरीब गरीब रह्यो तुम कैसे गरीबनिवाज कहायो ॥ बड़ी गरीबी गोविंदा जो पै होइ गरीब ॥ २ ॥ मेरे भाग लिख्यो । श्लोक ॥ लिखिता चित्रगुतेन ललाटेक्षरमालिका । नसापि चालितुं शक्या पंडितैस्त्रिदशैरपि ॥ १ ॥ कवित्त ॥ दीननकेपाल व्रजपाल हौ अवध पाल गाइनके पाल नेकु इतैहू निहारिये । वैकुंठकेपाल हरिचौदह भुवनपाल विरदके पाल निज विरद सँभारिये । भक्तपाल धर्मपाल सृष्टिपाल हे कृपाल हूजिये दयाल और भांति न विचारिये । सुरन के पालकहो सूरति विहाल अब येहो जू गोपाल लाल मोहिना बिसारिये ॥ २ ॥ पद ॥ बधिरभये लौदेवा बधिरभये लौ । अपनो विरद क्यों विसरै लौ । कोपियो मडनी कन्हाने मारिसी । मूढ टीक भूल्दिाचि थापसी भक्तिकरो तो नरसी । योमारि

थो तौ भक्त बछल तारौं विरद जाइसी । मलेंछनी जाति कबीर उधारों नामानाछाप ॥ रागपौछाई ॥ जैदेव नैपद माषती आपी मालाने अव- मूक भाई । जाइ न फूल सूतनौ धागो दोइदमडी नें मोल पावी । नरसीने एकहार लै अपतांता रावापनावा परेस्योजावी ॥ ३ ॥ दोहा ॥ आसि- कशिर अपनाअरे, धरदैपैरौलाइ । वे निशाकमहबूबके, करै दूर अनखाइ ॥ ४ ॥ झूलना ॥ जिस दैपरैनपरी या कंडा सो घाव दरदक्या जाने । वे दरदान इस्क सुहेला इस्कंजना दे भाने । शिर लाहू लटू देसके सो कछू इश्क सयाने । कहै भगवान हित रामराइ प्रभुहारन दिल बिच आने ॥ ४ ॥

रहैतहाँसाहकियेउभैलै विवाहजानैतियाएकभक्तकहेहारिकोदि खाइये । नरसीकहीहीभलैसोईप्रभुवाणीलईसांचकरिदईगयेरागछुट वाइये । वोलेपटखोलिदियेकियेदर्शनताने तानेपटसोवैवहकहीदेवो भाइये । लियेदामकामकियोकागदगहायदियो दियोकछुखाइवेको पायोलैभिजाइये ॥ ४४० ॥ गहनेधरयोहौरागकेदारोसाहवरधरिरू पनरसीकोजाइकैछुड़ायोहै । कागदलैडारयोगोदमोदभरिगाइउठे । आयेझनझनश्यामहारपहिरायोहै । भयोजैजैकारनृपपाइलैलपटाइ गयो गह्योहियेभावसोप्रभावदरशायोहै । विमुखखिसानेभयेगयेउठि नयेमाहिं विनाहरिकृपाभक्तिपथजातपायोहै ॥ ४४१ ॥ करनसगाई आयोपायोवरआयोनाहिंघरघर फिरयोद्विजनरसीवतायोहै । आइ सुखपाइपूछ्योसुतसोदिखाइदियो कियोलैतिलकमनदेखतचुरायोहै अजूहमलायकनतुमसवलायकहौ शायकसोछुटोजाइनामलैसुनायो है । सुनतहीमाथोठोंकिकहैतालकूटावहवालवोरिआयोजावोफोरि दुखछायो है ॥ ४४२ ॥

गाइ उठे ॥ पद ॥ थोजीथोजी राज थारागलनी मालम्हानै थोजी राज। कृपाजुकीजे विमुख पतीजेसुख सों तौ वचन कहौ जी राज । केसर बरणी कुवँरि राधिका कस्तूरी बरणा छोजीराज । सांवरी सूरति माधुरी मूरति

यह छवि हियरै रहौ जी राज । अनाथन नाथ बधूनावाला सुखना सागर छौंजी राज । पैठिपतालकालीनाग जुनाथ्यो म्हारी करुणाल्योजीराज । जुहीनाफूल सूतनोधागो सो काहे गाढ गहौजी राज । रिमिझिमि करतौ सांवलियो आयो नरसी महिता तुमल्योजीराज ॥ चौपाई ॥ अहोवकी दुष्टाने प्यायो । मारनताहि कुचन विषलायो । दई धायकी गति पुनिता- हि । तादयालु बिन सुमिरों काहि ॥ २ ॥

काढ़िकैअँगूठाडारौ तवसोउचारौबातमनमेंविचारौकियोतिलक बनाइकै । जानेसुताभागऐसेरहेशोचपागिसबआवैजवव्याहिवेकोधन दैअघाइकै । लगनहूंलिखिदियोदियोद्विजआनालियोडारिराख्योकहूं गावैतालयेबजाइकै । रहेदिनचारियेविचारिनहींनेकुमन आयेकृष्ण रुक्मिणीजूझूमिमिलेधाइकै ॥ ४४३ ॥ ठौरठौरपकवानहोततियगा नकरैंघुरतनिशानकानसुनियेनबातहै । चित्रसुखकियोलैबिचित्रपट रानीआपबोरी रंगबोरीपैचढ़ायोसुतरातहै । करीसोज्यवनारतामें मानसअपारआये द्विजनविचारपोटबांधीपैनमातहै । मणिमयहीसा जवाजिगजरथऊंटकोरझमकेंकि शोरआजसजीयोंवरातहै ॥४४४॥ नरसीसोंकहैगहैहाथतुमसाथचलोअंतरिक्षमेंहूंचलौयेतीबातमानिये। कहीअजूजानौंतुमसैंतौहियेआनोंयहै लैहसुखमनमेरो फेंटतालआ निये। आपहीविचारसबभारसोंउठायलियोदियोडेरापुरीसमधीकी पहँचानिये। मानसपठायोदिनआयेपैनआयेअहो देखिछविछाये नरपूछैंजोबखानिये ॥ ४४५ ॥

आयेकृष्ण ॥ पंचाध्यायी॥ अनुग्रहाय भक्तानां मानुषं देहमाश्रितः । भजते तादृशीं क्रीडांयांश्रुत्वा तत्परो भवेत् ॥ २ ॥ मिले धाइकै । कोऊ कहै नरसीने कृष्णको साक्षात् ठाकुर जाने होहिंगे कै राजा कै साहूकार जाने होहिंगे सो नहीं पुरके न जाने नरसीने हरिही जाने ॥ १ ॥ दशमे मल्लानामशनिर्नृणां नरवरः स्त्रीणां स्मरो मूर्तिमान् गोपानां स्वजनोऽसतांक्षि-

तिभुजां शास्तास्वपित्रोः शिशुः । मृत्युर्भोजपतेर्विराट् च विदुषां तत्त्वं परं योगिनां वृष्णीनां परदेवतेतिविदितो रंगंगतः साग्रजः ॥

नरसीबरातमतिजानोयहनरसीकी नरसीनपावैऐसोसमझअपारहै। आइकैसुनाईसुधिबुधिबिसराईअहोकरतहँसाईबातभाषोनिरधारहै । गयोजोसगाईकरिदरवरआयोद्विजनिजअंगमेंनमातकैसेंरंगविस्तारहै कहीएकवासधनरासससोनपूजैकिहूं चहूंदिशिपूरिरहीदेख्योभक्तिसारहै ॥ ४४६ ॥ चलेअचरजमानिदेखिअभिमानगयोलयोपाछोब्राह्मणकोहमैंराखिलीजिये । जाइगहिपांइरह्योभाइपरिदयाकरोगयेहगभरेपांइपरेकृपाकीजिये। मिलेभरिअंकलैदिखायोसोमयंकमुख हूजिये निशंकइन्हेंभोरसुतादीजिये । ब्याहकरिआयेभक्तिभावलपटायेसब गयेगुणजानैंजितैसुनिसुनिजीजिये ॥ ४४७ ॥ मूल ॥ दिवदासवंशजसोधरसदनभइभक्तिअनपायिनी । सुतकलत्रसंमतसबैगोविंदपरायन । सेवतहरिहरिदासद्रवतसुखरामरसायन । सीतापतिकोसुयश प्रथमहीगमनवखान्यो । द्वैसुतदीजेमोहिंकवितसबहीजगजान्यो । गिरागदितलीलामधुरसंतनआनँददायिनी । दिवदासवंशजसोधर सदनभईभक्तिअनपायिनी ॥ २०९ ॥

नरसी बरात दृष्टिकूट ॥ वृक्षाग्रवासीन च पक्षिराजो दुग्धं स्रवंती न च कामधेनुः। त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः नारी च नामा न च राजकन्या ॥ ॥ १ ॥ हमैं राखि लीजे हमतौ तेरेराखे रहेहैं नहीं तौ धनहूं जाइगो अरु अयशहोहिगो ब्याहकरि आये कोऊकहै नरसीकी ऐसी सहाय करी यह तौ बड़ो अचरजहै कवित्त सबही जग है ॥ दोहा ॥ रामराम सब कोउ कहै, दशरथ कहै न कोइ । एकबार दशरथ कहै, कोटि यज्ञ फलहोइ । दशरथ तौ बड़ेई सामर्थ्यमान्हैं जिनके नामसों आठौ-सिद्धि नवो निधि आगे रहैं ॥ ३ ॥

श्रीनंददासआनंदनिधिरासिकसुप्रभुहितरँगमगे । लीलापदरसरीतिग्रन्थरचनामेंनागर । सरसउक्तियुतयुक्तिभक्तिरसगानउजागर ।

प्रचुरयपथलौंसुयशरामपुरग्रामनिवासी।सकलसुकलसंवलितभक्तप दरेणुउपासी। चन्दहासअग्रजसुहृदपरमप्रेमपयमेंपगे। श्रीनंददासआनंदनिधिरसिकसुप्रभुहितरँगमगे॥ २१०॥

रसिक॥ दोहा॥ घरको परनो परिहऱ्यो, कहौ कौन उपदेश। तुलसी यासों जानिये, नहीं धर्म को लेश॥ १॥ हम चाकर रघुनाथ के जन्म जन्मके दास। रूप माधुरी मनहऱ्यो, डारि प्रेमकी फांस॥ २॥ कवित्त॥ अधर बंधूक औ बदन अधिकाई छबि मानों विधि कीनी यह रूपको उदधिकै।कान्ह देखी आवत अचानक मुरछ गिरे घुंघुट उघारि राख्यो सखिन के मधिकै। गंगगई मारि सर मृग गिरिधर बेधे अधिक अधीन भई चितवनि तधिकै। बाण बेधे बधिक बधेको फेरि खोजलेत बधिक बधून खोज लिये बाण बधिकै॥ ३॥ लीलापद॥ पहिले तौ देखौ आइ माननीकी शोभा लाल तापाछे लीजिये मनाइ प्यारेहो गोविंद। करपैदीये कपोल रहीहै नयनन मूंदि कमल बिछाय मानों सोयो है पूर्णचन्द। रिसभरीभौंहैं मानो भौंर बैठे अरवरात इंदुतरे आयो मकरंद भऱ्यो अरविंद। नंददास प्रभु ऐसी प्यारी को रुसैये बलिजाके मुख दीखेते मिटत सबै दुखद्वंद॥ ४॥ दोहा॥ जिहिघट बिरह आवा अगिनि, पर यक भये सुभाइ॥ ताही घटमें नंदहो, प्रेम अमी ठहराइ॥ ५॥ कुंज कुंज प्रतिपुंज अलि, गुंजत इमि परभात॥ रविडर तम सब भाजिगयो, रोवत ताको तात॥ ६॥ अबला निसरी तीरजब, नीरचुवत वर चीर॥ जनु अंशवनि लागी झरी, तन बिछुरन की पीर॥ ७॥

मूल॥ संसारसकलव्यापकभईजकड़ीजनगोपालकी। भक्तितेजअतिभालसंतमंडलकोमंडन। बुधिप्रवेशभागवतग्रंथसंशयकोखंडन। नरहरिग्रामनिवासदेशवागडानिस्तारयो। नवधाभजनप्रबोधिअनन्यदासनव्रतधारयो। भक्तिकृपावांछीसदापदरजराधालालकी। संसारसकलव्यापकभईजकड़ीजनगोपालकी॥ २११॥ माधवदृढ़महिऊपरैप्रचुरकरीलोढाभगति। प्रसिद्धप्रेमकीराशिरढ़ागढ़प

रचोदियो । ऊंचेतेभयोपातश्यामसांचोप्रणकियो सुतनातीपुनिस दृशचलतऊहीपरिपाटी । भक्तनसोंअतिप्रेमनेमनहिंकिहुँअंगघाटी। नृत्यकरतनहिंतनसँभारसमसरजनकनकीसकति। माधवदृढ़महिम हिउपरैप्रचुरकरीलोढाभगति ॥ २१२ ॥

जकड़ी साखी अरीसुनि आतमप्यारी लाल मनाइलै । पहि लेरी पहरै रैनिके तेन वसत साजे। यह प्रीतम मन भावतो तेरे निकट बिराजे । मानन कीजे पीयसों अरी तेरो यौवन लाजे । दूजेरी पहरै रैनिके तैं मरम न जान्यो । यह यौवन बहु मोलको लैविष में सान्यो । तीजेरी पहरैरैनि के तू अजहुँ न चेती।अंगन दियो सुजानके मैं बकी जुकेती। फिरि पाछे पछिताइगी मिलि साहब सेती । चौथेरी पहरैरैनि के शशि ज्योतिहु मानी । मैं तौतोहिं बहुतैकही तैं चितनहिं आनी । ये देखौ पहुपीरी भई टरैसर वरपानी । खेमरसिक भये भोरके सुंदरि पछितानी ॥ १ ॥ अतिप्रेम ॥ दोहा ॥ प्रेम भक्ति एकौपलक, कोटि बरषको योग ॥ प्रेम भक्ति सब योग है, योग प्रेम बिन रोग ॥ २ ॥

माधवदासजीकीटीका ॥ गढ़ागढ़पुरनाममाधवबढ़िप्रेमभूमिलोटै जबनृत्यकरैभूलैसुधिअंगकी । भूपतिबिमुखझूंठजानिकैपरीक्षालई आनतीनिछातिपरदेखीगतिरंगकी । नूपुरनिबांधिनाचिसांचसोदि खायादियो गिरेहूकराहिमध्यजियोमतिपंगकी।बड़ोत्रासभयोनृपदास विश्वासबढ़ोमढ़ेउरभावरीतिन्यारीहीप्रसंगकी ॥ ४४८ ॥ मूल ॥ अभिलाषभक्तअंगदकोपुरुषोत्तमपूरणकियो । नगअमोलइकताहि सबैभूपतिमिलियाचै । श्यामदासबहुकरैदासनाहिंनमनकाचै । एक समयसंकटलेवपानीमेंडारचो । प्रभूतिहारीबस्तुवदनतेबचनउचा रचो । पांचदोइसतकीसतैंहरिहीरालैउरधरचो । अभिलाषभक्तअं गदकोपुरुषोत्तमपूरणकियो ॥ २१३ ॥ टीकाअंगदभक्तकी ॥ राइसे नगढ़वासनृपसोसलाहदीनताकोयहकाकारहैअंगदबिमुखहै। ताकी नारीप्यारीप्रभुसाधुसेवाधारी उरआयेगुरुघरकहैकृष्णकथासुखहै ।

बैठभौनदेखिकौनकैसेमौनरहौजातबोल्योतियाजातिकहाकरौनररूपहै । सुनिउठिगयेवधूअन्नजलत्यागिदियेलियेपांवजाइविषयवश भयोदुखहै ॥ ४४९ ॥

गढ़ागढ़ ॥ भागवते ॥ ज्ञानतः सुलभामुक्तिर्भुक्तिर्यज्ञादिपुण्यतः । सेयंसाधनसाहस्रैर्हरेर्भक्तिः सुदुर्लभा ॥ १ ॥ कृष्णकथा कहै सो गुरुसों पूछें एकनित्य मुक्तितेन पूछै निरवधि विषयो न पूछै मुमुक्षु पूछै जिज्ञासू ॥ २ ॥ छप्पय ॥ तात मात सुत भ्रात आपको बंधनमाने । छुटेकर्म नहिं लेश यहै उर अंतर जाने । जन्म मरण की शंकरहै निशिदिन मनमाहीं । चौरासीके दुःख नेकु नाहिं बरणे जाहीं । इहिभांति सदा शोचत रहैं संतन सों पूछत फिरै । है कोऊ सतगुरु ऐसो सो मेरो कारज करै ॥ ३ ॥

मुखनदिखावेयाहिदेख्योई सुहावैकही भावैसोईकरौनेकुवदनादिखाइये। मैंहूंजलत्यागिदियोअन्नजातकापैलियोजीयोजवनकितवआपकछूखाइये । बोलीमोसोंबोलोजिनिछांड़ोतनयाही छिनप्रणसांचो होतौतोपैसुनतसमाइये । कहौअबकीजैसोइमेरीमातिगईखोइ भोईउरदयाबातकहिसमझाइये ॥ ४५० ॥ वेईगुरुकरौजाइपायनिमेंपरिगयो चाइनिलिवायलायोभयोसिखदीनहै । धारीउरमालभालतिलकवनाइकियो लियोशीतप्रीतिकोऊउपजीनवीनहै । चढ़िफौजसंगचढ्योवैरीपुरमारिवढ्योकढ्योढोपीलैकैहीरासतएकपीनहै । डारैसब वेचिपागपेचमध्यराख्योमुख्य भाष्योसोअमोलकरचो जगन्नाथलीन है ॥ ४५१ ॥ कानाकानीभईनृपबातमेंसुनिलई कहीहीरावहदेयतौपैऔरमाफकियेहैं । आपसमझावैबहुयुगतिवतावैयाकेमनमेंनआवे जाइसेवकहिदियेहैं । अंगदवहानिलागैवाकीभ्रूवापागैतासों देवोविषमारोफेरितूहीपगाछियेहैं । करतरसोईवरगरलमिलायपाक भोगहूलगायोअजूजैबोनोलिलियेहैं ॥ ४५२ ॥

वेई ॥ दोहा ॥ डरवारस डर परमगुरु, डर करनी में सार ॥ खोजी डरे सुऊबरै, गाफिल पावै मार ॥ १ ॥ प्रीति ॥ भागवते ॥ यस्य देवेष

राभक्तिर्यथादेवे तथागुरौ ! तस्यैते कथिताह्यर्थाः प्रकाशंते महात्मनः॥ २॥ बहुयुगति बताके साम दाम दंड भेद सनेह धन भेद ॥ ३ ॥ भूवासों बोल्यो तेरोभाई अंगद बडो दुष्ट है तेरे निमित्त गांव बहुत दिये हैं सो तोको न दिये अब याहि मारि सबदेश को पट्टा तोही को करिदेहिगे ॥ ४ ॥

वाकीएकसुतासंगलैकेबैठेजेंवनको आईसोछिपाइकहीजेंवोकहूंग ईहै। जेंवतनबोधहारीतबसोविचारीप्रीतिभीतरोइमिलीगुरैरीतिकहि दईहै । प्रभुलैजिमायेरांड़भांड़कैनिवासद्वारदैकरिकिंवाररसपायो ओपनईहै । बड़ोदुखहियेरह्योकह्योकैसेजातकाहू बातसुनीनृपहूने जैसीभांतिभईहै ॥ ४८३ ॥ चलेनीलाचलहीराजाइपहिराइआवैंआ इघेरिलीनेनृपनरनिखिसाइके । कहीडारिदेवोकैलराइसन्मुखलेहु बसनहमारोभूपआज्ञाआयेधाइके । बोलेनेकुरहौमैंअन्हाइपकरा- इदेत हेतमनऔरजलडाऱ्योलैदिखाइके । वस्तुहैतिहारीप्रभुली- जिये उबारीयहवाणीलागीप्यारीउरधारीसुखपाइके ॥ ४८४ ॥ एतौघरआयेवेतौजलमाधिकूदिधाये अतिअकुलायेनेकुखोजहूनपा- योहै । राजाचलिआयोसबनीरकढ़वायोकीचदेखिमुरझायोदुखसा गरबुड़ायोहै । जगन्नाथदेवआज्ञादईसुधिदेवोजाय आयकेसुनाई नरतनबिसरायोहै । गयोजाइदेख्योउरपरजगमगरह्योलह्योसुखनै ननिको कापैजातगायोहै ॥ ४८५ ॥

बैठे जेंवनको अंगद जेंवनको बहिनिकी कन्याको संग लै बैठतौ क- न्यासोइ तौ सनेह सो सनेहमें भक्तिकैसी यह साक्षात् लाड़िली लालकी सखी प्रगट भईहै यह स्वरूप सखाविना और कहां अरु हमारे भक्तनके घरमें जन्मै सो सामान्य जीव है सो नहीं परकर की जीति को भाव कियो भावही सों प्रीति ह्वै है हेत मन और अब मेरो बल नहीं पहुंचै तब वि- चारि कही हरि सर्वज्ञ हैं सो जल में डारिदियो सो भगवान् ने अलगही लियो ॥ १ ॥ सर्वतः पाणिपादेति ॥

राजाहियेतापभयोदयोअन्नत्यागिकरयो आवैजोपैभागमेरेब्राह्मणपठायेहैं । धरनोदैरहेकहेनृपकेवचनसबतबहैदयालुनिजपुरढिग आयेहैं । भूपसुनि आगेआइ पाँइलपटायगयोलयोउरलाइदृगनीरलै भिजायेहैं । राजासर्वसुदियोजियोहरिभक्तिकियो हियोसरसायोगुण जानेजितेगायेहैं ॥ ४५६ ॥ मूल ॥ चतुर्भुजनृपकीभगतिकोकौन भूपसरवरकरै । भक्तआगमनसुनतसन्मुखजोजनइकजाई । सदन आनिसतकारसदृशगोबिन्दबड़ाई ॥ पादप्रच्छालनसुहथराइरानी मनसांचें । धूपदीपनैवेद्यबहुंरितिनआगेनाचे । यहरीतिकरौलाधी शकीतनमनधनआगेधरै । चतुरभुजनृपकीभगतिकोकौनभूपसरवर करै ॥ २१४ ॥ टीका ॥ पुरढिगचारयोओरचौकीराखीयोजनपैयो जनहींआवैतिन्हैंलावतलिवाइकै । मालाधारीप्रभुसनमानिआवै कोऊद्वारजोपैकरैवहीरीतिसोसुनाईछप्पैगाइकै।सुनीएकभूपभक्तिनि पटअनूपकथासबको भंडाराखोलिदेतबोल्योधाइकै । पात्रऔअपा त्रमोविचारहीजोनहींतौपै कहाऐसीबातदईनेकुमेंउड़ाइकै ॥ ४५७॥

जग मग रह्यो ॥ कवित्त ॥ तरवा ललाई नख चंद्रिका सुछवि छाई हिय में समाई वह कैसे कहिजात है ॥ नूपुरादि चूरा पग धोतीपग रही लगि छुद्र घंटिका अनूप ज्योति जगमगात है । झँगा बूटेदार बनमाल मोती हीरा कांति कौन कवि उपमा कह न सकात है । तिलक बिशाल माथे चीरा छवि जाल जापै कलँगी रसाल देखि अंगद सिहात है ॥ १ ॥ राजा के हिये ताप ॥ दोहा ॥ विषयिन के शिर पर रहै, साधु फूलके गुच्छ। केवल तन वश भूमि में, परे रहे मन सुच्छ ॥ २ ॥

भागवतगावैभक्तभूपएकविप्रतहां बोलिकैसुनावैऐसीमनजिनला इये । पावैआसैकौनहृदयभवनमेंप्रवेशकरिभरिअनुरागकहाउरम धिआइये । करीलैपरीक्षाभाटभिक्षुकपठाइदियोदियोमालातिलकद्वा रदारदासयोंसुनाइये । गयोगयोभूलिफूलकुलनिस्तारकियो लियोप हिचानिअबजानकैसेपाइये ॥ ४५८ ॥ बीतेदिनतीनिबीसआईचससी

खसुधिकहीहरिदासकोऊआयोयोंसुनाईहै । बोलेजूनिशाकजावो गावोगुणगोविंदके आयेघरमध्यभूपकरीजैसीभाईहै । भक्तिकेप्रसंगकोनरंगकहूंनेकुजान्यो जान्योउनमानसोपरीक्षामँगवाईहै । दियोलैभंडारखोलिलियोमनमान्योदईसंपुटमेंकौड़ीडारिजरीलपटाइये ॥ ४५९ ॥ आयोवहीराजापाससभामेंप्रकाश कियोलियोधन दियोपाछेसोईलै दिखायोहै । खोलिकैलपेटामध्यसंपुटनिहारिकौड़ीसमुझिविचारैहारैमनमेंनआयोहै । बड़ाभागवतविप्रपंडितप्रवीणमहानिशिरसलीन जानिआनिकैबतायोहै । कस्योउनमान भक्त मानकोप्रमानजरी मूंदिकैपठायो ताहिगुणसमुझायोहै॥४६०॥

उड़ाय कै ॥ कवित्त ॥ सरल सों सटकहैं बक्तासों ढीठ कहैं विनय करे तासों कहैं धनको अधीन है। क्षमी सों निबल कहैं दमी सों अदत्ती कहैं मधुर बचन कहैं तासों कहैं दीन है। दाता सों दंभी कहैं निस्नेही सों गुमानी कहैं तृष्णा घटावे तासों कहैं भाग हीनहै। साधु गुण देखे अहो तहांहीं लगावे दोष ऐसो कछू दुरजन को हृदोई मलीनहै ॥ १ ॥ भगत भूपहै ॥ श्लोक॥ पुष्पाणां स्तबकस्येवद्वयोरिति मनीषिणाम् । सर्वलोकस्य मूर्द्धयास्तेविशीर्यैतवनेपिवा ॥ २ ॥

राजारीझपांवगहेकहेजूबचननीकेऐपैनेकआपजाइतत्वयाकोलाइये । आयेदौरिपांइलपटायेभूपभावभरे परेप्रेमसागरमेंचरचाचलाइये । चलिवैनदेतसुखदेतचलेलोलमेंनखोलिकेभंडारदियोलियेनारिझाइये।उभैसुवासारोकहीएककरधारोमेरे दईअकुलाइलईक्षानोनिधिपाइये ॥ ४६१ ॥ आयोराजसभावहुवातनिअखारोजहांवेली उठी सारोकृष्णकहोझारिडारेहैं । पूछैंनृपकहोअहोलहोसबयाहीसोंजुपंछीवासमाजरहेहरिप्राणप्यारेहैं । कोटिकोटिरसनाबखानोपैनपाऊं पार सारसुनिभक्तिआपशीशपावधारेहैं। राखौयहखगतनमनपागिर ह्लोइयाम्अति अभिरामरीतिमिलेओपधारेहैं ॥ ४६२ ॥

उभय सुवासारो ॥ अरिल्ल ॥ शिरपै ठाढो कालय वेडीदेहिहै ।

भयो धुंध में अंध कहा करि लेहि है । राम कृष्ण कह मूढ फेरि पछिताइ है । दुनिया दौलत छांडि अकेला जाइ है ॥ १ ॥ भाग्यो है मुट मरदम वासी कैद ते । वली नजीत्यो जाय हजारन जदै ते । महाराज मैं अर्ज करों सुनु कानदै । अरिहा मारि बांधिकै छांडि याहि जिन जानदै ॥ २ ॥ पद ॥ कोई सुनियो संत सुजान दियो हरिलारे । जो तू कहै मेरेद्रव्य वहुत है संग न चलै अधेलारे । जो तू कहै मेरे कुटुंब बहुत है यमलै चलेअकेलारे। कहत कबीर सुनौ भाई साधौ मनको करिले चेलारे ॥ ३ ॥ कृष्णकहु कृष्णकहु कृष्णकहु भाई । होइगी वही जो प्रभु ने बनाई । राखौ ॥ तापै बेलमा फकीर को दृष्टांत हमारोही वर जाहिगी ॥

मूल ॥ लोकलाजकुलशृंखलातजिमीरागिरिधरभजी । सदृश गोपिकीप्रेमप्रगटकलियुगहिदिखायो । नरअंकुशअतिनिडररसिक यशरसनागायो । दुष्टनदोषबिचारमृत्युकोउद्यमकीयो । बारनबां कोभयोगरलअमृतज्योंपीयो । भक्तनिशानबजायकेकाहूतेनाहिंनल जी । लोकलाजकुलशृंखलातजिमीरागिरिधरभजी ॥ २१८ ॥

लोक लाज ॥ कवित्त ॥ क्षीरमेंयो नीरज्योंसमानी बूंदसागरमें तन में सुमन वास भोइगी सुभोइगी । तेरी देखिबे की बानि नयनानिमें परी आनि आनि कुल कानि अब खोइगी सुखोइगी । लोक परलोकहू की भूली सुधि ऊधो राम यहैबात मन मांझ मोइगी सुमोइगी । रूप उजियारे गुण भारे लाल प्यारे आंखैताही सों लगी हैं होनी होइगी सुहोइगी ॥ १ ॥ गिरिधर भजी गिरिधरने मीराबाई भजी अथवा मीराबाईजीने गिरिधर को भज्यो याते सनेहीही नेह की मूर्तिहै ॥ २ ॥ कवित्त ॥ नेहराज रूप राज रसिक रसालराज नैन सुखराजलै उठाये गिरिराज है । छोटे से करवर अंगुरीपै धऱ्यो गिरि खुशी कोसो छत्र वह रिलिये गजराज है । हाथनि ललाई तामें पहुँचनि छबिछाई ऊंचो कियो हाथ सब छबिको समाज है । नैननि की सेननि सो कहैं अलबेली सखी चोरि चोरि खायो दधि काम आयो आज है ॥ २ ॥ नेक जो निहारो पिया प्राणनिकी प्यारी अति पंकज से हा-

थनि लै धान्यो गिरिभारोहै । प्रेमसों लपेटी कहै नेहभरी बात आली लेहुरी लकुट नेकु देहरी सहारो है ॥ ५ ॥ कहै हँसि आली मिलि काम आयो आजु बल खायो दधि माखन जो चोरिकै हमारो है । नेहभरी बात सुनि हियहुलसात मंद मंद मुसुकात मुख रूपको उज्यारो है ॥ १ ॥ कबित्त ॥ सबहीके ग्वाल बाल गोधन हैं सबहीके सबहीको आनि परी प्राणन की भीरहै । सबहीपै मेघ बरषतहैं सुगोलाधार सबही की छेदछाती करत समीर है । किधौं यह मेरोई अनोखो ढोटा मांगि आन्यो याबोझिल पहाड़ तर कोमल शरीर है । नेकुयाके हाथते गिरिलेहु क्यों न कोऊ तुम जातिके अहीर पै नकाहूहिय पीरहै ॥ २ ॥ सदश गोपिका प्रेम ॥ कबित्त ॥ पीरी परिगई अरुणई गई आननते कानन गईही सोसयान मुख भाग्यो है । चलि चलि कहैं बैन फिरि फिरि जात नैन भईबिन चैन मैन अंगअंग राग्योहै । काशीराम औरको यतनुकोन गिनती में क्षण क्षण छीजै देह नेह रंगपाग्यो है । हरि अवधूत और हेत सों न नीकीहोति भूत नाहिं लाग्यो याहि नंदपूत लाग्यो है ॥ ३ ॥ पद ॥ अब जो या तनको फेरि बनावैं । तऊ नंदनंदन बिन ऊधो औरन मन में आवैं । जो यातन की त्वचा उचेले लैकरि दुंदुभि सजई । मधुर उतंग शब्द सुरसुनियत लाल लालई बजई । छूटैं प्राण मिलै तनमाटी द्रुमलागै तिहि ठाम । सुनि अब सूर फूल फल शाखा लेतउठे हरिनाम ॥ ४ ॥ भक्ति निशान बजाय के ॥ माझ ॥ जिनदांवनि हम महलीहूपे तिनदावनि तेनहिं जाने । पायंदाज न अंदर पहुँचे निंदाकरत खिसाने । कुंजमहल बासिंदा हमनिंदा अहिसाने माने । वल्लभ रसिक चुनिन्दाहूये बजि निंदा सहदाने ॥ ५ ॥

टीकामीराबाईजीकी । मेरतौजनमभूमिझूमिहितनेमलगेपगेगिरिधारीलालपिताहीकेधाममें । रानाकैसगाईभईकरीब्याहसामानईगई मतिबूड़िवाराँगीलेवनश्यामंमें । भाँवरैपरतमनसाँवरेस्वरूपमांझताँ मरेसीआवें चलिवेकोपतिग्रामंमें । पूछैंपितुमातुपटआभरणलीजिये जूलोचनभरतनीरकहाकामदाममें ॥ ४६३ ॥ देवोगिरिधारीलाल

जोनिहालकियोचाहौऔरुधनमालसबराखियेउठाइकै । बेटीअति प्यारीप्रीतिरंगचढ़चोभारीरोइमिलीमहतारीकहीलीजियेलड़ाइकै । डोलापधराइहगहगसोंलगाइचलीसुखनसमाइचाइप्राणपतिपाइकै । पहुँचीभवनसासुदेवीपैगमनकियोतियाअरुबरमठिजोरोकह्यो भाइकै ॥ ४६४ ॥ देवीकेपुजाइवेकोकियोलैउपाइसासुवरपैपुजाइपुनि बधू पूजिभाषिये । बोलीजूबिकायोमाथोलालगिरिधारीहाथऔरकोनन वैएकवहीअभिलाषिये । बढ़तसुहागयाकेपूजेतातेपूजाकरो मतहठ करोशीशपाइनिमेंराखिये । कहीबारबारतुमयहीनिरधारजानो वही सुकुमारजापैवारिफेरिनाखिये ॥ ४६५ ॥

विकायो माथौ ॥ सवैया ॥ पल काटों इन नयनन के गिरिधारी विना पल अंत निहारै । जीभकटै न भजे नँदनंदन बुद्धिकटै हरिनाम बिसारै । मीरा कहै जरिजाहु हियो पदपंकज विनपल अंत न धारै । शीशनवै ब्रजराज विना वह शीशहि काटि कुंवां किन डारै ॥ १ ॥ दोहा ॥ रसनकटैं आनहिं रटै, फुटैं आन लखिनैन ॥ श्रवणफुटेते सुने विन, श्रीराधा यश वैन ॥ २ ॥ कही बारबार ॥ पद ॥ यशुदा बारबार यों भाखै । है कोऊ ऐसो हितू हमारो चलत गोपालै राखै ॥ ३ ॥

तबतौखिसानीभईअतिजरिवारिगईगईपतिपासयहबधूनहींकाम की । अबहींजबावदियोकियोअपमानमेरोआगेक्योंप्रमाणकरैभरैश्वा सचामकी । रानासुनिकोपकरचोधरचोहियेमारिबोई दईठौरन्यारी देखिरीझमतिवामकी । लालनलड़ावैगुणगाइकैमलहावैसाधु संगही सुहावैजिन्हैंलागीचाहश्यामकी ॥ ४६६ ॥ आइकैननँदकहैगहैकि नचेतभाभीसाधुनसोंहेतमेंकलंकलगैभारिये । रानादेशपतीलाजैबा पुकुलरतीजातिमानिलीजेबातवेगिसंगनिरवारिये। लागेप्राणसाथसंत पावतअनंतसुख जाकोदुखहोयताकोनीकेकरिटारिये । सुनिकैक- टोराभरिगरलपठायदियोलियोकरिपानरंगचढ़ेउयोंनिहारिये४६७॥

लागेप्राणसाथ ॥ कोऊ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कहौ कोऊ

कहै अंकन कलंकनि कुनारी हौं। कैसे सुरलोक नरलोक परलोक सब कीनमैं अलोक लोक लोकनते न्यारी हौं। तन जाहु मनजाहु देव गुरुजन जाहु जीभ क्यों न जाहु टेक टरत न टारी हौं । वृन्दावनवारी गिरीधारी के मुकुटपर पीत पटवारेकी मैं मूरति पै वारीहौं ॥ १ ॥ तारे क्योंन तजौं रैनि नयनशशि क्यों न तजौं जीव क्यों न जाहु सोउ अवहीं यात नते। तन क्यों न जारि जाहु जरि क्यों न क्षारहोउ क्षार क्यों न उडि- जाहु विरह पवन ते । सैन कहै वह चलनि चितवनि वनि मनवसीरी जब ते आये बनवारी बने बनते । जानो है सुजाहु अरुरहे सोतोरहो आली माधवजी की प्रीति जनिजाहु मेरे मनते ॥ २ ॥

गरलपठायोसोतौशीशपै चढ़ायोसंग त्यागविषभारीताकी झारनसम्हारीहै । रानानेलगायोचरबैठेसाधुढिगढरितवहींखबरिक रिमारोअहधारीहै । राजैगिरिधारीलालतिनहींसोंरंगजाल बोलत सहतख्यालकानपरोप्यारीहै । जाइकैसुनाईभईअतिचपलाईआयो लियेतरवारिदैकिंवाँड़खोलिन्यारीहै ॥ ४६८ ॥

गरल ॥ पद ॥ रानाजी जहर दियो हम जानी । जिन हरि मेरो न्याव निबेरो छान्यो दूध अरु पानी । जबलगि कंचन कसियत नाहीं होत न बारहबानी । अपने कुलको परदाकैले हों अबला वडरानी । श्वपच भक्त परवारों विमुख सबहौं हरि हाथ बिकानी । मीराप्रभु गिरिधर भजिबे को संत चरण लपटानी ॥ १ ॥ दोहा ॥ बड़ी भक्ति मीरा गही, रानाके बड़ी भूल । चरणामृतकहि विषदियो, भयो सजीवनि मूल॥ २ ॥ चपलाई ॥ चौपरि खेलौं पीव सों बाजी लावों जीव । जो हारों तौ पी- वकी जो जीतों तौ पीव ॥ ३ ॥ वेगिदे बताइये तरवारि हाथमें नांगीहै के वह बिषयी नर कहां गयो ॥ ४ ॥ दोहा ॥ निकट वस्तु दीखै नहीं, धृगजीवन हैं जिंद । तुलसी ऐसे जगतको, भयो मोतियाबिंद ॥ ५ ॥ सबै चतुर अरु बड़ेहैं, अपने अपने ठौर । सब तजिकै हरिको भजै, सोइ चतुर शिरमौर ॥ ६ ॥

जाकेसंगरंगभीजिकरतप्रसंगनानाकहांवहनरगयोवेगिदेवताइये। आगेहीविराजेकछूतोसोंनहींलाजेअभूदेखिसुखसाजेआंखिखोलिदर शाइये । भयोईखिसानोरानालिख्योचित्रभीतिमानोउलटिपयानो कियोनेकुमनआइये । देख्योहूप्रभावएपैंभावमेंनभिद्योजाइविनह रिकृपाकहौकैसेकरिपाइये ॥ ४६९ ॥ विषयीकुटिलएकभेषधरि साधुलियो कह्योयोंप्रसंगमोसोंअंगसंगकीजिये । आज्ञामोकोदई आपलालगिरिधारीअहो शीशधरिलेईकछूभोजनहूकीजिये । संत नसमाजमेंविछाइसेजवोलिलियो शंकअबकौनकीनिशंकरसपीजि ये। श्वेतमुखभयोविषयभावसवगयोनयो पांयनमेंजाइमोको भ-क्तिदानदीजिये ॥४७०॥ रूपकीनिकाईभूपअकवरभाईहियेलियेसंग तानसेनदेखिवेकोआयोहै । निरखिनिहालभयोछविगिरिधारीला लपदसुखजालएकतवहींचटायोहै । वृन्दावनआईजीवगुसाईजीसों मिलिझिलीतियासुख देखिवेकोपनलैछुड़ायोहै। देखिकुंजकुंजला लप्यारीसुखपुंजभरी धरीउरमांझआइदेश वनगायो है ॥ ४७१ ॥

भाई अकवरने तामसेनसों पूंछी सांवरेपै सवरीझे हैं तवहीं मीराबाई-पै तव दर्शन को आयो ॥ १ ॥ पद सुखजाल १ पद ॥ प्यारी के कचविथुरे मानों धाराधरकी श्यामघटा उनहीं तामधि पुहुप छूटिपरे जैसे वड़ी वड़ी बूंदें। तामधि मुक्त बगपांति तरौना अलक बीच विजुलता-सी कौंधनि नेत्र खंजनरी पिक बोलनि बोलें रूंदें। लालसारी पहरै हरी कोर मघवा धनुसी घूंघट करि चली पीठ पाछे तेतरके लाल मुनियां सी कंचुकी तनीकी फूंदें। मेहँदी सों आरक्त नख वीरवहूटी ऐसी पा-वस वनिता मिली मीरागिरिधर खुले काम प्रीति काम हारगूंदें ॥ २ ॥

रानाकीमलीनमतिदेखिवसीद्वारावति रतिगिरिधारीलालनित्य हीलड़ाइये । लागीचटपटीभूपभक्तिकोस्वरूपजानिअतिदुखमानि विप्रश्रेणीलैपठाइये। वेगिलेकेआवोमोकोप्राणदैजिवावोअहोगये द्वा

रधरनोंदैविनतीसुनाइये। सुनिबिदाहोनगईराइरनछोरजूपै छांड़ोरा खोहीनलीनभईनहींपाइये॥ ४७२॥ मूल॥ आंवेरअछितकूर्मको द्वारकानाथदर्शनदियो। श्रीकृष्णदासउपदेशपरमतत्त्वपरचोपा यो। निर्गुणसगुणस्वरूपतिमिरअज्ञाननशायो। काछबाछनिःकलं कमनोगांगेययुधिष्ठिर। हरिपूजाप्रहलादधर्मध्वजधारीजगपर। पृ- थ्वीराजपरचौप्रगटतनशंखचक्रमंडितकियो। आंवेरअछितकूर्मको द्वारकानाथदर्शनदियो॥२१६॥ पृथ्वीराजराजाकीटीका॥ पृथ्वी राजराजाचल्योद्वारकाश्रीस्वामीसंग अतिरसरंगभरचोआज्ञाप्रभुपा इये। सुनिकैदिवानदुखमानिनिशिकानलग्योकहीपग्योसाधसेवाभ क्तिपुरछाइये। देखियेनिहारिकैबिचारकीजेइच्छाजोईलीजेनहींसा थजावोबातलैदुराइये। आयोभोरभूपहाथजोरिकरिठाढ़ोरहेउकहो रहोदेशसोनिदेशनसुहाइये॥ ४७३॥

विदा हो नगई॥ पद॥ हरि करो जनकी भीर। द्रौपदी की लाज राखी तुम बढ़ायो चीर। भक्त कारण रूप नरहरि धरचो आप शरीर। हिरण्यकश्यप मारि लीनो धरचो नाहिंन धीर। बूड़ते गजराज तारचो कियो बाहरनीर। दास मीरालाल गिरिधर जहांदुख तहँ पीर॥ १॥ सजन सुधि ज्यों जानो त्यों लीजे। तुम बिन मेरो और नकोई कृपा रावरी कीजे। द्योसन भूख रैनि नहिं निद्रा यह तन पल पल छीजे। मीरा प्रभु गिरिधर नागर अब मिलि बिछुरन नहिं कीजे॥ २॥

द्वारावतिनाथदेखोगोमतीस्नानकरोंधरोंभुजछापआयमनअभि लाखिये। चिन्ताजिनिकीजैतीनोंबातइहांलीजैअजूदीजैजोईआज्ञा सोईशिरधरिराखिये। आयेपहुँचाइदूरिनैनजलपूरिबहै दहैउरभारी कहांसंगरसचाखिये। बीतेदिनदोइनिशिरहेहुतेसोइभोइ गईभक्ति गिराआइवाणीमध्यभाखिये॥ ४७४॥ अहोपृथ्वीराजकहीस्वामी हीसोंबानीलहीआयोउठिदौरि वाहीठौरप्रभुदेखेहैं। घूम्योंकह्योका

नथरोगोमतीस्नानकरो सुनिकैअन्हायोपुनिवेनकहूपेखेहैं । शंखच क्रआदिछापतनसवव्यापिगईभईयोंअवाररानीआइअवरेखेहैं। बोले रह्योनीरमेंशरीरलैसनाथकीजैलीजैनाथहियेनिजभागकरिलेखेहैं ॥ ॥ ४७५ ॥ भयोजवभोरपुरवड़ोभक्तशोरपरचोकरचोआनिदरशन भईभीरभारीहै । आयेवहुसंतओमहंतवड़ेवड़ेधाये अतिसुखपायेदे हरचनानिहारीहै । नानाभेदआवेंहितमहिमासुनावेंराजा सु नतलजावेंजानीकृपावनवारीहै । मंदिरकरायोप्रभुरूपपधरायोसव जगयशगायोकथामोकोलागीप्यारीहै ॥ ४७६ ॥ विप्रअंगहीनसो अनाथवैजनाथद्वारपरचोचपचाहैमासकेतिकविहानेहैं। आज्ञावारदो इचारभईहैफेरिहौंहियाकोहाठसारदेखिशिवपिघलानेहैं । पृथ्वीराज अंगकेअंगोछासोंअँगोछोजाइआइकेसुनाईद्विजगौरवड़रानेहैं। नयोमँ गवायोतनछाइदियोछायोनैनखुलेचैनभयोजनलखिसरसानेहैं ४७७॥

मधुभापिये भगवान् ने विचारी कृष्णदासजी तीनबातें देनी कहि गये हैं सो देचुको पाछे कृष्णदास द्वारका आवेंगे उनकी मनुहारि करनी होय-गी स्वामी कीसी वाणी कही क्योंकि राजाको कृष्णदास जी की वाणी में प्रीति वहुत रही है ॥

मूल ॥ भक्तनकोआदरअधिकराजवंशमेंइनाकियोलवुमथुरामें रताभक्तअतिजैमलपोषे । टोडेभजननिधानरामचन्द्रहरिजनतोष । अभैरामइकरसनेमनीमाकेभारी । करमशीलसुरतानभगवानवीरभू पतिव्रतधारी । ईश्वरअछैराजराइमलकाहरमधुकरनृपसर्वसदियो भक्तनकोआदरअधिकराजवंशमेंइनाकियो ॥ २१७ ॥ टीका ॥ मेरे तेवस्तुभूपभक्तिकोस्वरूपजानै जैमलअनूपताकीकथाकहिआयेहैं। करीसाधुसेवारीतिप्रीतिकीप्रतीतिभईनईएकसुनोहरिकैसेकैलड़ाये हैं । नाचेमानमन्दिरसोंसुन्दरविचारीवातछातपरवँगलाकेचित्रले वनायेहैं । विविधविछौनासेजराजतउठौनापानदानधरिसोनाजरी परदासिवायेहैं ॥ ४७८ ॥

नीचे मान मन्दिर ॥ कवित्त ॥ सीरे तहिखाने तामें खासे खस-खाने सींचे अतर गुलाबन सों व्यालरपटति है। भूधरसुधारे हौद छुटत फुहारे अरु भारे भरताव दान धूपद पटति है। ऐसेमें गवन कहि कैसे करि कीजै बलि सौध की तरंगआनि अंग लपटति है। चन्दन किंवार घनसारके पगार चारु तऊ आनि ग्रीषम की झार झपटति है ॥ १ ॥ बिछे हैं बिछौना घनसारके नवीने तामें कीने छिरकाव तर अतर गँभीरके। गुरुवे गुलावके फुहार छूटैं ठौर ठौर उठत झकोर तामे त्रिविध समीर के। सेज अरबिंद की चंदन की चोली चारु श्री गोबिंद सुमन शृंगार हैं शरीरके। झमक मनक सों बनि कवनि बैठीआजु राधिका रवन संग भवन उसीरके ॥ २ ॥

ताकीदारुसीठीकररचनाउतारिधरे भरेदूरिचोकीआयभावस्वच्छताइये। मानसीविचारेलालसेजपगधारै पानखातलैउगारडारेपौढसुखदाइये। तियाहूनभेदजानैसोनसेनीधरीवानेदेखिकैकिशोरसोयोंफिरिभोरआइये। पतिकोसुनाईभईअतिमनभाईवाकोखिजिडरपाईजानीभागअधिकाइये ॥ ४७९ ॥ टीकामधुकरशाहकी ॥ मधुकरशाहनामकियोलैसफलयाते भेषगुणसारग्राहतजतअसारहै। ओंडछेकोभूपभक्तभूपसुखरूपभयोलयोपनभारीजाकेऔरनविचारहै। कंठीधरिआवैकोऊधोइपगपीवैसदाभाईदुखघरघरडारचोभालभारहै। पाइँपरछालिकहीआजुजूनिहालकियेहियेद्रयेदुष्टपावँगहेहगधारहै ॥ ॥ ४८० ॥ मूल—खेमालरतनराठौरकेअटलभक्तिआईसदन रैनापरगुणरामभजनभागवतउजागर। प्रेमीप्रेमकिशोरउदरराजारतनाकर। हरिदातनिकेदासदशाऊंचीध्वजधारी। निर्भयअनन्यउदाररसिकयशरसनाभारी। दशधासंपतिसंतबलसदारहतप्रफुलितबदन। खेमालरतनराठौरकेअटलभक्तिआईसदन ॥ २१८॥

भेष गुणसार ग्राही भवँरवत् सारग्राही मक्षिकावत् असार ग्राही दोषी

भाइनिने खरको माला तिलकदैकै राजा के भेज्यो राजाने वाही चरणोदक लियो राजाके गुरु व्यासदेव जू वहीं रहे हैं यत्र पद बनाय ॥ पद ॥ भक्त बिन किन अपराध सह्यो । कहा कहानि असाधनि कीनों हरि बल धर्म रह्यो । अधमराज मदमाते लैरथ सो जड़भरत नह्यो । पट झपटत द्रौपदी न मटकी हरि को शरणचह्यो । मत्तसभा कौरवन बिदुर ज्यों कहा कहा न कह्यो । शरणागत आरत गजपतिको आपन चक्र गह्यो । हाथ हरिनाथ पुकारत आरत कौन ओर निबह्यो । व्यास वचन सुनि मधुकर-शाह भक्ति पथ सदा गह्यो । करि मनसा कत को मुहुकारो । साकत मोहिं न देखे भावत कह बूढो कह बारो । साकत देखत डर लागतहै नाहर हूतेभारो । भक्तनसों कुवचन बोलतहैं नेकुडरैमब्यारो । आठै चौदाशिकूंडो पूजत अभागेकोज्ञान अँध्यारो । व्यासदासयह संगति तजिये भजिये श्याम सवारो ॥ १ ॥ पद ॥ जो सुखहोत भक्तघरआये । सो सुखहोत नहीं वहुसंपति बांझहि बेटा जाये । जोसुखभक्तनिको चरणोदक गातहि गात लगाये । सोसुख सपनेहूनहिंपइयत कोटिक तीरथ न्हाये । जो सुख भक्तनि को सुख देखत उपजत दुख विसराये । सो सुख कबहुँ होत नहिं कामी कामिनि उर लपटाये । जो सुख होत भक्त बचनन सुनि नैननि नीर वहाये । जो सुख कबहुँ न पइयतु है घर पूतको पूत खिलाये । जो सुख होत मिलत साधुनके क्षणक्षण रंग वढ़ाये । सो सुखहोत नरंक व्यासको लंकसुखमें रहिपाये ॥ ३ ॥ असारको लेहिं नहीं सार को संग्रहै साधु गुण हंसके ॥ ४ ॥ जैसे मधुकर शाह कामीकृष्ण क्रोधी नृसिंह लोभी वामन मोही रामचंद्र ऐसे अवगुणमें गुणलेहिं हरिहीकी इच्छामानैं नारद जी भक्तराजहैं पै उनहींने शाप दियो सनकादिक भगवान् रूप हैं उनहूंने शाप दियो पैभलोही करचो ऐसे साधु जो करैं सो भलोही करैं यह सार लै लेहिं ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ काठकी कटारी करि तपसी भरिवारि लेत काठको सँवारि धाम श्यामको बैठावहीं । काठकीकमान शरकाठके बनाइ लेत काठी काठ चाढि शूररणजीति आवहीं । काठकी सुमिरनीके

साधु राम नामलेत काठको पषाणविसि देवको चढावहीं । काठकी अवज्ञाको कहत बनिआवै नाहिं नाव चढ़ि काठकीधौं तबैपार पावहीं ॥ ६ ॥ काठकी बस्तु महा अमोल गनिये काठ तरण तारण है ॥

मूल ॥ कलियुगभक्तिकररी कमानरामरेणुकैऋजुकरी । अजर वरयआचरयोलोकहितमनोंनीलकंठ । निंदकजगअनिराइकहामहिमाजानेगोभूशठ । विदितगांधर्वीब्याहकियोदुइकुंतप्रवाने । भरनपुत्रभागवतसुमुखशुकदेवबखाने । औरभूपकोउछ्वैसकैदृष्टिजाहिनाहिंनधरी । कलियुगभक्तिकररीकमानरामरेणुकैऋजुकरी ॥ २१९ ॥

टीका ॥ पूनोंमेंप्रकाशभयोशरदसमाजरास बिबिधबिलासनृत्यराग रंगभारीहै । बैठरसभीजिदोऊबोल्योरामराजारीझिभेटकहाकीजेबिप्रकहीजोईप्यारीहै । प्यारकोबिचारैनानिहारैकहूंनेकुछटासुतारूप घटाआनरूपसेवाज्यारीहै । रहीसभाशोचआपजाइकैलिवाइलाये भेषसोंदिवायेफेरेसंपतिलैवारीहै ॥ ४८१ ॥

ऋजुकरीनरमकरी ॥ कबित्त ॥ पनच पुरानी बहिपानी यों धनुष आयो छुवत छेटूक भयो ताको कहा करिये । आलम अलप अपराध साधु जियजानि क्षमाकीजे क्षीणकीजे कित क्रोध मन धरिये । सूझत तौ द्विजबर पूजियेन जूंठबर कठिन कुठार आनि कंठपर धरिये । गुरुमति लोपिये न पूजे परकोपिये न तासों पांय रोंपिये न ताकेपाइँ परिये ॥ १ ॥ प्रकाश भयो ॥ रूपकी रीझसों प्रेमपग्यो किधौं प्रेमकी रीतिहिरूप सों पागी । मनसा वश में न जगी कवि मंडन कैमनसा बशैमन के जागी । लाजहिलै कुलकानभगी औकिधों कुलकागि लै लाजहिभागी । नयनलगे वहि मूरतिसोंरी किधौं वहि मूरति नयनन लागी ॥ २ ॥ नृत्य अरु गान बतरान मुसु कान देखि विह्वल बिकल ह्वैकै सकल बिकै चुके । बड़े बड़े धर्मदास तेऊलये नारिसों संभारि हनसकै हरि सर्व सुहृदेचुके । नीर भरी अँखियनकी अँखियन ये भरिअति ऊरध अधीरगति मति

विसरै चुके। ऐसो ऐस देखिकै न और ऐस देखे अब मनके श्रवण नयन यहैपन लैचुके ॥ ३ ॥

मूल ॥ हरिगुरुहरिदासनिसोंरामवरनिसांचीरही । आरजकोउप देशसुतौउरनीकेधारच्यो। नवधादशधाप्रीतिआनधर्मसबैबिसारच्यो । अच्युतकुलअनुरागप्रगटपुरुषारथजान्यो। सारासारविवेकबाततीनों मनमान्यो । दासंतनिअनन्यउदारता संतनमुखराजाकही । हरि गुरुहरिदासनसोंरामवरनिसांचीरही ॥ २२० ॥ टीका ॥ आयेम धुपुरीराजारामअभिरामदोऊदामपैनराख्यो साधुविप्रभुगतायेहैं । ऐसेयेउदाररराहखरचसँभारनाहिं चलिबोबिचारभयोचूरादीठआयेहैं। मुद्राशतपांचमोलखोलितियाआगेधरेदीजे बेंचिगये नाभाकरपहिरा येहैं।पतिकोबुलाइकहीनीकेदेखिरीझे भीजेकाटिकैकरजपुरआयेदै पठायेहैं॥४८२॥मूल॥अभिलाषउभैखेमालकातेकिशोरपूराकिया । पांयननूपुरबांधिनृत्यनगधरिहितनाच्यो। रामकलसमनरलीसीसी-तातेनहिंबांच्यो । बाणीविमलउदारभक्तिमहिमाविस्तारी । प्रेमपुंज शुठिशीलविनयसंतनरुचिकारी । मृष्टिसराहैंरामसुचलघुवैसलछन आरजलिया।अभिलाषउभयखेमालकातेकिशोरपूराकिया ॥२२१॥

हरिगुरु दासन सों सांचो होइ भक्ति तबहीं सांची जैसे प्रवानोतौ सांची भक्ति मेंतौ सबही कहै हैं आप बहुमोल वस्त्र पहिरै हरिको थोड़े मोल लालजूको अथवा भजन करिकै फलचाहै सो सांचो नहीं और भ- जन करते कछू विघ्न होइ तब हरिको देइ तौ सांचोही भजन करिकै भक्तही चाहै सांचो किशोर ॥ १ ॥ कुंडलिया ॥ मारिव फाती खी- चरी यह घर आज न कालि । यह घर आज न कालि धौलधर धूवां कैसो। तन तुसार को तार ताहि नर थिर करवैसो । स्वपने सोना पाइ कृपणता कर धन जोरयो। पुनि जागेते कहौ प्रातकाको ऋण तोर्यो । जोपीसंती फांकियो अगर सु उत्तम चालि । मारि वफाती खीचरी यहघर आजन कालि ॥ २ । ३ । ४ । ५ । ६ ॥

खैमालरतनतनत्यागसमयअश्रुपातबातसुतपूछेअजूनीकिखोदी जिये । कीजेपुण्यदानबहुसंपतिअमानभरीधरीहियेदोईसोई कहीसुनिलीजिये । बिबिधबड़ाईमेंसमाइमतिभईयेननितही विचार अवमनपरखीजिये । नीरभरिघटशीशधरिकै नलायोऔरुनूपुरनि बांधिनृत्यकियो नाहिंछीजिये ॥ ४८३ ॥ रहेचुपचापसवैजानीक मआपहीकोबोल्योयोंकिशोरनातीआज्ञामोकोदीजियोयहीनितकरो नहिंटरौजौलौंजीवैतन मनमेंहुलासउठिछातीलाइलीजिये । बहुसुखपायोपायेवैसेहीनिबाहेपनगायेगुणलालप्यारीअतिमतिभीजिये । भक्तिविस्तारकियोवैसलघुभीज्योहियो दियोसनमान संतसभासबरीझिये ॥ ४८४ ॥ मूल ॥ खैमालरतनराठौरकेसुफलबेलिमीठी फली । हरीदासहरिभक्तिभक्तमंदिरकोकलसो ॥ भजनभावपरिपक्वहृदयभागीरथजलसो। त्रिधाभांतिअतिअनन्यरामकीरीतिनिबाही हरिगुरुहरिबलभांतितिनहींसेवाहृढसाई । पूरणइंदुप्रमुदितउदधित्यों दासदेखिबाढैरली । खेमालरतनराठौरकीसुफलबेलिमीठीफली ॥

खीजिये ॥ दोहा ॥ जबलगि रँगहो बिन रँग्यों, हरि रंग माँहि मजीठ। अब मूरखमाथोधुनै जबरँगदीनीपीठ ॥ १ ॥ मनबरूद तनजालगी तुलसी वरकन्दाज । प्रेमपलीती दगगई, निकसीआहिअवाज ॥ २ ॥ प्रेम बिनाहारिनामिलैं, कोटि यतन करि कोइ । जैसे गुण बिन कूपजल आवै हाथ न सोइ ॥

मूल ॥ हरिवंशचरणबलचतुरभुजगौड़देशतीरथकियो । गायो भक्तिप्रतापसबहिदासत्वदृढ़ायो । श्रीराधावल्लभभजनअनन्यतागरबबढ़ायो । मुरलीधरकीछापकवित्तअतिहीनिरदूषण । भक्तनकी अंघ्रिरेणुवहैधारीशिरभूषण । संतसंगमहाआनंदमेंप्रेमरहितभीज्यो हियो । हरिवंशचरणबलचतुरभुजगौड़देशतीरथकियो ॥ २२३ ॥

गायोभक्ति प्रताप दिखायो जैसे निपटने ॥ छप्पय ॥ श्वपच पहिरि यज्ञोपवीत करि कशन गहत जब । करम करै अघपरै डरै पुनि विश्व त्रा-

सतव। पुनिललाट पाटतिलकदेइ अरु तुलसी मालधरि। हरिकेगुण उच्चरै पायकुलकर्महि परिहरि। चतुर्भुज पुनीत अंत्यजभयो मुरलीधर शरणौ लियो। तिहिपाछे किनि लागिये जिनलोह पलटि कंचनकियो॥ १

टीकास्वामीचतुर्भुजकी॥ गौड़वानदेशभक्तिलेशहूनदेख्योकहूं मानसकोमारिइष्टदेवकोवड़ायोहै। तहांजायदेवताकोमंत्रलैसुनायो कान लियोउनमानिगांवसुपनसुनायोहै। स्वामीचतुरभुजजूकेबेगितु मदासहोहुनातोहोहिनाशसवगांवभज्योआयोहै। ऐसेशिष्यकियेमा लाकंठीपाइजियेपांवलियेमनदियेऔअनंतसुखपायोहै॥ ४८५॥

जहां जाय देवताको मंत्रलै सुनायो॥ कबित्त॥ छलकति छलताजि गोकुलकी गैलभजी कुब्जाचुरलेपगा मनबतकायहै। आये हैं सुखारी हैं करत हैं भिखारीप्रीतिपाछिली बिसारी येहो यह कछू न्याय है। अहो घनश्याम यह जीति व्रज वाम मन लहै न बिश्राम मरिरही कौन ज्याम है। मरण उपाइ यहै देखे सुखपाई जोई काहु कल पाइहै सो-कैसे कले पाइहै॥ ३॥

भोगलैलगावैंनानासंतनिलडावैं कथाभागवतगावैंभावभक्तिवि स्तारिये। भज्योधनलैकैकोऊधनी पाछेपर्योसोऊआनिकैदवायोबै ठिरह्योननिहारिये। निकसीपुराणबातकरैंनयोगातादिक्षाशिक्षासुनि शिष्यभयेगयोयोंपुकारिये। कह्योयाजनममेंनलियोकछुदियोफा रो हाथलैउवारोप्रभुरीतिलागीप्यारिये॥ ४८६॥ राजारूठमानि कह्योकरोविनप्राणप्राकोसाधुयेविराजमानलैकलंकदियोहै। चलेठौ रमारिवेको धारिवेकोसकैकैसे नैनभरिआयेनीरबोल्योधनलियोहै। कह्योनृपसांचोहैकैझूंठोजिनिहूजैसंतमहिमाअनंतकहीस्वामीऐसो कियोहै। भूपसुनिआयोउपदेशमनभायोशिष्यभयोनयोतनपायो भीजगयोहियोहै॥४८७॥ पाकिरह्योखेतसंतआयेकरितोरिलेत जिते रखवारेमुखसेतशोरकियोहै। कह्योस्वामीनामसुन्योकहीवड़ोकामभ योयहतोहमारोसोईआपसुनिलियोहै। लैकैमिष्टान्नआपसुमुखवखान

कियोलियोअपनाइआजभीज्योमेरोहियोहै । लैगयोलिवाइनानाभो
जनकराइभक्ति चरचाचलाइचाइहितरसपियोहै ॥ ४८८ ॥ मूल ॥
चालककीचरचरीचहुँदिशिउदधिअंतलोंअनसरी । शक्रकोपिशुठच
रितप्रसिद्धिपुनिपंचाध्याई । कृष्णरुक्मिणीकेलिरुचिरभोजनवि
धिगाई । गिरिराजधरणिकीछापगिराजलधरज्योंगाजै । संतशिखंडी
खंडहृदयआँनदकैकाजै । जाड़ाहरणजगिजाड़िताकृष्णदासदेही
धरी । चालककीचरचरीचहुंदिशिउदधिअंतलोंअनुसरी ॥ २२४ ॥

निकसी पुराण बात ॥ भागवते ॥ शृण्वतां स्वकथाः कृष्णः पुण्यश्रव-
णकीर्तनः । हृद्यंतस्थो ह्यभद्राणि विधुनोति सुहृत्सताम् । दूसरो जन्म
कैसे भयो ॥ आगमे ॥ कृष्णमन्त्रोपदेशेन माया दूरमुपागताः । कृपया
गुरुदेवस्य द्वितीयं जन्म कथ्यते॥ २ ॥ नारद पंचरात्रे ॥ श्लोक ॥ पितृ-
गोत्री यथा कन्या स्वामिगोत्रेण गोत्रिका ॥ श्रीकृष्णभक्तिमात्रेणाऽच्युत-
गोत्रेण गोत्रिका ॥ ३ ॥ दियोफारो ॥ दोहा ॥ सामनहूं घनसार है,
जेठ मास घन सार ॥ बनहू में घनसार है, झूठेको घनसार ॥ ४ ॥

विमलानंदप्रबोधवंशसंतदाससीवांधरम । गोपीनाथपदरागभो
गछपनभुजाये । पृथुपद्धितअनुसारदेवदंपतिदुलराये । भगवतभ
क्तसमानठौरद्वैकोबलगायो । कवित्तशूरसोंमिलतभेदकछुजातनपा
यो । जनमकरमलीलायुगतिरहसिभक्तिभेदीमरम । विमलानंद
प्रबोधवंशसंतदाससीवांधरम ॥ २२५ ॥ टीका ॥ बसतनिमाईग्राम
श्यामसोंलगाईमतिऐसीमनआईभोगछपनलगाये हैं । प्रीतिकीसँ
चाईयहजगमेंदिखाईसेवें जगन्नाथदेवआपरुचिसोंजिमाये हैं। राजा
कोस्वपनदियोनामलैप्रगटकियोसंतहीकेगृहमेंतोजेवोंयोंरिझायेहैं ।
भक्तिकेअधीनसबजानतप्रवीनजनऐसेहैं रंगीनलालठौरठौरगायेहैं ॥

युगत तापै चना गेहूं के न्यायको दृष्टांत ॥ प्रीतिके सचान जगन्नाथ
को छप्पनलगै हैं अपने ठाकुर को गोपीनाथ को मैं हूं लगाऊं घरको धन
सब लगायो कर्जहू काढ़्यो तब बिचारो कैतो छप्पनहीं भोग लगाऊं नहीं

तो सबही उड़ाऊं सो भगवान् ने चोप करिकै राजा को स्वप्न दिखायो नामख्यात कियो झूंठोपन होतो छप्पन भोगी की नाईं चनाहू न मिलते ॥ १ ॥ भक्ति दियो पावै उद्यम क्यों कियो सो वृत्तान्त हमने न जान्यो ॥

मूल ॥ मदनमोहनसूरदासकीनामशृंखलाजुरीअटलगानकाव्य गुणराशिसुहृदसहचरिअवतारी । राधाकृष्णउपासिकरहसिसुखके अधिकारी। नवरसमुख्यशृंगारविविधभांतिनकरिगायो। वदनउच्चर तवेरसहसपायँनह्वैधायो। अंगीकारकीअवधियहज्योंआख्याभ्राताज मल। श्रीमदनमोहनसूरदासकीनामशृंखलाजुरीअटल ॥ २२६ ॥ टीकासूरदासमदनमोहनजूकी ॥ सूरदासनामनैनकंजअभिरामफू लेझूलेरंगपीकेनीके जीकेऔरज्यायेहैं । भयेसोअमीनयोंसंडीलेके नवीनरीति प्रीतिगुरुदेखिदामबीसगुणेलायेहैं। कहीपूवापावैंआपम दनगुपाललालपरेप्रेमख्याललादिछकरापठायेहैं। आयोनिशिभयो श्यामकियोआज्ञायोगलैकैअबहींलगावोभोगजरिफिरिपाछेहैं४९०॥ पयदलबनायोभक्तिरूपदरशायोदूरि संतनकीपानहींकोरक्षककहा ऊंमैं। काहूसीखिलयोसाधुलियोचाहैपरचेकोआयेद्वारमन्दिरकेखो लिकहीआऊंमैं । रह्योवैठिजाइजूजीहाथमेंउठायलीनी पूरीआशमे रीनिशिदिनगाऊंमैं । भीतरबुलावैंगुसाईंवारदोईचारि सेवासौंपीसा रिकह्योजनपदध्याऊंमैं ॥ ४९१ ॥

शृंगार ॥ कवित्त ॥ लाल भये लटू भट ठाढ़े हैं अटा के नीचे लालची रह्यो लुभाइ टकीसी लगाइ कै। गोकुल की वधू विधु मुख के अवलोकिबे को नीकी एक तान उठ्यो बांसुरी बजाइ कै। सुनि ध्वनि वाके श्रवण परी काशीराम अति अकुलाइ कै झरोखनि झांकी आइकै। खोलिकै किंवारी व्रजनारी तहां देखैं झांकि गिरि पर्‍यो है गोपाल फिरि-की सी खाइकै ॥ १ ॥ पथिकनिहेरि पिय पाली रूप धारि दृग ऊरध के चारी पान करैं लखे चनको । विरल सुधार कारि अँगुरिन धारि पल गतिहि निवारि भावे अंतरन छिनको । त्योंहीं वह नारि प्रीति रीति उर

धारि छांडि असुन तरवारि देखी प्रेम दुहुन को । सुरति निहारि यह कीनों निरधारि छांडै तन तरवारि देखो प्रेम दुहुयनको ॥ पद ॥ सखी के पाछे ठाढी बदन नीको लागत मानों कंचन गिरिते उदयराशिं नवसित किये । सोहतरी माथे बिंदुला कुमकुमको दिये कर दीप लिये । नीलांबर सजनी रजनी राजत कुरंग नयनी राकारी संगलिये । सूरदास मदन मोहनके लोचन आतुर चकोर नतृतहोत नाहिं मधुपान किये ॥ ३ ॥ कबित्त ॥ चरण चिताय नख चंद्रिका पैआइ परे उछरति निहारि नाभि त्रिवली झकोर है । उरज उतंग पुनि पुनि पुनि रंग करि ढरि कटि ओर मुख छवोवैनी छोरहै । पाइ रंगभूमि रस झूमि रीझ खेल रच्यो मच्यो छबि पाइ मन डारत मरोर है । लाडिली को रूप अति लाडिलो मैं देख्यो आली लाल दृग गेंदन सों खेलैं निशि भोरहै ॥ ४ ॥ दृष्टांत पोस्तीकी रेचरी को पदलै बनायो ॥ पद ॥ मेरेगति तूही अनेक तोष पाऊं । चरण कमल नख मणि परि त्रिषय सुख बहाऊं । घर घर जोडी लै हरितौ तुम्हैं लजाऊं । तुम्हरो कहाइ कहौ कौनको कहाऊं । तुम से प्रभु छांड़ि काहि दीननको धाऊं । शीश तुम्हैं नाइकै अब कौनको नवाऊं । कंचन उरहार छांडि कांचको बनाऊं । शोभा सब हानि करौं जगत को हँसाऊं । हाथी ते उतरि कहा गदहा चढि धाऊं । कुमकुमको लेप छांडि काजर मुँहु लाऊं । कामधेनु घरमें तजि अजाको दुहाऊं । कनक महल छांडि क्यों परमकुटी छाऊं । पाइँनि जोपै लौं प्रभूतौ अनत जाऊँ । सूरदास मदन मोहन लाल गुणगाऊं । संतन को पानहींकी हीको रक्षक कहाऊं ॥ २ ॥

पृथ्वीपतिसंपतिलैसाधुनखवाइदईभईनहींशंकयोंनिशंकरंगपागेहैं । आयेसोखजानोलेनमानोंयहबातअहोपाथरलैभरेआपआधीनिशिभागेहैं । रुक्कालिखिडारेहामगटकेयेसंतननेयातेहमसटकेहैंचलेजबजागेहै । पहुंचेहुजूरभूपखोलिकैसंदूखदेखे पेखेआंककागदमें

रीझेअनुरागेंहैं ॥ ४९२ ॥ लेनकोपठायेकहीनिपटारिझायेहमैंमनमें नलायेलिखीवनतनडाऱ्योहै । टोडरदिवानकह्योधनकोंविरानाकियो लावोरेपकरिमूढ़फेरिकैसेभाऱ्योहै । लैगयेहुजूरनृपवोल्योमोंदूरिरा खो ऐसोमहाक्रूरसोंपिदुष्टकष्टधाऱ्योहै । दोहालिखिदीनोंअकबरदे खिरीझिलीनोजावोवाही ठौरतोपैद्रव्यसववाऱ्योहै ॥ ४९३ ॥

रुक्का ॥ दोहा ॥ तेरह लाख संडीलै उपजे, सब साधन मिलि गटके। सूरदास मदन मोहन जी आधीराति को सटके ॥ १ ॥ बनत न डाऱ्यो है वडे वडेही की चाकरी करैं तब बादशाह की करैं अब कृष्णकी करैं तापै चोरको दृष्टांत ॥ दोहा ॥ इक तन अँधियारो करै, शून्य दई पुनि ताहि। दश तमते रक्षाकरौ, दिन मणि अकबर शाहि ॥ २ ॥ जावो वाही ठौर ॥ कवित्त ॥ सेइ देखे साहब सँभारि देखे वाम लोनी सोइ देखो भोरलौं सुगंध भूरि सों भरे। खाइ देखे पान पकवान पुंज बार बार पौढि देख्यो तिया संग निशि खलिका परे। चढि देख्यो हाथी हय हीरा उर धारि देख्यो भूषण विविध भांति कीट मणि सों जरे। मनन सिरानो किते विषय रस सानो मंद ताते बार बार क्यों न बोल तू हरे हरे ॥ ३ ॥

आयेवृन्दावनमनमाधुरीमेंभीजिरह्योकह्योसोईपदसुनोरूपरस रासहै । जादिनप्रगटभयोगयोशतयोजनपैजनपैसुनतभेदवाटीज गप्यासहै । सूरद्विजद्विजानिजमहलटहलपायचहलपहलहिये युगलप्रकासहै । मदनमोहनजूहेइष्टइष्टमहाप्रभुअचरजकहाकृपादृ ष्टिअनायासहै ॥ ४९४ ॥ मूल ॥ कात्यायनिकेप्रेमकीबातजातका पैकही । मारगजातअकेलगानरसनाउच्चारौ । तालमृदंगीवृक्षरी झिअंबरतहँडारौ । गोपनारिअनुसारिगिरागदगदआवेसी । जगप्रपं चतेदूरिअजापरसेनहिंलेसी। भगवानरीतिअनुरागकीसंतसाखिमेली सही। कात्यायनिकेप्रेमकीबातजातकापैकही ॥ २२७ ॥

उरझी नकबेसरि सों पीत पट बनमाल वीच आइ उरझे हे दोऊ जन। नयनन सों नैन बैन बैनन सों उरझि रहे चटकीली छवि देखे लपटात श्याम घन। होड़ाहोड़ी नृत्य करैं रीझ रीझ अंकभरैं ततथेई २ कहत हैं मगन मन। सूरदास मदन मोहन रास मंडल में प्यारी को अंचल लेपोंछत दे श्रम कन ॥ १ ॥ कात्यायनी गौड़ देश की राज कन्या ॥ दशमे ॥ कस्यांचित्स्वभुजंन्यस्यचलत्याहापराननु । कृष्णोहं-पश्यतगतिंललितामितितन्मनाः ॥ २ ॥ सवैया ॥ खोइ गई बुधि सोइ गई सुधि रोइ हँसे उनमान जग्यो है। मौन गहे चक चौंकि रहे चलि वात कहै तन दाह दग्यो है। जानि परै नहिं जानि तुम्हें लखि ताहि कहा कछु आहि पग्योहै। शोचतही पगिये आनंदघन हेत लग्यो कि धौं प्रेत लग्यो है ॥३॥ पात्र जोई ॥ श्लोक ॥ यानैर्वापादुकैर्वापि गमनंभगवद्गृहे। देवोत्सवाद्यसेवाचअप्रणामस्तदग्रतः ॥ १ ॥

कृष्णबिरहकुंतीशरीरत्योंमुरारितनुत्यागियो। बिदिताविलोदा गांवदेशमुरधरसबजाने। महामहोछौमध्यसंतपरिषदपरवाने। पग नघूंघुरूबांधिरामकोचरितदिखायो। देशीशारँगपाणिहंसतासंगपठा यो। उपमाऔरनजगतमेंपृथाबिनानानाहिंबियो। कृष्णबिरहकुंतीश रीरत्योंमुरारितनत्यागियो ॥ २२८ ॥ टीकाश्रीमुरारिदासजीकी ॥ श्रीमुरारिदासरहेंराजगुरुभक्तदास आवतस्नानकियेकानधुनिकीजि ये। जातिकोचमारकरैसेवासोंउचारिकहेंप्रभुचरणामृतकोपात्रजोई लीजिये। गयेघरमांझवाकेदेखिउरकांपिउठोलावोदेवोहमैंअहोपान करिजीजिये। कहींमैंतोनूनतुच्छबोलेहमहूंतेसुच्छ जानेकोऊनाहिं तुम्हेंमेरीमतिभीजिये ॥ ४९५ ॥ वहैदृगनीरकहैमेरीबड़ीपीरभई तुममतिधीरनहींमेरेयोगताई है। लियोईनिपटहठबड़ेपटसाधुतामें श्यामैप्यारीभक्तिजातिपांतिलैबहाई है। फैलगईगांववाकोनामलैच वावकरैं भरैंनृपकान सुनिवाहूनसुहाई है। आयोप्रभुदेखिवेकोगयो वहरंगउड़ि जान्योसोप्रसंगसुनो वहैबातछाई है ॥ ४९६ ॥

सन्निन्दासतिनामवैभवकथा श्रीशेशयोर्भिन्नधीरश्रद्धाश्रुतिशास्त्रदेशिकगिरानाम्न्यर्थवादभ्रमः । नामास्तीतिनिषिद्धवृत्तिविहितत्यागौचधर्मान्तरैस्साम्यंनामनिशंकरस्यचहरेर्नामापराधादश ॥ १ ॥ तद्धर्म्मेनिरादराणामितितेनाम्नोपराधादश ॥ २ ॥ **काशीखंडे** ॥ ब्राह्मणःक्षत्रियोवैश्यःशूद्रोवायदिवेतरः । विष्णुभक्तिसमायुक्तोज्ञेयस्सर्वोत्तमोत्तमः ॥ ३ ॥

गयेसबत्यागिप्रभुसेवाहीसोंरागजिन्हें नृपदुखपागिगयोसुनीयहवातहै । होतहोसमाजसदाभूपकेबरषमांझदरशनकाहूहोतमानोंउतघातहै । चलेईलिवाइवेकोजहां श्रीमुरारिदासकरीसाष्टांगराशिनयनअश्रुपातहै । मुखहूनदेखेयाकोविमुखकेलेखेअहोपेखे लोगकहैंयहैगुरुशिष्यख्यातहै ॥ ४९७ ॥ ठाढ़ोहाथजोरिमतिदीनतामेंबोरिकीजेदंडमोपैकोरियोंवहोरिमुखभाखिये । घटतीनमेरीआपकृपाहीकीघटतीहै बढ़तीसीकरीतातेनूनताईराखिये । सुनकेप्रसन्नभयेकहेलैप्रसंगनयेबालमीकिआदिदैदैनानाबिधिसाखिये । आयेनिजग्रामनामसुनिसबसाधुआयेभयोईसमाजवैसोदेखिअभिलाखिये ॥ ॥ ४९८ ॥ आयेवहुगुणीजननृत्यगानछाईधुनि ऐपैसंतसभामनस्वामीगुणदेखिये । जानिकैप्रवीनउठेनूपुरनवीनबांधिसप्तसुरतीनग्रामलीनभयेपेखिये । गायोरघुनाथजूकोगमनसमयतासँगगमनप्राणचित्रसमलेखिये । भयोदुखराशिकहापैयेश्रीमुरारिदासगयेरामपासयेतौहियेअवरेखिये ॥ ४९९ ॥

गये सब त्यागि ॥ दोहा ॥ साधक सिद्धको एकमत, जित चालै तित सिद्धि । हरिजन चिंता ना करै, मुखआगे नवनिद्धि ॥ १ ॥ गुरु शिष्यख्यात है । गुरु निर्मोही चाहिये, शिष्य न छांड़ै प्रीति । स्वारथ छोड़ै हरि मिलैं, यहै भजनकी रीति ॥ २ ॥ फलटूट्यो जल में पर्‍यो, खोजी मिटी न प्यास । गुरुतजिके गोविंद भजे, निश्चय नरक निवास ॥ ३ ॥ सप्तसुर ॥ कवित्त ॥ केकीकी कुहक सों खरिज सुरजानि लीजे चात-

कके बोलसों ऋषभ सुर लेखिये । उचरत छागजानि लीजे गंधारसुर ऊरजके बोलसर मध्यमही पेखिये । कोकिलाके बैनसुर पंचम लखी जैये नहीं सत तुरंग सुरधैवत विशेषिये । घनकी गरजसो निषाद सुरजानि लीजै कहै शिरदार सुर सतयों विशेषिये ॥ ४ ॥

मूल ॥ कलिकुटिलजीवनिस्ताराहितबाल्मीकितुलसीभयो । त्रेताकाव्यनिबन्धकरीशतकोटिरमायन । इकअक्षरउच्चरेब्रह्महत्यादिपरायन । अबभक्तनसुखदेनबहुरिवपुधरिलीलाविस्तारी । रामचरणरसमत्तरहतअहर्निशिव्रतधारी । संसारअपारकेपारको सुगमरूपनौकालयो । कलिकुटिलजीवनिस्ताराहितबालमीकितुलसीभयो ॥ २२९ ॥

एक अक्षर ॥ रामायणे ॥ चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् । एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥ १ ॥ रामचरण ॥ दोहा ॥ पलकनिमगमधि ध्यान धरि, बरुणी जटा बनाय ॥ नैन दिगंबर ह्वै रहै, रूप विभूति लगाय ॥

टीकातुलसीदासजूकी ॥ तियासोंसनेहबिनपूछेपितागेहगईभूलीसुधिदेहभजेवाहीठौरआयेहैं । बधूअतिलाजभईरिससोंनिकसगईप्रीतिरामनईतनहाड़चामछायेहैं । सुनीजबबातमानोंह्वैगयोप्रभातवहपाछेपछितायतजिकाशीपुरीधायेहैं । कियोतहांवासप्रभुसेवालैप्रकाशकीनोंलीनोंदृढ़भावनेमरूपकेतिसायेहैं ॥ ५०० ॥

तियासों सनेह ॥ दोहा ॥ सकल लोक अपवश किये, अपनेही बलवान ॥ सबलासो अबलाकहैं, मूरख लोग न जान ॥ ३ ॥ वाही ठौर आयेहैं ॥ दोहा ॥ तरसतहैं तुव मिल न बिन, दरशन बिन ये नैन ॥ श्रुति तरसैं तुव वचन बिन, सुनि तरुणी रसपैन ॥ ४ ॥ बड़ो नेह तुमसों लग्यो, और न कछू सुहाइ ॥ तुलसी चन्द चकोर ज्यों, तरफ तरै निविहाइ ॥ ५ ॥ कहां लग्यो मन भावतो, सदा रहै मन माहि ॥ देख्यो चाहै

नैन भरि, बातनिक्यों पतियाहि ॥ ६ ॥ सेवा ॥ श्लोक ॥ गोप्यः कृष्णेवनं यातेतमनुद्रुतचेतसः ॥ कृष्णलीलां प्रगायन्त्यो निन्युर्दुःखेन वासरान् ॥ ७॥

शौचजलशेषपाइभूतहविशेषकोऊ बोल्यो सुख मानि हनूमान जूवतायेहैं । रामायणकथासोरसायनहैकाननको आवतप्रथमपाछे जातघृणाछायेहैं । जाइपहिंचानिसंगचलेडरआनिआयेवनमध्यजानि धाइपाइलपटायेहैं।करैंसीतकारकहीसकोगेनटारिमैंतो जानेरससार रूपधरचोजैसेगायेहैं ॥ ५०१ ॥ मांगिलीजैबरकहीदीजैरामभूपरूप अतिहीअनूपनितनैनअभिलाखिये । कियोलैसँकेतवाहीदिनहींसों लाग्योहेत आईसोईसमैचेतकविछविचाखिये । आयेरघुनाथसाथल क्ष्मणचढ़घोड़े पटरंगबोरेहरेकैसेमनराखिये । पाछेहनुमानआयेबो लेदेखेप्राणप्यारेनेकुननिहारेमैंतोभलेफेरिभाखिये ॥ ५०२ ॥

शौचिजल ॥ श्रुतौ ॥ शौचांतेचपदांतेचतर्पणांतेतथैवच ॥ हस्ताद्ध स्तेअधोहस्तेपंचतोयंसुरासमम् ॥ १ ॥ भूतविशेषदेवतनमें नीचहैं ॥ २ ॥ निहारिमैंतो ॥ पद ॥ लोचन रहेवैरीसोइ । जानिबूझिअकाज कीनोंद- योभुवमेंगोइ । अवगतिजुतेरीगतिनजानोरह्योयुगमेंसोइ । सबैरूपकीअव- धिमेरेनिकसिगयोढिगहोइ । कर्महीनहिपाइहीरादयोपलमेंखोइ । तुलसीदास जुरामबिछुरैकहोकैसीहोइ ॥ ३ ॥

हत्याकरिविप्रएकतीरथकरतआयो कहैमुखरामभिक्षाडारिये हत्यारेको । सुनिअभिरामनामधाममेंबुलाइलियोदियोलैप्रसादकि योशुद्धगायोप्यारेको । भईद्विजसभाकहिबोलिकैपठायोआपकैसेग योपापसंगलैकैजेयेन्यारेको । पोथीतुमबांचोहियेभावनहींसांचोअजू तातेमतिकाचोदूरिकरैनअँध्यारेको ॥ ५०३ ॥ देखीपोथीवांचनाम महिमाहूकहीसांच ऐपैहत्याकरैकैसेतरैकहिदीजिये । आवैजोप्रती तिकहीयाकेहाथजेंवे शिवजूकेबैलतबपङ्गतिमेंलीजिये । थारमेंप्रसा ददियोचलेजहांपानकियो बोलेआयनामकेप्रतापमतिभीजिये । जे

सीतुमजानोतैसीकैसेकैबखानोअहो सुनिकैप्रसन्नपायोजैजैध्वनिरीझिये ॥ ५०४ ॥

सुनिअभिराम नाम ॥ श्लोक ॥ रामरामेतिरामेतिरमेरामेमनोरमे॥ सहस्रनामतत्तुल्यंरामनामवरानने ॥ ४ ॥ अँध्यारोको ॥ पद ॥ पढ़त पढ़ावतसोमनमान्यो । कौन काज गोविंद भक्ति बिन जो पुराणकहि जान्यो । घरघर भट कि फिरे कामिनि लगे गालफटकि धन आन्यो । निशिदिन विषय स्वाद रस लंपट तजि पांचनि को कान्यो । स्वपनेहू हरि किये न अपने हेत हरिवंश बखान्यो । सुने न वचन साधुके मुखके चरण पखारि न अचया पान्यो । सारासार विवेक न जान्यो मनसंदेह न मान्यो । दया दीनता दासभाव बिन व्यास नहीं पहिंचान्यो ॥ १ ॥ न्याये ॥ यस्यनास्तिस्वयंप्रज्ञाशास्त्रंतस्यकरोतिकिम् । नयनाभ्यांविहीनस्य दर्पणंकिंकरिष्यति ॥ २ ॥ नामकेप्रताप ॥ पद ॥ अद्भुतरामनामद्वैअंक । धर्मांकुर के पावन द्वै दल मुक्ति वधूताटंक । मुनिमन बरके पंख उभय वर जपउड़ि ऊरधजात । जनम मरण काटिनको कांतीक्षण में बितवतपात । अंधकार अज्ञान हरण को रबि शशि युगल प्रभात । भक्तिज्ञान बीरजबर बोये प्रेम निरंतर भात ॥ ३ ॥

आयेनिशिचोरचोरीकरनहरनधन देखेश्यामघनहाथचापशर लियेहैं । जबजबआवैबाणसाधडरपावैयैतोअतिमड़रावैंएपैबलीदूरि कियेहैं । भोरआयपूछेअजूसांवरोकिशोरकौनसुनिकरिमौनरहेआंस डारिदिये हैं। दईसबलुटाइजानीचौकीरामराइदई लईउन्होंदिक्षा शिक्षाशुद्धभयेहियेहैं ॥ ५०५ ॥ कियोतनुविप्रत्यागिलागचलीसंग तियादूरिहीतेदेखिकियाचरणप्रणामहै । बोलेथोंसुहागवतीमरचोप तिहोहुसतीअबतोनिकसिगईजाहुसेवोरामहै । बोलिकैकुटुंबकहीजो पैभक्तिकरोसही गहीतबबातजीवदियोअभिरामहै । भयेसबसाधु व्याधिमेटीलैविमुखताकीजाकीबासरहैतौनसूझेश्यामधामहै५०६॥

डरपावै मारे क्यों नहीं सद्गति करचो चाहै ॥ श्लोक ॥ येयेहता-

श्चक्रधरेणराजंस्त्रैलोक्यनाथेनजनार्दनेन । ततेगताविष्णुपुरीं नरेंद्राःक्रोधोपिदेवस्यवरेणतुल्यः ॥ १ ॥ गतिहोइजैसेचनाचाबि कै पेटभरै एक मोहन भोग खाइकै सो तुलसीदास को उपदेश मोहन भोग भगवान्‌के बाण अमोघ झूठो क्यों परचो समुद्रहू पै बाण झूठो न परचो मारवाड़ में डारचो फेरि कैसो इहां चोरन की अविद्या को मारचो ॥ २ ॥ लुटाइये कुंडलिया ॥ सुखसोवै नींद कुम्हारिया चोरन मटियालेहि । चोरन मटियालेहि भजन सब हाथहोय मन । लगेनअहड़ोतहां रहै सुसदीसंततजन । इंद्रीआराम न होइ सकल मिथ्या करि जानै । हरि लीला रसपान मत्त निर्भय गुण गानै । अगर बसत जो राम पद जमहि चुनौती देहि । सुख सोवै नींद कुम्हारिया चोर न मटिया लेहि ॥ ३ ॥

दिल्लीपतिबादशाहअहिदीपठायेलेनताकोसोसुनायोसूबैविप्रज्यायोजानियै । देखिबेकोचाहैंनीकेसुखसोंनिबाहेआइकहीबहुबिनयगहीचलेमनआनियै । पहुँचेनृपतिपासआदरप्रकाशकियो दियोउच्च आसनलैबोल्योमृदुबानियै । दीजेकरामातिजगख्यातसबमातकियेकहीझूंठीबातएकरामपहिंचानियै ॥ ५०७ ॥ देखोंरामकैसोकहिकैदकियेकियेहियेहूजियेकृपालहनुमानजूदयालहौ । ताहीसमयफैलिगयेकोटिकोटि कपिनयेलौचैंतनखैंचेंचीरभयोयोंबिहालहौ । फोरैकोटमारेचोटकियेडारैलोटपोटलीजेकौनओटजाइमानोप्रलयकालहौ । भईतबआंखेंदुखसागरकोचाखेंअबवेईहमेंराखेंभाखेंवारों धनमालहौ ॥ ५०८ ॥ आइपाइलियेतुमदियेहमप्राणपावेंआपसमझावेंकरामातिनेकलीजियै । लाजदबिगयोनृपतबराखिलियोकह्योभयोवररामजूकोवेगिछोंड़िदीजियै । सुनितजिदियोऔरकरयोलैकैकोटिनयोअबहूंनरहैकोऊवामेंतनछीजियै । काशीजाइवृन्दावनआइमिलेनाभाजूसोंसुन्योहोकवित्तनिजरीझमतिभीजियै ॥ ५०९ ॥

दियोउच्चआसन ॥ दोहा ॥ व्यासबड़ाई जगतकी, कूकरकी पहिचा

नि । प्यारकिये मुखचाटई, बैरकिये तनुहानि ॥ १ ॥ हूजिये ॥ पद ॥ ऐसीतुम्हैं न चाहिये हनुमान हठीले । साहब सीतारामसे तुमसे जुवसीले । तेरेदेखत सिंहके शिशु मेडकलोले । जानतहूं कलि तेरेहू मनोगुण गणकीले। हांक सुनत दशकंधके बंधनभये ढीले । सोवलगयो किधौंभयो गहरगहीले । सेवकको परदाफटै तुम समरथ शीले । अधिक आपते आपनो सुनमानस-हीले । यह गति तुलसीदासकी देखिसुयश तुहीले । तिहूंकाल तिनको भला जोरामरँगीले ॥ २ ॥

मदनगोपालजूकोदरशनकरिकही सहीरामइष्टमेरेहगभावपागी है । वैसोईस्वरूपकियोदियोलै दिखाइरूपमनअनुरूपछबिदेखिनी कीलागीहै । काहूकह्योकृष्णअवतारीजूप्रसंशमहारामअंश सुनिबो लेमतिअनुरागीहै । दशरथसुतजानोसुंदरअनूपमानो ईशतावताई रतिकोटिगुणीजागीहै ॥ ५१० ॥

रामइष्ट ॥ दोहा ॥ कहाकहौंछबिआजकी, भलेबिराजे नाथ । तुलसी-मस्तक जबनवै, धनुषबाणलेउहाथ ॥ १ ॥ वैसोई ॥ किरीट मुकुट माथे धरयो, धनुषबाण लियोहाथ । तुलसी जनके कारणे, नाथ भये रघुनाथ ॥ २ ॥

मूल ॥ गोप्यकेलिरघुनाथकी श्रीमानदासपरगटकरी । करुणा वीरशृंगारआदिउज्ज्वलरसगायो । परउपकारकधीरकवितकविजन मनभायो । कोशलेशपदकमलअनन्यदासनव्रतलीनो । जानकी जीवनसुयशरहतनिशिदिनरँगभीनो । रामायणनाटककीरहिसि उक्तिभाषाधरी । गोप्यकेलिरघुनाथकीश्रीमानदासपरगटकरी ॥ ॥ २३० ॥ श्रीवल्लभजूकेवंशमें सुरतरुगिरिधरभ्राजमान । अर्थध र्मकाममोक्षभक्तअनपायनीदाता । हस्तामलश्रुतिजानसबहीशास्त्र केज्ञाता । परिचर्य्याब्रजराजकुंवरकेमनकोकर्षै । दरशनपरमपु नीतसभातनअमृतबर्षै । विठ्ठलेशनंदनसुभावजगकोऊनहिंतासमा न । श्रीवल्लभजूकेवंशमेंसुरतरुगिरिधरभ्राजमान ॥ २३१ ॥ श्री वल्लभजूकेबंशमेंगुणनिधिगोकुलनाथअति । उदधिसदाअक्षोभसह

जसुंदरमितभाखी । गुरुवत्तनगिरिराज भलपनसबजगसाखी । विट्ठलेशकीभक्तिभयोवेलाहढ़ताके । भगवततेजप्रतापनमितनरवर पदजाके । निर्व्यलीकआसैउदारभजनपुंजागीरिधरनरति । श्रीवल्लभ जूकेवंशमें गुणनिधिगोकुलनाथअति ॥ २३२ ॥

जानकीजीवन ॥ कवित्त ॥ सखाढुरावैचौंर उरवशी उडावैंमोर सावित्री चरण सेवैं महसी महेशकी । वरुणधनेशराज उडुरविराजगंधर्वीकन्या शुकवारी नागशेषकी । द्वारेपैआइसब ठाढी हैं सखी तिनमे दामिनिसी दमकि रही अबलानरेशकी । सूरति किशोर रतिपतिके समूहराज आस पास तिन वीच वेटी मिथिलेशकी ॥ ३ ॥ सवैया ॥ दूलहश्रीरघुनाथ बन्यो दुलही सियसुन्दरि मंदिरमाहीं । गावतगीत सबैमिलिसुन्दरि वेदजुवाजुरि विप्रपढाहीं । रामकोरूप निहारति जानकि कंकणके नगकी परिछाहीं । औरसबैसुधि भूलिगई करटेकिरहो पलटारतिनाहीं ॥ ३ ॥ उक्तभाषा हनुमान्नाटके ॥ आकृष्टेयुधिकार्मुकेरघुपतौवामोब्रवीद्दक्षिणं पुण्ये कर्मणिभोजनेचभवतः प्रागल्भ्यमस्मिन्नकिम् । वामान्यःपुनरब्रवीन्ममनभोः पृष्टंनिजंस्वामिनं छिंद्यांरावणवक्त्रपंक्तिमथवाप्येकैकमादिश्यताम् ॥ १ ॥

टीका गोकुलनाथजूकी ॥ आयोकोऊशिष्यहोनलायोभेंटलाख नकीभाषनकीचातुरीपैमेरीमतिरीझिये । कहूँहैसनेहतेरोजाकोमिले विनादेहव्याकुलताहोइजोपैतोपैदीक्षादीजिये। बोल्योआजुमेरोकाहू वस्तुसोंनहेतुनेकुनोतिनोतिकहीहमगुरुढूंढ़िलीजिये । प्रेमहीकीवात इहांकरहीपलटिजातगयोदुखगातकहौकैसेरंगभीजिये ॥ ५११ ॥ कान्हहोहलालखोरिघोरदियोमनलैकेश्यामरससागरमें नागररसाल है । निशिकोस्वपनमांझ निपुणश्रीनाथजीनेआज्ञादईभीतिनइभई ओटसालहै । गोकुलकेनाथजूसोंवेगिदैजताइदीजेकीजै याहीदूरिछ विप्रूरिदेखोरुयालहै । भोरजोविचारैनहींधीरजकोधारैवहांजाऊंकोऊ मारैंपैड़ेपर्योयहुलालहै ॥ ५१२ ॥ ऐसोदिनतीनआज्ञादेतवैप्रवीन नाथहाथकहामेरोविनागयेनहींसरैगो । गयेद्वारद्वारपालबोलेजूविचा

रिएक दीजैसुधिकानसुनखीजैबातकरैगो। काहूनेसुनाइदईलीजिये बुलाइअहोकहो औरदूरिकरोकरैंदुरिढरैगो। जाइवहीकहीलहीआप नीपिछानमिले सुनोमेरोनामश्यामकहोनहींटरैगो॥ ५१३॥

कहूँहै सनेहतेरो॥ दोहा॥ इहांकियानहिं, इश्कका इस्तामाल सँभार॥ सोसाहबसों इश्कवहकरक्यासकैगँवार ॥ २॥ रससागर॥ माझ॥ लोनासाँवरनागरसागरबरमुरलीधुनिगरजै। वल्लभ रसिकतानलहरै आवत-गावत मुरपरजै। मोरपक्षकरडलैडुलै कलगीत पुतरीलौंबरजै। रूपकहरद रियाव आवाजिन नावधर्मकी लरजै। प्रेमहीकी बातसो प्रेममोपै न बनै कलिपलटिदै जैसे जलको बरहा प्रेमहारि हूपै न बन्यो लहटू चकई डो-रिलूटी छाछके स्वभावखट्टे मीठेकोस्वाद सब बनायें जो सनेह कृष्णसों है तैसो पुत्रनसों कियो सुतहित कियो सो बलदेव जाने॥ २॥ ओट साल है नाथजीको भीतिकी ओटको बड़ो दुःख भयो अरुलरिका कान्हा देखे विना हलाल ओरसों भली प्रीति करी ॥ ३॥ ख्यालहै तापैफकीरको अरु लरकाकी गुड़ीको दृष्टांत ॥

मूल॥ रसिकरँगीलेभजनपुंजशुठबनवारीश्यामको। बातक-वित्तबड़चतुरचोखचौकसअतिजानै। सारासारविवेकपरमहंसनिपर वानै। सदाचारसंतोषभूतसबकोहितकारी। आरजगुनतनअमित भक्तिदशधाव्रतधारी। दरशनपुनीतआशयउदारआलापरुचिरसु-खधामको। रसिकरँगीलेभजनपुंजशुठबनवारीश्यामको॥ २३३॥

बात॥ कवित्त॥ कीरतिको मूल एक रैनि दिन दानदेबो धर्मको मूल एक साधु पहिचानिबो। बढ़िबेको मूल एकऊंचो मन राखिबोई जानिबे को मूलएक भली बात जानिबो। व्याधि मूल भोजन उपाधि मूल हास्य जामो दारिदको मूल एक आरस बखानिबो।हारिबेको मूल एक आतुरी है रणमांझ चातुरी को मूल एक बात कहि जानिबो॥ १॥ दोहा॥ बात न हाथी पाइये, बातनि हाथी पाइ॥ बातनि सों विष ऊतरै, बातनि विष ह्वैजाइ ॥ २॥ तापै केशवदास को अरु बीरबलको दृष्टांत ॥

कवित्त ॥ आयो एक पंडित अखंडित विचारवान वेद औ पुराण मंत्र यंत्रनि को गातुरी। ताने नुनिकही सही हाड़हू को सिंहाकरौं लावो लाइ दियो लियो अति हुलसातुरी। आप द्रुम चढ़्यो तिन पानी लैकै पढ़्यो पुनि छिरकेते जियो अति कियो जाको घातुरी। कीजिये विवेक एक चातुरीसों बच्यो याते एक ओर चारिवेद एक ओर चातुरी ॥ ३ ॥ दोहा ॥ बात विडारै भूत को, बात बचावै प्रान। बात अधिक भगवान ते, कही हंस अख्यान ॥ ४ ॥ हरि आवै वै बात न आवै जैसे ब्रह्माको सनकादिक पूछी चित्त विषयमें जाइ विषय चित्तमें जाइ न्यारो कैसे होय तब उत्तर न आयो तब हंस रूप धरिकै श्रीभगवानने जवाब दियो ॥ ५ ॥ दोहा ॥ कागा काको धनहरै, कोयल काको देइ ॥ मीठी वाणी बोलिकै, जग अपनो करि लेइ ॥ ६ ॥ प्रस्तावे ॥ हेजिह्वेरससारज्ञे मधुरं किंन भाषसे। मधुरं वद कल्याणि सर्वदा मधुरप्रिये ॥ ७ ॥ चतुराई बात कहा एक पंडित वीरवल पै आयो बात वासों पूछी कछू पढ़ोहौ पढ़ेहैं वेद शास्त्र पुराण कवित्त बात ॥ ८ ॥ कवित्त बड़े चतुर ॥ कवित्त ॥ मेह वरसाने तेरे नेह वरसाने देख एह वरसाने वर मुरली बजावेंगे। सांजि लाल सारी लाल करै लाल सारी देखिवेकी लाल सारी लाल देखे सुख पावेंगे। तुही उरवशी उरवशी नाहिं आन तिय कोटि उरवशी तजि तोसों चित लावेंगे। सेज बनवारी बनवारी तनु अशुभूषण गोरे तनवारी वनवारी आज आवेंगे ॥ ९ ॥

भागवतभलीविधिकथनकोधनजननीएकैजन्यो । नामनरायन मिश्रवंशनवलाजुउजागर । भक्तनकीअतिभीरभक्तिदशधाकोआगर । आगमनिगमपुराणसारशास्त्रनसबदेखे । सुरगुरुशुकसनका दिव्यासनारदजुविशेखे । सुधाबोधमुखसुरधुनीजसवितानजगमेंतन्यो । भागवतभलीविधिकथनकोधनजननीएकैजन्यो ॥ २३४ ॥

भागवत ॥ छप्पय ॥ निगम कल्पतरु उदै सोई भागवत प्रमाना।

द्वादश मोटी डार सोई स्कंध बखाना । त्रिशत पुनि पैंतीसऽध्यायसो छोटी शाखा । सूक्षम कली श्लोक सहस्र अष्टादश भाखा । यत्र अक्षर पुनि पंच लख सहस्र छिहत्तर और गनि । तत्त्ववेत्ता तिहुँ लोक में ब्रह्मबीज भागवत पुनि ॥२॥ भली विधि ॥ कवित्त ॥ भागवत कथन समुद्र को मथन हरि गुण नाम रूप जैसे अमृत उधारयो है । मृत्युप्राय जीर जग भक्ति दान दैकै दुस्तर भवसागर को पारलै उतारयो है । प्रेमरंग राते कहे नेह भरी बातें सब जगतके नाते करि हांते उबारयो है । करुणा निधान गुण रतननि की खानि मानो ते ज्ञान विज्ञान युक्ति जीव विस्तार्‍यो है ॥ ३ ॥ धन जननी जैसे माता एक पुत्र जनै तेसे एक इनहीं को श्री शुकदेव जीने भागवत दई है औरन पै कैसे आइसो पको फल सुवा डारै एकतौ कैसेहै मुखते गिरतेही ऊपरही लैलेहिं । एक जमीन में ते लेहिं तिन को सवाद नहीं ऐसे सुवादनहीं ऐसे सुवा रूपी शुक तिनके मुखते लई ॥ ॥ ४ ॥ नाम ॥ दोहा ॥ नाम नरायण मिश्रसी, नवला वंश सुहात । कोटि जनमके तम हरै, आतपलों विख्यात । भक्तनकी ॥ दोहा ॥ साधुतहांहीं संचरै, जहां धर्मकी सीर । सरवर सूखे परशुराम, हंसन बैठेतीर ॥ २ ॥ कवित्त ॥ राजा तहँ भक्तराज मानस समाज प्रेम रस नीर भीर गंभीर सुख छायोहे । हरिगुण रूप जालि मानिक रसाल मानों छायासों बिशाल जस समूया सरसायो है । श्रेनी कलहंस मानो झूमि रहे परमहंस अतिही प्रशंस रंग रूप बिरमायो है । अलबेली अली आश बिश्वास है रसिकन की प्रेमही की राशि सो उच्छिष्ट शेष पायो है ॥ ३॥ सारशास्त्रभागवते ॥ मन्येऽसुरान्भागवतानधीशे संरंभमार्गाभिनिविष्टचित्तान् । येसंयुगे चाक्षतताक्ष्र्यपुत्रमंशेसुनाभायुधमापतंतम् ॥ ४ ॥ सुधाबोध ॥ सवैया ॥ भक्तिसुधारसज्ञान वचन मुख सहजहि बोलैं । परम प्रबीन विचित्र नवीन ग्रंथकी गूढग्रंथको खोलैं । नारायण जग तारण कारण भूमण्डल सुरसरि सँग डोलैं । जाकी जस शीतल छांह तरंग विन अलबेली अलि हंस कलोलैं ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ मिश्र श्रीनारायण

जू मधुपुरी बास कियो पुनि हरद्वार में नृसिंहारन सों मिले । तिनोंकी सुआज्ञा पाइ बद्रिका श्रमहिं जाइ मिलि शुकदेव जू सस महासुखमेंझिले । आयेफिरि काशी सुखराशीवे संन्यासी पाये तिनसों जनमानि सुखमन में मिले । पंडित प्रवीण जिते तिनकी कथासों तिते चितेमोचिते रहे मानो महा अहिकिले ॥ ६ ॥

कलिकालकठिनजगजीतियोराघवकीपूरीपरी । कामक्रोधमदमोहलोभकीलहरनलागी । सूरजज्योंजलग्रहेबहुरितहीज्योंत्यागी । सुंदरशीलस्वभावसदासंतनसेवाव्रत । गुरुधर्मनिषकनिर्वह्योविश्वमें विदितबड़ोभृत । अल्हुरामरावकृपाआदिअंतधुकतीधरी । कलिकालकठिनजगजीतियोराघवकीपूरीकरी ॥२३५॥ हरिदासभलप्पनभजनबलबावनज्योंबढ्योबावनो । अच्युतकुलसोंदोषस्वपनहूउरनहिंआन्यो । तिलकदामअनुरागसबनगुरुजनकरिमान्यो । सदनमाहिंवैराग्यविदेहनिकीसीभांती । रामचरणमकरंदरहतिमनसामदमाती । योगानंदउजागरबंशकरिनिशिदिनहरिगुणगावनो ॥ हरिदासभलप्पनभजनबलबावनज्योंबढ्योबावनो ॥ २३६ ॥

अच्युत ॥ दोहा ॥ कामी साधुहि कृष्णकहि, लोभी बामन जानि । क्रोधीको नरसिंह कहि, नहीं भक्तकी हानि ॥ १ ॥ रामचरण ॥ जिहिघट नौबतनामकी सोघटछीनीनाहिं । प्रकटे देखिकबीरज्यों, दीपकभी डलमाहिं ॥ २ ॥ जंगली कह्यो नाम न लियो सोनाभाजी एकुवांके मनखंडेपे बेठे हैं तहां माथे तिलकधारे मालामारवाड़ी आइगये जबह्वां छप्पेमनाईजंगली देशके कहे तिनको आचार्यजी पूछेको दृष्टांत ॥ ३ ॥

जंगलीदेशकेलोगसबश्रीपरशुरामकियेपारपद । ज्योंचंदनकोपवननींबपुनिचंदनकरई । बहुतकालतमानिबिड़उदयदीपकज्योंहरई । श्रीभटपुनिहरिव्याससंतमारगअनुसरई । कथाकीरतननेमरसनिहरिगुणउच्चरई । गोविंदभक्तिगदरोगगतितिलकदामसदवैदहद । जंगलीदेशकेलोगसबश्रीपरशुरामकियेपारपद ॥ २३७ ॥ श्रीपरशु

रामजीकीटीका ॥ राजसीमहंतदेखिगयोकोऊअंतलेनबोल्योजूअनं तहरिसगेमायाटारिये । चलेउठिसंगवाकेपहरिकोपीनअंगवैठिगिरि कंदरामेंलागीठौरप्यारिये । तहांबनजारोआइसंपतिचढ़ाइदई औरसं गपालकीहूमहिमानिहारिये । जाइलपटाइयोंपाइभावमेंनजान्योकछु आन्योउरमांझआवैप्राणवारिडारिये ॥ ५१४ ॥

गदरोगगतिसुजान सुंदर वैद्यलगैतौ भली रोगजाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ तिलक दाम औषधि दई तिलक दोम इनकी सद औषधिहै ॥ १ ॥ श्लोक ॥ तुलसीकाष्ठमालांतुप्रेतराष्ट्रस्यदूतकाः दृष्ट्वानश्यंतिदूरेणवातोद्धूतंयथादलम्॥ ॥ २ ॥ किरातहूणांध्रि ॥ छप्पय ॥ संततिलक करता तिलक शंकर शिरसोहै । ब्रह्माकेशिर तिलक तिलक बिन जग में कोहै । तिलक विना शिर अशुभ तिलक राजा पदपावे । तिलक संत सनमान तिलकसों महंत कहावै । जियेयुगतिमूये मुकति सुरगण मुनि जन शिर धरैं । तुलसी तिलक सतगुरु कमल बसै भवसागर तरैं ॥ २ ॥ बैठि गुरूके पास तिलकालिह्वार हि कीजे । बिना तिलक जो अफल तिलक करि दिक्षादीजे । दान पुण्य तप धर्म तिलक बिन निष्फल जावे । तिलकधार कछु करौ अनत फल वेद बतावे।तिलक देखि यमहूं डरै तिलक विना कहि दीनजन ।तत्ववेत्ता तिहुँ लोक में भोड़ो मुहड़ो तिलक बिन ॥ ३ ॥ तिलक है सत अस्नान तिलक ब्राह्मण शिर सोहै । तिलक बिना कछुकरौ सबै फल निष्फलजोहै। तिलकतिया शृंगार तिलक नृप शीश लगावे । तिलक वेद परमाण तिलक त्रलोक चढ़ावै । तिलक तत्त्व युग युग सदा तिलक मिलैं सिद्धि पाइये । परशुराम ब्रह्मांड में सुयश तिलक को गाइये ॥ १ ॥ दोहा ॥ बानों बड़ो दयाल को, तिलक छाप अरु माल । यम डरपै कालूकहै, भय माने भू-पाल ॥ २ ॥ माया टारिये ॥ मायासगी न तनसगो, सगो न यह सं-सार ॥ परशुराम या जीव को, सगो सुसिरजनहार ॥ ३ ॥ कहते हैं करते नहीं, मुंहके बड़े लवार ॥ कारो मुहड़ो होइगो, साईंके दरबार । भावमैंन जान्यों आप मैं आपभाव लायो आपु बोलेतुम बड़े उपकारी हौ।

पद ॥ रेमन संत बड़े उपकारी । यद्यपि सकल सिद्धि इनके सँग जीवनसों हितकारी । निर्मलजल बोलै अति निर्मल निर्मल कथा दृढावै । निर्मल में मलदेखै कबहूं तो ततकाल छुडावै । माया मिलै महोक्षो माडै आनँद में दिन काटै । करि हरि भक्ति तरै भवसागर और न तारन माडै । त्यागे लेह देह पुनि त्यागै चित लालच नहिं काई । चतुर दास इन भक्तनि को सँग छांडि अनत नहिं जाई ॥ ५ ॥ आप तौ गुणग्राही हौ तापै ऊंट की नारीको दृष्टांत पै मैं अपराध कियो पै तुमताही न निंदा पहुंचै न अभाव पहुंचै ॥ ६ ॥ **कुण्डलिया** ॥ आकाशै बिचुरीखिवै खरी चलावै लात । खरी चलावै लात विमुखकृत भक्तनि निंदा । उलटि परे तिहि छार छार परसे नहिं चंदा । ज्यों छाया उपहार प्रहारन लागौ तनको । त्यों जगकी उपहास कहा पहुंचै हरिजन को । आगर श्यामके भृत्यसन दुनी देत विसि जात । आकाशै विजुरी खिवै खरी चलावै लात ॥ ७ ॥ सत उपकारी पै शाहूकार को सुई दीनी सो दृष्टांत ॥

मूल ॥ गुणनिकरगदाधरभट्टअतिसबहिनकोलागैसुखद । सज्जनसुहृदसुशीलवचनआरजप्रतिपालै । निरमत्सरनिष्कामकृपाकरुणाकोआलै । अनन्यभजनदृढ़करनधन्योवपुभक्तनकाजै । परमधर्मकोसेतविदितवृन्दावनगाजै । भागवतसुधावरषैवदनकाहूको नाहिंनदुखद । गुणनिकरगदाधरभट्टअतिसबहिनकोलागैसुखद ॥

निर्मत्सर ॥ दोहा ॥ बात कहै निर्लोभकी, भऱ्यो हिये अति लोभ । युगल प्रेम रस रूपकी, कैसे उपजै गोभ ॥ १ ॥ सो ऐसो वक्ता न होइ । श्रोता ऐसो चाहिये, जाके तन मन श्याम । वक्ताहू हरिको भगत, जाके लोभ न काम ॥ २ ॥ श्रोताऐसो न होइ ॥ कथा सुनै नहिं कीर्तन वैके आ[illegible]बाइ। पापी मानुष परशुराम कै औंघे उठिजाइ ॥ ३ ॥ श्याम ॥ पद ॥ सखीहौं श्याम रंगरँगी । देखि बिकाइ गई वह मूरति सूरति माहिं पगी । संगहुतो अपनो सपनो सो सोइरही रसखोई । जागे हू आगे दृष्टि परे सखिनिकु न न्यारो होई। एक जुमेरा अंखियनि में निशि द्योस रह्यो करिजो

न। गाइचरावनजात सुनौसखी सोधौं कन्हैयावोन। कासों कहों को पति पाइरी कौन करै वकवाद। कैसेकै कह्योजात गदाधर गूंगकोगुरुस्वाद ॥ कवित्त ॥ मोरपक्ष धरे पटपीत बन मालगरे सांवरी सी मूरति प्रवीन मोसोंपगी है। टरत न टारी पल क्षणहूंन होतिन्यारी जेतिक बिसारी बिसरति नाहिं खगी है। चलतिहौं तौ चलति है बैठीहौं तौ बैठीहै सोई हौं तौ सोई हैरी जागी हौं तौ जगी है। तुम सब मिलि मेरी आंखिनि को दोषदेत येऊतौ मैं मूंदिराखी तऊ तहां लगी है ५ कानन करति सीख कानन फिरति सुनि अतिही हठीली फिरि पाछे पछिताई है। धामभूलि जैहै काम अंगनि में ऐहै काम नैनशर लागै घूमि घूमि गिरिजाई है। अबलौं न मानती ही मेरीकही बात सुनि पाछे जलजातनि के पातनि बिछाई है। दीठिकहूं ऐहै मनमोहन मनोज छवि दौरि दौरि अटनिचढेको फलपाई है ॥ १ ॥

टीकागदाधरभट्टजूकी ॥ श्यामरंगरंगीपदसुनिकैगुसाईजीवपत्रदै पठायोउभयसाधुवेगिधायेहैं। रैनीविनरंगकैसेचढ्योअतिशोचवढ्यो कागदमेंप्रेममढ़ेउतहांलैकेआयेहैं। पुरढिगकूपतहांवैठेरसरूप लगेपूंछिवेकोतिनहींसोंनामलैबतायेहैं। रहौकौनठौरशिरमौरवृन्दा वनधामनामसुनिमूर्छाह्वैकेगिरेप्राणपायेहैं ॥ ५१५ ॥ कान्हकहीभट्टश्रीगदाधरजीयेईजानोमानोउहिपातीचाहफेरिकैजिवायेहैं। दियो पत्रहाथलियोशीशसोंलगाइचाइबांचतहीचले वेगिवृंदावनआयेहैं। मिलीश्रीगुसाईजीसोंआंखभरिआईनीरसुधनशरीरधीरेधीरवहीगाये हैं। पढ़ेसवग्रंथसंगनानाकृष्णकथारंगरसकीउमंगअंगअंगभावछाये हैं ॥ ५१६ ॥ नामहोकल्यानसिंहजातिरजपूतपूतवैठो आइकथा सोअभूतरंगलाग्योहै। निपटनिकटवासधौरहराप्रकाशगांवहासपर हासतज्योतियादुखपाग्योहै। जानीभटसंगसोंअनंगवासदूरिभईक रौलैकैनईआनिहियेकामजाग्योहै। मांगतफिरतहुतीयुवतीऔ गर्ववती कहीलैरुपैया बीसनेकुकहो राग्योहै ॥ ५१७ ॥

विषय महा दुरतही है ब्रह्मापुत्री के पाछे परचो चंद्रमा गुरुपत्नी के महादेवजू श्रीमोहनी के ब्रह्माके रोगटाके फौंगटाकी मसीकी तुसी पै अध्याससों काढिये ॥ २ ॥ कवित्त ॥ सूधेकहे तू अबै नहिं मानत तू इत फेरि न नेकु चितैहै। भूमि में आंक बनावत मेटत पोथियै कांखलिये दिनजैहै। सांचीहौं भाषति मोहिं ददा कीसौं प्रीतमकी गतितेरिपै ह्वैहै। मोसों कहा अठिलात अजा सुत कैहौं ककाजूसों तोहू पढैहै ॥ ३ ॥

गदाधरभट्टजीकीकथामेंप्रकाशकहौअहोकृपाकरोअबमेरीसुधि लीजिये । दईलौंड़ीसंगलोभगंगचितभंगकियेदियेलैबताइअबमेरो कामकीजिये । बोलेआपबैठियेजूजापनितकरोहियेपापनहींमिरोग ईदरशनदीजिये। श्रोतादुखपाइभाखैझूंठीयहिमारिनाखै सांचीकही राखैसुनितनमनछीजिये ॥ ५१८ ॥ फाटिजाइभूमितौसमाइजाइ श्रोताकहैंवहैदृगनीरह्वैअधीरसुधिआईहै । राधिकाबल्लभदासप्रक टप्रकाशभासभयोदुखराशितबसुनिसोबलाई है । सांचीकहिदीजैना हीं अभीजीवलीजैडरसबैकहिदईसुखलियोसंज्ञाभाईहै । काढ़ितरवा रितियामारिवेकल्यानगयोदयोसोप्रबोधहै मैंकरीदयानाईहै॥५१९॥

मेरो काम कीजिये ॥ पद ॥ साधो जगमें कामिनि ऐसीरे । राजा रंक सबनिके घरमें बाघिनि ह्वैकै वैसीरे । बसती छोड़िरहै बन बासा चाबति सूखे पातारे। दांवपरै तिनहूंको मारै दैछाती पर लातारे । ज्ञानी गुनी शूर वे पंडित येतो सबै सयानेरे। सूधे होइ परै फांसीमें युवती हाथ बिकानेरे। तीनिलोकमें कोउ न छांड़्यो दियेदाढ़ तरसारे रे । हरीदास हरिसुमिरण लागे तब भगवंत उबारेरे ॥ १ ॥ दियेपर बोधन्याय । कामांधा ये न पश्यंति जन्मांधश्च न पश्यति ॥ न पश्यंति मदोन्मत्ता अर्थी दोषं न पश्यति ॥ २ ॥ दोहा ॥ विषयचुगो जिनि चुगैमन, चुगतकछू सुखहोइ ॥ फिरिफांसी ऐसी परै, तिहि सम दुःख न कोइ ॥ ३ ॥ रेमन कबहूं जाइ जिनि, भूलि विषै बनरंग। मनमथ ठगमारत तहां, लिये

बहुत ठगसंग ॥ ४ ॥ राधावल्लभ लालविन, व्यास न पायो सुःख ॥ डार डार मैंहूं फिरयों, पात पातमें दुःख ॥ ५ ॥

रहैकाहूदेशमेंमहंतआयोकथामाहिंआगेलैवैठायेदेखिसवैसाधुभीजेहैं । मेरेअश्रुपातक्योंनहोतशोचसोतपरेकरेलैउपाइदैलगाइमिर्चखीजेहैं। संतएकजानिकैजताइदईभट्टजूकोगयेउपसवैजवामिलिअतिरीझेहैं। ऐसीचाहहोइमेरेरोइकैपुकारकरी चलीजलधारनयन प्रेमआइधीजेहैं ॥ ५२० ॥ आयोएकचोरवरसंपातिवटोरिगांठिवांधीलैमरोरिक्योंहूं उठैनाहिंभारीहै । आइकैउठाइदईदेखीइनरीतिनई पूछौनामप्रीतिभई भूलो मैंविचारी है । बोलेआपलैपधारोहोतहीसवारीआवैऔरदशगुणीमेरेतेरेयहीज्यारीहै । प्राणनकोआगेधरोआनिकैउपाइकरोरहेसमुझाइभयोशिष्यचोरीढारीहै ॥ ५२१ ॥

जलधारि ॥ दोहा ॥ परसा हरियशसुनतहीं, श्रवे न जलभरि आंखि ॥ भरि भरि मूठी धूरिकी, तिन आंखिनमें नाखि ॥ १ ॥ हरियश सुनिकै नैनजो, श्रवे न भरे भरिवारि ॥ परसा मूठी धूरिकी, तिन आंखिन में डारि ॥ ॥ २ ॥ फुटोनयन फाटोहियो, जुरौ सुनत किहिकान ॥ श्रवैद्रवै पुलकै नहीं, तुलसी सुमिरत राम ॥ ३ ॥ सोरठा ॥ हरियश जीवनमूरि, तुलसी सुमिरतदृगश्रवैं ॥ तिन नैननिमें धूरि, भरिभरि मूठीमेलिये ॥ ४ ॥

प्रभुकीटहलनिजकरनकरतआपभक्तिकोप्रतापजानेभागवतगाई है। देतहुतेचौकाकोऊशिष्यवहुभेटलायोदूरिहीतेदासदेखिआयोयोंजनाई है। धोवोहाथवैठोआइसुनिकैरिसाइउठेसेवाहीमेंचाइयाकोखीजिसमुझाई है। हियेहितरासजगआशको विनाशकियोपियोप्रेमरसताकीआशलैदिखाई है ॥ ५२२ ॥ मूल ॥ चरणशरणचारनभगतहरिगाइकयेताहुवा । चौमुखचौराचंडजगतईश्वरगुणजानैं। करमानंदअरुकोल्हअल्हूअक्षरपरवानैं । माधवमथुरामध्यसाधुजीवानँदसीवांदूदानरायगदासनामभ्रमखंडननतग्रीवां॥चौरासीरूपकचतुवाणीवरनतजूजुवा। चरणशरणचारणभगतहरिगायकयेताहुवा ॥ १३९ ॥

टीकाकरमानंदचारनकी ॥ करमानंदचारनकी वाणीकोउचारनमें दारुणजोहियोहोइसोऊपिघिलाइये । दियोगृहत्यागिहरिसेवाअनुरागभरेवटुवासुग्रीवहाथछरीपधराइये । काहूठौरजाइगाडवेहीपधराये वापैलायेउरप्रभु भूलिआयेकहांपाइये । फेरिचाहभईवई श्यामकोजताइ बातलईमँगवाइ देखिमतिलैभिजाइये ॥ ५२३ ॥

निजकर ॥ हृषीकेन हृषीकेशं सेवनंभक्तिरुच्यते ॥ ५ ॥ रामभक्तिशयमें नहिंदेखी ॥ लोचनमोरपक्षकरलेखी ॥ सोसमकुलिश कठोर सुछाती ॥ रघुपतिचरित न सुनि हरषाती ॥६॥ जगआश को विनाश कियो॥ ॥ सवैया ॥ आशको दासरहे जबलौं तबलौं जगको नरदासकहावे॥त्यागी गुनी कविपंडित कोऊहो आशालिये सब को भरमावे॥स्वर्ग महीतल वासकहूं करो आश जहांलगि नाच नचावे। तातेमहा सुखपाइ निराशमें आशतजे भगवान को पावे ॥ दिखाई है ॥ कुंडलिया॥ आपु न जाई सासुरे, औरनको सिखदेइ। औरनको सिखदेइ हिया अपनो नहिं शोधे। नखशिख जटित अज्ञान मूढ जगको परमोधे। निजआंखिनके अंध गैल औरनि उपदेशै। भवजल भरचो अपार ताहि तरि सकै न शेशै । अग्रकहै अपस्वारथी परमारथ पूजा लेइ । आपु न जाई सासुरे औरन को सिख देइ ॥ २ ॥ दोहा ॥ सीताराम सुजानतजि, करे और को जाप । ताके मुखमें दीजिये, नौसादर को वाप ॥ ३ ॥ फेरि चाह भई ॥ हरि सेवा राखिलई गुरुको त्यागि दियो माता पिता पुत्र स्त्री आदिक क्योंकि सबको त्यागि हरिकी सेवा करनी नहीं तौ धूरि लगाइकै धूरिही फांकनी हरि सेवा घरहीमें क्यों न करी एकांत विना न होइ गृहमें दुख आइ लगे ॥ १ ॥ वनमें काहेको दुःख होइ लेना एक न देना दोइ ॥२॥ तापै दृष्टांत इकरिया कीहँसुलीको ॥ श्लोक ॥ गृहं भक्तपराधीनः ॥

कोल्हअल्हूभाईदोऊकथासुखदाईसुनोंपाहिलोविरक्तमदमांसन हिंसातहै । हरिहीकेरूपगुणवाणीमेंउचारकरै धरैभक्तिभावहियेताकीयहबातहै । दूसरोअनुजजानौखाइसवअनुमानोंनृपहीकोगावैंप्रभु

कभूगाइजातहै। बड़ेकेअधीनरहैजोईकहैसोईकरै ईशकरिचाहैआप-
दीनतामेंमातहै॥५२४॥ बड़ेआयकहीचलौद्वारकानिहारिसही मि
थ्याजगभोगयामेंआपुहीविहातहै । आज्ञाकेअधीनचल्योआयेपुर
लीनभयेनयेचोजमंदिरमेंसुनौकानवातहै । कोल्हनेसुनायेसवजेजे
नानाछंदगाये पाछेअल्हदोइचारकहैसकुचातहै। भरचोईहुंकारो
प्रभुकहीमालागेरेडारोलायपहरावोकह्यो मेरोबड़ोभ्रातहै॥५२५॥
दयोपैनयाहिदयोबड़ोअपमानभयोगयोबूड़ोसागरमेंदुखकोनपारहै।
बूड़तहीआमेंभूमिपाइचलोभूमिप्रीति सोंअनीतिभूलैनाहिं मानोंत
रिवारहै । सोईआयेलेनहरिजनमनचैनझिल्योमिल्योकृष्णजा
इपाइपायोअतिसुखसारहै। बैठेजबभोजनकोदईडभयपातरिलै दू
सरीजूकैसीकहीवहीभाईप्यारहै॥५२६॥

आपुही विहात है॥ पद॥ सुपनो सो धन आपनो श्याम॥ आदि
अंत तासों न बिछुरिये परत काल सों काम। तन धन सुत दारा गृह स-
र्वसु जाहि भजे लै नाम। देखि देखि फूल जिनि भूलौ जग नटवाको धाम।
ज्यों बछरा के धोखे गइया चाटति है वह चाम। ऐसे ब्यास आश सब
झूंठी सांचो है हरि नाम॥ ४॥ कुंडलिया॥ गिलति कटोरी वारिको
गिली आपही जाइ। गिली आपही जाइ विषै भोगत अज्ञानी॥ जानी
परै न बात आप कित जात बितानी। पुनि जैसे जललैन थके दूरै जल-
बेली। ऐसेही सब विषै मिटै गुरु चेला चेली। एक छेद की यह दशा
देहहि वने देखाइ। गिलति कटोरी वारिको गिली आपही जाइ। पाछे
अल्‍ह॥ सवैया॥ देश विदेश के देखे नरेशन रीझिकै कोऊ जो बूझ
करैगो। याते तनय तन जात गिरचो गुण सौ गुण अवगुण गांठि परैगो।
बांसुरी वारो बड़ो रिझवार है श्यामजु नेक सोढारढरैगो। लाड़िलो छैल
छबीलो अहीर को पीर हमारे हिये की हरैगो॥ नये नये चोज॥ बि-
रक्त को आदर सत्कार मंदिर में भगवान सदा करै हैं सो न कियो वि-
षयी को कियो यह नये चोज॥

सवैविषभयोदुखगयोसोईहुवोनयोदियोपरमोधवाकीबातसुनिली जिये । तेरोछोटोभाईमेरोभक्तसुखदाईताकी कथालैबलाईजामें आपहीसोंधीजिये । प्रथमजनमांझबड़ोराजपुत्रभयोगयोगृहत्या गिसदामोसोंमतिभीजिये । आयोवनकोऊभूपसंगरागरंगरूपदे खिचाहभईदेहदईभोगकीजिये ॥ ५२७ ॥ तेरेईवियोगअन्नजलस वत्यागिदियोजियोनहींजातवापैवेगिसुधिलीजिये । हाथपैप्रसाददी नोआइघरचीह्निलीनोसुपनोसोगयोबीतिप्रीतिवासों कीजिये। द्वार काकोसंगसुनिआवतहीआगेचल्यो मिल्योभूमिपरिदृगभरिबहेदी जिये। कहीसबबातश्यामधामतज्योताहीक्षण करचोवनवासदोऊ मतिअतिभीजिये ॥ ५२८ ॥ अल्हहीकेवंशमेंप्रशंसयाहिजानि लेहु बड़ोऔरुभाईछोटोनारायणदासहै। दीरघकमाऊलघुउपज्यो उड़ाऊभाभीदियोसीरोभोजनलैभयोदुखरासिहै। देवोमोकोतातोक रिबोलीवहक्रोधभरियहूजाहूकरोभरवावैकियोहासहै। गयोगृहत्यागि हरियागकरचो वैसेहीजुभक्तिवशश्यामकह्यो प्रगटप्रकाशहै॥५२९॥

दियो प्रबोध ॥ कुंडलिया ॥ पर्वतको कह देखिये पाइनतरकी देखि। पाइन तरकी देखि बात जनि कहै पराई। आनि जरौ कोऊ बरौ राखि उर जरतौ भाई। सारो राखत सती सुनो नहिं राखत यारो। अपनो पहरे जागि गांठितो सुतो उबारो। अगर असत आलापतजिहरि गुण हिरदेलेखि। पर्वतको कह देखिये पाइन तरकी देखि ॥ २ ॥ गयो गृह त्यागि॥ कवित्त ॥ दूरिसेमीठी मीठी बातेंसो बनाइ कहै अंतर कपट तासों पलनपतीजिये। वाणी बिनपंडित विवेक बिन भूपति औ ज्ञानहीन गुरु ताकी दीक्षाहू न लीजिये। कहै हरि भक्त राजबिन कैसोरजपूत बिना सनमान ताको दान कहा दीजिये। नदी बिन ग्राम हरिसेवा बिन काम कैसो जामें नहीं प्रीतिसोई मित्र कहा कीजिये ॥ १ ॥ दोहा ॥ या भव पारावारके, उलँघि पारको जाइ । तिय छवि छाया ग्राहिनी, बीचहिं पकरैआइ ॥ २ ॥ रसन शिशन संयम करै, हरि चरणनतरवास ॥ तव

हीं निश्चय जानिये, राम मिलनकी आस ॥ ३ ॥ तज विलास जोंविषयके, जौन प्रेमसोंजाहिं । भानु उदय तमरहै तो, वहै भानहीं नाहिं ॥

मूल ॥ नरदेवउभैभाषानिपुणपृथ्वीराजकविराजहुव । सवैया-गीतश्लोकबेलिदोहागुणनवरस । पिंगलकाव्यप्रमाणविविधविधिगायो हरियश । परिदुखविदुखसलाघ्यबचरनचनाजुविचारै । अर्थविचित्र निमोलसबैसागरउद्धारै ॥ रुक्मिणीलतावर्णनअनूपवागीशवदन कल्याणसुव । नरदेवउभैभाषानिपुणपृथ्वीराजकविराजहुव॥१४०॥

उभयभाषानिपुण ॥ पंडित हैंके भाषाको प्रमाण नहींकरै जामें ह-रियश होइजाइ भाषाको बिबेकी हैं ते सब प्रमाण करै हैं ॥ १ ॥ श्लोक ॥ साधुभिर्ग्रस्तहृदयो भक्तैर्भक्तजनप्रियः ॥ २ ॥ अज्ञानी नहीं प्रमाण करै हैं तापै दृष्टांत वैष्णवको अरु पंडितको ॥ ३ ॥ हरियश ॥ दोहा ॥ हरियश रसनहिं कबित महिं, सुनै कौनफल ताहि । शठ कठपु-तरी संगघुरि, सोयेको फलकाहि ॥ ४ ॥ वचन रचना ॥ सुबरणको चाहत सदा, कवि ब्यभिचारी चोर । पांवधरत चिंता करैं, श्रवण सुहात न शोर ॥ ५ ॥

टीकापृथ्वीराजराजाकी ॥ मारवारदेशबीकानेरकोनरेशवड़ोपृ थ्वीराजनामभक्तिराजकविराजहै । सेवाअनुरागअरुविषयवैराग्य ऐसोरानी पहिचानीनाहिंमानोदेखीआजहै । गयोहोविदेशतहां मानसीप्रवेशकियोहियोनहींछुवैकैसेसरैमनकाजहै । वीतेदिनतीनि प्रभुमंदिरनदीठिपरैपाछेहरिदेखिभयोसुखकोसमाजहै ॥ ६३० ॥ लिखिकैपठायोदेशसुंदरसंदेशयह मंदिरनदेखेहरिवीतेदिनतीनि है । लिख्योआयोसांचुवांचिअतिहीप्रसन्नभयेलगेराजवैठेप्रभुवाह रप्रवीनहैं । सुनोऔरएकयोंप्रतिज्ञाकरीहियेधरीमथुराशरीरत्या गकरैरसलीनहैं । पृथ्वीपतिजानिकैमुहीमदईकाविलकीवल अधिकाई नहींकालकेअधीनहैं ॥ ६३१ ॥ जीवनअवधिरहे निपटअलपदिनकलपसमानवीतिपलनविहातहै । आगमजनाइदि

योवाहैइन्हैंसांचोकियो लियोभक्तिभावजाकेछायोगातगातहै।चल्यो चढ़िसांड़िनीपैलईमधुपुरीआनिकरिकैस्नानप्राणतजेसुनीबातहै । जयजयध्वनिभईव्यापिगईचहूंओरअहोभूपतिचकोरजसचंदादिनरा तिहै ॥ ५३२ ॥ मूल ॥ द्वारिकादेखिपालंटतीअचढ़िसींवैकीधीअ टल। असुरअजीजअनीतिअगिनिमेंहरिपुरकीधौं । सांगनसुतनै सादराइरनछोरैदीधों । धराधामधनकाजमरणबीजाहूमांडौ । कम धुजकुटकेंहुवौचौकचतुरभुजनीचाडौ। बाढ़ेलवाढ़िकीविकटकचांद नामचाड़ैसबल । द्वारिकादेखिपालंटतीअचढ़िसींवैकीधीअटल ॥

विषय वैराग्य कवित्त ॥ हांसी में विषाद बसै विद्यामें बिवाद बसै भोगमाहिं रोग पुनि सेवामाहिं दीनता। आदर में मानबसै शुचि में गिला- न वसै आवन मे जान बसै रूप माँहिहीनता। योग में अभोग ओ सँयोग में वियोग वसै पुण्य माँहि बंधन औ लोभ में अधीनता। निपट नवीन ये प्रवीननि सुवीनलीन हरिजूसों प्रीति सवहीसों उदासीनता ॥ ६ ॥ सांवखाचि तो राजाने बाहर क्यों न देखे बाहरकी भावना नहीं प्रति- ज्ञा देशकी भक्तनि को उपेक्षा नहीं है ॥ २ ॥

टीका ॥ क्वावापतिसींवांसुतसांगनकोप्यारोहरिद्वारावतिईशयों पुकारैरक्षाकीजिये । सदाभगवानआयभक्तप्रतिपालकरैंकरौप्रतिपा लमेरोसुनिलतिभीजिये । तुरकअजीजनामधामकोलगाईआगि ल ईवागयोरकीआयेद्रकक्कीजिये। दुष्टसवमारेप्रभुकष्टतेउवारेनिजप्राण वारिडारेयहनयोरसपीजिये ॥ ५३३ ॥

करौ प्रतिपाल मेरो ॥ दोहा ॥ करैनकरावैआपही, नाम न अपनो लेहि । साईहाथ वड़ाइयो, जिहिभावै तिहि देहि ॥ ३ ॥ भक्त भूप वड़े वड़े राजा सवदिशानको जीतें पै इंद्री न जीतिजाहिं ॥

मूल ॥ पृथ्वीराज नृपकुलवधूभक्तभूपरतनावती । कथाकीर्तन प्रीतिभीरभक्तनिकीभावै । महामहोछौमुदितनित्यनँदलाललड़ावै।

मुकुंदचरणचितवन भक्तमहिमाधुजधारी । पतिपरलोमनकियोटे कअपनीनहिंटारी । भक्तपनसबैविशेषहीआवैरसदनसुनखाजिती । पृथ्वीराजनृपकुलवधूभक्तभूपरतनावती ॥ १४२ ॥ टीका ॥ रतनावतीजीकी ॥ मानसिंहराजाताकोछोटोभाईमाधोसिंहताकीजानोंतियाताकीबातलैबखानिये । ढिगजोखवासिनिसोइवासानिभरतनामरटति जटित प्रेमरानीउरआनिये । नवलकिशोरकभूंनंदकोकिशोरकभूंवृन्दावनचंदकहिआंखैभरिपानिये । सुनतविकलभईसुनिबेकीचाहभईरीतियहनईकछूप्रीतिपहिंचानिये ॥ ५३४ ॥

भक्ति न होइ इन अवलाने इंद्रीजीति कै भक्तिकरी याते भक्तिभूपकह्यो ॥ १ ॥ कथा कीर्त्तन मांझ ॥ आहपावैं न निवाह कसीदा असीतिसी राहल्लां इश्क दिला देना लेना लेमहिं बूंदीगल्लां । साहजुलफछल्लों तिसछल्ले असीतिसी महल्ला तरसल्ला । वल्लभ रसिकरुमाललालपर झूमहमें सांझल्लां ॥ १ ॥ चाहभई ॥ कवित्त ॥ जादिनते श्रवण पर्‍यो है कान्ह तादिनते लग्योई रहत रसना में आठोयाम है । चोवाचीर पानीपान चंदन चमेली हार मांगतही मुख निकसत घनश्यामहै । शोचिकै सकोचनिरुमोचन सकल दुख सुखको दिनेश जियको सो निजधाम है । प्रीतिरीति तंत्रजग जीतिबेको यंत्र मनमोहनी को मंत्र मनमोहन को नाम है ॥ २ ॥ जाको जासों मनलग्यो, सोई जाको राम । रोमरोम मैं रसरह्यो, नहीं आन सों काम ॥ सुनिबेकी ॥

बारबारकहैकहाकहैउरगहैमेरो बहैदृगनीरिहोशरीरसुधिगई है । पूछोमतिबातसुखकरौदिनरातियह सहैनिजगातरागीसाधुकृपाभईहै अतिउतकंठादेखिकहैसोबिशेषसबरासिकनरेशनुकीबानीकहिदई है। टहलछुटाईऔसिरानैलैबैठाईवाहिगुरुबुधि आई यहजानों रीतिनई है

बारबार ॥ कवित्त ॥ कबहुं अंग अंगराइ डारत है अलिनपै भैरावै क्यौंहू कलन परति है । उत्तर सहेली लाई तिनके सँदेश सुनि करत प्रसिद्ध कवि ऐसेही अरति है । कैसे कैसे गई कहु कैसी कैसी बातैं भई

कहां हैं ललन सुनि धीरनधरति है । एक वेर पूंछि फेरि पूँछि फेरि फेरि पूँछि वेर वेर वेई वातैं पूछिवो करति है ॥ १ ॥ पूछौं मति । हेरत वारहि वार उतै जू वावरी वाल कहाधौं करैगी । जो कवहूं रसखानि लखै फिरि क्यों हुन वीररी धीर धरैगी । मानिहैं काहूकी कानि नहीं जव रूप ठगी हरि रंग ढरैगी । याते कहूं शिख मानि भटू यह हेरनि तेरेई पैंड़े परैगी ॥ २ ॥ प्रीति की रीति अनीतिहै प्रीति करौ जिनि कोइ । सुख दीपक कैसेवरै विरह नागजहँ होइ ॥ ३ ॥ विद्या आदर लक्ष्मी और ज्ञान गुणगर्व । प्रेमपौरि पगधरतही, गये ततक्षणसर्व ॥ ४ ॥ नेहनेह सव कोउ कहै नेहकरो मतिकोइ । मिलैदुखी विछुरैदुखी नेहीसुखी न होइ ॥ ५ ॥ नेहस्वर्गते ऊतरयो, भूपर कीनोंगौन । गलीगली ढूंढ़त फिरैं विन शिर को धरकौन ॥ ६ ॥ जरेजरे सो जरिवुझे, बुझर जरे हूनाहिं । अहमद दाझेप्रेम के, वुझि बुझि कै सुलगाहिं ॥ ७ ॥ प्रेम कठिन संसार में नाकीजे जगदीश । जो कीजे तौ दीजिये, तन मन धन अरुशीश ॥ ८ ॥

निशिविन सुन्योकरैंदेखिवेकोअरवरैंदेखेकैसेजातजलजातदृगभरेहैं । कछुकउपाइकीजैमोहनादिखाइदीजैतवहींतोजीजैवेतोआनिउरअरेहैं । दरशनदुरिराज छोड़ेलोटैधूरिपैनपावैछविपूरिएकप्रेमवशकरेहैं । करौहरिसेवाभारिभावधरिमेवापकवानरसखानदैवखानमनधरेहैं ॥ ५३६ ॥ इंद्रनीलमणिरूपप्रगटस्वरूप कियोलियोवहेभावयोंसुभावमिलिचलीहै । नानाविधिरागभोगलाड़कोप्रयोगयामेंयामिनीसुपनयोगभईरंगरलीहै । करतिंशिंगारछविसागरनपारावाररहतानिहारियाहीमाधुरीसोंपलीहै । कोटिकउपाइकरियोगयज्ञपारपरैएैपैनहींपावैयहदूरिप्रेमगलीहै ॥ ५३७ ॥

सुपन ॥ दोहा ॥ सोवेढिग वातैंकरै, जगैं उठत गहै वाट ॥ कित ह्वै आवत जातकित, पौरीलगे कपाट ॥ १ ॥ नख शिख रूपभरे खरे, तऊ चहत मुसुकानि । लोचन लोभी रूपके, तजै नलोभीवानि ॥ २ ॥

देख्योईचहततऊकहतउपाइकहा अहाचाहबातकहौकौनकोसु नाइये । कहीजूबनावोढिगमहलकेठौरएकचौकीलैबैठावोचहुँओरस मुझाइये । आवैंहरिप्यारेतिन्हैंआवैबेलिवाइइहांरहेतेधुवाइपाइरुचिउ पजाइये । नानाविधिपाकसामाआगेआनिधरेआप डारिचिकदेख्यो श्यामदृगनलखाइये ॥ ६३८ ॥

चाहबात ॥ चौपाई ॥ कुँवरि कहै सखिको बिसवर है । जहँ वह सांवरो प्रीतमरहै ॥ सो दिश हाथसों सखिनि बताई । सो दिश जीवनमूर सिमाई । कमल पत्रले पक्ष बनावै । उड़्योचहै सोक्यों उड़िआवै । मनसों कहै कुटिल तू आइ । इकिलोई उठि पिय पै जाइ । नेक तौ नैन निहूं संग लैरे । मोहन मुखको देखन दैरे ॥ ३ ॥

आवैंहरिप्यारेसाधुसेवाकरिटारे दिनकिहूंपावँधारेजिन्हैंब्रजभूमि प्यारिये । युगलकिशोरगावैंनैनानिबहावैंनीरह्वैगईअधीररूपदृगनिनि हारिये । पूछीवाखवासिनिसोंरानीकौनअंगजाकेइतनीअटकसंगभं गसुखभारिये । चलीउठिहाथगयोरह्योनहींजातअहो सहौदुखलाज वड़ीतनकनबिचारिये ॥ ६३९ ॥

आवैं ॥ पद ॥ चलिमन ढूंढन जैये सतगुरुके छोना । शिरके साटैं पाइये ये राम खिलौना॥प्रेमजँजीर जराय के गहि राखो भाई । इन सं- तनि के मोहते मिलि हैं रघुराई । कृष्ण कृष्ण नित पढ़त हैं शुचिते चित लागे । पाइँ टिके नहिं पाप के दुख सबही भागे । कहि मलूक सबछांड़ि कै गहि लै यह हाला । जोइ जोइ मूरति संतकी सोइ देखि गुपाला ॥ १ ॥ युगल ॥ कवित्त ॥ बृन्दावन बास आश बढ़त हुलास रास बिबिध बिलास सदा सुख हरिदास के । भाल पै तिलक श्याम बंदनी औ कंठमाल तुलसी रचत गुंज छापे दै प्रकाश के । युगल किशोर हिये मुखमें झकोर नाम नीर बौर झूमि कै सु सूजक बिलास के । सदा सतसंग बिनय अंग अंग पगे पुनि जगे जग माहिं नीके लागे आस पास के ॥

देख्योमैंबिचारिहरिरूपरससारताकोकीजियेअहारलाजकानि

नीकेटारिये । रोकतउतरिआईजहांसंतसुखदाईआनिलपटाईपाइँ विनतीलैधारिये । संतनजिमाइवेकी निजकरअभिलाषलाखलाख भांतिनसोंकैसेकैउचारिये । आज्ञाजोइदोजैसोईकीजैसुखवाहीमेंजु- प्रीतिअवगाहीकरोलागीअतिप्यारिये ॥ ५४० ॥ प्रेममेंननेमहेमथा रलैउमँगिचलीचलीहगधारसोपरोसिकैजिवायेहैं । भीजिगयोसाधुने हसागरअगाधदेखि नयननिमेषतजीभयेमनभायेहैं । चंदनलगा इआनिवीरिहूखवाइश्यामचरचाचलाइचषरूपसरसायेहैं । धूमपरी गावँझूमिआयेसबदेखिवेकोदेखिनृपपासलिखिमानसपठायेहैं ॥ ॥ ५४१ ॥ ह्वैकीरनिशंकरानीवंकगतिलईनई दईतजिलाजवैठीमो ड़नकीभीरमें । लिख्योलैदिवाननरआयेलैबखानकियो बांचिसुनि आंचलागीनृपकेशरीरमें । प्रेमसिंहासुतताहीकाल सोरसालआ येभालपैतिलकभालकंठीकंठतीरमें । भूपकोसलामकियोनरनजता इदियो बोल्योआवमोडीकेरेपरचोमनपीरमें ॥ ५४२ ॥

टारिये ॥ मेरी कुल पूजि तूही मानी ठकुरानी करि तूही नित आं- खिनि में हिये में धरतिहौं । तेरेई संतोष देत दक्षिणा रसीले गुन मन मानि आलिनि की सीख निदरत हौं । आनि बन्यो योग अब मेरे बड़ भागि- नितें ताहीते अधीनता लै दीनता करतिहौं । देखन दे नेक प्राण पीतम मुखारविंद हाय लाज आजु तेरे पाइँनि परतिहौं ॥ ३ ॥ प्रेम सिंह ॥ कवित्त ॥ सदा साधु सेवा रंग नितही प्रसन्न सुनि भीजि जाइ हियो जान्यो प्रीतिको स्वरूप है। प्रेमसिंह नाम ताको अर्थ अभिराम सुनो सिंह सम भक्ति वल हिये श्याम रूप है । दोऊ मिलि नाम मानो जानो नृसिंहवत राति की वड़ाई याते भयो भक्त भूपहै । हरदेव इष्ट मिष्ट लागी संत सेवा याको सिष्टि गुण वस लघु कीरति अनूप है ॥ १ ॥ प्रेम मैन गोर मुकुट पै प्रियादास गोविंद संग रहैं बरसाने ते वाइ एक मोहन भोग प्रभात करि लै गई पाटौ दांतुन नहीं करी यह क्यों न खावो लकड़ी भली ॥ २ ॥

कोपभीरराजागयोभीतरतेशोचनयो पाछेपूंछिलियोकह्योनरनि वखानिकै । तवतोविचारीअहोमोड़ीहैहमारीजातिभयोसुखगातभ क्तिभावउरआनिकै । लिख्योपत्रमाजीकोतुप्रीतिहियेसाजीजोपै शी शपरबाजीआइराखोतजिप्रानको । सभामध्यभूपकहीमोड़ीकोविरू पभयोरहौअवमोड़ीकेहीभूलोमतिजानिकै ॥ ५४३ ॥ लिख्योदैप ठायोवेगिमानसलैआयेजहां रानीभक्तिसानीहाथदईपातीवांचिये । आयोचढ़िरंगबांचिसुतकोप्रसंगबार भीजेजेफुलेलदूरिकियेप्रेमसां चिये । आगेसेवापाकनिशिमहलवसतजाइलाईवाहीठौरप्रभुनीके गाइनाचिये । अन्ननृपत्यागिदियोलिखिपत्रपुत्रदियो भाईमोडीआ जुतुसहितकरियांचिये ॥ ५४४ ॥

तजिप्राणको ॥ दोहा ॥ धनदै नीके राखितन, तनदैराखो लाज । लाज प्राण तजि दीजिये, एक प्रेम के काज ॥ नेह करैंते बावरे, करि तूरैं ते कूर । धुर निरबा हैं जे कोऊ, तेई प्रेमी शूर ॥ २ ॥ प्रेम की चौपरि मढ़ी है, तामें बाजी शीश । कायर ताको जेगहैं, तौ पावै वह खीश ॥ ॥ ३ ॥ दूरि किये ॥ जबलगि शिर परशिर हुतो, तब लगि फूलन हार । नाहिं सँभारो जात है, शिर उतरे को भार ॥ ४ ॥ अन्न नृप त्यागि दियो ॥ पाद्मे ॥ प्रार्थयेद्वैष्णवस्यान्नंप्रयत्नेन विचक्षणः । सर्व पापविशुद्ध्यर्थंतदभावेजलंपिबेत् ॥ ५ ॥ मार्कंडेये ॥ अवैष्णवेगृहे भुक्त्वा पीत्वावाज्ञानतोयदि ॥ शुद्धिश्चांद्रायणे प्रोक्ताऋषिभिस्तत्वदर्शिभिः ॥ ॥ ६ ॥ शुद्धंभागवतस्यान्नं शुद्धंभागीरथीजलम् । शुद्धंविष्णुपरिक्षिप्तं शुद्धमेकादशीव्रतम् ॥ ७ ॥

गयेनरपत्रदियोशीशसोंलगाइलियो बांचिकैमगनहियेरीझबहु दईहै । नौबतिबजाईद्वारबांटतबधाईकाहूनृपतिसुनाई कहीकहारी तिनईहै । पूछैंभूपलोककह्योमिटसबशोकभयेमोड़ीके जुयोगस्वांग कियोवनगईहै । भूपतिसुनतबातअतिदुखभयोगातलयोवैरभावच

ढ्यो त्यारीइमभईहै ॥ ५४५ ॥ नृपसमुझाइराख्योदेशमेंचवावहै है बुधिवंतजनआइसुतसों जनाई है ॥ बोल्योबिषैलागिकोटिकोटितन खोये एकभक्तिपरकामआवैयहैमनआईहै । पाईंपरिमांगिलई दई जूप्रसन्नतुमराजानिशिचल्योजाइकरोजियभाईहै । आयोनिजपुरढि गधरिनरसिलेआनि कह्योसोबखानिसवचिंताउपजाईहै ॥ ५४६ ॥ भवनप्रवेशकियोमंत्रीजोबुलाइलियो दियोकहिकटीनाकलोहूनिरखा रिये । मारिबोकलंकहूनआवोयोंसुनाईभूपकाहूबुधवंतनविचारिलै उचारिये। नाहरजूपींजरामेंदीजै छोंड़िलीजैमारिपाछेतेपकरिवहबात दाबिडारिये । सवनिसुहाईजाइकरीमनभाई आयोदेखोवाखवासि कहींसिंहजानिहारिये ॥ ५४७ ॥ करैहरिसेवाभरिरंगअनुराग दृग सुनीयहवातनेकनयनउतटारेहैं । भावहीसोंजानैउठिअतिसनमानै अहोअजूमेरेभागश्रीनृसिंहजूपधारेहैं । भावनासचाईवहीशोभालैदि खाईफूलमालपहराईरचटीकोलागेप्यारेहैं । भौनतेनिकसिधायेमानो खम्भफारिआयेविमुखसमूहततकालमारिडारेहैं ॥ ५४८ ॥

नृसिंह जू पधारे हैं ॥ तब पूछहू लाई क्योंकि सूक्ष्म अलंकार ॥ १ ॥ श्लोक ॥ कांतमायां तमालोक्य गता गुरुजनांतिकम् । करे कलितमं भोजं संकोचयति सुंदरी ॥ २ ॥ कवित्त ॥ बांसुरी के बीच एक भौंर डारि लाई सखी मूँद्यो बहु यत्न वलय बुधि वल भारी सों । भनत पुराण यामें आपही सों ध्वनि होति कान दैके सुनो कह्यो धरि सुकुमारी सों।रीझि रिझिवार अति मनमें मगन भई आप तनचाह मुख ढांक्यो श्याम सारी सों । अंचलमें गांठिदै बिहँसि उठि चली सखी प्यारी हँसि कह्यो आजु बसिये हमारी सों ॥ ३ ॥

भूपकोखवरिभईरानीजूकीसुधिलई सुनीनीकीभांतिआपनम्रहै केआयेहैं । भूमिपरिसाष्टांगकरिकैऊहरीमतिभईदयाआपआइवाके वचनसुनायेहैं । करतप्रणामराजावोलीआजुलालजूको नेकफीरिदे खोएकटोरयेलगायेहैं । बोल्योनृपराजधनसवहीतिहारोधारोपतिपेन

लोभकहीकरौसुखभायेहैं ॥ ५४९ ॥ राजामानसिंहमाधवसिंहउभै भाईचढेनावपरकहूंतहांबूड़िबेकोभई है । बोल्योबड़ोभ्राताअवकी जियेयतनकौन भौनातियाभक्तकहीछोटेसुधिदईहै । नेकुध्यानकि योतबैआनिकैकिनारोलियो हियोहुलसायोजेंठचाहनईलईहै । कह्योआनिदरशनविनयकरिगयोराजाअतिहीअनूपकथाहियेव्यापि गई है ॥ ५५० ॥ मूल ॥ पारीषप्रसिद्धकुलकांश्ज्याजगन्नाथ सीवाधरम । श्रीरामानुजकीरीतिप्रीतिपनाहिरदाहिधारचो । संस्कार समतत्त्वहंसज्योंबुद्धिविचारचो । सदाचारमुनिवृत्तिइंदिरापधितउजा गर । रामदाससुतसंतअनन्यदशधाकोआगर ॥ पुरुषोत्तमपरसादते उभैअंगपहरचोबरम । पारीषप्रसिद्ध कुल० ॥ १४३ ॥

मुनि वृत्ति ॥ राजधानी न लेहिं भारते ॥ एक ब्राह्मण सिलौक-रैहो तासों अज्ञानी ने कही हमारे राजा पै जाउ तौ बहुत द्रव्य मिलै तब रोइ उठ्यो कृष्ण सों कही तेऊ रोइ उठे युधिष्ठिर सों कही तेऊ रोइ उठे कृष्णसों पूछी याको हेतु कहा तब कही ब्राह्मण याते रोयो ऐसी निषिद्ध धान्य बतायो कलियुग में मांगेहू नमिलैगो उभै अंग कवच पहिरचो प्रगट अंगमें तौ लोहको राजा के प्रोहित याते यह हीरेके अंगमें ज्ञानको वचन-बाण काहू को न लगै ॥ १ ॥

कीरतनकरतकरस्वपनेहूमथुरादासनमांडियो । सदाचारसंतोष सुहृदसुठशीलसुभासै । हस्तकदीपकउदयमेटितमवस्तुप्रकासै । हरिकोहियविश्वासनंदनंदनबलभारी । कृष्णकलससोंनेमजगतजानै शिरधारी । श्रीबर्द्धमानगुरुवचनरतिसोसंग्रहनाहिंछांडियो । की रतनकरतकरसुपनेहूमथुरादासनमांडियो ॥ १४४ ॥ टीका ॥ वासकैतिजारैमांझभक्तिरसराशिकरीकरी एकबाततताकोप्रकटादिखा ईहै । आयोभेषधारीकोऊकरैशालिग्रामसेवाडोलैसिंहासनपैआनिभी रछाईहै । स्वामीकेजुशिष्यभयेतिनहूंकोभावदेखिवाहीकोप्रभावक ह्योआपहीयेभाईहै । नेकुआपचलौवहरीतिकोविलोकियेजू बडे

सर्वज्ञकही दूषैनहिंजाई है ॥ ५५१ ॥ पाइँपरिगयोलैकैजाइढिगठाढ़े भये चाहताफिरायोपैनफिरैशोचपरयोहै । जानिगयेआपकछूयाही कोप्रतापओपैमारोकरिजाययोंविचारमनधरयोहै । मूठिलैचलाईभ क्तितेजआगेपाईनाहिं वाईलपटाईभयोऐसोमानोमरयोहै । ह्वैकरिद यालजाजिवायोसमझायोप्रीतिपंथदरशायोहियभयोशिष्यकरयोहै॥

सुपनेहूं ॥ सुपने में कौन मांगै है प्रकटही मांगै है दृष्टांत कलावत को अरु ब्राह्मण को विश्वास मुगल अरु बनिये को दृष्टांत ॥ १ ॥ ह्वै करि दयाल ॥ हरिजन हंस दिशानि यों डोलै। मुक्ता फल बिन चोंच न खोलै। मौन गहै कै हरि यश बोलै । असद अलाप न कबहूं लोलै। मानसरोवर तटके बासी। हरि सेवा रति और उदासी ॥ नीर क्षीरको करै निवेरा। कहै कबीर सोई गुरु मेरा ॥ २ ॥ वाहि यह उपदेश करयो चौरेही में ठाकुर को बैठावनो ऐसी क्रिया न कीजै ॥ ३ ॥

मूल ॥ नृतकनरायणदासकोप्रेमपुंजआगेबढ़ो। पदलीनोप्रसिद्ध प्रीतिजामेंदृढ़नातो। अक्षरतनमयभयोमदनमोहनरँगरातो। नाच तसबकोउआइकाहिपैबहबनिआवै। चित्रलिखतसोरह्योत्रिभंगीदेशी जुदिखावै । हंड़ियासराइदेखतदुनीहरिपुरपदवीकोचढ़ो । नृतक नरायणदासकोप्रेमपुंजआगेबढ़ो ॥ १४५ ॥ टीका ॥ हरिही केआगेनृत्यकरैहियेधरैयहीढरैदेशदेशनमेंजहांभक्तभीरहै । हंड़ि यासराइमध्यजाइकैनिवासलियो लियोसुनिनामसोमलेच्छजानिमी रहै । बोलिकैपठायमहाजनहरिजनसबैआयोहैसदनगुनालावोचाह पीरहै । आनिकैसुनाईभईअतिकठिनाईअबकीजैजोईभावैवहनिपट अधीरहै ॥ ५५२ ॥

दृढ़ नातो पद ॥ सांचो एक प्रीति को नातो । कै जाने राधिका नागरी कै मदन मोहन रँग रातो । यह श्रृंखला अधिक बलवंती जिन बांध्यो मन गजमातो । मीराप्रभु गिरिधर सँग हिलि मिलि सदा निकुंज बसातो ॥ १ ॥ दोहा ॥ हितचित चाहन चतुरई, बोल न आवत गात । राधा

मोहन प्रेमकी, कहत बनै नहिं बात ॥ २ ॥ आइ कलाइक जगत हित, जानि सुदेश विदेश। पर उपकारी साधु ये, नहिं अधरम को लेश ॥ ३ ॥ त्रिभंग देशी। सूधी जो कुछ उर गडै, सो निकसे दुख होइ। कुँवर त्रिभंगी जहँ गडै, सो दुख जानै सोइ ॥ ४ ॥ पण्डित कविता ढाढ़िया, कहिबे-हीलौं दौर। कहि कान्हा जूझे नहीं, जूझनवारे और ॥ ५ ॥ हँडिया सराइ आगते छह कोश ॥ ६ ॥ हरिहीकेआगे ॥ दोहा ॥ मनमजूस गुण रतन हैं, चुप कढि दै हट तार। पारखि आगे खोलिये, कूंची वचन रसाल ॥ ७ ॥ तापै दृष्टांत अकबर शाहको तानसेनको हरिही के आगे गावै ॥ ८ ॥

विनाप्रभुआगेनृत्यकरियेननेमयहैसेवावाकेआगेकहौंकैसेविस्तारिये। कियोयोविचारऊंचेसिंहासनमालाधारितुलसीनिहारिहारिगानकरयोभारिये। एकओरबैठोमीरनिरखैननयनकोरमगनाकिशोररूपसुधिलैविसारिये। चाहैंकछुवारयोपरेऔचकहीप्राणहाथ रीझिसनमानाकियोमीचलागीप्यारिये ॥ ५५४ ॥ मूल ॥ गुणगणविशदगोपालकेयेतेजनभयेभूरिदा। वोहितरामगोपालकुँवरगोबिंदमांडिल। क्षीतस्वामिजसवंतगदाधरअनंतानंदभल। हरिनाभमिश्रदीनदासवछपालकन्हरयशगायन। गोसूरामदासनारदश्यामपुनिहरिनारायन। कृष्णजीवनभगवानजनश्यामदासविहारीअमृतदा। गुणगणविशदगोपालकेयेतेजनभयेभूरिदा ॥ १४६ ॥ निर्वर्त्तभयेसंसारतेतेमेरेजिजमानसव। उद्धवरामेरणुपरशुरामगंगाभूधतनिवासी अच्युतकुलकृष्णदासविश्रामशेषसाहीकेबासी। किंकरकुंडाकृष्णदासखेमसोंठागोपानंद। जयदेवराघवविदुरदयालदामोदरमोहनपरमानंद। उद्धवरघुनाथीचतुरोनगनकुंजओकजेवसतअव। निर्वर्त्तभयेसंसारतेतेमेरेजिजमानसव ॥ १४७॥

भूरिदा ॥ दशमे ॥ तवकथामृतंतप्तजीवनंकविभिरीडितं कल्मषापहम्। श्रवणमंगलं श्रीमदाततं भुवि गृणंतिते भूरिदाजनाः ॥ १ ॥ संत

जन वडे दाता भक्ति संपत्तिके देनहारे जन तो सामान्य मनुष्यनको कहे हैं सो नहीं ॥ श्लोक ॥ सालोक्यसार्ष्टिसामीप्यसारूप्यैकत्वमप्युत ॥ दीयमानंनगृह्णंतिविनामत्सेवनंजनाः ॥ २ ॥ जे ऐसे जनतौ नहीं चुटकी टूक मांगत डोलैं ॥ दोहा ॥ राम अमल माते फिरै, पीवै प्रेम निशंक । आठ गांठि कोपीन में, कहै इंद्र सों रंक ॥ ३ ॥

टीका ॥ झीथडैटिगहींमेंजैतारनविदुरभयोभयोहरिभक्तसाधुसेवामतिपागी है। वरषानभईसवखेतीसूखिगईचिंतानईप्रभुआज्ञादईवड़ोवड़भागीहै । खेतकोकटावोऔगहावोलैउड़ावोपावोदोहजारमनअन्नसुनी प्रीतिजागीहै । करीवहरीतिलोगदेखैनप्रतीतिहोतिगायेहरिमीतराशिलागीअनुरागीहै ॥५५५॥ मूल॥ श्रीस्वामीचतुरोनगनमगनरैनिदिनभजनहित।सदायुक्तअनुरक्तभक्तिमंडलकपोषत। पुरमथुराव्रजभूमिरमतसबहीकोतोषत । परमधरमदृढ़करनदेवश्रीगुरुआराध्यो। मधुरवैनसुनिठौरठौरहरिजनसुखसाध्यो । संतमहंतअनंतजनयशविस्तारेजासुनित । श्रीस्वामीचतुरोनगनमगरैनिदिनभजनहित ॥ १४८ ॥ आवैंगुरुग्रेहयोंसनेहसोंलैसेवाकरैधरैहियेसांच भावअतिमतिभीजिये । टहललगाइदईनईरूपवतीतियादियोवासोंकहीस्वामीकहैंसोईकीजिये। सेवाकैरिझायेयतेप्रेमउरानितनयोदयोवरवरवधूकृपाकरिलीजिये । धामपधराइसुखपाइकैप्रणामकरिधरींव्रजभूमिडरवसेरसपीजिये ॥ ५५६ ॥

खेती सूखिगई ॥ भेपहरयो भयो वहुत चढिगयो वगवान् भेष वढायो चाहै तो अकालपरै सो परयो तव विचारी कहूं उठि जाइये॥ १॥ मगन रैनि दिन सतोगुण वृत्तिते रजोगुण तमकी निर्वृत्ते भक्त मंडल को पोपत द्वारपै रमत ॥ सवैया ॥ डोलत हैं इकतीरथ एकनि वार हजार पुराण बकेंहैं । एकलगे जपमें तप में यक सिद्धि समाधिनमें अटके हैं। बूझि जो देखतहोरसखानि जू मूढमहा सिगरे भटकेहैं। सांचे हैं वे जिन

आपन ज्यो इहि सांवरे ग्वालपै वारिछकेहैं ॥ २ ॥ टहल लगाई लाहौर में कान्हा फकीर तुलसी खत्रानी सेवाकरै ॥ ३ ॥

श्रीगुबिंदचंदजूकोभोरही दरशकरिकेशवशृङ्गारराजभोगनंद ग्राममें । गोवर्द्धनराजाकुंडह्वैकैआवैवृन्दावनमनमेंहुलासनितकरै चारियाममें । रहैंपुनिपावनपैभूखदिनतीनिबीतेआयेदूधलैप्रवीणये ऊँगेश्यामममें । मांग्योनेकुपानीलावौफेरिवहप्रानीकहां दुखमतिसा नीनिशिकह्योकियोकाममें ॥ ५५७ ॥

मांग्यो नेकुपानी ॥ दोहा ॥ सबसों बुरो जु मांगिबो, मांगत निकसै जीव ॥ पानिपचाहैं आपनी, तो मांगिन पानीपीव ॥ १ ॥ मांगन जापै जाइये, जाके मुखमें लाज ॥ आगेते जु प्रसन्नह्वै, पूजै मनके काज २ ॥ आवत देखे साधके, पुलकि उठै सब अंग ॥ तुलसी जाके जाइये, कीजै तासों संग ॥ ३ ॥

पानीसोंनकाजब्रजभूमिमें विराजदूधपियोघरघरआज्ञाप्रभुजूनेदई है । येतौब्रजबासीसदाक्षीरकेउपासीकैसेमोकोलैनदैहैकहीदैहै सुनीनईहै । डोलैधामश्यामकह्योजोईमानिलियोदियोलैपरचौहूप्रती तितबभईहै । जहांजाछिपावैपात्रवेगिढूंढिआपलावै अतिसुखपावै कीनीलीलारसमईहै ॥ ५५८ ॥ मूल ॥ मधुकरीमांगिसेवैभगत तिनपरहौंबलिहारकियो । गोमापरमानंदप्रधानद्वारकामथुराखो रा । कालुषसांगानेरभलौभगवानकोजोरा । बीटलटोडेषेमपंडागूं नौरेगाजै । श्यामसेनकेवंशवीधरपीपाराबिराजै । जैतारनगोपाल कोकेवलकूवैमोललियो । मधुकरीमांगिसेवैभगततिनपरहौंबलि हारकियो ॥ १५१ ॥

क्षीरके उपासी ॥ माता यशोदाने तुमको डारि दूध उफनातो राख्यो ॥ सवैया ॥ जप यज्ञ सुदान सुमौन करैं बहुकूपरु वापी तड़ाग बनावैं । करैं व्रत नेम सुइंद्रिय निग्रह उग्रह योग समाधि लगावैं ॥ कहै रसखानिहृदय जिनके कबहूं नहिं सों सुपने में न आवें । ताहि

अहीरकी छोहरिया छछिया भरि छांछि को नाच नचावैं ॥ ४ ॥ लक्ष्मी सी जहां मालिनि डोलै वंदनवारे बांधति पूजा पै दृष्टांत रुक्मिणी जी के वेदा को ॥ ६ ॥

टीका ॥ कहतकुम्हारजगकुलनिस्तारकियो केवलसुनामसाधु सेवाअभिरामहै । आवैबहुसंतप्रीतिकरीलैअनंतजाकोअंतकोनपावैऐपैसीधोनहींधामहै। बड़ीपैगरजचलेकरजानिकासिबेको बनियान देतकुवाखोदौकीजोकामहै । कियोबोलिकहीतोलिलियोनीकेरालि करिहितसोंजिमायेजिन्हैंप्यारोएकश्यामहै ॥ ५५९ ॥ गयेकुवाँखोदिवेकोसूवाज्योंउचारैनाम हुवाकामवानैजानीभयोसुखभारीहै । आईरेतभूमिझूमिझूमिमाटीदबिरहे वामेंकेतकहजारमनहोतकैसेन्यारीहै । शोककरिआयेधामरामनामधुनिकाहूकानपरीबीत्योमासकहीवातप्यारीहै। चलेवाहीठौरसुरसुनिप्रीतिभौरपरेरीतिक छुऔरसुधिवुधिअतिटारीहै ॥ ५६० ॥

करज ॥ एकादशे ॥ मद्भक्तपूजाभ्यधिका वैष्णवोबंधुसत्कथा ॥ १ ॥ सम्बंधी को उधारचो लाइके सब कोई सत्कार करैहै यह धर्म साधु सेवा धर्म ॥ २ ॥ आदिपुराणे ॥ येमेभक्तजनाःपार्थ ॥ ३ ॥ न्यारी-है ॥ कूवाजो माटीमें रहैं जैसे तिवारो महारावमैंपै एकहाथ ऊंचोजल भसाद पहुँचै माटीक्यों न दूरिकरी सिधाई लगै यातें तो महाराव क्योंन ऊंचीराखी ॥ कूवां देखि कै यहबात यादिरहै जैसे सिद्ध को गुफामें वैठारे सिद्धाइको रंगद्वार खानपान पहुँचे ऐसे हरिने करी ॥ ४ ॥

माटीदूरिकरीसवपहुँचेनिटकतव वोलिकैसुनायेहरैवानीलागी प्यारिये।दरशनभयोजाइपाईंलपटाइरहे महरावसीहैकूवहूंनिहारिये। धरचोजलपात्रएकदेखिवडेपात्रजानेआनिनिजग्रेहपूजालागीअतिमारिये । भईभीरद्वारनरउमडिअपारआये महिमाअपारवहुसंपतिलैवारिये ॥५६१॥ सुंदरस्वरूपश्यामलायेपधराइवेकोसाधुनिजधामआइ

कुवांजुकेवसेहैं । रूपकोनिहारिमनमेंबिचाराकियोआपकरैकूपामोपै प्रभुअचलह्वैवसेहैं। करतउपाइसंतटरतननेकुकहूंकहीजूअनंतहरिरी झस्वामीऐसे हैं । धन्योजानराइनामजानिलईहियेवात अंगमेनमा तसदासेवासुखरसेहैं॥ ५६२ ॥ चलेद्वारावातिछापलावैयहमतिभ ईआज्ञाप्रभुदईफिरिघरहीकोआये हैं।करौंसाधुसेवाधरौभावहियेदृढ मांझटारौजिनिकहूंकीजैजेजेमनभाये हैं । ग्रेहहीमेंशंखचक्रआदि निजदेहभये नयेनयेकौतुकप्रगटजगगायेहैं।गोमतीसोंसागरकोसंगम होरह्योसुन्योसुमिरनीपठाइके योदोऊलैमिलायेहैं ॥५६३॥ भये शिष्यशाषाअभिलाषासाधुसेवाहीकी महिमाअगाधजगप्रगटदेखाई है । आयेघरसंततियाकरतिरसोईकोई आयोवाकोभाईताकोखी रलैबनाई है । कुवाजूनिहारिजानीवाकोहितसादरसोंकीजियेवि चारएकसुमतिउपाईहै। कहीभरिलावोजलगइडरकलपैनलईतसमई सबभक्तनिजिमाईहै॥ ५६४ ॥

कूवहू निहारिये ॥ महीनाभरि भूमि में दबेरहे सो कूवाभयो रघुपति ने रक्षाकियो सो प्रसंग गोमती सों सागर को संमग रह्यो सुमरनीदै पठाई ॥ संगम भयो सो प्रसंग ॥ १ ॥ भयेशिष्य शाखाद्वै प्रकारके फरसाफूकी कानफूंका। २। ३। ४। ५॥

वेगिजललाईदेखिआगिसीबराईहिये झांकेमुखभईदुखसागरबुड़ा ईहै । बिमुखविचारितियाकुवाजूनिकारिदईगईपतिकियोऔरऐसी मनआईहै।परचोईअकालबेटाबेटीसोनपालिसके तकैकोऊठौरमाति अतिअकुलाईहै । लियेसंगकरचोजोईपुत्रपतिभूखभोई आइपरी झोंथडामेस्वामीकोसुनाईहै ॥ ५६५ ॥

विमुख ॥ पद ॥ जिनके प्रिय नरामवैदेही ॥ सो त्यागिये कोटि वैरीलों यद्यपि परम सनेही ॥ तज्यो पिता प्रहलाद विभीषण बंधु भरत महतारी ॥ वलिगुरु व्रजयुवतिन पतित्याग्यो जगभये मंगलकारी ॥ नातो नेह रामसों सांचो हृदय सुशील जहालौं । अंजनकहा आंखि जो फूटै

वहुतीकहौं कहांलौं ॥ तुलसी सोइ हितु बन्धु न प्रीतम पूजि प्राणते प्यारो ॥ जासँगवाढै नेह राम सों सोइ निज हितू हमारो ॥ १ ॥ दोहा ॥ साधोआया अनमनी भाया आयासूरि ॥ केवल कूवायों कहैं तू निकासि वाहरी पूरि ॥ पहिले तौ मूरख को संगहोई पाछेते सत्संग सो ज्ञान पाइकै त्यागकरै ॥ भर्तृहरिः ॥ यांचिंतयामिसततंमयिसाविरक्ता साप्यऽन्यामिच्छतिजनंसजनोन्यसक्तः ॥ अस्मत्कृतेतुपरितुष्यतिकाचिदन्याधिक्तांचतंच मदनंचइमांचमांच ॥

नानाविधिपाकहोतआवै संतजैसेसोतसुखअधिकाईरीतिकैसेजातिगाईहै। सुनतवचनवाकेदीनदुखलीनमहानिपटप्रवीनमनमांझदयाआईहै। देखिपतिमेरोऔरतेरोपातिदेखियाहिकैसेकैनिबाहिसकैपरी कठिनाईहै। रहौद्वारझारौकरौपहुँचैआहारतुम्हैं महिमानिहारिहृगधारलैवहाईहै ॥ ५६६ ॥ कियोप्रतिपालतियापूरीकोअकालमासभयोजवसमौविदाकीनीउठिगईहै। अतिपछितातिवहबातअवपावैकहां जहांसाधुसंगरंगसभारसमई है। करैंजाकोशिष्यसंतसेवाहीवतावैंकरौ जोअनंतरूपगुणचाहमनभईहै। नाभाजूवखानकियोमोकोइनमोललियोदियोदरशाइअतिलीलानितनईहै ॥ ५६७ ॥

दया आई है ॥ साधवो दीनवत्सलाः ॥ ३ ॥ दोहा ॥ कवीरा ॥ साधु मिलै तो हरिमिलै, अंतररहीनरेष ॥ राम दुहाई सतकहा, साधूआय अलेप ॥ ४ ॥ हरिते अरु हरि जननिते, रंचक अंतरनाहिं। येईतोहिं पावनकरैं चितवतही क्षणमाहिं ॥ ५ ॥

मूल। श्रीअग्रअनुग्रहतेभये शिष्यसवैधर्मकीधुजा। जङ्गीप्रसिद्धप्रयागविनोदीपूरनवनवारी। भलनृसिंहभगवानदिवाकरदृढ़व्रतधारी। कोमलहृदयकिशोरजगतजगनाथसुलूधौ। औरौअनुगउदारखेमखीचीधर्मधीलधुऊधौ ॥ त्रिविधतापमोचनसवै सौरभप्रभुजिनशिरभुजा। श्रीअग्रअनुग्रहतेभयेशिष्यसवैधर्मकीधुजा ॥ १९२ ॥ भरतखंडभूधरसुमेरटीलालाहाकीपद्धति प्रगटाअंगदपरमानंददा

सेयोगीजगजागे । खरतरखेमउदारध्यानकेशवहरिजनअनुरागे स्फुटत्योलाशब्दलोहकरवंशउजागर । हरीदासकविप्रेमसवैनवधा केआगर । अच्युतकुलेसवैसदादासंतनदशधाअघट । भरतखंड भूधरसुमेरटीलालाहाकीपद्धतिप्रगट ॥ १५३ ॥ मधुपुरीमहोछौ मंगलरूपकान्हरकोसोकोकारै । चारिवरणआश्रमरंकराजाअन्न पावैभक्तनिकोबहुमनविमुखकोऊनहिंजावै । बीरीचंदनवसनकृष्ण कीरंतनवरषै । प्रभुकेभूषणदेइ महामनअतिशयहरषै । वीठ लसुतविमल्योफिरैदासचरणरजशिरधरै । मधुपुरीमहोछौमंगल रूपकान्हर कोसोकोकरै ॥ १५४ ॥ भक्तनिसोंकलियुगभलै, निवाहीनिंबाखेतसी । आवहिंदासअनेकउठिबआदरहरिलीजै । चर णधोइदंडौतसदनमेंडेरादीजै । ठौरठौरकरिकथाहृदैअतिहरिजन भावै । मधुरवचनमहुलाइबिविध भांतिनिजलडावै । सावधानसे वाकरैनिर्दूषणरतिचेतस भक्तनिसोंकलियुगभलै निवाहीनिंबाखेत सी ॥ १५५ ॥

त्रिविध ॥ तृतीये ॥ शारीरामानुषादिव्यादोषायेयेचमानुषे ॥ भौतिकाश्चकथंलेशाबाधंतेहरिसंश्रयान् ॥ १ ॥ कोऊ कहै दूरि कैसे होइँगे शरीर सों लगे हैं सत्संगतेआत्मज्ञान आत्मज्ञान ते मिटे ॥ २ ॥ अच्युतः ॥ दोहा ॥ पिंडसुपीडा परशुराम हितकारी कोउ एक और नगरकी शोभता आवैं जाहिं अनेक ॥ आवैं जाहिं सुकौतुकी पूछै मनकी बात । परसाप्रीतम बाहरी कोपूछैकुशलात ॥ ३ ॥

बसनबढ़ेकुंतीबधूत्योंत्योंवरभगवानके । यहअचरजभयोएक खांड़घृतमेंदावरषै । रजतरुकमकीरेलसृष्टिसवहीमनहरषै । भोजन रासविलासकृष्णकीरंतनकीनों । भक्तनिकोवहुमानदानसबहीको दीनों । कीरतिकीनीभीमसुतसुनिभूपमनोरथआनिकै । बसनबढ़ेकुं तीवधूत्योंत्योंवरभगवानके ॥ १५६ ॥ टीका ॥ बीततवरषमासआ वैमधुपुरीनेमप्रेमसोंमहोक्षोराशिहेमहीलुटाइये । संतनिजिमाइनाना

पटपहराइपाछेद्विजनिबुलाइकछूपूजैपैनभाइये । आयोकोऊकालधनमालजाविहालभये चाहै पनपारचोआयेअलपकराइये । रहेविप्रदूखसुनिभयोसुखभूखवढ़ी आयोयोसमाजकरौधारीमनआइये५६६॥

वसनवढे ॥ कवित्त ॥ ऐसी भीरपरे पर पीरको हरनहार गिरिको धरनहार सोई धीर धरि है। दीननिको बंधव विरद ताको सदा रह्यो दावानल पानकियो सोई पीर हरिहै । पंडुनिकी पत्नी कहत ठाढी पंचनिमें लपटचोहै चीर सोतौ कैसेकै निवरि है। खैंचौ क्यों न आनिदुःशासन से दशक और मोरपक्ष धरि है सो मेरी पक्ष करि है ॥ १ ॥ पांडवकी रानी गहिरावर सों आनी शिरोमणि बिलखानी बिललानी पै न चेत हैं। घटत घटाये पटन घटत ऐंचेपट दुशासन बार बार ढेरकैके लेत हैं। पांचतन छित आंच तनक न लागी तन लखिकै विपति यदुपति कीनो हेत हैं। गोपिनके चोरि चोरि राखे पट कोरि कोरि तेई मानौ जोरि जोरि द्रौपदीको देतहैं ॥ २ ॥ आनि कुल वंशको अकरम उदय होत वाढ्यो छल दुहुँ ओर बंधुन के गृह में ॥ पंडवनको तौ मानखंडन सभा के वीच द्रौपदी पुकारि कह्यो गोविंद सनेह में । अंबरके ह्वैगये अटंबर आकाश लगि खैंचि खैंचि हारी खल पावत न छेह में । भक्तनिके काज ब्रजराज लाज राखनको आपह्वै वजाज बैठे द्रौपदी की देहमें ॥ ३ ॥

होमही ॥ कवित्त ॥ जिनजिन करनाई तिन तिन करआई करनही नाई तिनिकरनही आई है । कागज लिखाई जिनकागरैलिखाई पाई धरामैं धराई तिन धरा धूरिखाई है॥ दैदै लवराई जिनलई है पराइ अब ताहू पास नैकहून रहति रहाई है । जिनजिन खाई जिनउदर समाती खाई जिन न खवाई तिनखाई बहुताई है ॥ १॥ दोहा ॥ वांसचढ़ी नटिनीकहै मंतिकोउ नटनी होइ ॥ ३ ॥ मैं नटकै नटिनी भई नटैसु नटिनी होइ ॥ ॥ २ ॥ दीया जगत अनूपहै, दिया करौ सब कोइ । घरको धरचो न पाइयै जोकरदिया न होइ ॥ ३ ॥ नारदते वरपाइकै प्रथम सुंदरी होइ ॥ पति-

वरते सूरीभई, सुतवरते पुनिसोइ ॥ ४ ॥ तापै नारदजी को अरु ब्राह्मण को दृष्टांत ॥

अतिसनमानकियोलायेजोईसौंपिदियो लियोगांठिबांधितवविनतीसुनाइये । संतनिजिमावोभावैरासलैकरावोभावैजैवौंसुखपावौंकीजैवातमनभाइये । सीधोलाइकोठैधरचोरोकहीसोथीलीभरचोद्विजनिबुलाइदेतक्योंहूं निघटाइये । जितनोंनिकासैंताते सौगुनोवढ़त औरएकएकठौरवीशगुनोदैपठाइये ॥ ५६७ ॥

निघटाइये ॥ दोहा ॥ वुरो विचारैं दुष्ट जन, चाहैं कियो बिगार ॥ जिनको काम न बीगरै, रक्षक नंदकुमार ॥ १ ॥ जै माल इनको बड़ो भइया सो बड़ो भक्तहो ॥ सोरठा ॥ बेटा बाषत नेहजोपै चील्है चालनी ॥ जननी काहि जनेह, भांडमुख भोंडो तनहिं ॥ २ ॥

मूल ॥ जसवंतभक्तिजैमालकीरूडाराखीराठवड़ । भक्तनसों अतिभावनिरंतरअंतरनाहीं । करजोरैंइकपाइमुदितमनआज्ञामाहीं। श्रीवृन्दावनदृढ़वासकुंजक्रीड़ारुचिभावै । श्रीराधावल्लभलालनित्य प्रतिताहिलड़ावै । परमधरमनवधाप्रधानसदनसांचनिधिप्रेमजड़ । जसवंतभक्तिजैमालकीरूडाराखोराठवड़ ॥ १५७ ॥ हरिदासभक्तनहितधनिजननीएकैजन्यो ॥ अमितमहागुनगोप्यसारचितसोईजानै ॥ देखतकोतुलाधारदूरिआवैउनमानै । देइदमान्योपैजाविदितवृन्दावनपायो । राधावल्लभभजनप्रगटपरतापदिखायो । परमधरमसाधनसुदृढ़कलियुगकामधेनुमेंगन्यो । हरीदासभक्तनिहितधनिजननीएकैजन्यो ॥ १५८ ॥ टीका हरीदासवनिकसोकाशीढिगवासजाको ताकोयहपनतनत्यागोब्रजभूमिहीं । भयोजुरनारीछीवछोड़िगयेवैदतीनिवोल्योयोंप्रवीनवृन्दावनरसझूमिहीं। वेटीचारिसंतनिकोदईअंगीकारकरौधरौडोलीमांझमोकोध्यानदृढ़झूमिही । चलेसावधानराधावल्लभको गानकरैं करैंअचरजलोगपरोगामधूमिही ॥ ॥५६८॥ आवतहीमगमांझछूटिगयोतनपनसांचोकियोश्यामवनप्रग

टदिखायोहै । आइदर्शनकियोइष्टगुरुप्रेमभरिपरच्योभावपूरोजाइची रवाटन्हायोहै ॥ पाछेआयेलोगशोगकरतभरतनैन बैनसबकही कहीतादिनहीआयोहै । भक्तिकोप्रभावयामेंभावऔरआनौंजिनिवि नैंहरिकृपायहकैसेजातपायोहै ॥ ५६९ ॥

श्रीवृन्दावन दृढ़वास ॥ अरिल्ल ॥ चिंतामणिकी राशि बिपिन तजि पाइये। अंत मिलै हरि आपु तऊ नहिं जाइये। श्रीवृन्दावन की धूरिसु धूसर तन रहै। अरिहां यह आसारहै चित्त कहूंको नाचहै ॥ ३ ॥ राठवड़ ॥ दोहा ॥ साधन मेटे भरि भुजा, पद रज धरी न शीश ॥ बड़ी वड़ी करनी करी, सो सबह्वैगइ खीस ॥ ४ ॥ बांधैं सो बांधा मिलै, कबहूं छोड़ै नाहिं ॥ मिलै आनि निर्वर्त्त सो, छुटै जु पलके माहिं ॥ ५ ॥ येमे भक्तजनाः पार्थ नमेभक्तास्तुतेजनाः ॥ ६ ॥

मूल ॥ भक्तभारजूड़ैयुगलधर्मधुरंधरजगविदित । बावोलीगोपा लगणनिगंभीरगुनारट।दक्षिणदिशविष्णुदासगांवकासीरभजनभट । भक्तनिसोंयहभावभजैगुरुगोबिन्दजैसे । तिलकदासआधीनसुवरसं तनिप्रतिजैसे । अच्युतकुलपनएकरसनिवह्योज्योंश्रीमुखगदित । भक्तभारजूड़ैयुगलधर्मधुरंधरजगविदित ॥ १६९ ॥ टीका ॥ रहै गुरुभाईदोऊभाईसाधुसेवाहियेऐसेसुखदाईनईरीतिलैचलाईहै। जाइ जामहोछमेंबुलायेहुलसायेअंगसंगगाड़ीसामासोभँडारीदैमिलाईहै । याकोतातपर्यसंतघटतीनसहीजातिवातवनजानैंसुखमानैमनभाईहै। वड़ेगुरुसिद्धजगमहिमाप्रसिद्धिवोलेविनैकैउचारीसोईकाहिकै सुनाई है ॥ ५७० ॥

जूड़ै युगल ॥ दोहा ॥ हरदी तौ जरदी तजै, चूना तजै सुदेत ॥ प्रीतिजु ऐसी चाहिये, दोउ मिलि एकै हेत ॥ १ ॥ दोऊ एक मन ह्वै भक्तिको बोझ उठावै तौ उठ तौ गुरु गोविन्द वैष्णव सब एक रूप है ॥ भक्त भक्ति भगवंत गुरु चतुर नाम वपु एक ॥ २ ॥

चाहतमहोछौकियोहुलसतहियोनितालियोसुनिबोलेकरौवोगिदै

तियारिये। चहूंदिशिडारचोनरिकसौन्योंतोऐसेधीरआवैबहुभरिसेत ठौरनिसवारिये । आयेहरिप्यारेचारैंखूंटतेनिहारैनैनजाइपगधारे शीशविनैलैउचारिये । भोजनकराइदिनपांचलगिछायरह्योपटपह राइसुखदियोअतिभारिये ॥ ५७१ ॥ आज्ञागुरुदईभोरआवौफिरि आसपासमहासुखराशिनामदेवजू निहारिये । उज्ज्वलवसनतनए कलेप्रसन्नमनचलेजातवेगिशीशपाइनिमेंधारिये । वेईदेवताइश्री कवीरअतिधीरसाधु चलेदोऊभाईपरदक्षिणाविचारिये । प्रथमनि रखिनामहराषिलपटिपगलगिरहेछोड़तनबोलेसुनौधारिये ॥ ५७२ ॥ साधअपराधजहांहोततहांआवतनहोइसनमानसवसंततहींआइये । देखीसोप्रतीतिहमनिपटप्रसन्नभयेलयेउरलाइजावोश्रीकवीरपाइये । आगेजोनिहारैभक्तराजदृगधारैचलीबोलेहँसिआपकोईमिल्योसुखदा इये । कह्योहांजूमानिदईभईकृपापूरणयों सेवाकोप्रतापकहौकहां लगिगाइये ॥ ५७३ ॥

विनैलै उचारिये । महाराज संततौ बहुत आये सामा कहां येती ॥ गुरु बोले मन मानौं जितौ देतजावो घटैगी नहीं देनहारो समर्थ है ॥ ॥ १ ॥ आस पास प्रदक्षिणा अश्वमेधी यज्ञको भोगको फेरि जन्मधरे दंडवतसों जन्म कटैगो ॥ २ ॥

मूल ॥ कील्हकृपाकीरतिविशदपरमपारषदशिष्यप्रगट । आ शकरनऋषिराजरूपभगवानभक्तगुरु । चतुरदासजगअभयछा- पछीतरजुचतुरबर । लाषाअद्भुतराइमलषेममनसाक्रमवाचा । र सिकराइमलगोंदुदेवादामोदरहरिरँगराचा । सवैसुमंगलदासदृढ़धर्म धुरंधरभजनभट । कील्हकृपाकीरतिविशदपरमपारषदशिषप्रग ट ॥ १६० ॥ रसुराशिउपासिकभक्तराजनाथभट्टनिर्मलवैन । आगमनिगमपुराणशास्त्रजुविचारचो । ज्योंपारोदैपुटहिसवहिको सारउधारचो । श्रीरूपसनातनजीवभट्टनारायण भाष्यो । सोस र्व्वसुउरसांचयतनकरिनीकेराख्यो । फनीवंशगोपालसुवरागाअनुगा

कौऐन। रसराशिउपासिकभक्तराजनाथभट्टनिर्मलवैन॥ १६१॥

रसराशि उपासिक ॥ कवित्त ॥ रसराशि श्रृंगार ताके उपासिक नाथभट्ट हैं श्रृंगार रस में चारौ रस हैं शांतमन की लगन निर्वल्य दास स्वामी के आधीन सख्यमित्रता समता विश्वास स्वभाव विपर्ययनहोइ॥ वात्सल्य पुत्रवत लड़ाये॥ श्रृंगार कांतकांता समप्रीति आशक्ति सो असक्ति में चारौ रस रहैं जैसे पृथ्वी को गुण सुगन्ध अरु तत्त्व में न मिलै चारौ तत्त्व पृथिवीमें मिलें अप तेज वायु आकाश ऐसेही रस राशि श्रृंगार रस कहावै ॥ १ ॥ भागवते ॥ मन्येऽसुरान् भागवतानधीशे संरंभमार्गाभिनिविष्टचित्तान् ॥ येसंयुगे चक्षततार्क्ष्यपुत्रमंसेसुनाभायुधमापतंतम् ॥ २ ॥ फनी वंशं गोपाल दास के पुत्रनारायण दास ऊंचे गांववाले के पुत्र ॥ ३ ॥

कठिनकालकलियुगमेंकरमैतीनिहिकलंकरही। नश्वरपतिरतित्यागिकृष्णपदसोंरतिजोरी। रावैजगतकीफांसतरकितिनुकाज्योंतोरी। निर्मलकुलकांथडाधन्यपरसाजिहिजाई। विदितबृन्दाबनवाससन्तमुखकरतवड़ाई। संसारस्वादसुखवातकरिफेरिनहींतिनतनचही। कठिनकालकलियुगमेंकरमैतीनिहकलंकरही॥ १६२॥

कठिनकाल॥ स्त्रीचून कोदियो है वाहर तौ रहै श्वानखावै ॥ भीतर रहै तौ मूसोखावै स्त्री की भलीकथा कथा कहा हो या कठिन कालमें करमैतीही निष्कलंक रही सतयुगमें विषै में ब्रह्मा महादेव तपस्वी ऋषीश्वर इंद्रिचाल होतभये वडे राजा दिशाजीतिपै इंद्री न जीतीजाहिं या अवलानें सवइंद्रीजीति के मनवश करि वैराग्य कियो ॥ १ ॥

टीका॥ सेखावतनृपकेपुरोहितकीवेटीजानौ वासहौंखड़ेलाकरमैतीसोवखानिये। वस्योउरश्यामअभिरामकोटिकामहूंते भूलैधामकामसेवामानसीपिछानिये। वीतिजातियामतनवामअनुकूलभयों फूलअंगगतिमानोमातिछविसानिये। आयोपतिगौनोलैनभायोपितमातहियेलियेचितचावपटआभरणआनिये॥ ५७४॥

बस्यौउरश्याम ॥ संग न ध्यान श्याम कैसे बस्यौ ॥ भागवते ॥ तत्स्यात्सर्वत्र सर्वदा ॥ ज्ञानवैराग्य भक्तिसर्वत्र सब देशमें है सबके हृदयमें है घटिबढि क्यों गिन्यो है सो सुनो श्री भगवानको नाम वासुदेव है शुद्धहृदय में झलकै है दर्पनमो रचाहोइ तौ न झलकै मज्यौहोइ तौ आइझलकै सो हृदय दर्पनविषे वासना मोरचे सो करमैती को हृदय उज्ज्वलहरि आइ झलकेसतसंगबिना हृदय कैसे उज्ज्वलभयो कही पूर्वजन्मकी भक्ति अजररही सो उदयभई ॥ ऐसेअंधेरी कोठरीमें वस्तु धरिके विदेशकोगयो॥ आवतही तुरत उठाइ लीनी ऐसे पछिले जन्मकी भक्ति सिद्धकरी जानौ तौ संगकी उपेक्षानहीं ॥ ३ ॥ सानियै ॥ कवित्त ॥ अबहीं गईखरिक गाइके दुहाइबेको बावरीह्वैआई डारि दोहनी औपानकी । कोऊकहै छरीकोऊ भौनपरी डरीकहै कोऊ कहै मरीगति हरीहैअयानिकी ॥ सासुव्रतठानै नंदबोलति सयानै धाइ दौरि दौरि आनै मानौ खोरि देवतानिकी । सखी सबहूँसे मुरझानि पहिचानी कहूँ देखी मुसिकानि वारँगीले रसखानिकी ॥ १ ॥

परयोशोचभारीकहाकीजिये विचारीहाड़चामसोंसँवारीदेहरति नकेनकामकी । तातेदेवोत्यागिमनसोंवेजानिजागिअरेमिटैउरदाग एकसांचीप्रीतिश्यामकी । लाजकोनकाजजोपैचाहैब्रजरासुतबड़ोई अकाजजोपैकरैसुधिधामकी । जानीभोरनौनोहोतसानी अनुरागरंग संगएकवहीचलीभीजोमतिबामकी ॥ ५७५ ॥

हाडचाम सौस्तनो मांसग्रंथी देहतो मलीनमन ॥ सवैया ॥ योबनजोर मली ललिता सबदेखि थकी यह अगम अथाहै । बातचलै चहुंओरहुतै सुयहै मनमें अतिशोचमहाहै । सेवनहार पुकारकरै आलीमांझ की धार लखी परहाहै । नेहकीनाव कुदावपरी मनमेरे मलाह सलाह कहाहै ॥ ॥ २ ॥ जोवनकी सरितागहिरी अरुनैननिनीर नदी उमही है । पीतम को पति याजु लिख्यो बिनखेवटियाकहुं पारभईहै । मानको राजमहा झकझोरत प्रेम कीडोरि सो लागिरही है । मनमेरे मलाह मिलैतो बचो नाहिं बोरि अथाह सलाह यही है ॥ १ ॥ सोवेजिनि ॥ कुंडलिया ॥ ससा अंधेरी छां-

डिदै हरिभजि लाहोलेइ ॥ हरिभजि लाहोलेहि देह जिनि राचीतेरी ॥ नातरयमकेद्वार मूढ पैठेजुपवेरी। नादुपटैअतिचेतचालैजो भाई ॥ भूले- यमपुरजाइ समझि ध्रुवलोक वसाई। अगर आलकस जिनिकरो दुर्लभ मानुषदेह । ससा अंधेरी छाडि दै हरिभजि लाहोलेह ॥ २ ॥ जो दिन जाहि अनंदमें, जीवनको फलसोइ। जीवनको फलसोइ नंदनं दन उरधारै ॥ मंत्रीज्ञान विवेक असुर अज्ञान निवारै ॥ पदम पत्रज्योंरहै कालसम विषैपिछानै। जगप्रपंचते दूरि सत्य सीतापति जानै ॥ अगर अजाके स्वादते तृतितन देख्योकोइ ॥ जोदिन जाइ अनंद में जीवनको फलसोइ ॥ ३ ॥ पानी को धननी करयो, ऊरनभयो गुवाल ॥ ऊरनभयो गुवाल प्रभुहि मानुष तनु दीयो। भक्ति सुधारस छांडि जहर विषयारसपीयो ॥ श्रवण घ्रान मुख प्रान वरणदृग उमगी आपी। तिनको दीनी पीठि निलज्ज कृतघ्नी पापी ॥ अगर श्याम उपकार निधि भज्यो नहीं गोपाल। पानीको धननी करयो ऊरनभयो गुवाल ॥ ४ ॥

आधीनिशिनिकसीयोंवसीहियेमूरतिसोपूरतसनेहतनसुधिबिसराईहै। भोरभयेशोरपरयोपितामातशोचकरयोकारिकैयतनठौरठौर ढूंढ़िआईहै। चारोंओरदौरेनरआयेढिगटरिजानीऊंटकेकरंकमध्य देहजादुराईहै। जगदुरगंधकोऊऐसीबुरीलागीजामें वहुदुरगंधसोसु गंधलौसराहीहै ॥ ५७६ ॥

सुधि बिसराई है ॥ कवित्त ॥ वैदनि बुलाइ लावो स्याननि अनेक भांति यर्पति यतन रूप लागति है नेरेमैं। योगी यती जोइसी उपासिक देव भैरोंके कामरूपके वासी पचिमीडो हाथ हेरेमैं। लोटि लोटि जाइ वीर बोले न अनाज खाइ पनियांको निकसी आजु अधिक अँधेरे मैं। बावरी अनाहक यह भूतन वधाये फिरै आई व्रजवालनंदलालजूके फेरेमें ॥ ५ ॥ चारों ओर वातरस ठौर ठौर ढूंढ़िआयेहैं। कुयोगिनिको आत्मा अप्राप्त तैसे नमिली जगदुर्गंध कोऊ ऐसी बुरी लागी जगत् दुर्गंधहू तैं डरी।

ऊंटको करंक की सुगन्धमानी जगदुर्वासना करंकहूंते बड़ीमानी ॥ १ ॥

बीतेदिनतीनिवाकरंकहीमेंशंकनहीं बंकप्रीतिरीतियहकैसेकारि गाइये । आयोकोऊसंगताहीसंगगंगातीरआईतहांसोअन्हाई हैभूषण बनआइये । ढूंढ़तपरशुरामपितामधुपुरीआये पतेलैबतायेजाइमाथु रमिलाइये । सघनविपिनब्रह्मकुंडपरबरएकचढ़िकरिदेखी भूमिअँशु वाभिजाइये ॥ ५७७ ॥ उतरिकैआइरोइपाइँलपटाइगयो कटीमेरी नाकजगमुखनदिखाइये । चलौगृहबेगिसबलोकउपहासेमिटैसासुघर जावोमतिसेवाचितलाइये । कोऊसिंहव्याघ्रअजुबपुकोविनाशकरैत्रा समेरेहोइ फिरिमृतकजिवाइये । बोलीकहीसांचाबिनभक्ततनऐसोजा नौजोपैजियोचाहौकरौप्रीतियशगाइये ॥ ५७८ ॥

वैभूषणबनआई है ॥ रजोगिनी को बानो करिकै वृन्दावन कहा- जाहि ॥ जैसे विदुरजी दुर्योधन की पौरिपै धनुष धरिकै निकसे श्रीधर- जीने लिख्योहै डरैनहीं । चक्रवर्ती लिख्यो बधिकको बानोतीर्थ यात्रा में कहाकरैं यह श्रीवृन्दावन धामहै बैकुंठहूते सर्वोपरिहै ॥ १ ॥ बरपर चढ़िकरि देखो शरीरमें पिंडोलमाटी लगाये हैं ॥ २ ॥ मृतक जिवाइये तुम सांची कही भक्ति बिना तौ प्रानी मृतकही तुल्यजानो ॥ ३ ॥ नाग लोक स्वर्गलोकमेंहूं भक्तिनहीं ॥

कहीतुमकटीनाककटै जोपैहोइकहूं नाकएकभक्तिनाकलोकमें नपाइये । बरषपचासलगिविषैहीमेंबासकियोतऊनउदासभयेचनेको चबाइये । देखेसबभोगमेंनदेखेएकश्यामतातेकामताजिधामतनसेवा मेंलगाइये । रातितेज्योंप्रातहोतऐसेतमजातभयोदयोलैसरूपप्रभुग योहियेआइये ॥ ५७९ ॥

क्योंकि चारिकौड़ी की भांगसों बावरो ह्वै जाइ है ॥ तापैपोस्ती को दृष्टांत अरु भंगी को जहां रागरंग अमृत भोगकैसे न बावरो होइ ताते विद्या धनराज्य पाइकै मत्तहोइ है जैसे चोखो धन को पाइकै बावरो

भयो ॥ आपुको आपही धिरकारहै॥ १॥ बरष पचास ॥ सप्तमे ॥ मतिर्न- कृष्णोपरतःस्वतोवा मिथोभिपद्येतहतव्रतानाम् । अदांतगोभिर्विशतातमोंधं पुनःपुनश्चर्वितचर्वणानाम्॥ २॥ कवित्त ॥ धनदियो धामदियो भाम सुत नाम दियो दियोजग यश ताके तू चल्यो न रुखमें। नरदेही दीनी सब सुरति सपूरी कीनी कामिनी नवीनीनहीं जान दीनों दुखमें । दामनको रोवै निशि वासर जनमखोवै हरि जो बिसारैगी दी ऐसे तैंने सुखमें। धूरि परी कुल में बड़ाईमें अंगारपरे भारपरो बुद्धिछार परीतेरे मुख में॥ ३॥ पुत्रकलत्र सों चौरासी सों छुटैगो सोनहीं ॥ ४ ॥ कुंडलिया ॥ हाहाकरे न छूटि- है वैरीवश परिजाइ ॥ वैरीवश परिजाइ कालयम के संगहैगो । तात मात सुत वाम धीरकोउ नाहिं धरैगो ॥ दान पुण्य ओषधी तिनहुँते काजन- सरही । होनहारसो बड़ी उलट घटको अनुसरही ॥ अगर उबारै राम पद कै संतनि की बाह । हाहाकरै न छूटही बैरीवश परिजाह ॥ ५ ॥ कुंडलिया ॥ बहुतगई थोरीरही थोरीहूमेंचेत ॥ थोरीहूमेंचेत अमल घटथोरै थोरै । मारग विषै विसार शीशदै सियपतिओरै ॥ द्वैघटिकामें अंग भूप गोविंद पदपायो । दुर्मतिताजिकै पिंगला श्यामहठ सेजवसायो ॥ अगर आलकसजिनकरौ हरिभजिबेकेहेत । बहुतगई थोरीरही थोरीहू में चेत ॥ १ ॥ दयोलै स्वरूप ॥ पंचम । कर्म करन उपजनिपुनिनाश । सुख दुख शोक मोहनितत्राश ॥ इनके हेत दियोहरिनेतन । ताहि अ- न्यथा करै कौन जन ॥ १ ॥ जासुवेदवानी बड़दाम । दृढ़गलबंधा कर्म गुणनाम ॥ तामेंबँधे हरिहि हम ऐसे । वहतहै बैल धनीको जैसे ॥ २ ॥ गुणकर्मनकरि दुख सुख जो जो । देत हैं हरि हम लेत हैं सोसो ॥ ताही- केवश रहत हैं ऐसे । अंधसआंखिके वश जैसे ॥ ३ ॥ मुक्तहू निजतन धारैतालौं । गर्वत्यागि प्रारब्धहै जौलौं ॥ और देह पुनि धरै न ऐसे । स्वप्नको तन जाग्यो जन जैसे ॥ ४ ॥ अहिवनहू में भययाते । संगहैं छह इंद्रीरिपुजाते॥आत्माराम जितेंद्रिय महा॥ताबुधको गृहदूपण कहा ॥ ॥ ५ ॥ पहलेछह इंद्री वैरीजे । घर में रहि ऐसेजीतैते ॥ ज्योंगढ़ में रहि

रिपुनि जीत जन। फिर तहां रहै जहां मानै मन ॥६॥ श्रीशुकउवाच ॥ त्रिभुवनगुरुकी यह आज्ञा सुनि। अपनींहै हलिकई जदिय पुनि ॥ अतिभागवत तऊप्रियव्रत जो। आदर सों शिरनाथ लईसो ॥ ७ ॥ विधिहूमनु की पूजाले पुनि। लखि सनमान प्रियव्रत नारद सुनि ॥ मनवाणी न्यवहार अगोचर। ताब्रह्महि सुमिरत गमनेघर ॥ ८ ॥ पायमनोरथ विधितेमनुजो। नारद को सम्मतलैके सो ॥ सुतहि राजदै अपुत्यागोघर। अतिही विषम विषै विषकोशर ॥ ९ ॥ यों निर्मल मानद प्रियव्रत जो। हरि इच्छाते पायराज्य सो ॥ जिहि प्रभाव जग बंधन हरै। तिह हरिपद में नित चितधरै ॥ १० ॥

आयेनिशिघरहरिसेवापधरायअतिमनकोलगायवहीटहलसुहाई है। कहूंजातआवतनभावतमिलापकहूं आयनृपपूछैद्विजकहांसुधि आईहै। बोल्योकोऊतनधामश्यामसंगपागेसुनि अतिअनुरागेवेगि खवरमँगाईहै। कहोतुमजायईशइहांईअशीशकरौ कहीभूपआयोहि यचाहउपजाईहै ॥ ५८० ॥ देखीनृपप्रीतिरीतिपूंछीसबबातकही नैनअश्रुपातवहरंगीश्यामरंगमें। बरजतआयोभूपजायकैलिवायल्या ऊं पाऊंजोपैभागमेरेवहीचाहअंगमें। कालिंदीकेतीरठाढ़ीभीरदृग भूपलखी रूपकछुऔरैकहाकहैवैउमंगमें। कियोमनैंलाखबेरअयेअ भिलाषराजा कीनीकुटीआयेदेशभीजेसोप्रसंगमें ॥ ५८१ ॥

भूपआयो॥ वनवारीदास मुन्शी अरु दारासिकोह शहजादो ताको प्रसंग राजाको आशीर्वाद न कियो तापै फकीर अरु बादशाहको प्रसंगपाँय फइलायदिये ॥ १ ॥ दोहा ॥ जबलगयोगी जगतगुरु, तबलग आशानिरास। तुलसी आशाकरतही, जगगुरुयोगी दास ॥ १ ॥ कवित्त ॥ दुरित विदारनी सकलजगतारनी यह नहिं प्रतिपारिनीहोप्यारी नाहकी। वृन्दावन रसकेलि कारिनीहो हरिनीहो सबनिके नीकी भांति तनमनदाहकी। सूरति सुकवि रविनंदिनी कृपाकैदीजै लाड़िली औलालकी सुभक्ति उतसाहकी। और

जितीकामनाते सबैप्रवाहदेहु रहै परवाह एक तेरेप्रवाहकी ॥ १ ॥ छप्पय ॥ प्राणजाहु तो जाहु जाहु यश सकल बड़ाई। होहुधर्मको नाश भ्रमहि मग- गहो जड़ाई ॥ आधि व्याधिके दुख करें जेतनको जीरन। करो नहीं उपचारको हो नानापीरन ॥ बहु विधि वचन कठोर कहि सबै निरादर करो किन। श्रीवृन्दावनको छांड़िये यह आवो मन भूलिजिन ॥ ३ ॥

मूल ॥ गोविंदचंदगुणग्रथनकोखड्गसेनवाणीविशद ॥ गोपी ग्वालपितुमातुनामनिर्णयकियोभारी। दानकेलिदीपकप्रचुरअति बुद्धिउचारी ॥ सखासखीगोपालकाललीलामेंवितयो। कायथकु लउद्धारभक्तदृढ़अनतनचितयो ॥ गौतमीतंत्रउरध्यानधरतनत्या गोमंडलरसद। श्रीगोविंदचंदगुणग्रथनकोखड्ग ॥ १६३ ॥ टीका ॥ ग्वालियरवाससदारासकोसमाजकरै शरदउज्यारीअतिरंगबढ़्योभा रीहै। भावकीवढ़निदृगरूपकीचढ़नितत्ताथईकीरढ़निजोरी सुंदर निहारीहै। खेलतमेंजायमिलेत्यागितनभावनासों झेलतअपारसुख रीझिदेहवारी है। प्रेमकीसचाईताकीरीतिलै दिखाईभई भावकनि सरसाई बातलागीप्यारीहै ॥ ५८२ ॥

वाणी विशद ॥ पद ॥ द्वै गोपिन बिचबिच नँदलाला। श्याम मे- घके दुहूं ओर राजत नवादामिनि वाला। करत नृत्य संगीत भेद गति गरजत मोर मराला। फहरत अंचल चंचल कुंडल थहर रहै उरमाला ॥ मध्यमिली मुरली मोहन ध्वनि गान वितान छयो तिहिं काला। चलियेझु- मकि झंकझंकरि वलयमिलि नूपुर किंकिणि जाला॥देवविमाननि कौतुक मोहे लखि भयो मदन बिहाला। खड्गसेन प्रभु रैनिशर्दकी वाढ़्यो रंगर- साला ॥ १ ॥ पदपद गावत गावतही प्राण त्यागे देहवारी है। देह छो- ड़िके ताही भावको प्राप्त भयो। सनेहकी द्वैजाति एक विछुरनि पूरे सनेही तन मिलिहूंमें छोड़े विछुरनहूंमें ॥ १ ॥ दोहा ॥ चढ़िके मैन तुरंग परचलिबो पापकमाहिं। प्रेम पंथ ऐसो कठिन, सब कोउ निवहत नाहिं ॥ २ ॥

मूल ॥ सखाश्यामममनभावतोगंगाग्वालगँभीरमत ॥ श्यामाजूकीसखीनामआगमविधपायो । ग्वालगायब्रजगाँवपृथकनीकेकरिगायो ॥ कृष्णकेलिमुखझिलिअवटउरअंतरधरई । तारसमेंनितमगनअसद्आलापनकरई ॥ ब्रजबासआशब्रजनाथगुरुभक्तचरणरजअनन्यगति । सखाश्यामममनभावतो० ॥ १६४ ॥ टीका ॥ पृथ्वीपतिआयोवृंदावनमनचाहभई सारंगसुनावैकोऊजोरावरिल्याये हैं वल्लभहूसंगस्वर भरतहीछायोरंग अतिहीरिझायोद्दगअंशुवावहायेहैं । ठाढ़ोकरजोरिबिनैकरीपैनधरीहिये जियेब्रजभूमिहीसोंवचनसुनायेहैं । कैदकरिसाथलिये दिल्लीतेछुटायदिये हरीदासतौवरनैं आयेप्राणपाये हैं ॥ ५८ ॥

ब्रजबास आश ॥ कबित्त ॥ निकुंजको चंद अरविन्द रस सिन्धु को लाड़िली कुंवारि मोहिं यहे दीजे । आनन्द को धाम अभिराम या विपिन को जनम पर जनम कोऊ जीव कीजे ॥ रहूं अति धूरि धूसर सदा प्रेम मय सुनत वर वानी कल केलि जीजे । नवल नव कुंज में फिरौं अलबेली दिन निराखि बन रूप भरि द्दगन पीजे ॥ १ ॥ परे जे पतौवा सूखे भूख में पीयूष जैसे खाऊं रूख रूख तरे ऐसी तोको जीवका । प्यास ते बढ़ैजु पीर तरनि तनैया तीर अंजलि को भरि धीर छीर नीर पीवका । केलि कल जोहत विमोहत सु ह्वै है कवि वृन्दावन कुंज पंकज अमर अमीनका । आनन्दमें रूमि घूमि बसोंगा बिलास भूमि आरती को दूमि जैसे सुख पावे छीवका ॥ २ ॥ ब्रजभूमि को लाल जू ने स्वाद अपने मुख सों लियो ब्रह्मांड चाटपै ॥ १ ॥ द्दग अँशुवा ॥ दोहा ॥ रूप चोज की बात पुनि, और कटीली तान । रसिक प्रवीननके हृदै, छेदन करै वे बान ॥ १ ॥ बतरस नीर गँभीर अति, कोउ न पावत थाह । मीन लीन रस रसिक जो, सोई पावत ताह ॥ २ ॥

मूल ॥ सोतीइलाघसंतनिसभादुतियदिवाकरजानियो ॥ परमभक्तिपरतापधर्मधुजनेजाधारी । सीतापतिकोसुयशवदनशोभितअ

तिभारी ॥ जानकीजीवनिचरणशरणथातीथिरपाई। नरहरिगुरुप्रसादपूतपूतैंचलिआई॥ रामउपासकछापदृढ़औरनकछुउरआनियो॥ सोतीइलाघसंतनिसभादुतियदिवाकरजानियो॥ १६५ ॥ जीवतयशपुनिपरमपदलालदासदोनोंलही ॥ ह्वैहैहरिगुणखानिसदासतसँगअनुरागी। पद्मपत्रज्योंरह्योलोभकीलहरनलागी॥ विष्णुरातसमरीतीवघेरैंसोतनत्याज्यों। भक्तवरातीवृंदमध्यदूलहज्योंराज्यों॥ खरीभक्तिहरिषांपुरैंगुरुप्रतापगाढ़ीगही। जीवतयशपुनिपरमपदलालदासदोनोंलही॥ १६६ ॥

सुयश वदन शोभित ॥ दोहा ॥ तुलसी रसना जो भली, निशि दिन सुमिरै राम ॥ नहीं तो खैंचि निकारिये, मुखमें भलो न चाम ॥१॥ छापदृढ ॥ सवैया ॥ आगम वेद पुराण बखानत कोटिक निर्गुण जाहि न जाने। जे मुनि ते पुनि आपहि आप को ईश कहावत सिद्ध सयाने। धर्म सबै कलिकाल ग्रसे जप योग वैराग लै जीव पराने। को करि शोक मरै तुलसी हम जानकीनाथके हाथ बिकाने॥१॥जीवत यश ॥ कुंडलिया ॥ एक द्वैद्वै अरु चौपरी पुनि लाई दुहु हाथ॥पुनि लाई दुहुँ हाथ कथा हरिजन मिलिगावै। जीवत यश जगमाहिं बहुरि सदगति को पावै ॥ देव पितर विधि अवधि कोऊ बाधा नहिं करई। अनन्य भजन गुरु गदित नित्य गोविंद अनुसरई ॥ अगर उभै ताकी बनै ह्वै संतनिके साथ ! इक द्वैद्वै० ॥ १ ॥ कायाकसो कै वन वसो, हँसो रहौ गहि मौन। तुलसी मन जीते विना, मिटै नहीं दुख जौन ॥ विष्णुराते बघेरे में पारायन करवाई पूरी भई जब शरीर त्यागि दियो ॥ १ ॥

भक्तनहितभगवानरचीदेहीमाधौग्वालकी ॥ निशिदिनयहैविचारदासजिहिविधिसुखपावैं। तिलकदाससोंप्रीतिहृदैअतिहरिजनभावैं॥ परमारथसोंकाजहियेस्वारथनहिंजानैं। दशधामत्तमरालसदालीलागुनगानैं। आरतहरिगुणशीलसमप्रीतिरीतिप्रतिपालकी। भक्तनहित० ॥ १६७ ॥ अगरसुगुरपरतापतेपूरीपरीप्रयागकी॥ मा

नसवीचककायरामचरणनचितदीनों । भक्तनसोंअतिप्रेमभावना करिशिरलीनो ॥ रासमध्यनिजोनिदेहद्युतिदशादिखाई । आड़ौच लियोअंकमहोछैपूरीपाई ॥ क्यारेकलशऔलीध्वजाविदुषश्लावाभा गकी । श्रीअगररसुगुर० ॥ १६८ ॥ प्रगटअमितगुणप्रेमनिधिधन्य विप्रजिननामधरचो ॥ सुंदरशीलसुभावमधुरवाणीमंगलकरु । भक्तनकोसुखदैनफल्योबहुधादशधातरु ॥ सदनबसतनिर्वेदसार भुकजगतअसंगी । सदाचारउदारनेमहरिदासप्रसंगी ॥ दयादृष्टिव शआगरैंकथालोकपावनकरचो । प्रकटअमितगुणप्रेमनिधिधन्य विप्र० ॥ १६९ ॥

दयादृष्टिकरिकै जगत्को पार उतारे ।याते वृंदावन निकट ताहि छोडिकै आगरे रहे कथातो सबहीकहैं । पै क्रियावान जनकी सुनिकै पारलगैं ॥ कवित्त ॥ जैसे शशिनिशिको अकाश में प्रकाश पावै औसिरावै ताप-तनकी । तैसे रसिकाई औ अननताई बात मुख शोभित है क्रिया वानजा नकी । जैसे धनधामभाम श्यामजूके लागेकाम होत अभिराम दुख-ग्राम नाशैमनकी । ऐसे हरि गुण कोऊ पुण्य न बखानकरै तौपै कान प्राणहरै गुणगनकी ॥ १ ॥ आगरे वृंदावन के घाटको, जल आवत इहबाट । ताते यह है आगरो, और गांव सबघाट ॥ १ ॥

टीका ॥ प्रेमनिधिनामकरैसेवाअभिरामश्यामआगरोशहरानेशि शेशजलल्याइये । वरषासुऋतुजितिततअतिकीच भई भईचितचिं ताकैसेअपरसआइये । जोपैअंधकारहीमेंचल्योतौबिगारहोत चले यों विचारिनीचछुवैनसुहाइये । निकसतद्वारजवदेख्योशुकवारएक हाथमेंमसालयाकेपाछेचलेजाइये ॥ ५८४ ॥ जानीयहैबातपहुँचाये कहूंजातयहअबहींबिलातभलेचैनकोऊधरीहै । यमुनालौंआयो अचरजसोलगायोमन तनअन्हवायोमतिवाहीरूपहरीहै ॥ घटभरि धरचोशीशपटवहआयगयोआयगयोघरनहींदेखकहाकरीहै । लागी चटपटीअटपटीनसमझिपरैपटभटिभईनईनैनहीरझरीहै ॥ ५८५ ॥

सुकुवार ॥ एक मसालमें कूपीते तेल डारिविकी शोभाहो न्यारी ॥ कवित्त ॥ लाल चहु चही पागबांधी अनुरागही सोंतापै झुकि रह्यो तुर्रा अतिही विशालहै । झँगा घेरदार फेंटा बांध्यो अति चातुरी सों गरे गुंज-माल शोभादेत प्रेम जाल है । बाहु ऊंचोकै चढ़ाय चूड़ा चमकाया अति औचकही आये जिस हाथ में मसाल है । आगे आगे चल्यो जाय मनको लगाय लियो सुधि बिसराय चित करत निहाल है ॥ १ ॥ सोरठा ॥ जामुखसों जो नाम, निकसत सो प्रगटतभयो । बहुरंगी वह श्याम, ह्वै सरूप अँखियन लग्यो ॥ २ ॥ दोहा ॥ पुतरीकारी आंखिकी, रूप श्यामको मानि ॥ वासों सब जगदेखिये, वा बिन अंधोजानि ॥ ३ ॥ कारीदृगकी पूतरी, कारो हरिको अंग ॥ जिनसों सब जगदेखिये, जिन बिनरूप न रंग ॥ ४ ॥ प्रेमकी निधि प्रतिप्रेमानिधि, भरचो प्रेमउरजाल । सोई मूर-तिधारकै, प्रगट भयो तिहिकाल ॥ प्रेमप्यारेमें अंतर नहीं ॥ १ ॥ प्रेम प्रीतिमें अंतर येतो । बीसीतीन साठहै तेतो ॥ २ ॥ कहाकरी है और तौ अंधेरेके चोर याने मसालबरायकै चितचुरायो भजन भूलिगयो मसालहीको ध्यानरहै ॥ ६ ॥

कथाऐसीकहैंजामेंगहैंमनभावभरेकरैंकृपादृष्टिदुहुजनदुखपायो है । जायकैसिखायोबादशाहउरदाहभयोकहीतियाभलीकोसमूहघ रच्यायोहै ॥ आयेचोबदारकहेचलौयहीबारबार झारीधरचोप्रभुआगे चाहैशोरलायोहै । चलेतवसंगगयेपूछैंनृपरंगकहा तियनिप्रसंगक रौकहिकेसुनायोहै ॥ ५८६ ॥ काहूभगवानहीकीवातसोवखानकहौं आनिवैठेनारीनरलागीकथाप्यारीहै । काहूकोविडारैंझिझकारैनै कुटाविषे दृष्टिकैनिहारैताकोलागेदोषभारीहै । कहीतुमभली तेरीगलीहीकेलोगमोको आनिकेजताईवहवातकछून्यारीहै । बो ल्योयाकोराख्योसनकरौंानिरधारीकैचलेचोबदारलैकेरोकैप्रभुधारी है ॥ ५८७ ॥ सोयोबादशाहनिशिआयकैसुपनादियोकियोवाको

इष्टभेषकहीप्यासलागीहै । पीवोजलकाआवखानेलेवखानेतव अति हीरिसानेकोपिवावैकोउरागीहै । फिरिमारीलातअरेसुनीनहींवातमें रीआयफुरमावोज्योंईप्यावैवड़भागीहै । सोतोतैलैकैदकरयोसुनि अरवरयो डरयोभरयोहियेभावमतिसोवततैंजागीहै ॥ ५८८ ॥ वौ रेनरताहीसमैवेगिदेलिवायल्याये देखलपटायेपायनृपदृगभीजेहैं । साहिवातिसायेजायअवहींपिवावोनीरिऔरपैनपीवैंएकतुमहींपैरीझेहैं । लेवोदेशगावँसदापावँहीसोंलग्योरहौं गहोनहींनेकुधनपायवहुछीजे हैं । संगदैमसालताहीकालमेंपठायेयौ कपाटजालखुलेलालप्यायो जलधीजेहैं ॥ ५८९ ॥

कथाऐसी कहै ॥ दोहा ॥ नातोनेहरस रंगभरि, कहैं कथा निर्वेद ॥ जैसे चिठी विदेशकी, बाचनहीमें भेद ॥ १ ॥ गहौ नहीं नेकु ॥ दोहा ॥ जवलगि भक्तिसकामता, तबलगि कच्चीसेव ॥ कहि कवीरवेक्योंमिलैं निहकामी निजदेव ॥ २ ॥

मूल ॥ दूवरोजाहिदुनियाकहैसोभक्तभजनमोटोमहंत । सदाचा रगुरुशिष्यत्यागिविधिप्रगटदिखाई । बाहरभीतिरविशदलगीनहिंक लियुगकाई ॥ राघवरुचिरसुभावअसदआलापनभावैं । कथाकीरत ननेममिलैसंतनिगुणगावैं ॥ तापनोलिपूरोनषक ज्योंघनअहरनही रोसहंत । दूवलोजाहि० ॥ १७० ॥ दासनिकेदासंतकोचौकसचौं कीयेमंडी ॥ हरिनारायननृपतिपदमवेरछैंविराजै । गावँहुशंगावाद अटलऊधोभलछाजै ॥ भेलैतुलसीदासभटख्यावदेवकल्याने । वो हिथविगरामदाससुहेलैपरमसुजाने ॥ औलीपरमानंदकैधुजासवलध र्मकोगंडी । दासनिकेदासं० ॥ १७१ ॥ अवलाशरीरसाधनसवला येवईहरिभजनवल । दमाप्रगटसवदुनीरामवाईवीराहीरासनि । ला लीनारालक्षगगुलपारवतीजगतधनखीचनि ॥ केसिधनागोमतीभक्त उपासिनि । वादररानीविदितगंगायमुनारैदासनि ॥ जेवाहरषाजोप सिनिकुंवररायकीरतिअमल । अवलाशरीरसाधन० ॥ १७२ ॥

कन्हरदाससंतनिकृपाहरिहृदैलावोलह्यो ॥ श्रीगुरुशरनैआयभक्ति मारगसतजान्यो। संसारीधर्महिछांड़िझूठिअरुसांचपिछान्यो॥ ज्यों शाखाद्रुमचंद्रजगततेइहिविधिन्यारो। सर्वभूतसमदृष्टिगुणगंभीरअतिभारो॥ भक्तभलाईवदनानितकुवचनकवहूंनाहिंकह्यो। कन्हर० ॥

भजनवल ॥ हरिके भजन सों कलियुग में साधन सबल किये ॥ छप्पय ॥ महाकठिन कलिकाल में कहोलाज कैसेरहै ॥ जनम करम नितनेम प्रेमसों हरिगुण गावै ॥ ताहि कहत पाषंड काहि तू जगभरमावै ॥ लाबरलौंड लवार ताहि आदर करिलीजै ॥ शीलवंत गुणवंत साधु पकरि ताहि धक्कादीजै ॥ चतुर दासइक आशहरि सोई व्रतपन नाहिंनगहै ॥ महाकठिन० ॥ १ ॥ सहन शील संतोष मनमें नहिंलावै ॥ निष्प्रेही हरिशरण प्रेमसों हरिगुण गावै ॥ रागद्वेष सों रहत रुचिर सतसंगति कीजै ॥ हरि गुरु साधुप्रसाद सोई हिरदै धरिलीजै ॥ चतुरदास राधारव न निशि बासर इहि विधि कहै ॥ महाकठिन कलिकालमें० ॥ २ ॥ कवित्त ॥ आजु कलिकाल ऐसो आयो है कराल अति राखै जो गुपाल टेक तौतौ बृन्दजीजिये ॥ बोलिये न चालिये जु वैठि पिंड पालिये जु आंखि कान मूंद दोय मौन व्रत लीजिये ॥ देखी अनदेखी जानि सुनी अनसुनी मानि माला गहि पानि हान लाभ न चित दीजिये ॥ कीजिये नरोष जोपै कहै कोऊ वीस सीष लीजै धरि शीश जगदीश सापि कीजिये ॥ ३ ॥ यह भक्ति को स्वरूप है साँचो लह्यो एक तौ देखत को बड़ो एक गुण में बड़ो जैसे गोरप की डीवीसो इनको हृदय गुण में बड़ो दश अंगुल को तापै दश हजार गारी समाय जाहिं क्षमा सों ॥ १ ॥ सवही ते धरनी बड़ी जापै नव खंड वसैं ताते वड़े सिन्धु तापै टापू दिखरातहै। ताते वड़े कुंभ ताते तीनही चुलू में किये ऐसेहू अकाशे में अलेपै जात हैं ॥ दीरघ गगन अनी पूरन पगन भयो माप्यो ब्रह्मांडगयो बामनको गातहै। होतो तुम वड़े तुमहूं ते वड़े संत जाके हृदय में जगन्नाथ जू मसि समातहै ॥ १ ॥ दोहा ॥ सवही घट में हरि

वसे, ज्यों गिरि सुतमें ज्योति ॥ ज्ञान गुरुचकमक विना, कैसे परगट होति ॥ २ ॥ झूठि अरु सांचिसो संतसों ज्ञान होय जब पिछाने जैसे गुमास्ते के संग सों साहूकार के बेटे ने झूंठो जवाहर पिछान्यो तब फोरिडारयो ॥ ऐसे सतसंग सोंज्ञान ह्वै जब संसार झूंठो जानै जब छोडि दे ॥ १ ॥ कुवचन कबहूं ॥ दोहा ॥ संत न निंदा अति बुरी, भूलि करो जिन कोय । किये सुकृत सब जनमके, क्षणमें डारै खोय २ ॥

लट्योलटेराआनिविधिपरमधरमअतिपीनतानि । कहिनीरहिनीएकएकप्रभुदअनुरागी । यशवितानजगतन्योसंतसंमतबड़भागी । तैसोईपूतसपूतनूतफलजैसोपरसा । हरिहरिदासनिटहलकवितरचनापुनिसरसा । सुरसुरानंदसंपुटायदृढकेशवअधिकउदारमन । लट्योलटेराआनिविधि परमधरमअतिपीनतन ॥ १७४ ॥ केवलरामकलियुगकेपतितजीवपावनकिया । भगतभागवतविमुखजगतगुरुनामनजाने । ऐसेलोगअनेकऐंचिसनमारगआने । निरमलरतिनिष्कामअजातेंसदाउदासी । तत्त्वदरशीतमहरणशीलकरुणाकीरासी । तिलकदासनवधारतनकृष्णकृपाकरिदृढदिया । केवलरामकलियुगकेपतितजीवपावनकिया ॥ १७५ ॥ टीका ॥ घरघरजायकहैंयहैदानदीजैमोकोकृष्णसेवाकीजै नामलीजैचितलायकै । देखेभेषधारीदशबीसकहुअनाचारी दियेप्रभुसेवनकेरीतिहिंसिखायकै । करुणानिधानकोऊसुनैनहींकानकहूं बैलकेलगायोसांटोलोटेदयाआयकै । उपज्योप्रगटतनमनकीसचाइअहोभयेतदाकारकहोकैसेसमुझायकै ॥ ५९० ॥

लट्यो लटेरा ॥ दोहा ॥ कविरा हरिके भावतो, दूरिहि तेदीखंत ॥ तन छीने मन उन मने, जग रूठडे फिरंत ॥ सोरठा ॥ कहा चीकने गात, रस पूछत खिसले परैं । सरस न आवै बात, राख उडै रूखे हिये ॥ २ ॥ और अनुमान करै जैसे मुजावर औ काजीने लँगरी भेड को अनुमान कियो तत्त्वदरशी तापै दृष्टांत बादशाह अरु सुथरा को घर घर जाय कहै

क्योंकि करुणासिंधुहै ॥ जैसे कोऊ वेरी हथकरी वाले को जायकै छुटा-
वै क्योंकि वह तो आपसकै नहीं ॥ आपनहीं जायकै छुटावैसाधवो दीन
वत्सलाः। जैसे चंद्रा सुथरा ने घर बैठेही बादशाह को तत्त्व दरशायो रीति
दिखायके भोग लगाय के खायो ॥ १ ॥

मूल ॥ श्रीमोहनमिश्रितपदकमलआशकरनयशविस्तरचो। धर्मशीलगुणसींवमहाभागवतराजऋषि । पृथ्वीराजकुलदीपभीम सुतविदितकील्हाशिषि। सदाचारअतिचतुरविमलवाणीरिचनापद। शूरधीरउदारविनयभलपनभक्तनिहद । सीतापतिपदराधासुबरभ जननेमकूरमधऱ्यो । श्रीमोहनमिश्रितपदकमल आशकरनयश विस्तऱ्यो ॥ १७६ ॥ टीका ॥ नरवरपुरताकोराजानरवरजानों मोहनजूधरियेसेवानीकीकरी है । घरीदशमंदिरमेंरहैरहैचौकद्वार पावतनजानकोऊऐसीमतिहरीहै । परचोकोऊकामआयअवही लिवायल्यावो कहैपृथ्वीपातिलोगकानमेंनधरीहै । आईफौजभारी सुधिदीजियेहमारीसुनि वहूबातटरीआतिपरीखरवरीहै ॥ ५९१ ॥ कहिकैपठाईकहीकीजियेलराईसुनिरुचिउपजाईचालिपृथ्वीपाति आयोहै। पऱ्योशोचभारी तबबातयोंविचारी कहीआयएकजावोगयो अंचिरजपायोहै । सेवाकरिसिद्धिसाष्टांगह्वैकेभूमिपरेदेखिवडीवेरि पावँखड़गलगायोहै । कहिगईऐड़ीऐंपैटेढहूनभौहकरीकरिनित नेमरीतिधीरजादिखायोहै ॥ ५९२ ॥ उठिचिकडारितबपाछे सोनिहारिकियोमुजराविचारि बादशाहअतिरीझेहैं । हितकीसचा ईयहैनेकुनकचाईहोतचरचाचलाईभावसुनिसुनिभीजेहैं । बीतेदिन कोऊनृपभक्तसोसमायोपृथ्वीपातिदुखपायोसुनीभोगहरिछीजेहैं ।करै विप्रसेवातिन्हेंगावँलिखिन्यारेदिये वाकेप्राणप्यारेलाड़करीकरौकहि धीजे हैं ॥ ५९३ ॥

पावत न जान कोऊ पटकेमें मनचट जाय ॥ १ ॥ छिनमें प्रवीन छिन माया में ॥ २ ॥ पै अठाली मन न रहै मन लगाइये वांशकी गां-

ठिकी नाई साधन करिये मन वश करिबेको जैसे ठाटी हरीने साधन कियो सो उलीचोही धीरज फकीर शहजादे को दृष्टांत ॥ १ ॥

मूल ॥ निहकंचनभक्तनिभजै हरिप्रतीतिहरिवंशके ॥ कथाकीर्तनप्रीतिसंतसेवाअनुरागी । खरियाखुरपारीतिताहिज्योंसर्वसुत्यागी । संतोषीशुठिशीलअसदआलापनभावै । कालवृथानाहिंजायनिरंतरगोविंदगावै ॥ शिषसपूतश्रीरंगकोउदितपारषदअंशके । निहकंचनभक्तनभजैहरिप्रतीतिहरिवंशके ॥ १७७ ॥

खरिया खुरपा रिति ॥ भारत को इतिहास खरिया खुरपा सर्वसदान दीये । सो बदरिया वाही के शिरपर रही । बड़े बड़े राजनने बड़ो बड़ो दान दियो । पैखरिया खुरपा की बरोबर न भयो सर्वसु दियो ॥

हरिभक्तभलाईगुणगंभीरबांटैपरीकल्यानके ॥ नवलकिशोरदृढ़व्रतअनन्यमारगईयकधारा । मधुरवचनमनहरणसुखदजानतसंसारा ॥ परउपकारबिचारिसदाकरुणाकीरासी । मनवचसर्वसुरूपभुक्तपदरैनिउपासी ॥ धर्मदाससुतशीलशुठिमनमान्योकृष्णसुजानके । हरिभक्तभलाईगुनगंभीरबांटैपरीकल्यानके ॥ १७८ ॥

वीठलदासहरिभक्तकोदुहूंहाथलाडूलिया ॥ आदिअंतनिरवाहभक्तपदरजव्रतधारी । रह्योजगतसोंऐंड़तुच्छजानैसंसारी ॥ प्रभुतापतिकीपतिकीपधितप्रकटकुलदीपप्रकासी । महतसभामेंमानजगतजानैरैदासी ॥ पदपढ़तभईपरलोकगतिगुरगोविंदयुगफलदिया ॥ वीठलदासहरिभक्तकोदुहूंहाथलाडूलिया ॥ १७९ ॥

हरि भक्त भलाई ॥ छप्पय ॥ गुरु भक्ता गुणवंत ज्ञान विज्ञान विचारै । पर उपकारी पिंडप्रान पर द्रोह निवारै । परिधन को परित्याग रहै परनारि उदासा । सर्वात्मा सर्वज्ञ सर्वउरमें नितबासा । तत्त्ववेत्ता तिहुंलोक में ऐसी धरनी जो धरे । ईको तरसै आपने पुरुष पुरातन उद्धरै ॥ १ ॥ तुच्छ जाने ॥ दोहा ॥ चाख्यो चाहै प्रेमरस, राख्यो चाहै मान । इक दैदै अरु चोपरी, देत सुनौ नहिं कान ॥ २ ॥

भगवन्तरचेभारीभगतभक्तनके सनमानको ॥ क्राहवश्रीरंगसु मनिसदानंदसर्वसुत्यागी । श्यामदासलघुबअनन्यलाषाअनुरागी। मारुमुदितकल्याणपरसवंशीनारायन । चेताग्वालगुपाल शंकरलीलापारायन । संतसेयकारजकियातोषतश्यामसुजानको । भगवंतरचेभारीभगत भक्तनकेसनमानको ॥ १८० ॥ तिलकदासपरकामकोहरीदासहरिनिर्मयो । शरणागतकोसिवरदान दधीचिटेकवलि । परमधरमप्रहलादशीशजगदेवदेनकालि । वीकावतबानैतभक्तिपनधर्मधुरंधर । तूवरकुलदीपकसंतसेवानित अनुसर । पारथपीठअचरजकौनसकलजगमेंयशलियो । तिलकदासपरकामकोहरिदासहरिनिर्मयो ॥ १८१ ॥ टीका प्रह्लादआदि भक्तगायेगुणभागवतसर्वइकठौर आयदेखेहरिदासमें । रीझजगदेव सोंयोंकहिकेवखानकियो जानतनकोऊसुनोकरलैप्रकासमें। रहैएकनटीशक्तिरूपगुणजटीगावै लागैचटपटीमोहयाचैमृदुहासमें। राजारिझवारकरैदेवकोविचारिपैनपावैसारकाट्योशीशराख्योतेरे पासमें ॥ ५९४ ॥ दियोकरदाहनोमेंयासोंनहींयाच्योकाहू सुनि एकराजा भेदभावसोंवुलाई है। नृत्यकरिगाईरीझलेवोकही आयदेऊओट्यो वायोंहाथरिसभरिकैसुनाईहै । येतोअपमानपानदक्षिणलैदियोयेहो नृपजगदेवजूकोऐसेकहांपाईहै । तासोंदशगुणीलीजैमोकोसोदिखाइदीजैदईनहींजायकाहूमोहींकोसुहाईहै ॥ ५९५ ॥

तोषत श्याम ॥ श्लोक ॥ भक्ते तुष्टेहरिस्तुष्टो हरौतुष्टेचदेवताः ॥ भवंति सिक्ताःशाखाश्चतरोर्मूलनिषेचने । रहै एकनटीसोकाली को अवतार रहै। सो वह नटीरूप गुणगान । राई त्रिदोषता में आयकै कोन मरैं सो जगदेव पँवार मोह्यो सो मरयोही है ॥ १ ॥

कितौसमुझावैल्यावोकहै यहैजकलागीगइवड़भागीपासवस्तुमेरीदीजिये । काटिदियोशीशतनरहैईशशक्तिलखोल्याईवकशीशथा

ढ्ढांपिदेखिलीजिये । खोलिकैदिखायोनृपमूरछागिरायो तनधनकी नवातअवयाकोकहाकीजिये । मैंजुदीनोहाथजानिआनिग्रीव जोरि दईलईवहीरीझपदतानसुनिलीजिये ॥ ५९६ ॥ सुनीजगदेवरीतिप्री तिनृपराजसुतापितासोंवखानिकहीवाहीकोलैदीजिये । तवतोवुला येसमुझाये बहुभांति खोलिवचनसुनाये अजूवेटीमेरी लीजिये ॥ नत्योसतवारजब कहीडारोमारिवेलैमारिवेकोवोलीवहमरोमतिभी जिये । दृष्टिसोंनदेखेकहील्यावोकाटि मूड़ल्यायेचहैंशीशआंखिनि कोगयोफिररीझिये ॥ ५९७ ॥

रीझपद ॥ कवित्त ॥ नृत्यगान अभिनय रूपरीझि रचिकरि विधिहू को शोच परचौ नेही कैसे बचैंगे । लाख लाख लोगन के घाट घर कैस कहूं पांच सात बनिआये तेऊ यामें पचेंगे । करत विचार शोच सागरन वारापार वेई करतार कछु बुद्धिबल रचेंगे । हियेही में आय कही मति पछिताहि तब वाहि वाहि रोयबो बनाय और सचेंगे ॥ सोरठा ॥ नेही अक्षर दोय, येतौ विधना ना रचे । को पावैगो और, नेह पंथ नेही बिना ॥ १ ॥ प्रीत नृप राजसुताकै भई वाके रूप पै रीझि पादशाह की बेटी जाति पांति न बिचारी ॥ दोहा ॥ नृप विद्या अरु बेलि तिय, येन गनैं कुल जाति । जो इनके नियरे बसै, ताहीको लपटाति ॥ ३ ॥ याको कहा कीजिये रीझके पचायबेको बाह बाड़कार है ॥ १ ॥ शाह-जहां को दृष्टान्त ॥ ३ ॥

निष्ठारिझवाररीतिकीनीविस्तारियह सुनोसाधुसेवाहरीदासजूने करीहै । परदानसंतसोंहदेतहैंअनन्तसुखरह्योसुखजानिभक्तसुताचि तधरीहै । दोऊमिलिसोवैंऋतुग्रीषमकीछातपर गातपरिगातमोंये सुधिनहींपरीहै । दातनकेकरबेकोचढोनिशिशेषआप चादरउठा यनीचेआयेध्यानहरीहै ॥ ५९८ ॥ जागिपरेदोऊअरबरदेखिचा दरकोपेखिपहिंचानिसुतापिताहीकीजानीहै । सन्तदृगनयेचलेबै ठेमगपगलयेगयेएकांतमें योंविनतीबखानीहै । नेकुसावधानह्वैके

कीजियेनिशंककाज दुष्टराजछिईपाय कहैकटुवानीहै। तुमकोजु नावधूरेजरैसुनिहियोमेरोडरै निंदाआपनिहोतसुखदानीहै ॥५९९॥ इतनीजतावनीमेंभक्तिकोकलंकलगेएपैशंकवहीसाधुघटतीनभाइये। भईलाजभारीविषयवासधोयडारीनीके जीकेदुखराशिचहैकहूंउठि जाइये। निपटमगनकियेनानाविधि सुखदिये पैनजानिमिललाल निलड़ाइये । गोविंदअनुजजाकेबांसुरीको सांचोपनमनमेंनल्या योनृपइहिविधिगाइये ॥ ६०० ॥

बांसुरी को सांचोपन ॥ छप्पय ॥ टेक एक बंशी तनी जनगोबिन्द की निर्वही। युगलचंद किरपाल तासुको दास कहावै। पादशाह सों पैज हुकुम नहिं वेनु बजावै । वोकावत वानेत भक्त बंशपांडव अवतारी । कपिज्यों बीरालियो उठाय शीश अंबर कै झारी। पीठपरीक्षित सार का सभाशापसंतन कही। टेक एकबंशीतनी जन गोविन्दकी निर्वही ॥ ॥ १ ॥ दोहा ॥ गोविन्दा गाढ़ी गही, हुकुम किया बादशाह । कैमुरली की टेरदै, कै अंबर चुपपेवाह ॥ २ ॥ अंबर चपुपै वाहसी, मुरलीवाजै नाह ॥ मुरलीवाजैनाह देह, एकै साधवके माह ॥ ३ ॥

मूल॥ नंदकुवँरकृष्णदासको निजपदतेनूपुरदियो ॥ तानमा नसुरतालसुंदरशुठसोहै । सुवाअंगभ्रूभंगगानउपमाकोकोहै। रत्ना करसंगीतरागमालारँगरासी । रीझेराधालालभक्तपदरैनिउपासी । स्वर्णकारखडगसुवनभक्तभजनपनदृढ़लियो नंदकुवँरकृष्णदास कोनिजपदतेनूपुरदियो॥ १९२ ॥ टीका॥ कृष्णदासयेसुनाररा धाकृष्णसुखसार लियोसेवाकरिपाछेनृत्यगानविस्तारिये । ह्वैकरि मगनकाहूदिनतनसुधिभूली एकपगनूपुरसोगिरचोनसँभारिये । लालअतिरंगभरेजानियतभंगभईपायँनिजखोलिआपबांध्योसुखभा रिये । फेरसुधिआईदेखिधारालैवहाइनैनयनकीरातियोंछाइजगभक्ति लागीप्यारिये ॥ ६०१ ॥ मूल ॥ परमधरमप्रतिपोषिकै संन्या

सीयेमुकुटमानि। चित्तसुखटीकाकारभक्तिसर्वोपरिराषी। दामोदरती रथरामअर्चनविधिभाषी ।ः चन्द्रोदयहरिभक्तनरसिंहारनकीनी । माधोमधुसूदनसरस्वती परमहंसकीरतिलीनी । प्रवोधनंदरामभद्र जगदानंदकलियुगधनि । परमधरम० ॥ १८३ ॥ प्रवोधानंदस रस्वतीकीटीका श्रीबोधानंदवड़ेरसिकआनंदकन्दश्रीचैतन्य चंद्रजू केपारषदप्यारेहैं । राधाकृष्णकुंजकेलनिपटिनचोलि कहीझेलरस रूपदोऊकियेदृगतारेहैं । वृन्दावनवासकाहुलासलैप्रकाशकियोदियो सुखसिंधुकर्मधर्मसबटारेहैं । ताहीसुनिसुनिकोटिकोटिजनरँगपायो बिपिनसुहायोवसेतनमनवारे हैं ॥ ६०२ ॥ मूल ॥ अष्टांगयोगत नत्यागियोद्वारकादासजानेदुनी ॥ सरिताकूकसगांवसलिलमेंध्या नधरयोमन । रामचरणअनुरागसुदृढ़जाकेसांचोपन । सुतकल त्रधनधामताहिसोंसदाउदासी । कठिनमोहकोफंदतरकितोरीकुल फांसी । कीलिहकृपाबलिभजनकेज्ञानखड्गमायाहनी । अष्टांगयोग तनुत्यागियोद्वारकादासजानेदुनी ॥ १८४ ॥

राग माला ॥ कवित्त ॥ भैरों विलावल मिलावत ललित मांझ गू- जरी देव गंधार प्रातही विभासरी । प्रथम मेघ मलार रामकली टोड़ी म- लार आसावरी जैतशिरी अमर घनाशिरी । हिंडोल सारंग नट अड़ानो उपावें घटि कालिंगड़ी खंभायची सोहै चतुर मासरी । शिरी राग सिंध गोरी मालव बसंत टोड़ी सोरठ सदा रहत उदासरी ॥ १ ॥ दीपक सूहो कल्यान केदारो गान बखत विहागरे को गावत विलासरी। पंचम वड़े अपान जंगली काफी सयानो माल गौड़ मालकोस राग को निवासरी । कहत दयाल पै गुपाल के छतीसों राग ऐसी विधि मोहन बजाई बन बांसुरी । सोई तो सुजान हरिके गुण गाय जाने बाकीको बकत ज्यों भुवंग लेत सांसरी ॥ २ ॥ राग ज्ञान ॥ सुखिनिसुखनिवासो दुःखितानां विनोदः श्रवणहृदयहारी मन्मथस्याग्रदूतः । रतिरभसविधाता वल्लभः कामिनी

नां जगति जयति नादः पंचमश्चोपभेदः ॥ १ ॥ भैरवः पंचमोनाट्यो मल्ला-रोगौड़मालवः । ललितोगुर्जरीदेशीबराड़ीरामकस्तथा ॥ मतारागार्णवे राग्यः पंचैतेपंचमाश्रिताः ॥ २ ॥ नटनारायणःपूर्वोगंधारः सारंगस्तथा । ततःकेदारकर्णाटौ पंचैतेपंचमाश्रयाः ॥ ३ ॥ मेघोमल्लारकोमालकेशकः प्रतिमंजरी । आसावरी च पंचैते रागामल्लारसंश्रयाः ॥ ४ ॥ हिंडोल-स्त्रीगुलाधारी गौरीकोलाहलस्तथा । पंचैतेगौरनामानं रागमाश्रित्यसंस्थि-ताः ॥ ५ ॥ भोपालोहरिपालश्च कामोदाघोरणीस्तथा । वेलावलीच पंचैतेरागादेशाकसंश्रिताः ॥ ६ ॥ अन्येचबहवोरागा जातादेशविशेषतः । मारूप्रभृतयोलोके पंचभद्रादिकाःस्मृताः ॥ ७ ॥ सस्वरंसरसंचैवसरागं मधुराक्षरम् । सालंकारप्रमाणंचषड्विधंगीतलक्षणम् ॥ ८ ॥ स्वरेणपद-संयुक्तंछंदसाचसुसंयुतम् । समानकं सतालंचसंगीतंतेनभण्यते ॥ ९ ॥ वृंदावन बासको हुलास ॥ कवित्त ॥ परेजे पतौवा सूखे भूखमें पियूष जैसे खाऊं रूख रूख तरे ऐसी तोको जीविका । प्यासते बढ़े जु चार तरन तनैया तीर अंकौ भरि भरि धीर नीर पीविका । केलि कल जोहत स ह्वै है कवि वृंदावन कुंज पुंज भ्रमर अमर अमीवका । आनंदमें झूमि घूमि बसौंगो बिलास भूमि आरतको द्रुम जैसे सुखपावै हीवका ॥ २ ॥ छप्पय ॥ प्राण जाहुतौ जाहु होहि यश सकल बड़ाई । होहु धर्मको नाश भरम मन गहै जड़ाई । आधि व्याधिके दुःखकरै जेतनको जीरन । करौ नहीं उपचार कोटि हो नाना पीरन । भगवान इहि विधि बचन कठोर कहि सबै निरादर करौ किन । श्री वृन्दावनको छाँड़िये यह आवो मन भलि जिन ॥ २ ॥

पूरणप्रगटमहिमा अनंतकरिहैकौनबखान । उदयअस्तपरबतग हरुमध्यसरिताभारी । योगयुगतिविश्वासतहांदृढ़आसनधारी । व्याघ्रसिंहगूंजेंखराकछुशंकनमाने । अर्द्धनजातेपवनउलटऊरधको आने । शाखिशब्दनिर्मलकहाकाथियापदानिर्वान । पूरणप्रगटमाहिमा अनंतकरिहैकौनबखान ॥ १८९ ॥ श्रीरामानुजपद्धतिप्रतापभटल

क्ष्मणअनुसरचो। सदाचारमुनिवृत्तिभजनभागवतउजागर। भक्तन सोंअतिप्रीतिभक्तिदशधाकोआगर। संतोषीशुठिशीलहृदयस्वारथ नाहिंलेशी। परमधरमप्रतिपालसंतमारगउपदेशी। श्रीभागवतवखा निकैनीरक्षीरविवरणकरचो। श्रीरामानुजपद्धति प्रतापभटलक्ष्मण अनुसरचो॥ १८६॥ दधीचिपाछेदूसरीकरीकृष्णदासकलिजीति। कृष्णदासकलिजीतिन्योतिनाहरपलदीयो। अतिथिधरमप्रतिपाल प्रकटयशजगमेंलीयो॥ उदासीनताकीअवधिकनककामिननहींरा त्यो। रामचरणमकरंदरहतनिशिदिनमदमात्यो॥ गलितैगलितअ मितगुणसदाचारशुठिनीति। दधीचिपाछेदूसरीकरी कृष्णदासकलि जीति॥ १८७॥ टीका॥ बैठेहोगुफामेंदेखेसिंहद्वारआयगयो लयो योंविचारहोअतिथिआजुआयोहै। दईजांवकाटिडारिकीजियेअहार अजूमहिमाअपारधर्मकठिनबतायोहै। दियोदरशनआयसांचमेंरह्यो नजाय निपटसचाईदुखजान्योनाबिलायोहै। अन्नजलदेवेहीकोझीख तजगतनरकरिकौनसकै जनमनभरमायोहै॥ ६०३॥

योगयुक्ति विश्वास॥ कवित्त॥ एंडीवामेपांव की लगावै इसीवन के बीच वाही जौन ठौर ताहि नीके करिजानिये। तैसेही युगतिकरि बिधिसों प्रकार मेट मेटहूके ऊपर दक्षिण पावँ आनिये। सरलशरीर दृढ इन्द्रिय संयम करी अचल ऊर्ध्वदृश्यभ्रूके मध्य ठानिये। मोक्षके कपाट कोउ घोर त अवश्य मेव सुन्दर कहत सिद्ध आसन बखानिये॥ १॥ छन्द॥ दक्षिण ऊरू ऊपर प्रथम बामहिंपगआनिये। बायें ऊरू ऊपर तबहिं द-क्षिण पगठानहि। दोऊ करि पुनि फेर दृष्टि पीछे कर आवय। दृढकै गहै अंगुष्ठ चिबुक बक्षस्थल लावय। इहिभांति दृष्टि उनमेष करि अग्रनासि-का राखिये। सब व्याधि हरण योगीनकी पद्मासन पहिंचानिये॥ २॥ प्रथम अंग यमकहो दूसरो नेमबताऊं। त्रिविध सुआसनभेद सुतो अब-तोहिं सुनाऊं। चतुर्थ प्राणायाम पंचम प्रत्याहारं। षष्ठंसुना यधीरण्य ध्यान सप्तंविस्तारं। पुनि अष्टंग समाधिके सो सबतोहिं सुनाइहौं। साव-

आनहै शिष्य सुनि भिन्न भिन्न समुझाइहौं ॥ ३ ॥ प्रथम अहिंसा सत्य जानि पुस्तेयं त्यागे। ब्रह्मचर्य दृढगहै क्षमा धृति सो अनुरागे। दया बड़ो गुण होयं ओजव हृदय आनै। प्रत्याहार पुनि करै शौचनीके बिधि जानै। ये दश प्रकार के यम कहे हठ प्रदीपिका ग्रंथ में। जो पहिले इनको गहै सो चलत योगके पंथ में। तप संतोष गहै बुधि आस्तिक सो आनै। दान समझि करि देय मानि पूजा जोजानै। वचन सिद्धांतसु सुनो लाज मति दृढ करि राखै। जायक मुखसों असद आलापनभाखै। पुनि होशकरै इहि विधि जहां जैसी विधि तहां तैसी विधि सतगुरु कहैं। दश प्रकार के यमकहे ज्ञान बिन कैसेकहै ॥ १ ॥

मूल ॥ भलीभांतिनिवहीभगतिसदागदाधरदासकी। लालबिहारीजपतरहतनितवासरफूल्यो। सेवासहजसनेहसदाआनँदरसझूल्यो। भक्तनिसोंअतिप्रीतिरीतिसबहीमनभाई। ऐसीअधिकउदाररसमहरिकीरतिगाई। हरिविश्वासहियआनिकै सपनेहूआननआशकी। भलीभांतिनिवहीभगति सदागदाधरदासकी ॥ १८८ ॥ टीका ॥ बुदानपुरढिगबागतामेंबैठेआयकरिअनुराग गृहत्यागपागेश्यामसों। गावँमेंनजातलोगकितेहाहाखातसुखमानोलियेगात नहींकामअरुकामसों। परचोअतिमेहदेहवसनभिजायडारेतबहरिप्यारेबोलेस्वरअभिरामसों। रहेएकशाहभक्तकहीजायल्यावोउन्है मन्दिरकरावोतेरोभरयोवरदामसों ॥ ६०४ ॥ नीठिनीठिल्याये हरिवचनसुनायेजवतब करवायोऊंचोमन्दिरसँवारिकै। प्रभुपधराये नामलालऔविहारीश्याम अतिअभिरामरूपरहतनिहारिकै। करैसाधुसेवाजामें निपटप्रसन्नहोतवासीनरहतअन्नसोवै पात्रझारिकै। करतरसोईसोईराखाहीछिपायसामा आयेवरसंतकहीआयज्यांये प्यारिकै ॥ ६०५ ॥ वोल्येप्रभुभूखेरहैताकोलियेराख्योकछू भाख्योतवआपकाढेभोरऔरआवैगो। करिकैप्रसाददियोलियोसुख पायोतनसेवारीतिदेखिकहीजगयशगावैगो। प्रातभयेभूखेहरिगये

तीनयामटरिरहेक्रोधभरिकहैकबधौंछुटावैगो । आयोकोऊताहीसम यद्वैशतरुपैयाधरे बोलेगुरुशीशलैकैनारोकितोपावैगो ॥ ६०६ ॥

भलीभांति निबही ॥ नवातहै इनको निर्वाह भयो ॥ निष्काम भक्ति स्वरूपकी है सहजक मन की वृत्तिलगै ॥ १ ॥ सोवैपात्र झारि ॥ दोहा ॥ सबतत्वनिको तत्त्वहै, सोच प्रगट संसार ॥ लगै न अहिंडो चोरको, ज्यों माटीतत्त्व कुम्हार ॥ सबको सार भजन ॥ १ ॥

छ्योवहशाहमतिमोपैकछुकोपाकियो कियोसमाधानसबबात समुझाईहै । तबतोप्रसन्नभयोअन्नलैगोजितोदयसेवासुखलेतशाह रुचिउपजाईहै । रहेकोऊदिनपुनिप्रभुपुरीबासालियोपियौव्रज रसलीलाअतिसुखदाईहै । लाललैलड़ायेसंतनीकेभुगताये गुणजाने जितेगायेमतिसुंदरलगाईहै ॥ ६०७ ॥ मूल ॥ हरिभजनसींवस्वामी सरसश्रीनारायणदासअति । भक्तियोगयुतसुदृढ़देहनिजबलकरिरा खी । हियेस्वरूपानंदलालयशरसनाभाखी । परचयप्रचुरप्रतापजा नमनरहसिसहायक । श्रीनारायणप्रगटमनोलोगनसुखदायक । नि तसेचवसंतनिसहितदाताउत्तरदेशगति । हरिभजनसींवस्वामीसरस श्रीनारायणदास अति ॥ १९९ ॥ टीका ॥ आयेबद्रीनाथजूतेम थुरानिहारिनयनचैनभयोरहैजहांकेशवजूकोद्वारहै । आवैंदरशनलो गजूतिनकोशोगाहियेरूपकोनभोगहोतकियोयोंविचारहै । करैंरखवा रीसुखपावतहैंभारीकोऊजानैनप्रभावउरभाव सोअपारहै । आयोए कदुष्टपोटपुष्टसोतोशीशदई लईचलेमगएसोधीरजहीसारहै॥६०८॥

रहेकोऊ दिन ॥ सवैया ॥ कालकराल गयो सुगयो अजहूं सुनि जो छिनही छिनछीजै ॥ श्रीमथुरा यमुनातट बासकै जीवत जीवन को फललीजै ॥ नाथनिरंतर केशव सुन्दर लालको भागवतामृत पीजै ॥ छांड़ि सबै नतिया अँखिया भरिकै सबको मुख देखिबो कीजै ॥ १ ॥ जूतिनको शोग ॥ दोहा ॥ हरिके मंदिर जात हैं, हरिदरशन की आ-

श ॥ औंधोहोय पायँनिपरै, चित्तपन्हैयनपास ॥ २ ॥ लै चलै ॥ दोहा॥ कायाकोठी लोहकी, पिय पारषत हमाह ॥ रजवंतन सुखसों मढ़े, कंचन होती नाह ॥ २ ॥

कोऊअड़ोनरदेखिमगपाँहिचानिलियोकियोपरनामभूमिपरिभूरिनेहको । जानिकैप्रभावलियेपावमहा दुष्टहूनेकष्टअतिपायोछूटयोअभिमानदेहको। बोलेआपचिंताजिनकरोतेरोकामहोत नैननीरसोतमुखदेखोनहींगेहको । भयोउपदेशभक्तिदेशऊनजान्यो साधशक्तकोविशेषयहीजान्योभावमेहको ॥ ६०९ ॥ मूल ॥ भगवानदास श्रीसहितनितसुहृदशीलसज्जनसरस । भजनभावआरूढ़गूढ़गुणबलितललितयश । श्रोताश्रीभागवतरहस्यज्ञाताअक्षररस । मथुरापुरीनिवासआशपदसंतानिइकचित । श्रीयुतखोजीश्यामधामसुखकरिअनुचरहित अतिगंभीरसुधीरमतिहुलसतमनजाकेदरश । भगवानदासश्रीसहितनितसुहृदशीलसज्जनसरिश ॥ १९० ॥

धीरज को सार है ॥ विचारयो हरिहीने यह पोटि धरी है यह कौनहै ॥ श्रुतेः ॥ सर्वंखल्विदं ब्रह्म। ऐसो ज्ञान आवै तब सुखी होय नहीं तौ दुःखपावै जैसे चल्यो जाय काहू कही बैल मारैगो ॥ कही ब्रह्म सब में है ॥ बैलने मारयो कहने वालोभी तौ ब्रह्म है। अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतंकर्म शुभाशुभम् ॥ हरिकी सेवा में कहालाभ है जो कर्मभोगै कर्म क्षीण होय है सेवाते ॥ १ ॥ भावमेह को ॥ पद ॥ मुंडमुंडाये की लाज निबहियो ॥ मालातिलक स्वांगधरि हरिको मारि गारि सबही की सहियो ॥ विधि व्यवहार जारसों कलियुग हरिभरतार गाढ़ोकरि गहियो॥ अनन्य व्रत धरि सतजिन छांड़ो विमद संतकी संगति गहियो ॥ अगिन खाहि विषको लै पीवो विषयनिको मुख भूलि न चहियो । व्यास आश करि राधापति की वृन्दावन को वेगि उमहियो ॥ १ ॥

टीका ॥ जानिवेकोपनपृथ्वीपतिमनआई योंदुहाईलैदिवाईमालातिलकनधारिये । मानिआनिप्राणलोभकेतिकनित्यागिदिये छि

पेनहींजातजानिवेगमारिडारिये । भगवानदासउरभक्तिसुखराशि भरयोकरयोलैसुदेशवेष रीतिलागीप्यारिये । रीझ्योनृपदेखि रीझिमथुरानिवासपायोमन्दिरकरायोहरिदेवसोनिहारिये ॥ ६१० ॥

मूल ॥ भक्तपक्षउदारतायहनिबहिकिल्यानकी । जगन्नाथकोदासनि पुणअतिप्रभुमनभायो। परमपारषदसमझिजानिप्रियनिकटबुलायो। प्राणपयानोकरतनेहरघुपतिसोंजोरयो । सुतदाराधनधाममोहातिन काज्योंतोरयो । क्रोधनीध्यानउरमेंबस्योरामनाममुखजानकी । भक्तपक्षउदारतायहनिबहीकिल्यानकी ॥ १९१ ॥

जानिबे को पति सो भगवान्दास के संगसो रसखान मीर माधव आदिभक्त बहुत होतभये रसखानि के कंठ में द्वैसैका माला रहै तिनसों जहांगीर कही कंठीमाला सब कोऊ पहिरै तुमएती क्यों पहिरी तब रसखान बोले ॥ दोहा ॥ तनपाहन जल अगम को, तनक काठ करैपार ॥ बड़ेकाठ ऊपरतरैं, जबतन पाहिन भार ॥ १ ॥ अरु मीर माधव कृष्णनाम प्रेमसों जुलेय सुनिबेकोसेकै रामलोग फिरयो करै तिनसों बादशाह कही नाम तो सब कोऊ लैहै तिहारेही पाछे क्यों फिरयो करै है तब मीरमा-धवकही ॥ दोहा ॥ मधुर बचन सुनिसुवा के, काहु न अचरज होय ॥ बोलनिकागाकी मधुर, सुनिधावै सबकोय ॥ १ ॥ तबपन देखिबे को दुहाई फिराई ॥ मालाकंठी न धारै करयो लै सुदेश वेश॥ श्लोक ॥ यदि वातादि दोषेण मद्भक्तो मां च विस्मरेत् ॥ तर्हि स्मराम्यहं भक्तं सयाति परमां गतिं ॥ हरिको काहे को निहोरा कीजिये कंठीमाल पै शरीर छो-ड़िये ॥ १ ॥ दोहा ॥ कंठीमाला सुमिरणी, पहिरत सब संसार ॥ पन-धीरो कोउ एक है, औरबिकियो शृंगार ॥ २ ॥

सोदरशोभूरामकेसुनौसंततिनकीकथा । संतदाससदव्रत्तजरात छोईकरिडारयो । महिमामहाप्रवीणभक्तिवितधर्मविचारयो । बहु रोमाधवदासभजनबलपरचोदीनो । करियोगिनिसोंवादबसनपा वकप्रतिलीनो । परमधर्मविस्तारिहितप्रकटभयेनाहिंनतथा ।

सोदरशोभूरामकेसुनोसंततिनकीकथा ॥ १९२ ॥ बूड़ियेबिदितक न्हरकृपालआत्मारामआगमदरशि । कृष्णभक्तिकोथंभब्रह्मकुलपर मउजागर । क्षमाशीलगंभीरसबलक्षणकोआगर । सबसुहरिजनिजा निहृदयअनुरागप्रकाशै । अशनबसनसनमानकरतअतिउज्ज्वल आशै । शोभूरामप्रसादतेकृपादृष्टिसबपरबसी । बूड़ियेबिदितक न्हरकृपालआत्मारामआगमदरशि ॥ १९३ ॥ ॥

योगीबोले तुमतौ मालाकंठी अंगनमें धरो हम श्रृंगी मुद्रामाधवदास बोले अचला कोपीनधरैंगे ॥ दोहा ॥ कंठी माला सुमिरणी, पहिरत सब संसार। पनधारी कोउएक है, औरन कियो श्रृंगार। शोभूमाला शोभकी, पनकी माला नाहिं। एँड़ेकोसो तड़गडो, पाल रह्यो गलमाहिं॥ २॥ अचला कोपीन बचगये ॥ शृंगी मुद्राजलगये पारथ के क्षमा शील ॥ दोहा ॥क्षमा बड़ेन को चाहिये, ओछेनको उतपात। कहा विष्णुको घटिगयो, जो भृगु मारी लात ॥ १ ॥ ऐसे क्षमावान् हैं सो नारायणहीं हैं शील गंभीर स्वभाव गंभीर समुद्र सो घटै बढ़ै नहीं सर्व लक्षणको आगर सो भगवान् दास पारायण उज्ज्वल आशै निष्कपट विषय बासनाकी चाहै सो समान नाहींकरै है यह उज्ज्वल आशै ॥ ३ ॥

भक्तरत्नमालासुधनगोविंदकंठविकाशाकिय। रुचिरशीलघननी ललीलरुचिसुमतिसारितपाति । विविधभक्तअनुरक्तव्यक्तबहुचरित चतुरअति। लघुदीरघसुरशुद्धबचनअवरुद्धउचारन। विश्वावासवि श्वासदासपरचैविस्तारन । जानजगतहितसबगुणनिसूसमनरायण दासदिय। भक्तरत्नमालासुधनगोविंदकंठविकाशाकिय ॥ १९४॥ भक्तेशभक्तभवतोपकारिसंतनृपतिवासोकुँवर। श्रीयुतनृपमणिजगत सिंहदृढभक्तिपरायण । परमप्रीतिकियसुवशशीललक्ष्मीनारायण । जासुसुयशसहजाहिकुटिलकलिकल्पजुधायक । आज्ञाअटलसुप्रगट सुभटकटकनिसुखदायक । अतिहीप्रचंडमारतंडसमतमखंडनदो दंडवर। भक्तेशभक्तभवतोपकारिसंतनृपतिवासोकुँवर ॥ १९५ ॥ टीका ॥ जगताकोपनमनसेवाश्रीनारायणजूभयोऐसोपारायनरहै

डोलासंगही । लखैंकोचलैआगेआगेसदापाछेरहैल्यावैजलशीशईं शभन्योहियेरंगही। सुनियशवंतजयसिंहकेहुलासभयोदेख्योदिष्ठी मांझनीरल्यावतअभंगही। भूमिपरिबिनयकरीधरीदेहतुमहीनिजाते पायोनेहभीजिगयोयोंप्रसंगही ॥ ६११ ॥

बिबिधभक्त अनुरक्त पंचरसकी भक्ति सबहीमें अनुराग कोऊ दास्या कोऊ श्रृंगार के उपासिक ॥ १ ॥ धरीदेह ॥ कवित्त ॥ जिन हरि गंढि गढि एतक बनायो ताहि तुलसी को दल काहेते चढायो नाहिं। खान प्रधान सब रचें तेरे भावते पै ऐसोमन भावतो जुतेरे मन भायो नाहिं। गाढी कारिगह्यो ब्रत प्रभुको नमान्योकत प्रभुने रिझायो औ प्रभुते रिझायो नाहिं। लक्ष जगजीवनिके नेहविन देहधरी जावो जगमाहिं ऐसे मेरे जानि- जायो नाहिं ॥ १ ॥

नृपतिजयसिंहजूसोंबोल्योकहानेहमेरेतेरीजुबहिनताकीगंधकोन पाऊंमैं। नामदीपकुँवरिसोबडीभक्तिमानजातवहरसखानिएपैकछुक लडाऊंमैं ॥ सुनिसुखभयोभारीहुतीरिसवासोंटारीलियेगावकाटि फेरिदियेहरिध्याऊंमैं । लिखिकैपठाईवाईकरैसोईकरनदीजे लीजे साधुसेवाकरिनिशिदिनगाऊंमैं ॥ ६१२ ॥ मूल ॥ गिरिधरनग्वा लगोपालकोसखासांचलोसंगको । प्रेमीभक्तप्रसिद्धगानअतिगदगद बानी । अंतरप्रभुसोंप्रीतिप्रगटरहैनाहींछानी । नृत्यकरतआमोद बिपिनतनबसनबिसारै। हाटकपटहितदानरीझिततकालउतारै। मा लपुरेमंगलकरनरासरच्योरसरंगको । गिरिधरनग्वालगोपालको सखासांचलोसंगको ॥ १९६ ॥ टीका ॥ गिरिधरनग्वालसाधुसे वाहीसोंख्यालजाकेदेखियोनिहालहोतप्रीतिसांचीपाईहै । संततन छूटहूतेलेतचरणामृत जो औरअबरीतिकहोकापैजातिगाई है ॥ भयेद्विजपंचइकठौरेसोऊपंचमानोआन्योसभामांझकहैछांडोनसुहाई है। जाकेहोअभावमतिलेवीमेंप्रभावजान्योमृतकयो बुद्धिताकोबा रोसुनिभाई है ॥ ६१३ ॥

गद्गद ॥ एकादशे ॥ वाग्गद्गदाद्रवते यस्यचित्तंहसत्यभीक्ष्णं रुदतिक्वचिच्च ॥ विलज्जउद्गायतिनृत्यतेच मद्भक्तियुक्तो भुवनं पुनाति । सखिवत्समतानित्यं सखित्वंभावउच्यते ॥ द्वैमित्रनको दृष्टांत ॥ ऐसे विश्वास होय तौ हरिसदा संगही रहैं ऐसे पांडवनके॥ दोहा ॥ समता शिष्य सुमित्रता हिये सुदृढ विश्वास । पांडव द्रौपदी गज समय प्रगट भये अनियास । सुई हाथि नको दृष्टांत ॥ या वचन सों सत्यव्रत राजा को संदेह भयो वाजी गरको दृष्टांत ॥ ३ ॥

मूल ॥ गोपालीजनपोषकोजगतयशोदाअवतरी । प्रगटअंगमें प्रेमनेमसोंमोहनसेवा । कलियुगकलुषनलग्योदासतेकबहुँनछेवा । वाणीशीतलसुखदसहजगोविंदध्वनिलागी । लक्षणकलागंभीरधार संतनअनुरागी । अंतरशुद्धसदारहैरसिकभक्तिनिजउरधरी । गोपालीजनपोषकोजगतयशोदाअवतरी ॥ १९० ॥ श्रीरामदास सरसरीतिसोभलीभांतिसेवतभगत । शीतलपरमसुशीलवचनकोम लमुखनिकसे । भक्तउदितरविदेखिउदौबारिजजिमिविगसै । अति आनन्दमनउमँगिसंतपरिचर्य्याकरई । चरणधोयदंडवतबिबिधभो जनविस्तरई । बछवननिवासविश्वासहरियुगलचरणउरजगमगत । श्रीरामदाससरसरीतिसोंभलीभांतिसेवतभगत ॥ १९८ ॥ टीका ॥ सुनिएकसाधुआयोभक्तिभावदेखिबेको बैठेरामदासपूँछैरामदास कौनहै । उठेआपधोयेपांवआवैरामदासअबरामदासकहांमेरेचाहि औरगौनहैं । चलौजूप्रसादलीजैदीजैरामदासआनियहीरामदास पगधारोनिजमौनहैं । लपटानोपायँनसोंचायनिसमातनाहिं भाय निसोंभरयोहियोछाइयशजौनहैं ॥ ६१४ ॥

जन पोपको ॥ मल्लिंगमद्भक्तजनदर्शनस्पर्शनार्चनम् ॥ परिचर्य्या स्तुतिःप्राह गुणकर्मानुकीर्तनम् ॥ सो भगवान्को यशोदाजीने लड़ायो साधनीके लड़ाइबेकी मनमें अभिलाप रहीही गोपाली रूप धरिकै पूरणकरी ॥ १ ॥ भली भांति ॥ एकादशे ॥ मद्भक्तपूजाभ्यधिका० ॥ १ ॥ चाहै अभिमान तो जात हूरहै पैजाति अभिमान न जाय जन्मते मरणताईं रहै

चिता में धरयो तऊ कहै ब्राह्मण हाथ लगावै और न लगावै यह सनौढिया ब्राह्मण साधु इष्ट माने बढ़ो आश्चर्य है ॥

बेटीकोबिवाहघरबड़ोउतसाहभयो कियेपकवानसबकोठेमांझधरे हैं । करैंरखवारीसुतनातीदियेतारोरहैंऔरहीलगाइतारीखोल्योनहीं डरेहैं । आयेगृहसंततिन्हैंपोटनिबँधायदईपायोयोंअनंतसुखऐसेभाव भरेहैंसेवाश्रीबिहारीलालगाईपाकस्वच्छताईमेरे मनमाईसबसाधुउ रहेरेहैं॥११८॥मूल॥विप्रसारसुतघरजनमरामराथहरिरतिकरी । भक्तिज्ञानवैरागयोगअंतर्गतिपाग्यो । कामक्रोधमदमोहलोभमत्सर सबत्याग्यो।कथाकीरतनमगनसदाआनँदरसझूल्यो।संतनिरखिमन मुदितउदितरविपंकजफूल्यो ।। वैरभावजिनद्रोहाकियताशुपागिषि सभैपरी। विप्रसारसुतघरजनमराम० ॥ ११९॥ भगवंतमुदित उदारयशरससरसनाअस्वादाकिय । कुंजविहारीकेलिसदाअभ्यंतर भाशै। दंपतिसहजसनेहप्रीतिपरमितपरकाशै । अनन्यभजनरस रीतिपुष्टमारगकरदेषी । विधनिषेधबलत्यागिपागिरतिहृदयविशेषी। माधवसुतसम्मतरासिकतिलकदामधरसेवलिय । भगवंतमुदितउदारयशरस० ॥ २० ॥

रामराय ॥ भगवान्‌दासजी के गुरु रहैं ॥ गोकुलस्थ गोसांई जीको अरु भगवान्‌दासजी को प्रसंग ॥ दोहा॥ सुतहित सुधिता हंस में, ताके अचरज नाहिं ॥ कामदेह को हंसकरि, त्यहि देखन सब जाहिं ॥ १ ॥ ऐराकी निजगति चलै, ताको अचरज नाहिं ॥ पुनिखर ताकी गति चलै, त्यहि देखन सब जाहिं ॥ २ ॥ तब गोसाईं जी सुनिकै बहुत प्रसन्न भये॥ साधुन के ये लक्षण हैं क्यों न आदर होय ॥ १ ॥ वैरभाव ॥ दोहा ॥ कमलहृदै कोमलमिल्यो, नंदन काटत ताहि ॥ काट कठोर हृदैमिल्यो, मधुकर काटत ताहि ।। २ ॥

टीका ॥ सुजाकेदिवानभगवंतरसवन्तभयेवृन्दावनवासिनकी सेवाऐसी करीहै । विप्रकेगुसाईसाधुकोऊब्रजबासीजाहुदेतबहुधन

एकप्रीतिमतिहरी है । सुनिगुरुदेवअधिकारीश्रीगोविंददेवनामह रिदासजायदेखैचितधरी है । योगताईसीवाप्रभुदूधभातमांगिलि यो कियोउतसाहतऊपैपैंअरबरीहै ॥ ६१६ ॥ सुनीगुरुआवतअमा वतनकिहूंअंगरंगभरितियासोयोकहीकहाकीजिये। बोलीघरबारपट संपतिभँडारसबभेटकरिदीजै एकधोतीधारिलीजिये । रीझेसुनिबा नीसांचीभक्तितेहीजानीमेरे अतिमनमानीकहिआंखैंजलभीजिये । यहीबातपरीकानश्रीगुसाईंलईजानआयेफिरिवृन्दाबनपनमतिधीजि ये ॥ ६१७ ॥ रह्योउतसाहउरदाहकोनपारावारकियो लैबिचारआ ज्ञामांगिवनआये हैं । रहेसुखलहैनानापदरचिकहेएकरसानिरवहै ब्रजवासीजाछुटाये हैं । कीनीघरचेरीतऊनेकुनासामोरीनाहिंवोरीम तिरंगलालप्यारीदृगछायेहैं । बड़ेबड़भागीअनुरागीरीतिजागीजगमा धवरसिकबातसुनौपितापाये हैं ॥ ६१८ ॥

नेकुनासा मोरीनाहिं ॥ कवित्त ॥ धनलेहु जनलेहु अरधंगी हरिलेहु सागेतन देहुंजोपै उद्धट गामी है ॥ सुतहू को मारोतन टूकटूक करिडा- रौदूखहू न निवारो बड़ेमाति ठामीहैं। ऐसे ब्रजवासी ताकी जगकरे उप- हासी मेरेतौ अवासी येतौ सुकृत सुधामी हैं। पुनिहौतौ ज्ञानौ भगवंतइष्ट करिमानौ इनमें जो दोषआनौ बड़ी जियखामीहै ॥ ४ ॥ दोहा ॥ बां- दर कांटेडीमदुख, ब्रजवासी अरु चोर ॥ षटकलेश याकुंज में, पै आशा युगल किशोर ॥ २ ॥

आयोअंतकालजानिवेसुधिपिछानिसब आगरेतेलैकैचलेवृन्दाब नजाइये । आयेआधीदूरिसुधिआईबोलेचूरह्वैकेकहांलियेजातकूरक हीजोईध्याइये । कह्योफिरोतनवनजायबेकोपात्रनहींजरैवासआवे प्रि यापियकोनभाइये । जानहारोहोइसोईजायगोयुगलपास ऐसेभावरा शिचलिताहीठौरआइये ॥ २२ ॥ मूल ॥ दुर्लभमानुपदेहको लाल मतीलाहोलियो । गौरश्यामसोंप्रीतिप्रीतियमुनाकुंजनसों । वंशी वटसोंप्रीतिप्रीतिब्रजरजपुंजनिसों । गोकुलगुरुजनप्रीतिप्रीतिघनवा

रहवनसों। पुरमथुरासोंप्रीतिप्रीतिगिरिगोवर्द्धनसों । वासअटलवृन्दाविपिनदृढ़करिसोनगरीकियो । दुर्लभमानुषदेहकोलालमतीलाहोलियो ॥ २०१ ॥

दुर्लभ ॥ दोहा ॥ कहूं कटनकट प्रेमकी, सीखोलाल विवेक ॥ जैसे नौलख कामरू, पैदरवाजो एक ॥ १ ॥ एकादशे ॥ दुर्लभो मानुषोदेहो देहिनां क्षणभंगुरः ॥ २ ॥ गौरश्यामसों ॥ तस्माज्ज्योतिरभूद्द्वेधा राधामाधवरूपकम् ॥ तस्मादिदं महादेवि गोपालेनैव भाषितम् ॥ २ ॥ स ब्रह्महा सुरापी च स्वर्णस्तेयी च पंचमः ॥ एतैर्दोषैर्विलप्येत तेजोभेदान्महेश्वरि ॥ ३ ॥ सो लाड़िलीलाल लड़ाये जातनहीं लाहो लह्यो ॥ ४ ॥ यमुना ॥ कवित्त ॥ साँवल बरण गात न्हात जाको करै गौर आप जल रूपवाको करै कलिरूप है । आपनो प्रवाह वाहि करै थिर वृन्दावन आप घटै बढ़ै वह एकही स्वरूपहै ॥ आपरज राखैवाके खोवै रज तमतीनों कीनों और ठाट यह कौतुक अनूपहै ॥ कृष्ण पटरानी ऐसी यमुना बखानी कहिसकत न बानी नीके जानैभक्त भूप है ॥ ५ ॥ बास अटल ॥ दोहा ॥ छांड़ि स्वाद सुख देहके और जगत की लाज ॥ मनहिं न मारत हारिकै वृन्दावनमें गाज ॥ ६ ॥

कविजनकरतविचारवड़ोकोउताहिमनीजे । कोउकहैअवनीवड़ी जगतआधारफनीजे। सोधारीशिरशेषशेषशिवभूषणकीनो। शिवआसनकैलाशभुजनभ्रिरिरावणलीनो । रावणजीत्योबालिबालिराघौइकशायकगड़े । अगरकहैत्रैलोक्यमेंहरिउरधारेतेवड़े॥२०२ ॥ हरिसुयशप्रीतिहरिदासकेत्योंभावैहरिदासयश । नेहपरस्परअघटनिबहिचारोयुगआयो। अनुचरकोउत्कर्षश्यामअपनेमुखगायो । ओतप्रोतअनुरागप्रीतिवोहीजगजानै । पुरप्रवेशरघुवीरभृत्यकीरतिजुबखानै । अगरअनुगगुणबरणतेसीतापति तिनहोयवश । हरिसुयशप्रीतिहरिदासकेत्योंभावैहरिदासयश ॥ २०३ ॥

विचार करिकही ॥ अवनि बडी जैसे नारायण भृगु आदिक यज्ञ

करके कहै॥ समर्चनकौनकूंकरै जो वडो होय सो भृगु ने नारायणके परीक्षा करी सो क्षमाकरिकै नारायणही वडे ॥ ऐसे क्षमामें पृथ्वीबडी ॥ ॥१॥हरि उरधारै ॥ कबित्त ॥ सबहीते बडीक्षिति क्षितिहूंतें सिन्धु बडे सिन्धुहूं तें वडे मुनि वारिधि अचैरहे ॥तिनहूंते बडे नभ तामें मुनिसे अनेक जाके बीच तारागण चारो ओर छैरहे। नभहूंते बडे पगवावन बढाये जव तिनकी उँचाईदेख तीनों लोक नैरहे। तिनहूंते बडे संत साहिब अगमगति ऐसे हरि बडे जाके हृदै घर करि रहे॥ १ ॥भागवते॥निरपेक्षं मुनिंशांतं निर्वैरं समदर्शनम् ॥ २ ॥ जिनके चरणनिकी रजहरिने चाही यातेवही बडे ॥ ३ ॥ हरि सुयश नवमे ॥ साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वहम् ॥ मदन्यं ते न जानंति नाहं तेभ्योमनागपि ॥ मनुष्यपाग पलटै हरिने हृदय पलटै हरि साधनके गुण कहै अरु सुनै जैसे साधु हरिके गुणकहै अरु सुनै पुरप्रवेश करत कहै तो भरतसों हनुमान् आदिकके सुने नारदजी सों पांडवनिके संतहू अनन्यहैं जैसे प्रह्लाद ऐसेही हरि अनन्य हैं ॥ ५ ॥

उत्कर्षसुनतसन्तनकोअचरजकोऊजानिकरौ । दुर्वासाप्रतिज्ञ्यामदासवसताहरिभाखी । ध्रुवगजपुनिप्रहलादरामशबरीफलसाखी। राजसुयशयदुनाथचरणधोयजूंठाउठई । बहुपांडवविपत्तिनिवारिदियोविपाविषयापाई। कलिविशेषपरचौप्रगटआस्तीकह्वैकेचितधरौ । उत्कर्षसुनतसंतनकोकोऊअचरजजानिकरौ ॥ २०४ ॥ फलश्रुतिसार ॥ दोहा ॥ पादपयेइहिसींचतेपावैंअँगअँगपोष । पूरवजाज्यों वरनतेसवमानियोसँतोष ॥ २०५ ॥ भक्तजितेभूलोकमेंकथेकौनपै जाय। समुदपानश्रद्धाकरै कहचिरियापेटसमाय ॥ २०६ ॥ श्रीमूरतिसवैष्णवलघुदीरघगुणनअगाध । आगेपाछेवरतैंजिनमानौअपराध ॥ २०७ ॥ फलकोशोभालाभतरतरुशोभाफलहोय । गुरूशिष्यकीकीर्तिमेंअचरजनाहींकोय ॥ २०८ ॥ चारियुगनमेंजे भगततिनकेपगकीधूरि। सर्वसुशिरधरिराखिहौंमेरीजीवनमूरि२०९

कर्मानंद चारनकी छरी प्रभु लायदई यह हम न मानेंगे दुर्वासा प्रति

हरि ने वस्तुतःकही ॥ नवमे ॥ अहंभक्तपराधीनो ह्यस्वतंत्र इव द्विज ॥ ॥ १ ॥ पृथ्वीराजको प्रभुने द्वारकासों आयकै दरशनदीनो हम न मानेंगे ध्रुवमधोर्वनेदक्षाति न्यागतः कौधीप्रेम निधिको प्रभुमसाल लैकैआये यह हम न मानेंगे जैसे गजको प्रतिमाकूं नामदेवने दूधपिवायो वा इनके बोलते हरि आयगये यह हम नमानेंगे जै प्रह्लाद कर्माके खीचरीखाते ते त्रिलोचनकेघरमें चौदह महीना प्रसाद पायो सो हम न मानेंगे जैसे शवरी सेनको स्वरूप धरिकै राजाके तेल लगायो यह हम न मानेंगे राजसूय यज्ञमें कवीरकी जगे जगे रक्षा प्रभुनेकरी सो हम न मानेंगे बहुपांडव विपत्ति निवार अंगदको बहनने बिषदियो और प्रभाव न भयो मीराको विष नँनदने दियो सो प्रभाव न भयो सो हम न मानेंगे जैसे चन्द्रहासके अक्षर ऐसे प्रभाव ॥ १ ॥ कलि विशेष तीनियुगनमें तो परचे होयही है पर कलियुगमे विशेष आस्तिकपै दृष्टांत महा पुरुषको अरु ऊंटको ॥ २ ॥

जगकीरतिमंगलउदयतीनोंतापनशाय । हरिजनकोगुणवरनतेहारिहृदअटलवसाय ॥ २१० ॥ हरिजनकोगुणवरणतेजोजनकरैअसूय । इहांउदरबाढेव्यथाअरुपरलोकनशाय ॥ २११ ॥ जोहरिप्रातकीआशहैतौहरिकोयशगाय । नातरुसुकृतभुजेवीजज्योंजनमजनमपछिताय ॥ २१२ ॥

जगकी रति ॥ एकादशे ॥ मल्लिंगमद्भक्तजनदर्शनस्पर्शनार्चनम् ॥ परिचर्य्या स्तुतिः प्राह गुणकर्मानुकीर्तनम् ॥ १ ॥ मेरो अरु मेरे भक्तको गुण सामान्य है भक्त भगवन्त में भेद नहीं । वैष्णवो मम देहस्तु तस्मात्पूज्यो महामुने ॥ अन्ययत्नं परित्यज्य वैष्णवान् भज शाश्वतम् ॥ ॥ १ ॥ तृतीये मैत्रेयवाक्यम् ॥ शारीरा मानसा दिव्या वैयासेये च मानुषाः ॥ भौतिकाश्च कथं क्लेशाबाधंते हरिसंश्रयम् ॥ २ ॥ हरि जनको मार्कंडेय वाक्यम् ॥ यो हि भागवतां लोके उपहासं द्विजोत्तम ॥ करोति तस्य नश्यंति धर्ममर्थो यशः सुताः ॥ ३ ॥ निंदां कुर्वंति ये मूढा वैष्णवानां महात्मनाम् । पतंति पितृभिस्सार्द्धं महारौरवसंज्ञके ॥ ४ ॥

आदिपुराणे ॥ मम भक्तजनान् दृष्ट्वा निंदां कुर्वंति ये नराः ॥ तेषां सर्वाणि नश्यंति सत्यं सत्यं धनंजय ॥ ५ ॥ दशमे भगवद्वाक्यम् ॥ राजसा घोरसंकल्पाः कामुका अहिमन्यवः । दांभिका मानिनःपापा हसंतिभगवत्प्रियान् ॥ ६ ॥ असूया पद ॥ श्रीपति दुखित भक्त अपराधे। संतन द्वेष द्रोहता करि नित आरति सहित मोहिं आराधे । सबै सुनो वैकुंठ के वासी सत्य कहत मानो जिन खेदै ॥ तिनपर कृपा कैसे कै करिहौं पूजत पावँ कंठको छेदै। संतन द्रोह प्रीति मोहूसों मेरो नाम निरंतर लेहै। अग्रदास भागौत वदत है मोहिं भजत परयमपुर जैहै ॥ ॥ १ ॥ इहां उदर वाढ़ै वृथा जालंधर का रोग होय अथवा अनेक योनिनकी व्यथा होय ॥ १ ॥

भक्तदाससंग्रहकरैकथनश्रवणअनुमोद ।सोप्रभुकोप्यारोपुत्रजो वैठैहरिकेगोद ॥ २१३ ॥ अच्युतकुलजसएकवैरहूजाकीमतिअनु रागी। उनकी भक्तभजनसुकृतकोनिश्चयहोयविभागी ॥ २१४ ॥ भक्तदासजिनकथीतिनकीजूंठनपाय । मोमतिसारुअक्षरद्वै की न्होसिलौवनाय ॥ २१५ ॥ काहूकेबलयोगयज्ञकुलकरनीकीआ स । भक्तनाममालाअगरउरवसौनारायणदास ॥ २१६॥

इतिश्रीभक्तमालमूलश्रीनारायणदासजीकृतमूलंसमाप्तम् ॥

टीकाकर्ताकेइष्टगुरुदेववर्णनम् ॥ कवित्त ॥ रसिकाईकविताई जाहिदीनीतिनपाईभईसरसाई हियेनवनवचाहिये । उररंगभवनमें राधिकारमणवसेलसैज्योंमुकुरमध्यप्रतिविंवभाईहै । रसिकसमाज मेंविराजरसराजाकेहैंचहैंमुखसवैफूलेसुखसमुदाईहै । जनमनहरिला लमनोहरनामपायोउनहूंकोमनहरिलीनोयातेराईहै ॥ ६२० ॥

भक्तिदास संग्रह करै ॥ नारदगीतायाम् ॥ तिष्ठते वैष्णवं शास्त्रं लिखितं यस्य मंदिरे । तत्र नारायणो देवः स्वयं वसति नारद॥ १ ॥विभागी॥ एक बापके चारिपुत्र कोऊ वरपको कोऊ पांचवरषको कोऊ एक वरपको ऊको आजको बांटो बरोबरि पावै ॥ १ ॥ माला श्रीनाभाजीने उदित

शशि भक्तमालसों जान ॥ रसिक अनन्य चकोर तुम पान करो रसखान ॥ ॥ २ ॥ आगम निगम अरु स्मृति सब पुराण मत सार ॥ भक्तमाल में साखधरि संतभये भवपार ॥ २ ॥

इनहींकेदासदासदासप्रियादासजानोतिनलेवखानोमानोंटीकासुखदाईहै । गोवर्द्धननाथजूकेहाथमनपरयोजाकोकरयोवासबृंदावनलीलामिलिगाईहै । मतिअनुसारकह्योलह्यो सुखसंतनकेअंतकोनपावैजोईगावैहियआईहै । घटबढ़िजानिअपराधमेरोक्षमाकीजैसाधुगुणग्राहीयहमानिकैसुनाईहै ॥ ६२१ ॥ कीनोभक्तमालसुरसालनाभास्वामीजीनेतरेजीवजालजगजनमनपोहनी । भक्तरसबोधनीसुटीकामतशोधनीहै बाँचतकहतअर्थलागैअतिसोहनी । जोपैप्रेमलक्षनाकीचाहअवगाहियाहि मिटैउरदाहनेकुनयननहूजोहनी । टीकाअरुमूलनामभूलिजायसुनैजवरसिकअनन्यमुखहोतविश्वमोहनी ॥ ६२२ ॥

वृन्दावन ॥ कवित्त ॥ लगी अति प्यारी भूमि जहां प्रिया प्रीतमजू प्रीति सुविहारकरै तेईगुणगाइबो । रसिक अनन्यनिके लखिये मुखारबिंद गुणन निहारियेरु जियहुलसाइबो । मधुर रसाल कथा लाल अभिराम नाम यही आठोयाम निज श्रवण सुनाइबो । वृन्दावन रसबस ह्वैके सब छाड़ीमें दगही एक ऐंड़ तजि पैंड़हू न जाइबो ॥ १ ॥ विश्व मोहनी ॥ कवित्त ॥ घरहू छुटाये काम पूरनपरनपाये मन हुलसाये रूपमति अतिलालकी । असन बसन भूले लोचन सरोज फूले मनरसझूले सुनिवाणी सुरसालकी । लोककुलधर्मटारे धीरज बिदारि डारे रंग भरिभरि शोभा अध्वर बिशाल-की । प्रेमसुखजालरही काहूना सँभालरही किधौंभक्तमाल किधौं बांसुरी गोपालकी ॥ १ ॥ राधारमणकी गुसांइन कथा में उतावली चली घरमें ढहवी मूंददई एक स्त्री उतावली चली पाइजेबगिरी एक स्त्रीनेअपने हाथ-की चूरी वैष्णवको फोरदीनी ॥ १ ॥

नाभाजूकोअभिलाषपूरणलैकियो मैंतौताकीसाखीप्रथमसुनाई

नीकेगाइकै । भक्तिविश्वासजाकेताहीकोप्रकाशकीजैभीजैरंगाहि योलीजै तनलड़ाइकै । संवतप्रसिद्धदशसातशतउनहत्तरफालगुण मासवदी सतमीविताइकै । नारायणदाससुखराशिभक्तमाललैकै प्रियादासदासउरवसौरहौछाइकै ॥ ६२३ ॥

भक्ति विश्वासजाके होय ताहीको सुनाइये । अविश्वासीको न सुनावे। क्योंकि नामापराध होयहै ॥ १ ॥ प्राथ कृष्टपि ॥ २ ॥ नामाश्र २ सतांनिंदांनाम्नः परममपराधनवित नृतेयतः ख्यातयातयातंकथ सुसुतसहतेतद्विग्रहं । शिवस्यश्रीविष्णोइहहिगुणः नामादि सकलं धयाभिन्नंपश्येत्स्यखलहरिनामा हितकर । गुरोरवज्ञाश्रुतिशास्त्रनिंदितं यथार्थवादो हरिनाम कल्पनम् नाम्नोर्वलात्तस्य हि पापबुद्धिर्न्न वियतेतस्ययमैर्हिशुद्धिः ॥ ४ ॥ श्रुत्वापि नाममाहात्म्यं यःप्रीतिरहितोनरः ॥अहंममादिपरमोनाम्निसोप्यपराधकृत् ॥ कवित्त ॥ वेदहूकी निंदा और साधुनहूकी निंदाकरै गुरु की अवज्ञा विष्णु शिव भेदमानिये। नामही के आसरे सों करैबहु पाप और अश्रद्धावानहीं सों उपदेशलै वखानिये । एक अर्थवाद अरु बारबार कुतर्ककरे महिमा सुनतहिये श्रद्धानहिं आनिये । नामके समान और धर्म सब समानफलत अपराध दशजानिये ॥ १ ॥ पंचाध्यायी ॥ हीन अश्रद्धा नास्तिक हरिधर्मवहिर्मुख । तिनसों कबहूं न कहै कहै तो नहीं लहै सुख । भक्तजननसों कहै जिनके सदा भागवतधर्मवल । ज्योंयमुनाकी मीन लीनदिनरहत यमुन जल । यद्यपिसप्तनिधि भेद भेदनी यमुना निगमबखानै । तेतहीं धारिहींधार रमत छवितनहीं जलआवे ॥ १ ॥ गीतायाम् ॥ श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपियो नरः । सोपि मुक्तः शुभाँल्लोकान् प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणा ॥ ९ ॥ श्रद्धावान्श्रोतासुन्योकरे चिंतानहीं ॥ १ ॥

अगिनिजरावोलैकैजलमेंबुड़ावोभावैशूलीपैचढ़ावोवोरिगरलपिवायवी । वीछूकटवावोकोटिसांपलपटावोहाथीआगेडरवावोईतिभीतिउपजायवी । सिंहपैखवावोचाहाहोभूमिगड़वावो तीपीअनीविधवा

वोमोहिंदुःखनहींपायवी । ब्रजजनप्राणकान्हबातयहकानकरौ भक्त सोंविमुखताकोमुखनदिखायवी ॥ ६२७ ॥

इतिश्रीभक्तमालटीकाभक्तिरसबोधनीसमाप्तम् ॥

अगिनिजरावो ॥ पद ॥ जो दुःखहोय विमुखघरआये । ज्योंकारो कारीलागे निशि कोटिक बीछूखाये ॥ दुपहरि ज्येष्ठ परत बारू में घायनिलोनलगाये । कांटनमांझफिरै बिन पनहीं मूंड़ मेटोलाखाये । टूटत चाबुक कोटिपीठिपर तरवर बांधि उठाये । जो दुख होय अगिनिके दाहे सर्वसुधनहिं हेराये॥ज्योंबांझहि दुखहोत सौतिके सुंदर बेटाजाये । देखत ही सुखहोत जितोवह बिसरत नहिं बिसराये॥भटकत फिरत निलज बरजतही कूकर ज्यों झहराये । गारीदेत बिलग नहिं मानत फूलत दमरीपाये। अतिदुख दुष्ट जगत में जेते नेकु न मेरेभाये । वाके दरश परश मिलवतही कहत ब्यास यों न्याये ॥ दोहा ॥ दागजु लाग्यो नीलकों, सौमन साबुन धोय । कोटिन यतन प्रबोधिये, कौवा हंस न होय ॥ १ ॥ संगति भई तौ कहभयो, हिरदो भयो कठोर । नौनेजे पानीचढो, तऊ नभीजैकोर ॥ ऐसे शठ कथामें क्यों आवैं हैं ॥ श्लोक ॥ देवोजातः क्षमावंतो गंधर्वो मधुरः स्वरः । मानुषं मतिचातुर्य्यं पिशाचो मतिनिर्गुणः । अक्षयंच भयं नास्ति राक्षसो उग्रतामसः । खरश्चवाकभृष्टं च मृगश्च मतिकातरः । मर्कटं मतिचांचल्यां सर्वभक्षी च वायसी । एवंजाति मनुष्ये दशप्रकारमुच्यते ॥ १ ॥ तर्ककरबेको आवैंहैं तर्क कहा वक्ताकहै प्रह्लादकी अगिनिते रक्षाकरी विमुख बोल्यो बक्ताहूको डारिदेहु बचैतौ सांचोसांचो नहीं झूंठोबक्ताकहै रामनाम सों पाथरतरै बिमुखहै अवतरावोतो सांच नहीं तौ झूंठ बक्ताकहै गंगाजलसों स्नानकरावो बिमुख कहै मतिकरावो पादोदकी हैं वक्ताकहैं सूर्य्यको यमुना जलसों जल दानकरै बिमुख कहै मतिकरौ पुत्री है पुत्री कोजल कैसे लेगो वक्ताकहै तुलसा चरणामृत प्रसाद लेहु बिमुख कहै मति लेहु उदर में बिगरै याते इनसों न कहिये ॥ २॥ ब्रजजनप्राण॥

सवैया ॥ चंदन घोरिये बिंद लगाइकै कुंजनते निकस्यो मुसक्यातो। राजतिहै बनमाल गरे अरु मोरपखा शिरपै फहरातो। जबते रसखानि विलोकतही तवते कछु और न मोहिं सुहातो। प्रीतिकी रीति में लाज कहा कछुहै सो बड़ो यह नेहको नातो ॥ २ ॥ एक समय बंशी ध्वनिमें रसखानि लियो कह नाम हमारो। ताक्षणते वहवैरिन सासु कितौ कियो झांकन देति न द्वारो। होत चवाइ बलायसों आलीरी जो भरि अंक उरलीजत प्यारो। वाट चलत तवहीं ठटकी हियरे अटक्यो पियरे पटवारो ॥ २॥ याकुटी अरु कामरियापर राज्य तिहूं पुरको तजिडारों। आठो सिद्धि नवो निधिको सुखनंद कि गाय चराय बिसारों। कोटि किये कलि धौतके धाम करीरके कुंजन ऊपरवारों। रसखानि कहै इन इन नयनन सों ब्रजके बनबाग तडाग निहारों ॥ ३ ॥ अहोभाग्य ॥ १ ॥ स्कंदपुराणको इतिहास कृष्णके पास एईगईवेनआये॥ १ ॥सोरठा॥ जिन भक्तनकी माल, पहिराहै निशिदिनसदा॥तेई रसिक रसाल, वसौ सो वृन्दा बिपिननित॥ २॥

इति श्रीभक्तमालसटीकंसंपूर्णम् ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-(बम्बई.)